॥

अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है, ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे श्रृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे। अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और आपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समुझते थे। और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नहीं समझा जासकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नहीं याद रहता है ज्ञानावरणीय के सिवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नहीं हुआ किन्तु क्रमसें जौं जौं देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तौं तौं ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४। विक्रम संवत ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक बिनलिखे यह स्मरणशक्ति

॥ विज्ञापनम् ॥



सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिस्से जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पगु कुष्ठी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्यों कि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका सद्गुरु अध्ययन

॥

जगह नही मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ जो के ५०० ठिकाने ४५ आगम का भंडार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से वचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुंदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया । यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकसुभतादिक, महा कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में वडा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नही है, पक्षपात छोड के ग्रहण करें । यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने वडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ वनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इस्के सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबधका हेतु, नही है, वही ग्रन्थ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोंच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथाशक्ति प्रवृत्त होंय कि जिससे पुन जैनमत युवावस्था कों प्राप्त होय इति शम् ॥

मकसूदावाद अजीमगज राय धनपतिसिंह बहादुर

भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्ग का अनुयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसे प्राप्तहै ,

जाती रहेगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होने के कारण ताड़पत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिस्में भी यदि कोई तरह का विघ्न आय पडे कार्य पूर्ण नहो. क्योंकि एकतो श्रेयांसि बहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है, ग्रथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्तमान काल में पैंतालीस आगम एक

और अनुयोग की प्रवृत्ति , फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिक द्वारों
के निरूपण से होती है सो सब इहांभी स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाय चतुर्थ अङ्गानुयोग , राग और द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन
करने से, तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसवाद
रहित वचन होने से त्रिभुवनरूप भवन के आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यश की राशि फैल रही
है ऐसे जिनेन्द्र परम कारुणिक श्री श्रमण भगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी नें जैसा कहा उन के पांचवें
गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने श्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित किया ,
समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि—सम्यक् प्रकार आधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदा
र्थों का ज्ञान है जिसमें , अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ मे कहाहै , समवाय शब्दसे आत्मा आदि
कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकोत्तर अर्थात् एक के वाद दो और दो के वाद तीन इस क्र
मसे सो पर्यंत और अनेकोत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत सख्या विशेषित इस ग्रंथ में कहे
हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों कों एकेंद्रियादि पर्याप्त अपर्याप्त नारक

विशेषणमायुष्मताचिरजीवितवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमयेत्यस्यविशेषणमिदं आवसतामयागुरुकुलेआमृशतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरत लाभ्यांगुरोः क्रमकमलयुगलमिति यद्वा आउसतेणंति आयुषमाणेनप्रीतिप्रणवमनसेति । यदाख्याततदधुनोच्यते एगेआयाइत्यादि कस्यांचिद्वाचनायामपर मपिसंबंधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहखलु समणेण भगवएइत्यादि तामेवचवाचनांबृहत्तरत्वाद्व्याख्यास्यामः इदंचद्वितीयसूत्रं संग्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसे यमस्यचैवगमनिका इहास्मिन्लोके निर्ग्रंथतीर्थेवा खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नशाक्यादिप्रवचनेषु श्राम्यतितपस्यतीति श्रमणस्तेनेदंचाति मजिनस्यसहसम्मतिसम्पन्ननामातरमेवयदाह सहसमईयामणेत्ति । भगवतेतिपूर्ववत् महांश्चासौ वीरश्चेतिमहावीरस्तेनेदंच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्र वणपरोपहोवसर्गनिपातेप्यप्रकम्पत्वेनपीयूषपानप्रभुभिराविर्भावितमाहच अयलेभयभेरवाणंखतिखमेपरीसहोवयवग्गाणंपडिमाणंपरेदेवेहिंकएमहावीरेत्तिक थभूतेनेत्याह आदौप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारग्रथात्मककरोतितदर्थप्राणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलआदिकरस्तीर्थंकरस्तेन तरंतितेनसंसारसागरमितितीर्थंप्रव चनंतदव्यतिरेकादिहसंघस्तीर्थंतस्यकरणशीलत्वात्तीर्थंकरस्तेन तीर्थंकरत्वंचतस्यनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतआह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्यग्बुद्धोहे योपादेयवस्तुतत्वंविदितवानितिस्वयंसंबुद्धस्तेन स्वयंसंबुद्धत्वंचास्यप्राकृतस्येवसभाव्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यतआह पुरुषाणांमध्येतेनतेन अतिशयेनरूपादिनोन्नतत्वा

आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगस्स

तपस्वीतेणे भगवंतएश्वर्यादिकगुणेकरीसहिततेणेकर्मरूपवैरीने विदारेतेमहावीरकहीयेतेणे श्रुतधर्मनीआदिनाकरणहारतेणे तीर्थचतुर्विधसंघनाकरणहा रतेणे परनाउपदेसविनापोतेजप्रतिबोधपाम्यातेणेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांहिउत्तमतेणे पुरुषमांहिसिंहसरीखातेणेकल्यानजाइतेणे पुरुषमांहिप्रवरप्रधान-

चतुरन्त इति तेनधर्मवरचातुरंतचक्रवर्तिना एतच धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति भवतीत्यत आह अप्रतिहतेवाटकुड्यपर्वतादिभिर स्खलिते अविसंवादकेवा अतएवक्षायिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर स्तेन एवंविध संवेदनसंपदुपेतो पि छद्मवान् मिथ्योपदेशित्वान्नोपकारीतिनिश्छद्मता प्रतिपादनायाह अथवाकथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं संपन्नमत्रोच्यते आवरणाभावादेतदेवाहव्याह त्त निवृत्तमपगतं छद्मशठत्वमावरणंवा यस्यसतथातेन व्यावृत्तछद्मना मायावरणयोश्चाभावो ऽस्यरागादिजयाज्जातमित्यतआह जयतिनिराकरोति रागद्वे षादिरूपानरातीनितिजिनस्तेन रागादिजयश्चास्यरागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएवभवतीत्येतदस्याह जानातिछाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक स्तेन अनंतरमस्यस्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुनास्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वंविशेषणषट्केनाह तीर्णइवतीर्णः संसारसागरमितिगम्यते तेनतथातारयति परानप्युपदेशवर्त्तिन इतितारकस्तेन तथाबुद्धेनजीवादितत्वं तथाबोधकेन जीवादितत्वमेवाऽपरेषां तथामुक्तेनबाह्याभ्यतरग्रंथिबंधनात् मोचकेन ततएवपरे

वियट्टछउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहिएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरसिणा

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे छद्मस्थपणाथीकपटपणाथकीनिवर्त्त्योवीतरागथयातेणे रागद्वेषनेजीपणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावेतेणे पोतेसं सारसमुद्रतरातेणे अनेरानेंसंसारसमुद्रतारेतेणे आपणपेंतत्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधेतेणे आपणपेकर्मथकीमूंकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूंकावेतेणे सर्वपदार्थना जांणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहवामहावीरमोक्षजाइवावांछे छेतेमोक्षकेहवोछे उपद्रवरहितठामथकीचालेनहीतेणे जिहांरोगनहींजेह

पार्श्वे भोमानि नवभूमिकानि नगराणीति एकोननगराणीत्येके विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा व्यंतराणां सभा सुधर्मा नव योजनानि ऊर्ध्वमुच्चत्वेन तथा पम्हा ॥

गइयाणं देवाण नवपलिउवमाइं ठिई प० बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवन्नं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिद्धं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं तहा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जकंतं सुज्जप्पभं सुज्जलेसं सुज्जवन्नं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं सुज्जसिद्धं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्ललेसं रुइल्लवन्नं जावरुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा नवण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ संतेगइयाभव

आउखोकह्यो। ब्रह्मलोके जेदेवता पद्म १। सुपद्म २। पद्मावर्त ३। पद्मप्रभ ४। पद्मकांत ५। पद्मवर्ण ६। पद्मलेश ७। पद्मध्वज ८। पद्मशृंग ९। पद्मसिद्ध १०। पद्मकूट ११। पद्मोत्तरावतंसक १२। एम १२ विमाने तथावली। सूर्य १। सूर्यावर्त २। सूर्यप्रभ ३। सूर्यकांत ४। सूर्यवर्ण ५। सूर्यलेश ६ सूर्यध्वज ७। सूर्यशृंग ८। सूर्यसिद्ध ९ सूर्यकूट १०। सूर्योत्तरावतसक ११। तथावली रुचिर १। रुचिरावर्त २। रुचिरप्रभ ३। रुचिरकात ४। रुचिरवर्ण ५ रुचिरलेश ६। रुचिरध्वज ७ रुचिरशृंग ८ रुचिरसिद्ध ९ रुचिरकूट १० रुचिरावतंसक ११ एणेविमाने जेहदेवतापणे ऊपनाछे। तेहदेवतानो नवसागरोपमआउखोकह्यो। तेहदेवता नवअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासले घणींस्वासोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासले तेहदेवताने नववर्ष सहस्रे आहारनो अर्थ

तिर्यंच मनुष्य देव भेदसें और इनके आहार लेश्या आवास उपपात च्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग योग इंद्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का विष्कंभादि, कुलकर तीर्थंकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव इत्यादि अनेक पदार्थ विशेपतया इस ग्रंथ में कहने सें समवाय ऐसा नाम हुआ, वही समवाय क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुप के अंगकी तरह अंग है इसलिए समवायांग नाम हुआ, इस ग्रंथ में भाव समवायांग काही अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है, इस समवायांग के पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रियाविशेप कहे है, यही चारों जैसें नगर मे सुखसें प्रवेश करने मे चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमे प्रवेश करने के चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं, इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने से तत्वज्ञानरूप परम पुरुपार्थ सिद्ध होताहै इसलिये इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परंतु पढने का अधिकारी वही होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरू का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसकों व्यतीत हुआ होगा समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वहीहै, अन्यथा देनेमें तीर्थंकराज्ञा भङ्गादि दोषापत्ती होतीहै, इति शम्॥

॥ टी

चाणियासृताः समरात्रिंदिवास्तास्तिस्रोभवंतीति सप्तानामुपरि अष्टमीप्रथमासप्तरात्रिंदिवा एवंनवमीद्वितीया दशमीतृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा नकृतोविशेषः तथाहिअष्टम्यांचतुर्थभक्ततपः ग्रामादेर्बहिरवस्थान मुत्तानादिकचस्थानमिति नवम्यांतुउत्कटुकाद्यासनेनविशेषः दशम्यांवीरासनादिना तथा अहोरात्रप्रमाणाहोरात्रिकी एकादशीयायषष्ठभक्तेन भवतीतिविशेषः एकरात्रिकीरात्रिप्रमाणासाचाष्टमभक्तेन रात्रीप्रलंबभुजस्य संहतपादावनतकायस्या निमेषोद्यास्येति तथासमेकीभूय' समानःसमाचाराणां साधुनाभोजनंसंभोगः सचोपध्यादिलक्षणविषयभेदात् द्वादशधा तच्चउवहीत्यादिरूपकद्वयं तत्रोपधि

॥

सत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा अहोराइआभिक्खूपडिमा एगराइआभिक्खूपडिमा दुवालसविहेसंभोगे

॥

मा त्रिणिमासिकी ३ । चउथी प्रतिमा च्यारमासिकी ४ । पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५ । छठी छमासनी प्रतिमा ६ । सातमी सातमासनी प्रतिमा ७ आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसरात्रिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्टमीए चतुर्थभक्त तपकरे ग्रामबाहिररहे उत्तराशनकरे ८ । नवमी बीजी पणिसात अहोरात्रनी भिक्खुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९ । दशमी त्रीजी पणिसात अहोरात्रनी तिहां वीरासनकरे १० । इग्यारमी एकअ होरात्रिनी भिखुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवासे पूरिये ११ । बारमी भिक्षु प्रतिमा एकरात्री प्रमाणे अष्टमभक्त उपवासे समाप्तिहोइ रात्रिए प्रलंबभुजाकरि का उसग्गकरे कांइककाया नमाडे नेत्रमेखनकरे १२ । बारें प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनो एकभोजनादिकमो विचारहारकह्यो । उपधिवस्त्र पात्रादि कनो संभोग लेवोदेवो सभोगी साधुसाथें तुभ्रमोत्पादन दोषेविशुद्धकहीये अशुद्धलेई त्रिणिवेला प्रायश्चितलेई तोहोते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रायश्चित्तलेतो

नकल चिठ्ठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसो जैनागम की पुस्तके मूल टीका और भाषाटीका सहित पाच २ सौ कापी छपै और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पाच सौ स्थानमे पुस्तकालय स्थापित हो सो यह अति आनंदकी बातहै, परन्तु जिन महाशयों का द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगो के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बचने के वास्ते पाचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावे यह पुस्तकों मे अजीमगंज से प्रकाश करूगा अग्रे शुभम्, संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगंज. द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद कार्यसम्पादक

शुबुद्धिचंद

नकल चिठ्ठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसो जैनागम की पाचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मै स्वीकार करता हू कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तके बेचने के वास्ते छपवा लेवे, परन्तु पाचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा मे नही देता, यदि और कोइ छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेवें क्योंकि इन ग्रन्थो पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् । संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

निकाचनंच्छंदनं निमन्त्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्योपध्याहारे. शिष्यगणप्रदानेनस्वाध्यायेनच सभोगिकं निमन्त्रयन्शुद्ध: शेषतथैव तथाअब्भुट्ठाणेतियावरेत्ति अभ्यु
त्थानमासनत्यागरूपमित्यपर सभोगासभोगस्थानमित्यर्थ: तत्राभ्युत्थानं पार्श्वस्थादेःकुर्वं स्तद्विसभोग्यउपलचणत्वाचाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राघूर्णकग्लानाद्यव
स्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवंप्रश्नलचण । तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलचणं तथा अविभक्तिवापृथग्भावलचण कुर्वन्न
शुद्धो सभोग्यश्चाप्येतान्येवंयथागम्य कुर्वन्नशुद्ध: सभोग्यश्चेति तथाकिइकम्मस्सयकरणेत्ति कृतिकर्मवन्दनकन्तस्य करणविधान तद्विधिनाकुर्वन्शुद्ध: इतरथा
तथैवासभोग्यस्तत्रचायविधिर्य. साधु र्वातेनस्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्त. ससूत्रमेवास्खलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तशिरोनयनादियच्छक्नोति तत्क
रोत्येवंचाशठप्रवृत्तिर्वदन विधिरितिभाव: वेयावच्चकरणेइयत्ति वैयावृत्त्य माहारोपधिदानादिना प्रश्रमणादिमात्रकार्पणादिना अधिकरणोपशमनेनचोपष्ट
भकरण तस्मिन्नविषयेसभोगोभवतीति । तथासमोसरणति जिनस्तवनरथानुयानपट्टयात्राद्योनक्षव. साधवोमिलन्ति तत्समवसरण इहचचेत्रमाश्रित्यसाधूना
साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येप्यवग्रहाउपलचितातेचानेके तथा वर्षावग्रह ऋतुवद्धावग्रहो वृद्धवासावग्र
हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रह. प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्चेत्रवर्षोपवाल्याद्यर्थं युगपत्ख्यादिभि: साधुभिर्भिन्नगच्छस्यैरनुज्ञाप्यते ससाधारणोयत्तत्चेत्रमे

करणे वेञावेच्चकरणेञ्च समोसरणं संनिसिज्जाय कहाएञ्चपबंधणे दुवालसावत्तेकित्तिकम्मे प० तं० दुत्तोणयं

गो ४ । सभोगी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्यानेदेतो विसभोगी ५ निकांचन निमन्त्रण माहोमाही शिष्यउपाध्यायादिकै करतोशुद्ध ६ । व
डेआवाएथके उठीउभा थाइवो ७ । अपरकहता अनिरतबोल तथा विविधेकरी कृतिकर्म वांदणानो करवो नउानेवांदणानो देवो ८ । वेयावचननो करवो

॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पद्रुमायमाण वङ्गदेशभूषण कृतबन्धुतोषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारो सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर क्षितिपति धनपति सिंहस्य धर्मोपदेशेन शुभादेशेन ज्ञानवृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपतीनां सकलयतीनां श्रेयोग्राहकाणां श्रावकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराचरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे ख्यातसम्य-ग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकच न्द्रेण सुन्दर मुद्रितमभूत् ॥ *

समवायाख्यंसूत्रं तुरीयमङ्गंमयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यंभविकान्सदापातु ॥ १ ॥

दाप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनति द्वितीयं। पुनर्यदावग्रहानुज्ञापनायैवावनमतीति यथाजातं श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनिःक्रमणलक्षणंच तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया श्रमणोजातोरचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवंभू तएवंवन्दते तद्व्यतिरेकाद्धा यथाजातभण्यते कृतिकर्मवंदनकं। बारसावयंति द्वादशावर्त्ताः सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं स्तद्द्वादशावर्त्तं। तथाचउसिरम्ति चत्वारिशिरांसियस्मिंस्तच्चतु'श्शिरः प्रथमप्रविष्टस्यक्षामणाकाले शिष्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनिःक्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति भावना। तथातिगुत्तंति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरेपि तिसृभिःग्रजागुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसम्ति द्वौप्रवेशौयस्मिंस्तद्द्विप्रवेशं तत्रप्रथमोवग्रहमनुज्ञाप्य प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगनिक्खमणंति एकनिःक्रमणमवग्रहादावसिक्यानिर्गच्छतः द्वितीयवेलायां ह्यवग्रहान्ननिर्गच्छति पादपतितएव

जहाजायं किरिकम्मं बारसावयं चउसिरं तिगुत्तं दुपवेसं एगनिक्खमणं विजयाणंरायहाणी दुवालसजोय

आहार पाणी संभोगीने आणीदेतो मात्रादिक परठवतो सभोगी अन्यथा विसंभोगी ८। समोसरण तेघणा यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण सभोग साधुनो अवग्रहलेई एकठोरहिवो १०। संनिषद्यागत संभोगीसाथें एवो बैसतो वेसी शास्त्रचितन करतो पासत्थासाथे करतो विसभोगी ११ संभोगीसाथें क थाप्रबंध करतोशुद्ध १२। पासत्थासाथें करतो विसभोगो॥ थारे आयतंमाएँ तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवते श्रीवर्द्धमानसामी ऍ तेकहेछे वेअवनत वेला मस्तकनमाडवो गुरुनो थापनाकोजे तेहथकी अजठहाथ वेगला रहीपडिक्कमीए अजठहाथमाहीं अवग्रहकहिये उभांथका इच्छामिखमासमणो कहिये बिहु वांदणे बिहुवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आविये यथाजातमुद्रा जन्मप्रयसरी बालकनीपरें चलोटोभरीहाथजोडीरही कृतकर्मवांदणा १२ आ।





काचतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकाग्रसिद्धासातिरेका सामान्या एवंदिवसोविंत्ति। सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदच्चिणायनपर्यंतदिवसत्ति।

महाविमाणस्स उवरिल्लाउचूलिआउ दुवालसजोयणाइं उड्ढंउप्पइत्ता इसिपब्भारनामपुढवी प० इसिपब्भा राएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसित्तिवा इसिपब्भारात्तिवा तणूइवा तणूयरित्तिवा सिद्धित्तिवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंभेत्तिवा बंभवडिंसएत्तिवा लोकपडिपूरणात्तिवा लोगग्गचूलिआइ

च्चिणायननो छेहल्योदिवस मकरसक्रांति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगइ थकेंसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी वार्थसिद्ध महाविमान कही तेहनी उपरिली चूलिका शिखरायथकी १२ योजनछे ऊंचो उत्पत्तिने जईने ईषत्प्राग्भार नामपृथिवी सिद्धिशिलाकही रत्नप्रभा दिक बीजी पृथिवीनी अपेचाये ईषत् थोडोछे प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनो तेहईषत्प्रग्भार सिद्धिशिलाछे तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते कहेछे। ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषत्प्राग्भार बीजी पृथिवीनी अपेचाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे छेडेमाखि नाआंख सरीखी पातली ३ तनुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुतेथके जीवनाकार्य सीझे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धहुआछे तेहनू आलयकहतां घरते सिद्धाल य ६ तिहां जीवपहुताथकी कर्मथकी मूंकाणातेमुक्ति ७ मुक्तजेसिद्ध तेहनूं आलयघरते मुक्तालय ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते हनो मुगुटरूप १० लोक १४ राजलोक तेजेणेकरी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथें चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलो काग्रचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो वारपल्योपम आउखोकह्यो। पचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानम्य समवायांगवृत्तिका । विधीयतेन्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसदूहनाद्वा भणिष्यतेयद्वितथं मयेह । तद्धीधनैर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यंमतार्थंक्षतिरस्तुमैव ॥ २ ॥ इहस्थानाख्यतृतीयांगानुयोगानतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थाङ्गानुयोगोभवतीति- सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं समुदायार्थोयमस्य समिति सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो- जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयंतिवा समवतरंति संमिलंति नानाविधाआत्मादयोभावाअभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति सचप्रवचनपुरुषस्यांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीश्रमणमहावीर वर्द्धमानस्वामिनःसंबंधी पंचमोगणधरआर्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यंजंबूनामानमभिसम वायागार्थमभिवित्सुः भगवतिधर्माचार्येबहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्तारस्वभावभासिकेवलालोककलितमहावीरवचननिश्रिततयावि गानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमेमयाहेआयुष्मन् चिरंजीवितजंबूनामन् तेणंति यो सोनिर्मूलोन्मूलितरागद्वेषादिविषमभावरिपुसैन्यतया भुवनभावावभासनसहसंवेदनपुरस्सराविसंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोरा शिस्तेनमहावीरेणभगवतासमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यात अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥र्दं॥ श्रीविघ्नराजायनमः ॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसमणेणं भगवयामहावीरेणं

॥ देवदेवजिननत्वा पार्श्वचन्द्रादिसद्गुरून् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमोगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेछे सांभल्योमैभगवंतनें समीप ॥ हेसयमसुद्रआउखानाधणीजबू तेणे भगवंतज्ञानवतरूपवंते एहवोजेआगलकहीस्येतेकह्यो एहवोजिनप्रवचननेविषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे श्रमण

मायाप्रत्ययी मायानिबंधनः ११ । एवंलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापथिकाः केवलयोगप्रत्ययःकर्मबंध उपशांत मोहादीनां सातवेदनीयबंधः १३ । तथाविमाणप त्थडेत्ति विमानप्रस्तटाउत्तराधर्यव्यवस्थिता तथासोहम्मवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्यार्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेनयोद शप्रस्तटे शक्रावासभूतंविमानं सौधर्मदेवलोकस्यावतंसकः शिखरकः सद्रत्नप्रधानत्वादित्येवं यथार्थनामकमिति चकारोवाक्यालंकारे अर्धत्रयोदशयेषुतान्य र्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचेतिविग्रहः सार्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपंचेंद्रिय तिर्यग्गतौकुलकोटिनां योनि प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्रप्राणिनामायुर्विकथन सभेदमभिधीयते तत्प्राणायुर्द्वादश्य पूर्वतस्य त्र योदशवस्तूनि अध्ययनपदविभागविशेषाः तथागर्भेगर्भाशये व्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रांतिकाः तेचते पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेतिविग्रहः प्रयोजने मनोवा

वडिंसगेणं विमाणे अद्धतेरसजोयणं सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० जलयरपंचिंदिअ तिरिक्खजोणि आणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुव्वस्सतेरसवत्थू प० गब्भवक्कंति अपंचेंदिअतिरिक्ख जोणिआण तेरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे

तेजयोनिनेविषे अनेकप्रकारे जीवउपजिमगोबरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेछे तेकुलकहीये । जिहांप्राणीना आउखाना भेदकहिये तेप्राणोनोबारमो पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक हेछे । सत्यमनोयोग तेसांचेमनेचिंतवो १ । जूठमनो व्यापारते मृषामनोयोग २ । सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावनो चिंतवो ३ । असत्यामृषामनोयोग ते

नेरइआणं तेरसपलिओवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं तेरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं तेरसपलिओवमाइ ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाण तेरसपलिओवमाइ ठिई प० लंतएकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिद्धं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं सुवइरं वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेसं वइररूवं वइरसिंगं वइरसिद्धं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं लोगं सुलोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंतं लोगवण्णं लोगलेसं लोगरूवं लो

नरकपृथिवीनेविषे कैतलाएक नारकीनो तेरपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमी पृथिवीए कैतलाएक नारकीनो तेरसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवलोकेतलाएकनो तेरपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्मईशान देवलोके कैतलाएक देवतानो तेरपल्योपम आउखोकह्यो। लांतककल्पेकेतलाएकदेवनो तेर सागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेदेवलोके जेहदेवता वज्र १। सुवज्र २। वज्रावर्त ३। वज्रप्रभ ४। वज्रकांत ५। वज्रवर्ण ६। वज्रलेश ७। वज्ररूप ८। वज्र शृंग ९। वज्रसिद्ध १०। वज्रकूट ११। वज्रोत्तरावतंसक १२। एम वारवली॥ वइर १। सुवइर २। वइरावर्त ३। वइरप्रभ ४। वइरकांत ५। वइरवर्ण ६। वइरलेश ७। वइररूप ८। वइरशृंग ९। वइरसिद्ध १०। वइरकूट ११। एमवज्रनी परिवैरसाथे १२ विमानकरो छेहिलो वैरोत्तरावतंसक १३। वली॥ लोक १। सुलोक २। लोकावर्त ३। लोकप्रभ ४। लोककांत ५। लोकवर्ण ६। लोकलेश ७। लोकरूप ८। लोकशृंग ९। लोकसिद्ध १०। लोककूट ११।

दूर्द्धवर्त्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन अथपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहाद्युपमानत्रयेणास्यसमर्थयन्नाह सिंहइवसिंहःपुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिसिंहेशौर्यं
मतिप्रकृष्टमभ्युपगतमतःशौर्येसउपमानंकृतः शौर्यंतुभगवतोबाल्येप्रत्यनीकदेवेनभाप्यमानस्याप्यभीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरी
र कुब्जताकरणाच्चेत्यतस्तेन तथा वरंचतत्पुण्डरीकञ्चवरपुंडरीकंधवलंसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभगवतःसर्वाऽशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च
शुभैरनुभावैःशुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरश्चासोगंधहस्तोएववरगंधहस्तोपुरुषएववरगंधहस्तोयथागंधहस्तिनोगंधेनैवसर्वेगजाभज्यन्तेतथाभगवतस्तद्देशविहरणेन
ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरिकादीनिदुरतानिनश्यंतीतिशतयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवान्पुरुषाणामेवोत्तमःकिंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत
आहलोकस्यतिर्यग्नरनारकिनाकिलक्षणजोवलोकस्योत्तमश्चतुस्त्रिंशद्बुद्धातिशयाद्यसाधारणगणोपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकरनमस्यतयाचप्रधानोलोको
त्तमस्तेनलोकोत्तमत्वमेवास्यपुरस्कुर्वन्नाहलोकस्यसञ्ज्ञिभव्यलोकस्यनाथःप्रभुर्लोकनाथस्तेननाथत्वञ्चास्ययोगक्षेमकृत्त्वान्नाथइतिवचनात्अप्राप्तसम्यग्दर्शनादेर्योगकर
णेनलब्धस्यतस्यैवपालनेनचेतिलोकनाथत्वञ्चतात्विकंतद्धितत्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकेंद्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रक्षाप्रकर्षप्ररूपणेनानुकूलवृत्ति
र्लोकहितस्तेन यदेतन्नाथत्वहितत्वंवातद्भयात्तानांयथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपणेननान्यथेत्य ाहलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जन्मजरामरणरूपस्यांतरतिमिरनि
कर निराकरणेनप्रकृष्टपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलोकप्रदीपस्तेनइदंचविशेषणं दृष्टलोकमाश्रित्योक्तमथदृष्टंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति
पुंडरीककमलसमानजिमकमलपंकपाणीयेंनलोपैतिमभगवंतकामभोगेंनलीपैंतेणे पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदक्क'डेईतिमारीनासेभगवं
तनेदेखीनेतेणे लोकसमस्तमांहिउत्तमतेणे लोक ८४ लाखजीवायोनितेहनांनाथधणीतेणे लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतेणे लोक १४ राजप्रमाण

तथाउप्पायपुब्बेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्पायमग्गेणियंचत्ति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यत्रतेषामेवाग्रपरिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीय तइयंचवीरियपुब्वति । यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोच्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवादं अत्थिनत्थिपवायति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतद्यत्रप्रोच्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्तो

॥ बेंदियाअपज्जत्तया बेंदियापज्जत्तया तेंदियाअपज्जत्तया तेंदियापज्जत्तया चउरिंदिआअपज्जत्तया च उरिंदियापज्जत्तया पंचिंदिआअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निपज्जत्तया पंचिंदिआसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियासन्निपज्जत्तया चऊद्दसपुव्वा प० तं० उप्पायपुव्वमग्गेणीयच तइयंचवीरियपुव्व अत्थीनत्थिप्प ॥

लक्षणपरिचारे पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियनोभेद १ । सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणेंआहारादिक चारपर्याप्त पूरीकीधी तेपर्याप्ता २ । बादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३ । बादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४ । बेंद्रियअपर्याप्ता ५ । बेंद्रियपर्याप्ता ६ । तेंद्रियअपर्याप्ता ७ । तेंद्रियपर्याप्ता ८ । चतुरिंद्रिअपर्याप्ता ९ चतुरिंद्रियपर्याप्ता १० । पचेंद्रियअसन्नी अपर्याप्ता ११ । पचेंद्रियअसन्नीपर्याप्ता १२ । पचेंद्रियसंज्ञीअपर्याप्ता १३ । पचेंद्रियसंज्ञीपर्याप्ता १४ । एकेंद्रियमाहि ४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय १ स्वासोश्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता विणकरी मरेते अपर्याप्त । बेंद्रिय १ त्रेंद्रिय २ चउरींद्रिय असंज्ञीसमूर्छिम पचिंद्रियमांहि पाचपर्याप्ति च्यारमूलनी पांचमीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि जेतलीकही तेमांहीएक उछीहोय तेअपर्याप्तिकहियै । चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे वखाणीस्येकहीस्ये अनुक्रमे । उत्पातपूर्व जेमांही द्रव्यपर्याप्तानो उत्पादछे १ । बीजोअग्र णीय जेमाहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २ । वीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३ । अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव

निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
लोक इतिव्युत्पत्यालोकालोकरूपस्यसमस्तवस्तुस्तोमस्यभावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
प्रवर्त्तनेनप्रद्योत प्रकाशंकरोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलोकनाथत्वादिविशेषणयोगी हरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसभवतीतिको
स्यविशेषइत्याशङ्कायान्तद्विशेषाभिधानायाह नभयंदयतेप्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिष्वपिप्राणिनि ददातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार
वतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनैवमितितेनाभयदयेन नकेवलमसावपकारकारिणामप्यनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं करोती
तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानशुभाशुभार्थविभागकारित्वा तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोकेचक्षुर्दत्वावाञ्छितस्थानमार्गंदर्शयन्महोपकारी
भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकंपरमपदपथदयत इतिमार्गदयस्तेन मार्गंदर्शयन्महोपकारीभवत्येवमिहापीति यथाहिलोकेच
चुरुद्घाटनमार्गदर्शनचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानप्रापयन् परमोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह शरणंत्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानांतद्र
क्षास्थानतत्त्वपरमार्थतोनिर्वाण तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाहि लोकेचक्षुर्मार्गशरणदानादूर्ध्वस्थानजीवितव्यं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवनं

माणं लोगनाहाणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेण अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं

तिहांदीवासमानमिथ्यात्वअंधकारटाले लोकगणधरलोकनेहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहारतेणेसहित सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणे समकितरूपलो-
चनानादातारतेणे भूलाप्राणीनेमोक्षमार्गनादातारतेणे सर्वजीवनेशरणनादातारतेणे संयमरूपजीवितव्यनादातारतेणे बोधिबीजसम्यक्त्वनादातारतेणे धर्म

च्लोकस्य बिन्दुरिवाक्षरस्य सारं सर्वोत्तमंयत्तल्लोकबिंदुसारमिति तथाचोद्दसवत्थू पत्ति । द्वितीयपूर्वस्यवस्तूनि विभागविशेषास्तानिच चतुर्दशसूत्रवस्तूनि त थासाहस्सिओत्ति । सहस्त्राख्येवसाहस्त्रं तथाकम्मविसोहीत्यादि कर्मविशोधिमार्गणां प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशुद्धिगवेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि जोवभेदा' प्रज्ञप्तास्तद्यथा मिथ्याविपरीताद्दष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्मदिठ्ठित्ति । सहैवतत्वश्रद्धानरसास्वाद नेन वर्त्ततेइतिसास्वादनः घण्टालालान्यायेनप्रायः परित्यक्तसम्यक्त स्तदुत्तरकालषडवलिकस्तथाचोक्तं । उवसमसम्मत्ताउवयउमित्थअपावपाणस्स । सासायण सम्मत्तं तदतरालंमिच्छवलियति । सास्वादनयासौसम्यग्दृष्टिश्चेतिविगृहः सम्मामिच्छदिठ्ठित्ति सम्यक्तमिथ्याचदृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुदितदर्शनमोहनी

दसवत्थू प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स चउद्दसमणसाहस्सिउ उक्कोसियासमणसंपया होत्था कम्मवि सोहिमग्गणं पडुच्चचउद्दसजीवठाणा प० तं० मित्थदिठी सासायणसम्मदिठी सम्मामित्थदिठी अविरयस

लोकने बिंदुनोपरि अक्षरनोसार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकह्यो १४ । अग्रणीयबीजूपूर्वजाणिवु तेहना चौदवस्तु भागविशेषभूलावस्तुनीतिकह्या। श्रम णतपस्वीभगवत ज्ञानवंत श्रीमहावीरने चौदश्रमणयतीनासहस्त्र एतले सहस्त्रपतीनी उत्कृष्टी साधुनी सपदाऋद्धिहुई । ज्ञानावरणीयादिकर्म विशोधि गवेषणा पडुच्च आश्रीने चौद जीवनास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेछे । मिथ्याविपरीतछे दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १ ।-थोडोतत्व श्रद्धानरूपरसास्वादेंकरी सहितवर्त्ते तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजोगुणठान २ । सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीछे ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांइकसम्यक्त रुचि कांइक मिथ्यात्वें रुचिएतले मिश्रगुणठाणूंत्रीजूं ३ । अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठाण ४ । विरताविरतिश्रावक ५ प्रमत्तसंयती

जीवीभावप्राणधारणमभरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयत इति जीवदयोजीवैपुखा दयायस्य सजीवदयोऽतस्तेन इदंचानंतरोक्तं विशेषणकदंवकं भगवतोधर्ममयस्तत्वात् संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्यविशेषणपंचकेनाह धर्मस्तुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जंतुधारणस्वभावदयतेददातीतिधर्मदयस्तेन तद्दानचास्यतद्देशनादेवेत्यतो आह धर्ममुक्तलक्षण देशयति कथयतीति धर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वचास्य धर्मस्वामित्वेसति नपुनर्यथानटस्येतिदर्शयन्नाह धर्मस्यचायिकज्ञानदर्शनचारित्रात्मकस्यनायकः स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकस्तेन तथाधर्मस्यसारथिर्द्धर्मसारथिः यथारथस्यसारथी रथरथिक मश्वांश्वरचति एवंभगवांश्चारित्रधर्मांगानांसंयमा श्रप्रवचनाख्यानां रचणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवतीति तेनधर्मसारथिना तथात्रयः समुद्रा चतुर्थे हिमवान् एतेचत्वारः अताः पृथिव्याःपर्यन्तास्तेषु स्वामितयाभवतीति चातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीच चातुरंतचक्रवर्त्ती वरश्चासौचातुरंतचक्रवर्त्तीचेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथाहि पृथिव्यांशेषराजातिशायी वरचातुरंतचक्रवर्त्ती भवति तथाभगवान्धर्मविषये शेषप्रणेतॄणांमध्ये सातिशयत्वात्तथो

जीवदएणं वोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं

नादातारतेणेकह्यो धर्मोपदेसनाकहणहारतेणे धर्मनानायकअधिकारीतेणे धर्मनासारथीभूलाप्राणीनेमार्गेआणेतेणे च्यारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणेकरीचक्रवर्त्तिसरीखात्रिभुवननीराज्यपालेतेणे द्वीपनीपरेंसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकसंसारतेहनिवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहतअरखलित

५ यस्तुतेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरौद्रत्वादुपरौद्रइति ६ कालेत्ति यःकंड्वादिषुपचतिवर्णतः कालसकालः ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति प्रक्रमः सचश्लक्ष्णमांसानि खण्डयित्वाखादयति वर्णतश्चमहाकालइति असिपत्तेत्ति असिः खड्गस्तदाकारपत्रवद्वनविकुर्व्य ग्रस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र पातनेन तिलशश्छिनत्तिसोऽसिपत्रः ९ धणुत्ति योधनुर्विमुक्तार्धचन्द्राद्विबाणैः कर्णादीनां च्छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्तिय: कुंभादिषुतान् पचतिसकुंभः ११ वालुत्ति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तप्तासुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेत रणीत्तिचपरमाधार्मिकः सचपूयरुधिरत्रपुताम्रादिभिरतितापात्कलकलायमानैर्भृतां विरूपंतरणयोजनमस्यांते वैतरणीति यथार्थांनदीविकुर्वंस्तत्तारणेन कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्सरेत्ति योवज्रकण्टकाकुल शाल्मलीवृक्ष नारकमारोप्यखरस्वरं कुर्वंतंकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्वरेति १४ महाघोषेत्ति योभी

॥

ये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणाथकी रुद्र ५ । नारकीना आंगोपांग भाजेते अत्यंतरौद्र ६ । नारकीने कडाहीमां घालीने पचावे तेकाल ७ । महाकाल अपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममांसनां खंडकरीखाय वर्णेंकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृक्ष हेठें नारकीने वेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे विकुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकारी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी९ । तेहना धनुषथकी अर्धचंद्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे भेदे तेधनुषनाम १० । कुंभत्ति कुंभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुंभ ११ । कदंबपुष्पाकारें वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरी पचावे तेवा लुक १२ । वैतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरूतांबो महातप्त कलकलायमानेंभरी तेमांहि नारकीने बोलेंकदर्थे तेहवैतरणीनाम १३ । खरस्वरइति वज्रम य कांटासहित शाल्मलीवृक्ष विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चढावीनेताणे जिमकांटा उपरि लूगडूंनाखीने तांणी तेखरस्वर१४ महाघोषेति बीहता नासता

श्लोकस्य मज्झेलोगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिरित्यर्थः उत्तरयति भरतादीनामुत्तरदिग्वर्त्तित्वाद्यदाह सव्वेसिउत्तरोमेरुत्ति दिसाईयत्ति दिशामादि रित्यर्थः वडिसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सद्भावावतंस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयइत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब ल्योर्दक्षिणोत्तरयोरसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचवावली चचाभिधान राजधान्योर्मध्येऽवतारत्वाद्धपीठरूपेऽवतारिकालयने षोडशयोज नसहस्राण्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेषुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्द्ध गततस्यचोत्सेधवृद्धि षोडशसहस्राण्यऽतउ च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राण्युत्सेधपरिवृद्ध्या प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामानि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानकं तद्व्यक्तं

त्येअ सूरिआवत्ते सूरिआवरणेतिअ उत्तरेय दिसाइअ वडिंसेइअ सोलसमे पासस्सणंअरहतो पुरिसादाणी यस्स सोलससमणसाहस्सीओ उक्कोसीआणंसपदाहोत्था आयप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरवली ण उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेण प० लवणेणंसमुद्देसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

भरतादिकक्षेत्रथकी उत्तरदिशाछे तेमाटे उत्तरकह्यो १४। दिशानी आदिछेजेहथकी तेदिगादि १५। अवतंस सर्वपर्वतनो मुगटरूपछे एम १६ नामकह्या। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासोभागी तेहनेसोले श्रमण सहस्र उत्कृष्टोसाधुनी संपदाहुई जाणवी। आत्मप्रवादनूंपूर्व तेहना सोलह वस्तुकह्या। भगवंते अधिकार विशेषेकह्या। चमर चचावली चचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीकयन तेहअवासनी पीठीका सोलसहस्र योजनलांबपणे पिहुलपणेकह्यो। लवणसमुद्रथकी जगतीथकी पचाणूं सहस्रयोजनेईहांतिहां मध्यभागेदशमाले दससहस्र योजननेविषे नगरना गढनोपरि

षांतथामुक्तचेपि सर्वज्ञेनसर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायांदर्शनांतरा इतिमतपुरुषेणैवभाविजडत्वेन तथाशिवंसर्वाबाधारहितत्वात् अचलंस्वाभाविकप्रायोगिक चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाशं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत् सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतियस्मिन्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानंक्षीणकर्मणोजीवस्य स्वरूपंलोकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका ग्रस्याधेयधर्माणामाधारेप्यारोपादवसेयानि तदेवंभूतंस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहि निरभिलाषाएवभगवंतःकेवलिनो भवंति मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन भगवताइमेति इदंवक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नंद्वादशांगानियस्मिंस्तद्द्वादशांगं गणिनआचार्यस्य पिटकमिवपिटकं गणिपिटकं यथाहिवालंजुकवाणिजक

सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

नोअंतनथी जेहनोक्षयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीजपराठोआविवोनथी सिद्धिगतिएहवो जेहनोनामधेयछे एहवेठामे मोक्षेंजाइवानीवांछा करेछेतेणेमहावीरेंएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहियेआचार्यतेहनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

॥ वीइमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयआयुर्दलिकविच्युतिलक्षणाअवस्था यस्मिं स्तदावीचि अथवावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीची दीर्घत्वंतुप्राकृतत्वात्तदे वभूतंमरणंऽवीचिमरण प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचेटनलक्षणं तथा अवधिर्मर्यादा तेनमरण मवधिमरण यानिहि नारकादिभवनिबंधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्द्रव्यापेक्षया पुनस्तद्ग्रहणावधिं यावज्जीवस्य मृतत्वादिति तथा आयंतियमरणेति आ त्यंतिकमरण यानिनारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्द्रव्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दात्यंति कमिति बलायमरणेत्ति संयमयोगेभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीना व्रतिनांमरणं बलात्मरणं। तथा वशेनेन्द्रियविषयपारतंत्र्येण मृताबाधितावशार्त्ताः स्नि ग्धदीपकलिकावलोकना शलभवत तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदं यस्य सोंतःशल्योभिमानादिभिरनालोचितातीचार स्तस्यमरणमंतः शल्यमरण तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जतुस्तद्भवयोग्य मेवायुर्बद्ध्वापुनः तत् क्षयेनम्रियमाणस्ययद्भवति तत्तद्भवमरणमेतच्चतिर्यङ् मनुष्याणामेव तदेवनारकाणा तेषां तेष्वेवोत्पादाभावादिति तथाबालाइव बालाअविरता स्तेषां मरण बालमरणं तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषामरणं पंडितमरण बालपंडि

आवीइमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडि

युभवने बंधनकार्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यतिक मरण तेजेनरकानुंपूरूं आउखुं भोगवीओवलतो फरीने बीजेभवें तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम रेते बलातमरण ४। पतगादिकनी परीइन्द्रियनेवशें मरेतेवशार्तमरण ५। अपराधअणालोई मरेतेअंतःशल्यमरण ६। जेआउखुंभोगवी मरेवलीउपराठो जी जेभवेतेहीजआवे जिगमनुष्यतिर्यंच पोतानूं आउखुं भोगवीकरी वलीबीजेभवेतेहीजमूं आउखुंपामे ७। अविरतीनूं मरणतेबालमरण ८। सर्वविरतीयतीन

स्यापिपिटकं सर्वस्वाधारभूतंभवतिएवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्वाधारकल्पं भवति इतिभावः अप्रशस्तं तीर्थकरनामकर्मोदय वर्तितयाप्रायः कृतार्थेनापिपरोपकारायप्रकाशितंतद्यथेत्युदाहरणोपदर्शनेआचारइत्यादि द्वादशपदानि वक्ष्यमाणानि निर्वचनानीतिकंठ्यानि तद्यथाति तत्रद्वादशांगेण

आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइदसाओ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्ननोआधारछे कह्योछे तेकहेछे आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमांहिसाधुनोआचारपामीये । बीजुंसूत्रकृतांग जेहमांहिस्वसमयपरसमयनी वक्तव्यतापामीये २ त्रीजुंस्थानांग तेमांहिएकथकीमाडीदसलगेंसख्यानादसअध्ययनछे ३ । चोथोसमवायांगजिहांएकथकीमाडीकोडाकोडिनीसख्या ४ पांचमोविवाहप्रज्ञप्तीजेहमांहिछत्रीससहस्रप्रश्नपामीयेएतलेभगवतीसूत्र ५ छठ्ठोज्ञाताधर्मकथांगजिहां १९ न्यायअनेअजठकोडिधर्मकथाएछठो ६ सातमोउपासकदशांगउपाशकश्रावकतेहनादशअध्ययनछे ७ आठमोअंतकृतदशांगजेथेयतीएससारनोअंतकीधोतेहनाआठवर्गजेमांहिछे नवमोअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेहयतीअनुत्तरविमांनेजपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ९ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमांहिअगुष्टादिकप्रश्ननोअधिकारहुंतोहिवडांपाचआश्रवपांचसंवरद्वारइम १० अध्ययनछे १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाकछेएतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीयाअध्ययनछे ११ बारमोदृष्टिवादते १४ पूर्वएक

सेत्यादिसाडंरूपकद्वयमिदंच षष्ठांगाधिगमावसेयमिति। तथा जंबुद्दीवेणं इत्यादीभावनात्वयः स्वस्थानादुपरियोजन शतंतपतोऽधश्चाष्टादश शतानि। तत्रच समभूतलेऽष्टौभवंति दशचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निम्नीभवत्क्षेत्रमंतिमविजयद्वयस्यदेशे अधोलोकदेशेसहस्रमिति द्वीपांतरसूर्या सूर्यंशतमधोष्टशतानि चेत्रस्यसमत्वादिति तथा शुक्रमूत्रेनक्षत्ताइति विभक्तिपरिणामात्रचत्रैः समंसहचारंचरणं चरित्वायिथेयेइति तथाकलाश्चेत्ति पं

तलीइच्छ नंदिफले छवरकंका छाइसे सुंसमाइच्छ छवरेच्छ पोंमरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्दीवेणंदीवे सूरिच्छा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उड्ढंमहातवयइ सुक्केणंमहग्गहेच्छवरेणं उइच्छसमणे एकूणवीसंणक्खत्ताइं स मंचारंचरित्ता छवरेणं छत्थमणं उवागच्छइ जंबूद्दीवस्सणंदीवस्स कलाउ एगूणवीसंछेच्छणाउ प० एगूणवीसं

राजधानीनी द्रुपदीनो १६। सतरमो आकीर्णघोडानो १७। अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८। अपरअनेरो पुंडरीक कुडरीकनो न्यायउगणीसमो १९ जंबूद्दीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो इगुणवीस योजणसत उपरिहेठि मिलीनेतपे एतले पोतानाविमानथी एकसोयोजन ऊंचोतपे प्रकाशे अनेसमेभूतलेगढ़ आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे छेहली विजयछे जिहां तिहां मेरुनी अपेचा एकसहस्रयोजन भुंईऊंडीछे तिहा प्रकाशे एतले एक सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे। शुक्रमहाग्रह पश्चिमदिसे ऊगोथको उगणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकरीने पश्चिमदिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्दीपद्दीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतलें भरतक्षेत्र ५२६ योजन अनेंउपरि छकलातेह एकयोजनना १९ छेदनाभा

मि यज्ञंकारे यत्तच्चतुर्थमंगं समवायइत्याख्यातं। तस्यायमर्थः आमादिरभिधेयोभवतीतिगम्यतेतत्थ्येतिवाचनांतरद्वितीयसंबंधात्सूत्रव्याख्येति । इहचविदु

षाम्पदार्थमभिदधता सक्रमेणवासा वभिधातव्यइति व्याख्येयस्तत्राचार्यःएकत्वादिसंख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकामआदावेकत्वविशिष्टानात्मनश्चसर्वपदार्थाभा

जकत्वेनप्रधानत्वादात्मादीन्सर्वस्यवस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिःसूत्रैराह स्थानांगेएकार्थानिप्रायस्तथापिकिंचिदुच्यते

एकआत्माकथंचिदितिगम्यते इदंचसर्वसूत्रेष्वनुगमनीय तत्रप्रदेशार्थतयाअसंख्यातप्रदेशोपिजीवद्रव्यर्थतया एकः अथवातिचण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपो

त्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना सग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्ष

येकत्वमामनइति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष

तत्थणं जेसेचउत्थेअंगे समवाएत्तिआहिते तस्सणंअयमट्ठे पं० तंजहा एगेआयां एगेअणाया

अंगएद्वादशांगीतेद्वादशांगीमांहिजेहतेह चोथोअगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगसरीखोअंग समवायांगसूत्र आहियेकह्योसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि-

कपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहिये अर्थाधिकारसूत्रेकहेतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनोभोक्ताआत्माछेतेमांटेप्रधानपणाथकीआत्माप्रथम

अवतस्योचेतनावंतआत्माकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजोवअनंताछेपरंषट्द्रव्यनोअपेक्षाएजोवद्रव्यएकजकहोयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअ

र्थकहियेछे १ तेअनुक्रमेकहेछे एकआत्माजोवसामान्यप्रकारेएकपणोएमसर्वत्र एकअनात्माजोवरहितघटादिकपदार्थ एकदंडभूंडोव्यापारवोयोगत्रणिनोतेदंड

कार: ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैषेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमिः १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसतिः संस्तारकोवा ११ आक्रो
शोदुर्वचनं १२ बधोयष्ट्यादिताडन १३ याञ्चाभिचण तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ तृणस्पर्शः संस्तारकाभावे तृणेषुशयानस्य १७ ज
ल्लःशरीरवस्त्रादिमल' १८ सत्कारपुरस्कारौ चवस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करणं सन्मानन सत्कारपुरस्कारः १९ ज्ञानंसामान्येनम
त्यादि क्वचिदज्ञानमितिश्रूयते २० दर्शनंसम्यग्दर्शनंसहनचास्यक्रियादिवादिना विवर्जनतः अमणेपिनिश्चलचित्ततयाधारण २१ प्रज्ञास्वयंविमर्शपूर्वको वस्तुप
रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादशांगःसचपचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ सेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरीसहे दंसणपरीसहे दिठिवायस्सणंबावीससुत्ताइं छेन्नछेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं

नोज्ञ तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा सथारानो परीसह ११ । अक्रोध वा दुर्वचनपरीसह १२ । वधयष्ठ्यादिकें ताडवो तेहनोपरीसह १३ । याचनाभिचानो
मागिवो तेपरीसह १४ । अहारादिकनो अपाप्ति तेपरीसह १५ । रोगमदवाड तेहनोपरीसह १६ । सथारासबधी तृणतेनोपरीसह १७ । जल्लशरीर वस्त्रा
दिकनोमल तेहनो परीसह १८ । सत्कार तेवस्त्रादिकनो पूजाजठी अभोथाइवो तेणेकरी पुरस्कार सन्मान तेहनोपरीसह १९ । प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह
नोपरीसह २० । ज्ञानमतिश्रुत तेनही तेअज्ञानपरीसह २१ । दसणतेसम्यक्त तेहथकी जेचलवो तेदसणपरीसह २२ । दृष्टिवाद बारमो अंगतेहना पांचभेद

यापि तुल्यरूपापेक्षयात् अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिन्निन्नस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदंडोदुःप्र युक्तमनोवाकायलक्षणे हिंसामात्रं एकत्ववास्यसामान्यतयोद्दिष्टादेवं सर्वत्रैकत्वमवसेयं तथा एकोऽदंडः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्रं वा तथाएकाक्रियाकायि क्यादिका आस्तिक्यमात्रंवा तथा एकाअक्रिया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वंवा तथा एकोलोक स्त्रिविधोप्यसंख्येयप्रदेशोपिवा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलो कोऽनंतप्रदेशोपिद्रव्यार्थतया अथचैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेनपरेसूत्रेअभ्युपगम्यंतेच केचिद्द्वयोलोकाअतस्तद्विलक्षणाअलोकाअपितावंतएवेति एवंसर्वत्र गमनिकाकार्या। नवरंधर्मोधर्मास्तिकायः अधर्मोऽधर्मास्तिकायः पुण्यंशुभंकर्म पापमशुभंकर्म बंधोजीवस्यकर्मपुद्गलसंश्लेषः सचैकः सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्य वच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादनेनोद्देशेन मोक्षाश्रयसंवरवेदनानिर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति इहचानात्मग्रहणेन सर्वेषामनुपयोगवतामेकत्वं प्रज्ञाप्यपुन

एगेदंडेएगेअदंडे एगाकिरिया एगाअकिरिया एगेलोए एगेअलोए एगेधम्मे एगे पुण्णे एगेपावे एगेबंधे एगेमोक्खे एगेआसवे एगेसंवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

एकअदंडभलामनोप्रभृतियोगत्रणि एकक्रियाकरिवोतेक्रियाकायिक्यादि एकअक्रियायोगविरोधलक्षण एकलोकयद्यपित्रणिलोकछेपरंद्रव्यार्थपणेएक एकअ लोकपंचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म्म एकपापअशुभकर्म्म एकबंधजीवनेअने कर्मपुद्गलनेजो डिवो एकमोक्षसर्वकर्म्मबंधथकीमूंकावणो एकआश्रवकर्मबंधनोउपाय । एकसंवरकर्म्मबंधनाउपायनोनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकालेभोग

न्यायेनमोणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाचिन्त्यन्ते यानिनयद्विकत्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते त्रैराशिकसूत्रपाट्या इहत्रैराशिकागो शालकमतानुसारिणोऽभिधीयंते यस्मात्तसर्वंत्र्यात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवोजीवाजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचिंतायामपि ते त्रिविधनयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिकः उभयास्तिकश्चेति एतदेवनयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथाचउक्कनइयाइंति नयचतुष्का भिप्रायात्तेचिंत्यंतेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कंचैव नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राहीच तत्रयः सामान्यग्राहीससंगृहेऽतर्भूतो विशेषग्राहीतुव्यवहारे तदेवसंगृहव्यवहार ऋजुसूत्राः शब्दादिनयचैकएवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामण्वादीनांपरिणामोधर्मः पुद्गलपरिणामः सच पंचवर्णगंधद्वयरसपंचकस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुइति भेदद्वययोगाद्द्वाविंशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्यं यत्तिर्यग्गामवाय्वादिः अगुरुल

बावीसंसुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाडीए बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवण्णपरिणामे नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किलवण्णपरिणामे सुब्भिगंधपरि

सूत्रपरिपाटीएछे। जिम नयचिंतानेविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक २ लोकालोक ३ एहवा ३ छे। राशीना बावीससूत्रछे । बावीससूत्र चतुष्कनयवंतकह्या नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रका २२ सूत्र स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेछे। बावीसभेदें पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेछे। कालवर्णकरी परिणतथाय तेकालवर्णपरिणाम १। एमजनीलवर्ण परिणाम २। लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३ । हालिद्रपीतवर्णपरिणाम ४। शुक्लश्वेतवर्णपरिणा

लोंकादितयाएकत्वप्ररूपण तत्सामान्यविशेषोपेतमवगंतव्यमिति एवंचात्मादीनां सकलशास्त्रप्रपंच्यानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायाधुनात्मानात्मपरिणा मरूपाणामर्थानांतदेवाह जंबूद्दत्यादिसूत्रसप्तकमाश्रयविशेषाणां तथा इमीसेरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाश्रयिणांस्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोधं नवरं जंबुद्दिवेदीवे इहसूत्रेआयामविक्खंभेणंतिक्वचित्पाठोदृश्यते क्वचित्तुचक्कवालविक्खंभेणंति तत्र प्रथमःसंभवत्यचापि तथाश्रवणात्सुगमश्च द्वितीयस्त्वेवंव्याख्ये यचक्कवालविक्खंभेणवृत्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेयं यदाह आयंगुलेणवत्थुं उस्सेहपमाणओमिणसुदेहं नगपुढविविमाणाइं मिणसुपमाणंगुलेणंतु ॥ १ ॥ तथा पालकंयानविमानं सौधर्मेंद्रसंबंध्यपि आभियोगिकपालकाभिधान देवकृतं वैक्रियं यानंगमनंतदर्थंविमानं यायतेऽनेनेतियानं तदेवविमानं यानविमा

जंबुद्दीवेदीवे एगंजोयणसयहस्सं आयामविक्खंभेणंपन्नत्ते अप्पइठाणे नरएएगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पं० पालए जाणविमाणे

विजो एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेशथोकर्मपुद्गलनूवेगलूंकरिवो एजंबूद्वीपसकलद्वीपमांहिमुख्यद्वीप एकयोजनशतसहस्रएतले। एकलाखयोजनप्रमाणांगुले। लांबपणे अनेपिहुलपणेकह्योतीर्थंकरे । सातमीनरकपृथिवीये पांचनरकावासाछे तेमाहिविचलो अपइठाणनामनरकावासोएकयोजनशतसहस्रएतलेएक लाखयोजन लांबपणेअनें पिहुलपणेकह्यो । पालकयांनविमानसौधर्म्मेंद्रसंबंधिअभियोगीदेवताएनोपजाविओगमननेअर्थेते एकलाखयोजनजाणवो लां बपणेअनेपिहुलपणेकह्योछे पंचानुत्तरविमानमांहिविचलोसर्वार्थसिद्धनामेविमानछेतेमांहिएकाभयतारीजीवउपजेतेमांटे महाविमानकहियेतेएकलाखयो

घुर्यः स्थिरंसिद्धचेत्घण्टाकारव्यवस्थितो ज्योतिष्कविमानादीनि । तथामहितादीनिषट्विमानानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानकं सुगममेवनवरं

कप्पेसु ऋत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं पलिउवमाइ ठिई प० ऋच्चुते कप्पेदेवाणं बावीससागरोवमाइं ठिई प० हेठिमहेठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महित्तं विसूहित्तं विमल पन्नासं वणमालं ऋच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं बावीसाएऋद्धमासाणं ऋाणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं बावीसं वाससहस्सेहिं ऋाहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेबावीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं ऋंतंकरिस्संति ॥ २२ ॥

केतलाएकदेवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो। अच्युतबारमेलोकेदे वतानोउत्कृष्टोबावीस सागरोपमआउखोकह्यो नवग्रैवेयकमाहिसगलाहेठिलोग्रैवेयक एतलेपहिलेग्रैवेयकना देवतानोजघन्य बावीससागरोपम आउखोकह्यो । बारमेदेवलोके जेदेवता महित १ । विश्रुत २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५ अच्युतावतंसक ६ । एछविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो बावीससागरोपम स्थितिकही । तेहदेवताबावीस अर्धमासेपखवाडे स्वासोस्वास घणोले नीचोमूंके तेहदेवतानो बावीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीवजे बावीसभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बावीसमो ठाणूंसमाप्तम् ॥ २२ ॥ हिवेतेवीसमोसमवायलिखियेछे । तेवीससूत्रकृतांगबीजूंअंग तेहना अध्य

नं पारियानिकमितियदुच्यते अथीत्यादि अस्तिविद्यते ऐकेषांचिन्नैरयिकाणा मेकपल्योपमं स्थिति रितिकलाप्रश्नमाप्रवेदितामया अन्यैश्चजिनैः साचचतुर्थप्र ॥

गेएजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० सव्वठसिद्धेमहाविमाणेएगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० अद्दानक्खत्तेएगतारे प० चित्तानक्खत्तेएगतारे प० सातिनक्खत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं एगंपलिउवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए नेरइआण उक्कोसेणएगंसागरोवमंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगसागरोवमठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणएगसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥

जनलांबपणेंअनेपिहुलपणेंकह्यो। आर्द्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे । चित्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे। स्वातिनक्षत्रनोएकतारोकह्यो । एहतेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकपल्योपमस्थितिआउखोभगवतेकह्यो छे । एणीयेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीने नारकीयांनो उत्कृष्टोए-कसागरोपमस्थितिआउखोकह्योछेभगवते बीजोयेनरकपृथवीने नारकीयांनोजघन्यपणे एकसागरोपमस्थितिआउखोकह्यो अनंतज्ञानवतेअसुरकुमारभवनपतीप्रथमनिकायना देवताने केतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्योभगवते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोभाभेरोएक सागरोपमस्थितिआउखो

तित्थंकरा पुव्वे मंडलिरायाणो होत्था तं० अजितसंभव अभिणंदण जावपासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीस पलिओवमाइं ठिई प० हेट्ठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणंसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीस सागरोवमाइं

गनापारगामीहुया । तेकहेछे । अजित १ । संभव २ । अभिनंदन ३ । सुमति ४ । जावत्शब्दें पार्श्वनाथ छेहडे वर्धमानस्वामीलगें ऋषभनाथआदिअरिहन्त कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें त्रेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मंडलीक राजाहुया ते कहेछे । अजितनाथ संभव अभिनंदन यावत् वर्धमानस्वामीलगे ऋषभ अरिहंत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिहुया । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनीतेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठेसातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । सोधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिममध्यम ग्रैवेयके एतले बीजे ग्रैवेयके देवतानो जघन्यतिवीससागरोपम आउखोकह्यो जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रैवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृ

॥

स्तटे मध्यमावसेयेति एवमेकंसागरोपमं त्रयोदशेप्रस्तटेउत्कृष्टास्थितिरिति असुरिन्दवज्जियाणतिचमरवलिवर्जितानां भोमेज्जाणंति भवनवासिनांभूमीपृथि
व्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवलात्तेषामिति तेषांचेकंपल्योपमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्वेपल्योपमे साम्राहच दाहिणदिवढ्ढपलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाणं
ति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानिवर्षाण्यायुर्येषांते तथा तेचतेसंज्ञिनश्चसमनस्कास्तेचते पंचेद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेत्यसंख्येयवर्षायुः सज्ञिपचेंद्रियतिर्यग्योनिका
स्तेषांकेषांचिदेवैमवतैरण्यवतवर्षयो रुत्पन्ना स्तेषा मेकंपल्योपमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गर्भेगर्भाश्रयेव्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांतेगर्भव्युत्क्रांतिका नसमूर्च्छन

असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणंदेवाणंअत्थेगइआणं एगंपलिओवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगंपलिओवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंति यमणुयाणं अत्थेगइयाणंएगंपलिओवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणंएगंपलिओवमंठिई प० ।

कह्यो असुरकुमारेंद्रचमरेन्द्रवलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानो एकेकनोकेतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआजखोकह्यो । असंख्यातावर्षनाआउखानासन्नी
गर्भजपंचेद्रियतिर्यंचनोएतलेहेमवंतऐरण्यवंतयुगलचे मनागर्भजतिर्यंचनोयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्यंचनो आजषोउत्कृष्टोजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुंस
कगर्भजमनुष्यनूंआजषूंपूर्वकोडिनूंपणिकह्योछेतेमाटे अत्थेगइयाणपाठमह्योकेतलाएकनूंएकपल्योपमस्थितिआजखोकह्यो। असंख्यातायर्षनाआजखानोगर्भज

वर्षाणांवर्षधराणां न्टद्दिसीमाजीवोच्यते आरोपितज्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्चलघुहिमवच्छिखरिसत्कयोः प्रमाणं २४ ८ ३२ । अष्टत्रिंशप्रागशयोजनस्य कि विद्विशेषाधिकाः अत्र गाथा चउवीससहस्साइं नवयसएजोयणाणबत्तीसे चुल्लहिमवतजीवा आयामेणकलतंचत्ति ॥ १ ॥ कलार्द्धमितिएकोनविंशतिभागस्यार्द्धं तथाष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिर्देवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनांअष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्काना एककल्पोपपन्न वैमानिकानां एवंचतुर्विंशतिः सेंद्राणिचमरेंद्रादाधिष्ठितानिशेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्राथेषुतान्यहमिंद्राणि प्रत्यासेंद्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिंद्राणि अवि द्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशांतिकर्मकारीणि उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगत सर्वाभ्यतरमण्डल प्रविष्टः सूर्यःकर्कसंक्रांतिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यगुलिकांपौरुषीं प्रहरेभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते निर्वर्त्यकृत्वा णवाक्यालका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ चउव्वीस चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णवबत्तीसे जोयणस ए एगं अठत्तीसइभागंजोयणस्स किंचिविसेसाहिआउ आयामेणं प० चउवीसंदेवठाणासइंदिया प० से

२४ । मेरुथकी तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमाहि छेहल्यो लघुहिमवंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहिछेहल्योशिखरिए निहुवर्षधरपर्वतनी जीवाचेननी अने वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४९३२ योजन नवसे बत्तीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अडीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला कांईक विशेषाधिक लांबपणीकही । चौबीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर २७ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेंद्र

जाइत्यर्थः वाणमंतराणंदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीना तासामर्द्धपल्योपमस्यप्रतिपादितत्वात्जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवाना न सूर्यादिदेवाना नापिचन्द्रादिदेवीनां पलियंचसयसहस्सं चन्दाणविग्राउजाणी प्रतिवचनात् सोहम्मेकप्पेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताःसौधर्मेहिपल्योपमाजीनत राश्चितिर्जघन्यतोपिनास्ति प्रथमप्रस्तटेऽपरीया सोहम्मेकप्पे अत्थेगइयाण देवाणएगसागरोवममित्यत्र देवानामेवग्रहण नतुदेवोनांउत्कृष्टतोपितत्रतासां पचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वात् तथा एवंसागरोपममितिमध्यमस्थित्यपेक्षया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसद्भावात् प्रस्तटापेक्षयास्तेषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यमावसे

जोइसियाणं देवाणंउक्कोसेणं एगंपलिउवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई प०। सोहम्मेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं एगंपलिउवमंठिई प०। सोहम्मेकप्पे देवाणंअत्थेगइयाणं एगंसागरोवमठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं जह

संज्ञीपचेन्द्रियमाणसनूंएतलेहिमवंतऐरण्यवतक्षेत्रसंबंधीयुगलियांमाणसनोकेतलाएकनोपल्योपमस्थितिआउषूंकह्योभगवंतेयांणव्यतरदेवनो उत्कृष्टोएकपल्यो पम जघन्य १० सहस्रवरसनोकह्योजोतिषीचंद्रमाविमांनवासीदेवतानोउत्कृष्टोएकपल्योपमएकवर्षलाखेअधिकएवडोस्थितिकहीतीर्थंकरदेवे। सौधर्मेप्रथम देवलोकेदेवनो जघन्यएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो सौधर्मदेवलोकेदेवतानोकेतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआउषो देवीनोसागरोपमनकहिवोउत्कृ ष्टोपचासपल्योपमकह्यो ईशानबीजेदेवलोके देवनीजघन्यभाभेरी एकपल्योपमएवडोस्थितअनंतज्ञानीये कह्यो ईशानेदेवलोके देवनोकेतलाएकनो एकसाग

निर्गमद्दहसभाव्यते नपुनर्यद्दत्यत्रप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रंहि जंबूद्दीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥

णं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा हेठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेण देवा चउवीसाए अद्धमासाण आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहि आहारठेसमुप्पज्जई संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति वुज्झिस्सति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ २४ ॥ पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पचजामस्सपणवीस भावणाओ प० तं० इरिआसमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

कह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो चौवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठिम उपरिल ग्रैवेयक तेवीजूं ग्रैवेयक तिहाना देवतानो जघन्यो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता चौवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारिबोलकरे तेहदेवताने चउवीसवर्ष सहस्र आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेचौवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मकास्ये सर्वदुःखनो अतकरस्ये मोक्षजास्ये॥ इति चौवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिवे पचीसमो समवाय लिखियेछे। पहिला श्रीआदिनाथनेवारे छेहल्या महावीर तीर्थंकरनेवारे यतीना पचमहाव्रतनी पचवीस भावनाकही महाव्रतराखिवानाउपाय तिहा पहिला महा

या। ईसाणेकप्पेदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेनदेवादेव्ययगृह्यंते यतस्तत्रसातिरेकपल्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिरेवनास्ति ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणमित्यत्रदे वानामेवग्रहणंनदेवीनां तत्रतासामुत्कर्षतोपिपंचपंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमणुंमाणु षोत्तरं लोकहित मित्यत्रकारोद्रष्टव्यः ससमुच्चयस्यद्योतनीयत्वाद्विमान देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानिचविमानानि सप्तमप्रस्तटेवसेयानिस्थित्यनु सारेणच देवानामुच्छ्वासादयो भवंति तान्दर्शयन्नाह तेणमित्यादि येषांदेवानामेकंसागरोपमस्थिति स्तेदेवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इतिशेषःआनंति प्राणंति एतदेवक्रमेणव्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंतिनिःश्वसंति वाशब्दोविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्षसहस्रस्यान्त इतिशेषआहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

त्तेणंसाइरेगंएगंपलिउवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। जेदेवासागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणंउक्कोसेणंएगंसाग

रोपमनीस्थितकही। ईशान देवलोके सातमेप्रतरेंजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणेंविमांणे देवतपणेजपनाछे। ते देवतानी उत्कृष्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवताएकअर्द्धमासेएतलेएकणिपखवाडे आणमंतिथोडोस्वासलै पाणमंतिघणो लेआणमंतिप्राणमंतिएहअंतवृत्तिस्वासउसस्संतिनीससंतिएहवाह्यवृत्तिकेइकआचार्यएमकहेछे जेदेवतानेजेतलासागरोपमआजखोतेहनेतेतलेपखवाडेसासो

छकप्पस्स दसववहारस्स अभवसिद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छवीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं०
मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हास अरति रति भयं सोगं दुगंछा इमी
सेण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं छवीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अ
त्थेगइयाणं नेरइयाण छवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाणं छवीसपलिओव
माइ ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं छवीसपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्ज
याणं देवाणं जहन्नेणं छवीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देशन कालथया। जेहने अनादि अनत अभव्यपणो सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्यसिउ कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चौथो तेहनोमूल २८ प्र
कृतिछे तेमांहि अभव्यजीवने त्रिपुंजी करणतो आवरे छवीसकर्मना अग्रकर्मनी प्रकृति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेछे। मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसोले कषाय
अनतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानीय ४ सज्वलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनी भेलतां १७। प्रकृति
स्त्रीवेद १८। पुरुषवेद १९। नपुसकवेद २०। हास्य २१। अरति २२। रति २३ भय। २४। शोक २५। दुगछा २६। एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक
नारकीनो छव्वीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठीयें सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानो
२६ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानें केतलाएक देवनो २६ पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यम २ ग्रैवेयके एतले पाचमे ग्रवेयके देवतानो जघन्य २६

लानांग्रहणमाभोगतोभवति अनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतीति गाथेह जस्सजइसागरोवमा ठिइतस्सतत्तिएहिंपक्खेहिं जसासो देवाणंवा ससहस्सेहिंआहारोत्ति संतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिद्धियत्ति भवा भाविनीसिद्धिर्मुक्तिर्येषांते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्यमनुष्यजन्मनो ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यति अष्टविधमहर्द्धिप्राप्त्याभोत्स्यते केवलज्ञानेनतत्वं मोक्ष्यंतेकर्मराशेःपरिनिर्वास्यंति कर्मकृतविकाररहाच्छीतीभविष्यन्ति किं मुक्तंभवतिसर्वदुःखानामंतकरिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाश्रयणादेकतया वस्तून्यभिधायाधुना विशेषमप्याश्रयणाद्द्विविनाह दोदंडेत्यादि सुगममाहि

रोवमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सऋद्धमासस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणंएगस्सवाससहस्स आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंभवग्गहणेणं सिज्झिस्सं ति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंडापन्नत्ता तं०

सासकहे तेतले सहस्रेवर्षे आहारनीइच्छाजपजे । ऊंचोस्वास ते उत्स्वास नीचोमेल्हिवोतेनीसास तेहदेवने एकसहस्रवर्षे आहारनोअर्थजपजे । संतेकह तांछिएकेकभवसिद्धियाकहतांभाविनीछोणारीछे ढूंकडीसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभव्यजीव ससारमांहितेहलघुकर्मीएकभवनेआंतरेसीझस्ये ज्ञातार्थथास्ये बूझ स्ये केवलज्ञानेकरीसकलससारनांपरमार्थजाणिस्ये कर्मकोधोविकारतेहनारहितपणाथकीठाढाथास्ये । सकलशारीरीदुःखनोमानसीदुःखनोअंतकरिस्यें-एतलेरकठाणीकहियो ॥ १ ॥ हिवेबीजोअधिकारकहेछेबेदंडकह्या भगवतेजेणेकरीपरनाप्राणदडीयेहणीयेतेदडकह्यो तेकहेछे अर्थदड तेआत्मानेअर्थे पर

उयरउत्ति प्राकृतत्वादुद्दलकोवियोजकोजनुः तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मांशाः सत्तायामित्यर्थः एवास्योद्वलि तत्वादिति। तथाश्रावणमासस्य शुक्लसप्तम्यांसूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिकां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषीछायां निवर्त्य दिवसक्षेत्रविकारप्रकाशमाकाशनिव र्त्तयन् प्रकाशक्षान्याहानिनयन् रजनोक्षेत्रमंधकारावृतमाकाशमभिवर्द्धयन् प्रकाशहानिवृद्धिंनयन् चारंचरति व्योममण्डलेभ्रमणंकरोति अयमत्रभावार्थः इहर्णिलस्थूलन्यायमाश्रित्य आषाढ्यांचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीछायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायांगुलवर्द्धते ततश्रावणशुक्लसप्तम्यामंगुलत्रयवर्द्धते सातिरेकैकविंशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकैरंगुलैः सप्तसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रांतेरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं गुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताण दिवसखेत्तंनिवट्टमाणे रयणिखेत्तंअभिणिवड्ढमाणेचारंचरइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थे

मोहिनी मांहिथी। श्रावणसुदि सातमदिने सूर्य हस्तप्रमाणे त्रणनी छायायेनांपिण तेमांहि २७ अंगुलीये पोरसोनी छायाने निवर्तावी करीने दिवसनूंक्षेत्र सूर्यनोप्रकाश घटाडतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनीव्याप्त आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथको पोसीपुनिमलगे मासे मुहूर्त्तना ६१ भागकरी दिनरातिविभाग दिवसघटाडी रात्रिवधारे। एणीरत्नप्रभा पृथिवीमांहे केतलाएक नारकीनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो ठिए सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो

स्थानकसमाप्तेर्नंवरमिह दंडराशि बंधनार्थंसूत्राणांत्रयंनक्षत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंत्रयोदसकमुच्छ्वासाद्यर्थंत्रयमिति तत्रार्थेनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो हिसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांद्विपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटेमध्यमाद्वितीयायांद्विसागरोपमेस्थितिःषष्टप्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेबंधणे प० । तंजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुव्वाफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० । उत्तराफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० पुव्वाभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० उत्तराभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं दोपलिओवमांठिई प० । दुच्चाएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ

नेअर्थेआगलानाप्राणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणेंपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिश्चे वेराशिसमूहकह्यो तेकिसी कहेछे । जीवराशिजीवनासमूह अजीवराशि अजीवनासमूह बेप्रकारे बंधनकह्या तेकहेछे रागबंधण रागेकरीकर्मनोबंधपडे एमज द्वेषबंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनाबेताराकह्या भगवते उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रना बेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रतणा बितारा कह्या । उत्तराभाद्रपदनक्षत्रनाबेताराकह्या एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये केतलाएकनारकीनी चोथेपाथडे बेपल्योपमस्थितआजघूंमध्यमकह्यो बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छट्ठेपाथडे बेसागरोपममध्यस्थितिआ

भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेट्ठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अ द्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

२८। तीर्थंकरनामकर्म २९। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनें २९ पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठें सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनें २९ सागरोपमनो आउखो कह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानें गुणत्रीस पल्योपमनो स्थितिकही। सौधर्म ईशानेंकल्पें केत लाएक देवतानें २९ पल्योपम आउखोकह्यो। उपरिम मध्यम ग्रैवेयकें एतले आठमें ग्रैवेयके देवतानी जघन्यतः २९ सागरोपमनी स्थितिकही। जेहदेव ता उपरिम हेठिम ग्रैवेयकें एतले सातमे विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी २९ सागरोपमनी स्थिति कही। तेहदेवताने २९ पखवाडे सासो सास च्यार प्रकारेंहोय। तेहदेवताने २९ सहस्र वर्षगए आहारनी इच्छा उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये स

ञ्चाणंदोपलिउवमाइंठिई प० ञ्चसुरिंदवज्जिञ्चाणं भोमिज्जाणंदेवाणं उक्कोसेणंदेसूणाइं दोपलिउवमाइंठिई प० ञ्चसंखिज्जवासाउयतिरिक्खजोणिञ्चाणं ञ्चत्थेगइञ्चाणं दोपलिउवमाइंठिई प० ञ्चसंखिज्जवासाउयसन्निमणुस्साणं ञ्चत्थेगइयाणंदोपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेञ्चत्थेगइञ्चाणंदेवाणं दोपलिउवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेञ्चत्थेगइयाणंदेवाणं दोपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेञ्चत्थेगइञ्चाणदेवाणं उक्कोसेणंदोसागरोवमाइठिई प० ईसाणेकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइठिई प० सणंकुमारेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेकप्पे देवाणं जहन्नेणं साहियाइंदोसागरोवमाइं ठिई प० ।

जषूं कह्यो । असुरकुमारभवनपतीदेवनो । केतलाएकनो बेपल्योपमनूं आउषो कह्यो । असुरेंद्रचमरेंद्र वलेंद्रटालीने वीजोभूमिसंवधि उत्तरदिशिनानागदेवतानो उत्कृष्टोकाईकोओछोबेपल्योपमनोआउषों कह्यो असख्यातावर्षना आउखाना गर्भजमानुष्यना एतले हरिवर्ष रम्यकक्षेत्रसंवधी युगलियामनुष्यनु केतलाएकनो बिल्योपमआउषो कहिउ सौधर्मे पहिलेदेवलोके केतलाएकदेवनो बिपल्योपममध्यमआउषो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके केतलाएक देवतानूं बिपल्योपमआउषोकह्यो । सौधर्मदेवलोकेदेवतानोउत्कृष्टो बेहुसागरोपमआउषो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके देवतानो उत्कृष्टोभाभेरो

तेषुवा अव्यक्तृत्वप्तिमगच्छत् आस्वादते अभिलषति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर णादीप्तिः यश'कीर्त्ति वर्ण' शुक्लादिः शरीरसबन्धी देवाना वैमानिकानाबलशारीर वीर्यंजीवप्रभवंअस्त्यत्यध्याहारः तेषामिह अपेगम्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अश्लाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोल्लापेन देवानामृद्धिर्देवानाद्युतिरित्यादिका काव्याख्येयं नकिंचिद्देवानामृद्ध्यादि कमस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः यएवभूतः समहामोह प्रकरोतीति एकोनत्रिंशत्तम २९ । अपश्यन्योब्रूतेपश्यामिदेवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्येवपूजाम र्थयतेयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोह प्रकरोतीति त्रिंशत्तम ३० । रौद्रादयोमुहूर्त्ताश्चादित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषाचमध्येमध्यमाः षट्

॥

ग्रहुवापारलोइए ॥ तेतिप्पयंतोत्र्यासयइ । महामोहपकुव्वइ ॥ ३२ ॥ इड्ढीजुईजसोवन्नो । देवाणंबलवी रिय ॥ तेसिंत्र्यवत्रवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३३ ॥ त्र्यपस्समाणोपस्सामि । देवेजक्खेयगुज्झगे ॥ त्र्यन्नाणी जिणपूयठी । महामोहपकुव्वइ ॥ ३४ ॥ थेरेणंमण्डियपुत्ते तीसंवासाइंसामन्नपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे ॥

देवतानो बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यचने व्यंतर विशेषने गुह्यकने अ नादरतो थको हुआदरछु एमकहे तेसरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहंतनी पूजानो अर्थीछे गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३० मोहनीय स्थानकह्या । स्थविर मण्डितपुत्र छठो गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीचा पालीने सिद्धथयो । कृतार्थथयो तत्वनो जाणकारथयो यावत्

रेंद्रवर्जितभवनवासिनांद्विदेशोनपल्योपमस्थितिरीदीच्यनागकुमारानामित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिल्लाणंति तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेंद्रियतिरिश्चांमनु
ष्याणांचहरिवर्षरम्यकवर्षजन्मनांद्विपल्योपमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अथत्रिस्थानकांतओद्दत्यादिसर्वंसुगमं नवरमिहदंडगुप्तिग्रलपगौरवविराधनार्थंसूत्राणां

जेदेवा सुभं सुभकंतं सुभवभं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा दोण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणदोहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ अत्थेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे दोहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति मुच्चिस्संति बुज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २ ॥

त्रिणसागरोपमआउषोकह्यो सनत्कुमार त्रीजेदेवलोकेदेवतानूं जघन्यबेसागरोपमआउषोकह्यो माहेंद्रचोथेदेवलोकेदेवतानो जघन्य त्रिसागरोपमझाझेरी-
आऊषानीस्थितिकहीसौधर्मेदेवलोकेतेरमेप्रतरेजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेश्य ५ शुभस्पर्श ६ सौधर्मावतंसक ७ एहसातवि
मानेदेवतापणेऊपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टी बेसागरोपमआऊषोकह्यो तेहदेवनेत्रिहुंअर्धमासेएतलेत्रिहुपखवाडे आणप्राणहुयेंआणथोडोस्वासप्राणतेघणोउ
त्स्वास उत्स्वासतेउंचोलेवोस्वास नीसासतेसासनीचो मेल्हिवो तेहदेवताने बिहुयें वर्षसहस्से तेहने आहारनोअर्थऊपजे आभोगप्पाहारस्ये संसारमाहिकेत
लाएकभवसिद्धीयाभव्यजीव जेबिहुयेभवग्रहणे बेभवनेआंतरेसीझस्ये ज्ञातार्थथास्ये तत्वनाजांणथास्ये कर्म्मबंधथकीमूंकास्येकर्म्मकृततापटालवाथकीठाढाथास्ये

कदाचिद्दिनेऽन्तर्भवंति कदाचिद्रात्राविति ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तमंस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिवोधिका

रसंति ॥ ३० ॥ एक्कतीसंसिद्धाइगुणा प० तंजहा खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे खीणे सुयणाणावरणे खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवनाणावरणे खीणे केवलनाणावरणे खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे खीणे निद्दा निद्दानिद्दा खीणे पयला पयलापयला खीणे थीणद्धी खीणे सायावेअणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे खीणे दंसणमो

रे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंत करिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति त्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३० ॥ हिवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे। एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांडी जपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहेछे। क्षीण थयोछे आभिनिवोधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्वथापि मतिज्ञानावरण क्षय गयो छे जेंहनो १। क्षीणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २। वली अवधिज्ञानावरण क्षय ३। मनःपर्यवज्ञानावरण क्षय ४। केवलज्ञानावरणक्षय ५। चक्षुदर्शनावरणक्षय ६। अचक्षुदर्शनावरणक्षय एतले आंखटाली बीजा च्यारइंद्रिय अचक्षु तेहना आवरणनो क्षय ७। अवधिदर्शनावरणक्षय ८। केवलदर्शनावरण क्षय ९। सुखेंजागे ते निद्रा तेहनोक्षय १०। दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनो क्षय ११। बैठांजभां आवे ते प्रचला तेहनोक्षय १२। चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला तेहनोक्षय १३। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बल तेहनोक्षय १४। सातावेदनीयकर्मक्षय १५। असातावेदनीयकर्मक्षय १६

पंचकं नवत्रार्थसप्तकं स्थित्यर्थंनवक मुच्छासाद्यर्थत्रयमिति । तत्र दंड्यतेचारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मेतिदंडादुःप्रयुक्तमनःप्रभृतयः मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडेनमनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनानिगुप्तयः मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्यानीवशल्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः सैवशल्यं मायाशल्यमित्यऽलकारे एवमितरेऽपि नवरंनिदानं देवादिरिद्धीनांदर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानान्ममैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शन मतत्त्वार्थश्रद्धानमिति तथा गौरवाणित्रभिमान

तउदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे । तउगुत्तीउ प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । तउसल्ला प० तं० मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिस्ये एतले बीजोठाणो पूरोथयो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तीजोठाणो कहेछे । तीनदंडकह्या जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्ररूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनेकरी आत्मादंडीये असारकरीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंड ३ एमणिहमज २ त्रिणिगुप्ती गोपविवो ते गुप्ति कहिये तेकहेछे मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यकहे तीरनीपरे शल्यसरीखा शल्य भाल दुखदायकपणाथकी ते कहेछे मायाकपटतेहीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनो वाछवो २ मिथ्यातशल्य

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्ताश्चत्वारश्चैकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणभवति तदर्द्धं चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ठ्यधिक शतत्र
यलचणेन स्थूलगणितस्यविवचितत्वात् परित्यक्तांशाः ३१८२२९ तृतीयमंडलपरिधौगुणितेसति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतेयल्लभ्यते तत्तृतीयमंडलेच
चुः स्पर्शप्रमाणभवति तच्चद्वात्रिंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अशानामेकषष्ट्याभागलब्धाश्च एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४९। ६० त्रयोविंशतिश्चैक
षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३। ६१ एतत्तृतीयमंडले चचुःस्पर्शस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्यूना तत्सातिरेकस्ययोज
नस्यापिन्यूनसहस्रता विवचितेतिसम्भाव्यते चतुर्दशेमंडलेपुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणभवति प्रतिमंडलयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथमसंडलमानेप्रचेप

हि किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइ ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइ ठिई अप्पइठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई प०

चाल्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे मांडले तेत्रीस हजार झांझेरो दृष्टिगोचर आवे। त्रीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे बारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस
ठिया च्यार भाग प्रमाणे दिवस होय। अने सर्वबाह्य मंडले सूर्य होय तिवारें अेकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगलें थकें इहां
ना माणसने दृष्टिगोचर आवे। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनो तेत्रीस पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठे सातमी पृथिवीयें पूर्वादिक दिस
थकीमांडी काल १। महाकाल २। रुरुक ३। महारुरुक ४। एह चिहुं नरकावासाना नारकीनो उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनो स्थिति कही। विचले

लोभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्रऋद्ध्यानरेंद्रादि पूजाऽऽचार्यत्वादिलक्षणयागौरवमृद्धिप्राप्त्यभिमानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थः एवंरसेनगौरवरसगौरव सातयागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्रज्ञानस्यविराधनाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिह्नवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनसम्यग्दर्शनक्षायिकादिचारित्रंसामायिकादीनि । तथाअसंख्यातवर्षायुषांपंचेंद्रि

तउगारवा प० तं० । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तउविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा मिगसिरनक्खत्तेतितारे प० । पुस्सनक्खत्तेतितारे प० । जेठानक्खत्तेतितारे प० । अभीइनक्खत्तेतितारे प० । सवणनक्खत्तेतितारे प० । असिणिनक्खत्तेतितारे प० भरणीनक्खत्तेतितारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंतिन्निपलिओवमाइंठिई प० । दो

तेगुरुदेवगुरुधर्मनोअसद्दहिवोविपरीतमोकरिवो २ त्रिणिगरवकह्येजेणेकरीआत्माभारीथाय संसारचक्रवालमाहिभमवानोकारणकह्योतेकहेछे । ऋद्धिगारवतेनरेंद्रादिकनोऋद्धितथाआचार्यादिकनोऋद्धितेणेकरीअभिमानकरतोआत्माभारीकरे रसेकरीमधुरादिकास्वादेकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेरसातानेगारवेकरीसातागारव ३ त्रिणिविराधनाखंडनाकह्यो तेकहेछे सूत्रादिकज्ञानतेहनीविराधना प्रत्यनीकपणोकरिवोतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यकदर्शनक्षायकादिकसम्यक्त्वतेहनूंविराधवूंअवर्णवादनूंबोलिवूंतेदर्शनविरधना २ सामायिकादिकचारित्रनूंविराधवूंखंडवूंतेचारित्रविराधना ३ मृगसरनक्षत्रना

कारत्वम् विच्छिन्नयर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्त्वपरिग्रहीतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखेदितत्वंअनायाससंभव: ३४ अव्युच्छेदित्वंविवक्षितार्थसम्यक् सिद्धियावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथादत्त: सप्तमवासुदेव. नंदन: सप्तमबलदेव: एतयोश्चावश्यकाभिप्रायेण षड्विंशतिर्धनुषामुच्चत्वम्भवति सुबोधंतत् यतोऽरनाथमल्लिस्वामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमल्लिअंतरेदोण्णिकेसवा पुरिसपुंडरीयदत्तत्ति अरनाथमल्लिनाथयोश्चोच्चत्वेणत्रिंशत्पंचविंशतिश्च धनुषामुच्चत्वमेतदन्तरालवर्त्तिनोश्चवासुदेवयो: षष्ठसप्तमयोरेकोनत्रिंशत्षड्विंशतिश्चधनुषांयुज्यतइति इहोक्तानुपचत्रिंशत्यदिदत्तनन्दनौ कुंथुनाथतीर्थकालेभवतो नचैतदेवजिनान्तरेष्वधीयतइति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकल्पेसौधर्मावतंसकादिषु विमानेषुसर्वेषुपचसभाभवंति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिषेकसभा ३ अलंकारसभा ४ व्यवसायसभा ५ तत्रसुधर्ममध्यभागेमणिपीठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकोनामचैत्यस्तम्भोस्ति तत्रवद्दरामएसुत्ति वज्जमयेषु

कुंथूणं अरहापणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था दत्तेण वासुदेवे पणतीस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था नंदणेणं बलदेवे पणतीसधणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवएचेइयखम्भे हेठाउव

साहस सहित बोलवो ३३ । अनायासे बोलवो ३४ । कहिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५ । एह भगवंतनी वाणीनागुण जाणिवा एह पेंत्रीस वचनातिशय कह्या ॥ कुंथुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊंचपणे हुया । दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारे संभूमचक्रवर्ति पछेहुवोते ३५ । धनुष ऊंच पणे हुआ । नंदननामा सातमो बलदेव ३५ । धनुष ऊंचपणेंकह्यो । सौधर्मकल्पें सभा सुधर्मा ने विषे साठियोजनप्रमाण माणवक नाम चैत्यस्तंभनेविषे हेठे अने उपरि अर्ध एतले साढाबारह योजन वर्जीने मध्यने विषे पेंत्रीस योजनें वज्जमय गोल वाटला समुद्गकडा तेहने विषे जिन

च्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि सागरोवमाइठिई प० । च्चसुरकुमाराणदेवाणं च्चत्थेगइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । च्चसंखिज्जवासा उयसन्नि पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइठिई प० । च्चसंखिज्जवासाउयसन्निग ग्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु च्चत्थेगइयाण देवाणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु च्चत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प०

त्रणिताराकह्याकेवलज्ञानीये पुष्यनक्षत्रनात्रणिताराकह्या । जेष्ठानक्षत्रनात्रणिताराकह्या अभिजित् नक्षत्रनातीनताराकह्या श्रवणनक्षत्रनात्रणिताराकह्या अश्विनीनक्षत्रनात्रणिताराकह्या भरणीनक्षत्रनात्रणताराकह्या एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो त्रणिपल्योपममध्यमआउषूंकह्यूं बीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनोउत्कृष्टो त्रणिसागरोपमनूंआउखोकह्यो त्रीजीवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनो जघन्य त्रणिसागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारभवनपतीनी पहिलीनिकायनादेवतानोकेतलाएकनो त्रणिपल्योपममध्यमआउखोकह्योछे असंख्यातवर्षनाआउखाना सन्नीगर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच एतलेदेवकुरू उत्तरकुरुनागर्भंज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनो आउखोकह्यो । असख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्य देवकुरुउत्तरकुरुना

चत्वारिंशस्थानकव्यक्त नवरं वइसाहपुण्णिमासिणीएत्ति यत्केषुचित् पुस्तकेषुदृश्यतेसोपपाठः फग्गुणपुन्निमासिणीएत्ति अत्राध्येयञ्चयमुच्यते पोसेमासेचउप्पया इतिवचनात् पोषोपूर्णिमास्यामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फाल्गुनेचचत्वारिअंगुलानिपतितानीत्येव फाल्गुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति कार्त्तिक्यामप्येवमेव यतः चेत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी त्युक्त तत पदत्रयस्यषड्त्रिंशदंगुलप्रमाणस्य कार्त्तिकमासातिक्रमे

णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० संती अरहा चत्तालीस धणूइंउड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुण्णिमासिणीएणं सू

अरिहंतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनो सपदायई। मेरुपर्वत ऊंचो एक लाखयोजनछे ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन ते उपरे चूलिका चोटीनो परि जोगइ मेरुनी चूलिका चालीस योजन ऊंची कही। शांतिनाथ सोलमा अरिहंत चालीस धनुष ऊंचा थया उत्तरेंद्र नागराजा भूतानंद्रना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या। एतले चालीस लाख भवन कह्या। क्षुल्लिका ते लहुडीये विमान प्रविभक्तियें एतले त्रीजे वर्गे ४० उद्देशनकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या। एतले जेतला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या। फागुणनी पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणें लवणनी छाया मावीये तेहनी ४० अगुल प्रमाणें पोरसी छाया प्रते निवर्तावीने चार भ्रमण करे। कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अगुलप्रमाणे पोरसी हुये पछे साते २ दिवसे

यतिर्यग्मनुष्याणांदेवकुरूत्तरकुरुजन्मनां त्रीणिपल्योपमानीति । तथाआभंकरं प्रभंकरं आभाकरंप्रभाकरं चंद्रंचंद्रावर्त्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रवर्णं चंद्रलेश्यं चंद्रध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटचंद्रोत्तरावतंसक विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्यानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणांषट्

जेदेवा आभंकरं पभंकरं आभाकरं पभाकरं चंदंचंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तेणदेवातिण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिंआहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपल्योपम आउखो कह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनी त्रणिपल्योपमआउखो कह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनी त्रणिसागरोपममध्यमआउखोकह्योजेदेवताआभकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७ चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ण ९ चंद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेंसनत्कुमारमाहेंद्रदेवलोकेंदेवतापणेउपनाछे तेहदेवतानोउत्कृष्टोत्रणि सागरोपमआउखो कह्यो तेहदेवतानूंनिहूंअद्धमसवाडे थोडोस्वासले घणोस्वास जंचोस्वासतेउत्स्वासनीचोस्यासमूंकवोते

चतुरंगुलहद्धौ चत्वारिंशदंगुलिकासाभवतीति ॥ ४० ॥ एकचत्वारिंशस्थानकंसुगमं नवरं चउसुइत्यादि क्रमेणसूत्रोक्तासुचतसृषु प्रथमचतुर्थ षष्ठसप्तमीषुपृथिवीषु त्रिंशतोदशानाचनरकलक्षाणां पंचोनस्यचैकस्यपचानाचनरकाणा भावाद्यथोक्तसंख्यासंभवतीति ॥ ४१ ॥ द्विचत्वारिंशस्था

रिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुरिसमाए महासुक्के कप्पे चत्ता लीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ४० ॥ नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाह स्सीओ होत्था चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० त० रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए महालियाणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४१ ॥

एकेक अंगुल वधारिये मासे ४ अंगुल वधे तिवारे कार्तिक पूनिमे ४० अंगुल वधे तिवारे कार्त्तिक पूनिमे ४० अंगुल थायपौरुषी। महाशुक्र सातमे देव लोके ४० सहस्र विमान कह्या। इति ४० मो समवाय संपूर्ण ॥ ४० ॥ हिवे इगतालीसमो समवाय लिखेछे। नमिनाथ अरिहंतने ४१। आर्याना सहस्र थया एतलेसाध्वीना सहस्र हुया। च्यार नरक पृथिवीयें ४१ लाख नरकावासा कह्या। ते कहेछे। रत्नप्रभायें ३० लाख पंकप्रभायें १० लाख तमायें पाच ऊंणा १ लाख तमतमायें ५ एव सर्वमिली ४१ लाख नरकावासा कह्या। वडीयें विमानप्रविभक्तियें पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदी ठ उद्देशना अवसर कह्याछे। इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ हिवे बेयालीसमो समवाय लिखेछे। श्रमण भगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव बेयालीस वर्ष झाझेरे छद्मस्थ पर्यायें १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय कांईक न्यून ३० वर्ष सर्वमिली ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया। याव

कंनचत्रार्थंस्थित्यर्थंषट्कंशेषंतथैवद्दत्यपिपाठः अयंस्थित्यर्थंषट्कंनचत्रार्थंनयंशेषंतथैव अतर्मुहूर्त्तंयावच्चित्तस्यैकाग्रतायोगनिरोधश्चध्यानं तत्रार्त्तं मनोज्ञामनोज्ञ वस्तुवियोगसंयोगादि निबंधनचित्तविक्लवलक्षणं रौद्रंहिंसानृतचौर्यधनसरक्षणाभिधानलक्षण । धर्ममाज्ञादिपदार्थस्वरूपपर्यालोचनैकाग्रताशुक्लं पूर्वगत श्रुतावलंबनध्याने तत्रमनसोऽत्यंतस्थिरतायोगनिरोधश्चेति । आत्मध्यानं तथाविरुद्धाचारित्रंप्रति स्त्र्यादिविषया:कथा विकथाः तथासंज्ञा असातवेद

प० तं० कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए चत्तारिज्झाणा प० तं० अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे ध म्मज्झाणे सुक्कज्झाणे चत्तारिविगहाउ प० तं० इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसन्ना प०

नीसास तेहदेवताने उत्कष्टो त्रिहुवर्षसहस्रेआहारनोअर्थउपजेआभोगआहारलेछे एकेकसंसारमाहिभव्यजीव जेहत्रिहुंभवनेआंतरे सीझसेकृतार्थथास्ये बूझ स्ये कर्मबंधथकी मूंकास्ये समस्तदुःखनोअंतकरस्ये इतित्रीजोठाणोसम्पत्तं हिवेचोथोठाणोकहेछेच्यारकषायछेकषकहीये संसारतेहनोआयलाभहुस्ये जेहथीक षायकहियेक्रोधेकरीसंसारनोलाभहुस्येतेमाटेक्रोधकषाय १ एममानकषायमानअहंकार २ मायाकषामायाकपट ३ लोभकषायलोभतृष्णा ४ च्यारिध्यानक ह्याध्यानतेअंतमुहुर्त्तलगेचित्तनुंएकाग्रपणूंतथायोगनिरोधतेकहेछे मनोज्ञवस्तनोसंयोगअमनोज्ञवस्तनोवियोगनोचिंतविवोतेआर्तध्यान १ हिंसामृषाचोरीधन रक्षणनो चिंतविवोतेरुद्रध्यान२भगवंतनीआज्ञापदार्थनोआलोचवोतेधर्मध्यानपूर्वगतश्रुतनूंआलंबनुनिणयोगनूनिरोधवोते शुक्लध्यान जेणेकरीचारित्रादिक

स्थानकेत्विदं लिख्यते। मंदरस्से त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो विष्कम्भमध्यभागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपार्द्धे पंचसहस्रक्षेपेण पञ्चपंचाशदेव भवन्तीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां क्षान्ते पूर्यमाणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविष्कम्भेन च सह जम्बूद्वीपलक्षपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेनच लक्षद्वय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना ज्जगतीमाने पृथग्भणने मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पञ्चचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणक्षेत्रेनापेक्षया भिधीयते तत एव मतिरिक्ता स्यादिति अथवेह किंचिदूनापि पञ्चपञ्चाशत्

॥ ज्ञपणपन्नंवाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमते एसण पणपन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिपि विजयवेजयतजयंतअपराजियंति समणेभगवंमहावीरे अतिमराइयंसि पणपन्न अज्झयणाइ कल्लाणफलविवा ॥

प्रक्षीण रहित थया । मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी छेल्ला प्रदेश थकी जंबूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांत छेहडो प्रदेश एह ५५ योजन सहस्र आबाधा विचाले आंतरो कह्यो । मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते माहि दश सहस्रनो मेरुमाहिले एतले सर्व मिली ५५ सहस्र योजन थया । इहां यदापि विजय द्वारनो पश्चिमांत कह्योछे परजगतीनो पूर्वांत लीजे तो पूरा५५ सहस्र योजन थया । एमज चिहुदिसे मेरु पर्वतमांहि मालता मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयत द्वारनो पश्चिमे जयतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो । श्रमण भगवंत महावीर छेहलीरा

नीयमोहनीयकर्मोदयसंपाद्या आहाराभिलाषादिरूपाश्चेतनाविशेषाः तथासकषायत्वाज्जीवस्यकर्मणोयोग्यानांपुद्गलानां बंधनमादानवंधनम्। तत्रप्रकृत
यःकर्मणोंऽशाभेदाः ज्ञानावरणीयादयोऽष्टौतासांबंधः प्रकृतिबंध. तथास्थितिस्तासामेवावस्थानं जघन्यादिभेदभिन्नंतस्याबंधोनिर्वर्त्तनस्थितिबंधः तथाऽनुभा
वोविपाकस्तीव्रादिभेदोरसस्तस्यबंधोनुभावः तथाजीवप्रदेशेषुकर्मप्रदेशानामनंतानतानांप्रतिप्रकृति प्रतिनियतपरिमाणानांबंधः संबंधनंप्रदेशबंधइति तथा

न्नत्ता तं० आहारसन्नाय भयमेहुणपरिग्गहसन्ना चउव्विहेबंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे अणुभागबंधे पएसबंधे चउगाउएजोयणे प० । अणुराहानक्खत्तेचउतारे प० । पुव्वासाढनक्खत्तेचउतारे प० । उत्तरासा

नोविराधनाहोयतेविकथाचारकहीछे तेकहेछे स्त्रीभलीवखाणीयेभूंडीवखाणियेतेस्त्रीविकथा भातरांध्यानेअन्ननोवखाणवोविखोडवोतेभातविकथा १ राजा
नूभलूंभूंडूंकहिवोतेराजविकथा देसएकअवखाणवोएकनिषेधवोतेदेसविकाथा ४ च्यारसंज्ञाकहीअसातावेदनोयमोहनीकर्मनेउदयेंजपजेतेसंज्ञाकहीयेआहा
रसन्ना १ भयनोवेदवोतेभयसंज्ञाकहीये २ मैथुननोअभिलाषातेमैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहनोअभिलाषतेपरिग्रहसन्ना ४ चिंहुप्रकारेबंधजीवनेकर्मनेयोग्य पुद्गल
नोबांधवोतेबधकहीये तिहांकर्मनाअंशभेद ज्ञानावरणीयादिक ८ आठ तेहनोबांधवोतेप्रकृतिबंध १ तेहआठेकर्मनो स्थितिरहिवोजघन्यउत्कृष्टकेइकाल
तीव्रादिकभेदेंअनेकप्रकारेरसतेहनोबंधवोतेरसबंध जीवनाप्रदेशनेविषे अंतकर्मप्रदेशतेस्थितिबंध प्रकृति दीठनियतपरिमाणनोबांधवोतेप्रदेशबंध ४ उच्छेदां
गुलेच्यारगाउनोएकयोजनकह्योभगवते अनुराधानक्षत्रनाचारताराकह्या पुर्वाषाढानक्षत्रनाच्यारतारा कह्या उत्तराषाढानक्षत्रनाच्यार तारा कह्या एणी

ष्टितचंद्रमासो भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिरहोरात्राण्यसौभवति यच्चेह द्विषष्ठि भागद्वयमधिकं तन्नविवक्षितं । सम्भवस्यैकोनषष्ठिः पूर्वं लक्षाणि गृहस्थपर्याय इहोक्ताः आवश्यकेतु चतुःपूर्वांगाऽधिकासीतीति ॥ ५८ ॥ अथएकोनषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकाशतसंख्या

राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० संभवेणं अरहा एगूणसठ्ठि पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए मल्लिस्सणं अरहओ एगूणसठ्ठि ओहिनाणिसया होत्था ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंडले सूरिए सठ्ठिए सठ्ठिए मुहुत्तेहिं संघाइए लवणस्सणं समुद्दस्स सठ्ठिनागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तोसतोस दिहाडा जोड़ये तो बिहु मासना ६० दिन जोड़ये तो ५८ जिम कह्या । कृष्ण पक्षनो पखवाडा थी मांडी पूनिमे मास पूरो थाय एवो मासे दिन २९ अने एक दिनना वासठिया बत्तीस भाग होय एह २९ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन बे भाग थाय ते पाछला ५८ दिन माहि घालिये एतले ५९ दिननो ऋतु होय उपरि २ भाग उगस्या ते अल्पमाटे न लेखव्या जाणिवा । सभवनाथ अरिहंत ओगणसठो पूर्व लाख लगी गृहस्थाश्रम माहि बसीने मुंड द्रव्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारिय गृहस्थाश्रम थको अणगारितायती पर्यूपास्या । आवश्यके चार पूर्वांग लगी गृहस्थाश्रम कह्यो छे । मल्लिनाथ अरिहंतने ओगणसठिसे अवधि ज्ञानी थया ॥ इति ५९ समवाय थयो ॥ ५९ ॥ हिवे ६० मोसमवाय लिखेछे । सूर्यना १८० माडला छे एकेक माडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेकरी । लवण समुद्रनो अग्रोदक शिखानो पाणी साठ हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन ऊंचो पाणीनो बेल तेऊपर २ कोस पाणीवटे वधे ते अग्रोदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प०
ढनक्खत्तेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प० ऋसुरकुमाराणंदेवाणं ऋत्थेगइयाणंच
तच्चाएणंपुढवीए ऋत्थेगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० ऋसुरकुमाराणंदेवाणं ऋत्थेगइयाणंच
त्तारिपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु ऋत्थेगइत्र्याणं देवाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प० सणं
कुमारमाहिंदेसुकप्पेसु ऋत्थेगइत्र्याणं देवाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जेदेवाकिठिंसुकिठिं किठियाप
त्तकिठिप्पभ किठिजुत्तं किठिलेसं किठिज्झयं किठिसिंगं किठिसिद्धं किठिकूडं किठुत्तरवडिंसगंविमाणंदे
वत्ताएउववन्ना तेसिंणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउराहद्धमासाणं त्र्याणमं

ढरत्नप्रभापहिलीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपल्योपम आउषूंकहिंउ कह्या त्रीजोवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा
गरमध्य आउषूंकह्योछे । असुरकुमारभवनपतीदेवनूं केतलाएकनूं च्यारिपल्योपमआउषूं कह्यो सौधर्मईशानदेवलोकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपल्यो
पममध्यआउषूंकह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजाचौथादेवलोकने विषेकेतलाएकदेवतानूं च्यारसागरोपममध्यआउषूंकह्यो त्रीजेचोथेदेवलोकेजेदेवता कृष्टि१ सु
कृष्टि २ कृष्टिकापत्र ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुक्त ५ कृष्टिलेश्य ६ कृष्टिध्वज ७ कृष्टिश्रृंगः ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमानने विषेदेवताप

७॥

मरताां अद्दरेगनरभवीर्यनाणाजीनाणंसव्वंसंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसमपण्ठिस्थानकं किंचिद्विवियते तत्रपंचसंवछरेत्यादि नक्षत्रमासोये नक्षत्रकालेन चंद्रोनक्षत्रमण्डलंभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति साहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणंचाष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानीति प्राक्दर्शितम् १८३० तदेवंनक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणराशिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकंलक्षंद्वाविंशतिः सहस्राणिषट्शतानिदशचेत्येवंरूपोविभज्यमानःसप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणोभवतीति बाहाओत्ति लघुहिम

होत्था आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसंवच्छरियस्सणंजुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयाउणं बाहाओ

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलोगे चीथ बेलाजाय तिहां उत्कृष्टो २२ सागरआउखो वाईती ६६ सागरहोय । बिचेमनुष्यनोभव करेते भांभेरा मांहि गणिये इति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे । पचसंवत्सरे युग १ पूरोथाय । तेयुग नक्षत्रमासे माणीये ६७ नक्षत्रमासहोय जेणे काले चद्रमा नक्षत्र मडलनेभोगवे तेनक्षत्रमासकहिये तेनक्षत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकाअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय । पूर्वे ६१ मेठाणे एक १८३० दिन कह्याछेते ६७ गुणाकरियेतिवारे एकलाख बावीस हजारछसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि थाधिये २७ अहोरात्रियें सडसठिया एक मोसभागे एकनक्षत्रमासहोय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एकनक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवंतपर्वतनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवंतक्षेत्रनी प्रदेशपं

कृष्टिसुवृष्टादीनिद्वादशविमानानिपूर्वोक्तविमाननामानुसारयतीनि । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहाव्रतकामगुणाश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य स्तिकायार्थसूत्राणामष्टक नक्षत्रार्थपंचकं स्थित्यर्थषटकं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियाद्व्यापारविशेषाः तत्रकायेननिवृत्ताकायिकीकायचेष्टेत्यर्थः अधिक्रियतेआत्मानरकादिषुयेनतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकरणिकी खड्गादिनिर्वर्त्तनादिलक्षणेति । प्रद्वेषोमत्सर स्तेननिवृत्ताप्राद्वेषिकी परिताप-

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ अत्थेगइ आभवसिद्धियाजीवा जेचउहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणंअंतंकरिस्संति ॥ ४ ॥ पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारितावणिया पाणाइवायकिरिया पंचमहव्वया

पोउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टपणे च्यारसागरोपमआउषं कह्यो तेदेवताचिहुंअर्द्धमासवाडेएतलेचोथेपखवाडे थोडोसासलेइ घणोसासले नीचोमेलवोतेनि श्वास जचोलेववोतेऊसासतेहदेवताने चिहुंवर्ष सहस्रे आभोगआहारनोअर्थउपजे केतलाइकछेभव्यजीव चिहुनेभवग्रहणेच्यारभवनेआंतरे सीझस्येबूझस्ये मुं कास्येसंसारथकी सर्वदुखनो अंतकरिस्ये इतिचोथोठाणूंसंमत्तं ४ हिवेपांचनोअधिकारलिखीयेछे पांचक्रियाकही क्रियाते कायादिकनोव्यापारतेकहेछे कायायेनोपजावीतेकायिकीक्रियाकायचेष्टा आत्मानरकादिकनेविषेजेणेकरीस्थापीयेंतेअधिकरणकीषड्गादिकनीपजाविवालक्षण प्रद्वेषमत्सरतेणेनीपिजा

विनांचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलप्यंतेच जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यांभारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिनइति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततिस्थं
नकेकिंचिल्लिख्यते समएत्यादिमंदरवर्ज्जामेरुवर्जाः वर्षाणिचभरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वताश्चहिमवदादयस्तत्सीमाकारिणो वर्षधरपर्वताः समुदिताएकोन
सप्तति. प्रज्ञप्ता' कथपचसुमेरुषु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पचत्रिंशद्वर्षाणि तथाप्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयोवर्षधरास्त्रिंशत्तथाचत्वार एवेषुका

मुप्पज्जिंसुवा ३ एवंचक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पुक्खरवरदीवड्ढेण अडसट्ठि विजया एवंचेवजाववासुदेवा
विमलस्सणं अरहओ अडसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥
समयखित्तेण मंदरवज्जा एगूणसत्तरि वासावासधरपव्वया प० तं० पणतीसंवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

काले वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अने एकेक विदेहें जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय । एकेक्षेत्रे चक्रवर्त्ति वासुदेव न
होय। बत्रीस विजयनेविषें उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्तिहोय ४ वासुदेवहोय अने २८ वासुदेवहोय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तो ६८ किमभिले सूत्रमाहि एकेसमें
एहवो पाठनथी तेमाटे कालभेदें पाठछे ६८ होय विजयने भेदें तेमाटे विरुद्ध नथी । धातकीखडनीपरे पुष्करार्द्ध द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी
कहवी । उत्कृष्ट पदें ६८ अरिहंत कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा । विमलनाथ अरिहंत ने अडसठ हजार श्रमणयती हुय
उत्कृष्ट श्रमण सपदा थई ॥ ६८ ॥ हिवे ६९ मो लिखे छे। काले करी ओलखाव्यो जे क्षेत्र ते समयक्षेत्र कहिये ते क्षेत्र अढाई द्वीपने विषे
मेरु वर्जी ने ६९ क्षेत्र अने वर्षधर कुलगिरि हिमवतादिक क्षेत्रनी सीमाना करणहार कह्या । ते कहेछे अढाई द्वीपे ५ मेरू छे एक मेरूने पासे सातसात

नंताडनादिदु:खविशेषलक्षणं तेननिवृत्तापारितापकी प्राणातिपातक्रिया प्रतोतेति । तथा काम्यन्तेअभिलष्यन्ते इतिकामास्तेचतेगुणाश्चपुद्गलधर्माः शब्दाद यइतिकामगुणाः कामस्यवादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयइति तथा आश्रवद्वाराणिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि संवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपा याःसंवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रवद्वारविपरीतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतःकर्मक्षपणात्तस्याःस्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावन्निर्जरास्थानानि प्राणातिपातविरमणादीनि एतान्येवसर्वशब्दविशेषितानि महाव्रतानिभवंति तानिचपूर्वसूत्रेभिहितानि स्थूलशब्दविशेषितानि अणुव्रतानिभवति नि

प० तं० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं सव्वाउमुसावायाउवेरमणं सव्वाउअदत्तादाणाउवेरमणं सव्वाउमेहु णाउवेरणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं पचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा रसा गंधा फासा पंचआसवदारा प० तं० मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मंत्तं विरई अप्पमत्तया

वीतेगाहेविको परप्राणने परितापवो ताडनादिकदुखनों उपजाववो ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राण तिपातकी पंचमहाव्रतश्रावकनांव्रत नी अपेक्षायें घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कह्या तेकहेछे सर्वथकी मन वचन कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधें लोभें मृषा झूंठोबोल बाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीय स्वामि गुरु अदत्तथकीविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथकी औदारिक

भांतरुगर्भावशागस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवसात्रिजीनाते व्यतिक्रांते पंचाशति दिनेषगोते पित्यर्थः सप्तत्यांचराणि दिनेषु शेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः
रात्रिनाशमी वर्षावास वर्षावस्थानपज्जोसवेइत्ति परिवसति सर्वथावसति पचागतिप्रात्तमेषु दिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति
भाद्रपदशुक्लपंचम्यां तु वृक्षमूलादौ अपि निवसतीति व्वश्रमिति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणामादानीयउपादेयः पुरुषादानीयः अवाउगिया वाम्हि
रे नाणाणिति शेषणमेति पुरि शिलाशापत्तिम्ति जेवन्मीपुमन्नोणाद्वान ततो उत्तरकाले ज्ञानावरणीयादिकर्मणां स्वांतसवाधाकालंसुता ज्ञानावरणीयादिग

प० ॥ ६९ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासाणंसवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासपज्जोसवेइ पासेणं अरहापुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मोहणिज्जस्स णं

नो ते मासि २० रात्रिगे अधिक मास पीतेगर्ये काले भाराती पछि वग्गी पंचासमे दिवसे भाद्रों सुदि ५ दिने संवच्छरी कारी गये शेष थाकतो ७० रा
त्रिं वर्षाकाल रह्यो पज्जोसवेइ सर्वथाति उरं। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषा मा॥ ज्ञ १०८ प्रतिपूर्ण ७० वर्ष लगे सामान्य पर्याग पाल्यो सिद्धथया सर्वदुःखथकी
छुटोणथया एतले २० वर्ष गृहवासे ७० वर्ष चारित्र सर्व मिलो १०० वर्षनो आयु जाणिलो। वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष ऊंचपणे हुया। मोह
नोय कर्मनो स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अबाधायें ७ हजार वर्ष उणी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगविवाने अर्थे रचना पूर्वे जे बाध्योछे
ते उदयकाले भांगिरी एतले उत्कृष्टो ७० कोडाकोड सागरोपमनो जेणे समये मोहनोय कर्मनो बांधपाम्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगें तेकर्म

०गम्यानलंपुनरयोगाभारणमिति । तद्दिहैपामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रेर्यासमिति गंमने सम्यक् सर्वंपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा पासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिः एपणासमिति र्द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रुपकरणपरिछदस्य निक्षेपणा यम्या पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तयोच्चारस्य पुरीपस्य प्रश्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्टीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेश्मणो

अकसाया अजोगया पंचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ मेहुणा उवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पंचसमिईउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडम

मैथुन नवभेदेवैक्रियमैथुनएवं १८ भेदेमैथुनथकीविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचोथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहथीविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमोमहा व्रत पांचकामगुण कामियेप्रभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलस्वभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते कामगुणकह्या तेकहेछे शब्दतेसांभलवो रूपतेदेखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रवते कर्मआववानोउपाय तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेह नेपाश्रवद्वारकह्या तेकहेछे मिथ्यात्वतेविपरीतसद्दहणा तेहपापआविवानो उपाय १ एमअविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रो धादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोअणमलिवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्ततेशुद्धदर्शन १ वि- रतिप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणुं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्ज्जरातेदेशथकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूंखपाव- णं जूपीकरीतो तेनाथानककहितांउपाय तेनिर्ज्जराठाणकह्यापांचेभेदे तेकहेछे जीवमारिवाथकीविरमवोजसरिवो एहकर्मखपाविवानोंउपाय १

५ सगरोद्वितीयचक्रवर्त्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्णकुमाराणांद्विसप्ततिर्लक्षाणि भवनानिक्र
यम् दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकायेतु चतुस्त्रिंशदिति नागसाहस्रोश्रोति नागकुमारदेवसहस्राणि वेलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधतो विष्कम्भतश्च
दशसहस्रमानालवणजलधिशिखांबाह्यां धातकीखण्डद्वीपाभिमुखी महावीरो द्विसप्ततिवर्षाण्यायुःपालयित्वासिद्धः कथंचित्शगृहस्थभावे द्वादशसार्द्धानिपचश्च

व पव्वइए एव सगरेवि रायाचाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्वजावपव्वइए ॥ ७१ ॥ बावत्तरिं
सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प० लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरिय वेलं धारंति समणे

अजितनाथ अढार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अने एक पूर्वांगाधिक ५३ लाख पूर्व लगे राज्यपालीने एव ७१ लाख पूर्व लगे गृहवासमांवसीने मुंडथया । गृह
स्थाश्रमथकी यतीपणू पाम्या एम १ पूर्वलाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाख पूर्व जाणिवा । एमज अजितनाथ स्वामी कालीन सगरपणि बीजोमहाराजा चा
तुरंत चक्रवर्त्ती एकहत्तर लाखपूर्वलगे गृहवासमाहिवसीने राज्यपालीने मुंडपणो गृहस्थथकी यतीपणो पाम्या ॥ इति ७१ मो संपूर्ण ॥ ७१ ॥
हिवे ७२ मो लिखेछे । भवनपतीनो तीजोनिकाय सुवर्ण कुमार देवता तेहना दक्षिणद्र ने ३८ लाख भवनावास उत्तरेंद्र ने ३४ लाख भवनावास बेहुंमि
ली ७२ लाख भवनावास कह्या । ७२ हजार देवता लवण समुद्रनी बाहिरली धातकी खंड तरफनी पांणीनीवेला प्रते धरेछे । एतले १६ हजार योजन
ऊपरि २ कोशनो वेलावधे तिवारे चाटूंने करी पाणी उपराठो मारेछे । श्रमण भगवंत महावीरस्वामी ७२ वर्षलगेसर्वायुपालन किधो । एतले ३० वर्षगृह
वासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छद्मस्थभावें देशोन ३० वर्ष केवल पर्याय एव ७२ वर्ष लगें सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथको प्रक्षीण थया । स्थविर

जल्लस्यदेहमलस्य परिष्टापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिदोषपरिहारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-
दयोगतिस्थित्यवगाहोपयोगस्पर्शादिलक्षणास्थितिः सूत्रेषुउत्कृष्टादिविभागएवमनुगंतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ त
हयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापढमाएसुजेठा । साबीयाएकणिठ्ठियाभणिया ॥ तरतमजोगोएसो । दसवाससहस्सरय

त्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासंवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिई । पंचअत्थिकायाप० तं० धम्मत्थि
काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनक्खत्तेपंचतारे प० पुणब्बसु

एकमृषावादवेरमणं २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ परिग्रहथीविरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवीतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-
चालतोसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवीतेईर्यासमिति १ निरवद्यवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभातपाणीनूंलेवीतेएषणासमतिकही ३ । आदानवा
हतांभांडमात्रउपकरणने मूंकतां समति पूंजीजोईलेवो जोईमूंकिवो तेचोथीसमतिकही उचार विष्टा प्रश्रवण सूत्र खेल थूक सिंघाण नांकनोंमल रिंट
जल्लमैलएतलापरठतांसमतितेस्थंडलदोषटालीप्रवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्तिकायअस्तिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्तिकायकहीये
तेकहेछे धर्मकहियेंचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलनेविषे अवकासदेवा
नोस्वभाव जीवास्तिकायउपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकह्या ह

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वत्थुमाणं ६४ खंधारनिवेसं ४७ वत्थुनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसत्थं
छरुप्पवायं ५० आससिक्खं ५१ हत्थिसिक्खं ५२ धणुव्वेयं ५३ हिरण्णपागं ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६
धातुपागं ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुट्ठिजुद्धं ६० जुद्धं ६१ निजुद्धं ६२ जुद्धाइजुद्धं ६३ सुत्तखेड्डं
६४ वट्टखेड्डं ३५ नालियखेड्डं ६६ चम्मखेड्डं ६७ पत्तछेज्जं ६८ कडगछेज्जं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

तरिवो ४१ । शुद्ध कटक नी रचना ४२ । खधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३ । नगरवासिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिका ४५। खंधारकटकनो निवासस्थापन ४६ । नगर निवेशनो वासवो ४७ । वस्तुनीस्थापनावस्तुनिवेश ४८ । ईषदर्थं थोडानूं घणूं घणानूं थोडूं करवूं ४९ । खड्गखड्गमुष्टितथा छुरप्रवाण तनत विचारनो जाणिवो ५० । घोडानी गति शिखाडवी ५१ । हाथीनी गति शिखाडवी ५२ । धनुर्वेद धनुर्धारी थावूं ५३ । हिरण्यरूपानोपाक पचाविवो ५४ । सुवर्णनो पचाविवो ५५ । मणिरत्नादिकनो पाक ५६ । धातुतांबादिकनो पाक ५७ । युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणिवो ५८ । नियुद्ध अतिशय युद्ध जाणिवो ५९ । युद्धनेअति क्रम करीने जूझवो ६० । मुष्टियें जूझवो ६१ । लतावेलडीयेजूझवो ६२ । बाहुथी जूझवोतेबाहु युद्ध ६३ । सूत्रनो खेडवोवेभागोमाडी सूत्रनो छेदिवो ६४ । वर्तं वाटलो खेडूं माडीने जूझिवो ६५ । नालिकाकमल डांडी तेहनो खडवो वेभूमांडीने वेधवूं ६६ । चर्म खेडू वेडूंमाडीवेधिवो ६७ पत्रपानडानो छेदिवो ६८ । कडग सुवर्णादिकनाचूडो कुंडलादिकनो छेदिवो ६९ । मूंयामनुष्यतिर्यंचने मंत्रशक्तिकरी सजीव करिवो ७० । जीवतानोनसचांपोने निर्जीव करिवो ७१ । शकुन पत्नीकाकादिकना स्वरभेदनो जाणिवो ७२ । एकलाथर्क । सम्मूर्छिम खेचर

णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहिं २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदस ६ सत्तरेवअयराइं॥ सोहम्मजावसुक्को । तदुवरिइक्किक्कमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १दोसार २साहिय ३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउद्दस ७ सत्तरस ८ सहस्सारे तदुवरिइक्किक्कमारोवेत्ति तथावातंसवातमित्यादीनिद्वादशवाताभिलापेनविमानना

नक्खत्तेपंचतारे प० हत्थनक्खत्तेपंचतारे प० विसाहधणिठानक्खत्तेपंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवी ए अत्थेगइआणंनेरइयाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्थेगइआणं नेरइयाणंपंचसागरो वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणंपंचपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेग इयाणंदेवाणं पंचपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पभं पच्चंतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्झयं वा

स्तनचत्रना पांचताराकह्या विशाखानक्षत्रनांपांचताराकह्याधनिष्टानचत्रनापांचताराकह्या इणीयरत्नप्रभापहिलीपृथवीने केतलाएक नारकीनों पांचपल्यो पममध्यआजखूंकहियें तीजीवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पांचसागरोपममध्यआजखोकहियें असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानोंपांच पल्योपमआजखोकह्यो भगवंतें सोधर्मईशान पहिले बीजेदेवलोके केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आजखोकह्यो तीजेसनत्कुमारमाहेंद्रचउथेदेवलोकनेवि षेकेतलाएकदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआजखूंकह्यो भगवंते तीजेचउथें देवलोके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । बीजेप्रतरे ४ । वाताव र्त्तनामछे ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ण ६ । वातलेश ४ । वातध्वज ८ । वातशृंग ९ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए

सप्ततिवर्षाण्यायु रत्रचार्यविभाग: षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि गृहस्थपर्याय: द्वादश छद्मस्थपर्याय:, षोडशकेवलिपर्यायइति निसहाश्रोषमित्यादि अस्यभावार्थ: किलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाह्रद: सहस्रद्वयविष्कम्भ शतु:सहस्रायाम स्तदेवंपर्वतविष्कम्भार्द्धस्य ह्रदविष्कम्भार्द्धेनन्यूनतायां शीतोदामहानद्या: पर्वतस्योपरि चतु:सप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येवं प्रवाहो भवति वइरामयाएजिभियाएत्ति वज्रमय्याजिह्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति निषधपर्वतस्याधोवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्वीपेनालंकृतमध्यभागे

साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहाउणं वासहरपव्वयाउ तिगिच्छिदहाउ सीतोयामहानदीउ चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वइरामयाए जिभियाए चउजोयणायामाए पन्ना

डा अग्निभूति श्रीमहावीरना वीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदु:ख रहित थया। तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष छद्मस्थपर्याय १६ केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु। निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊचो उपरि १६हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेते गच्छी महा द्रहछेते २ हजार योजन पिहुलो ४हजार योजन लांवोछे। निषध वर्षधर पर्वतथको तेगछीद्रहथकी निकली एहवी सीतोदामहानदी ७४ से २१ योजन साधिक एक कला एतले प्रवाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमईजीभीयें ४०० योजन लांबी५० योजन पिहुली वहीने जायछे। निषध पर्वतने हेठें वज्रमयी भूमिकाछे जेहनी एहवी ४८० योजन पिहुलो १० योजन ऊंडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडे महया मो

मानितात्येवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमयतत्त्वसुबोधं नवरमिहलेश्या १ जोयनिकाय २ बाह्य २ ऽभ्यंतरतपः ४ समुद्घाता ५ वग्रहार्थानिस
न्नाथि षट् नक्षत्रार्थंद्विस्थित्यर्थानिषट्उच्छासाद्यर्थंनयनेवेंति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिद। कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेश्या

यसिंगं वायसिद्धं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं
सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूडं सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव
माइंठिई प० तेणंदेवापंचरहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेसिणंदेवाणं पंच
हिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ सतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजे पंचहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव
अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ छलेसाउपन्नत्ता तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

ह १२ विमाने तथावली। सूर १। सुसूर २। सूरावर्त्त ३। सूरप्रभ ४। सूरकांत ५। सूरवर्ण ६ शूरलेश ७। सूरध्वज ८। शूरशृंग ९। सूरसिद्ध १०। सूरकू
ट ११। सूरोत्तरावतंसक १२। एह २४ विमानेदेवतापणेऊपनाछे तेहदेवतानें उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआउखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध
मासे थोडोसासले घणोसासले नोचोसासमूके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेंगये आहारनोअर्थऊपजेंछे केतलाएक ससारमांहिभव्यजीय जेहपांचभवने आंतरे
सीझस्यें बूझस्यें मूंकास्ये संसारसागरथकी सर्वदुःखनोअंतकरिस्यें मोक्षजास्यें इति पांचमूठाणोसमाप्त ॥ ५ ॥ छट्ठोठाणोकहिछे। छलेश्याकही

संख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवार: प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्त्त: सप्तसप्ततिलवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्त: कथमुच्यते हट्ठस्सअनवगल्ल
स्स निरुवकिट्ठस्सजंतुणो एगेऊसासनीसासे एसपाणुत्तिवुच्चइ १ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥
७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानकं लिख्यते । सक्कस्सेत्यादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरुण वैश्रमणाभिधानानां लोकपालाना चतुर्थउत्तर दिक्पाल
सन्निवेशमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीना व्यंतरव्यतरीणां चाधिपत्यंकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ
करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्या: सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश
दित्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यत दृष्टतूता मितिमतांतरमिदं आहेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्म्म पोरेवच्चंति पुरोवर्त्तित्व

देवाणं सत्तहत्तरि देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥
सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साण
आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं महित्त महारायत्तं आणाईसरसेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थेरेणं अकं

जानो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी । दक्षिणदिशे सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवंइंद्रना ७८ लाख भय
नछे तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्त्तपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहेंकरावतो थको आत्मानीपरे पाल
तोथको रहेछे। स्थविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदु:ख रहित थया गृहस्थपणे ४८ वर्ष छद्म

शब्दःप्रयुज्यतइति तथाबाह्यतपः बाह्यशरीरस्यपरिशोषणेनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति। आभ्यंतरंचित्तनिरोधप्राधान्येनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति तथाछद्मस्थोऽकेव

पम्हलेसा सुक्कलेसा छजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस काए छव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाउ कायकलेसो संलीणया छव्विहेअब्भिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणउ वेयावच्चं सज्झाउ ज्झाण उस्सग्गो छठाउ

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गथकीआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायं लेश्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनीकृष्णलेश्या १। नीलासूडानें वर्णेतेनीललेश्या २। अलसीनाफूलसरीषीकापोतलेश्या ३। हींगलूपरेंत्यांसरीखा तेजोलेश्याजांणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ५। सखसारीषीउजलीशुक्ललेश्या ६। संसारमांहि छप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेछे तेकहेछे पृथवीकाय पृथवीमाटीकायसमूह १। एमज अपजलकायपाणी २। तेयकायअगनि ३ वायुकाय वायरो वनष्पतीकायतृणवृक्षादिक ५ त्रसकायबेंद्रियादिक पचेंद्रियलग छप्रकारे बाह्यशरीरने शोषेकर्मखपावे तेबाह्यतप तेहनोकरिवो तेंहबाह्यतपकर्मकहिये तेकहेछे अणसण उपवासएकथकीमांडी छमासलगे ऊणोदरीऊणे पेटेजठिवो पूरोआरहानलेवो २। वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३। रसनोंपरित्याग आंबिलनिवी प्रमुखकरिवो कायशरीरे कृशतादितापलोचआतापनादि कनोंकरिवोसंलीनताअंगउपांगसंवरी अणशनादिकनोकरिवो छप्रकारेंअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मकह्यो तेस

५ ॥

जंबूद्वीपेयदैतौसूर्यौसर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरंकृत्वा चरत एतच्च जंबूद्वीपेशीयुत्तर योजनशतं प्रविश्याभ्यंतरमण्डलंभवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणादपकर्षिते यथोक्तमन्तरंभवतीति तथा तत्रतयो श्चरतोरुत्कृ ष्टो ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्तारात्रिर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तरं मण्डलमुपसंक्रम्य यदा चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणिषट्चपचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागायोजनस्यांतरंकृत्वा चारंचरत स्तदा ष। ष्टादशमुहूर्त्तोदिवसो भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्टिभागाभ्यांन्यून: द्वादशमुहूर्त्ताचरात्रि र्भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्टिभागाभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य द्वितीयादिषु मण्डले ष्वहोरात्रेषु चान्योन्यांतर प्रमाणस्य पंचभि: पंचभि र्योजनै: पंचत्रिंशताचेकषष्ठिभागै योजनस्य वृद्धिर्वाच्या द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागा भ्यां दिनहानी रात्रि वृद्धिश्चेति एवंच एकोनचत्वारिंशत्तमे मंडले सूर्ययोरन्तरं नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपंचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतिश्चैक ष ष्ठिभागा दिनप्रमाणं चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागाना मष्टसप्तत्यां पातितायां षोडशमुहूर्त्ताश्चतुश्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागामुहूर्त्तस्य रात्रे

णचत्तालीसइमे मंडले अठहत्तरि एगसठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं चा

नाएकसठ भाग करी एहवा बेबेभाग प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिवधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३९ मे मांडले एक योजनना एकस ठीया ७८ भाग दिवस घट्यो रात्रोवधी। एमज सर्ववाह्य मंडलथको दक्षिणायनथको सूर्यनिवर्त्यौ पाछोचाल्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे ३९ मे मांडले सूर्य गयो एक मुहूर्तना एकसठिया ७८ भाग कह्या । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननोपरिभागघटाडोये वधारिये । इति ७८ संपूर्ण

लोतत्र भवाम्छाश्च स्थिकाः समेकीभावेनोत्प्राबल्येनचघातानिनिर्जरणानिसमुद्घातावेदनादिपरिणतोहिजीवोबहून् वेदनीयादिकर्मप्रदेशान्कालांतरानुभाव योग्यानुदीरणेनाक्रिश्योदयेप्रक्षिप्यानुभूयनिर्ज्जरयति आत्मप्रदेशैः सश्लिष्टान्शातयतीत्यर्थस्तेचेहवेदनादिभेदेनषडुक्ताः तत्रवेदानासमुद्घातो ऽसावद्यकर्माश्रय कषायसमुद्घातः। कषायाख्यचारित्रमोहनीयकर्माश्रयः मारणांतिकसमुद्घातोऽतर्मुहूर्तशेषायुष्ककर्माश्रयो वैकुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकर्मा श्रयास्तत्रवेदनासमुद्घातसमुद्धतश्रा मावेदनीयकर्मपुद्गलशातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्धतः कषायपुद्गलशातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्धत आयुःकर्मपु द्गलावातः वेकुर्विकसमुद्घातसमुद्धतस्तुजीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्यशरीरविष्कंभबाहल्यमात्रमायामतश्च संख्येयानियोजनानि दंडंनिसृजतिनिसृज्य

मत्थियासमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिअसमुग्घाए विउव्वियसमुग्घाए ते
यसमुग्घाए आहारसमुग्घाए छव्विहेअत्थुग्गहे प० तं० सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणिं

गलेआगलितखाणस्ये अनुक्रमेकहेछे प्रायछित तेअतीचारदूसण निवारवो भणी आलोचनादिकनोदेवो विनयतेवडेआव्यांजठिवो वेयावच्च आहारादिक दानेकरी ओठभवो कालवेलायें सूत्रभणिवो ध्यानतेशुभध्याननों ध्याववो उत्सर्गते कायोत्सर्गकरिवो छद्मस्थना छ समुद्घातकह्या सातमोकेवलिसमुद्घात तेकेव लीनो एकाभावे प्रबलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनो हणिवो निर्ज्जरवो तेसमुद्घातकहिये तेकहेछे प्रथमवेदनासमुद्घात १ वेदनाव्याप्योजीवघ णावेदनीयकर्म नाप्रदेशकालांतरेअनुभववायोग्यछे तेउदीरणाकरिने आचेपोउदयावलिकाये प्रक्षेपोभोगवीने निर्जरेआत्मानाप्रदेशथीसंवद्धछे वेदनीयकर्मना पुद्गलतेविगला कषायसमुद्घातजीवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिकसमुद्घात समुद्धतजीव आउखाकर्मपुद्गलनिर्जरे ३ विकुर्वणासमुद्घासमुद्धवजीवना प्रदेश शरीरथकी

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्सइति द्वितीयेहि तस्यश्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिकास्तासुच पञ्चमी निशीथाख्ये ह नग्टह्यते भिन्नप्र स्थानरूपत्वात्तस्यास्तदन्या श्चतस्रस्तासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यौ चैकैकाध्ययनात्मिके तदेव सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि काकस्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्देशनकालानामेतावत्संख्यत्वात् तथाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार श्चत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कंधेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश त्रय स्त्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकस राणि अध्ययनान्येव तृतीयैकाध्ययनात्मिका एवं चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखण्डमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्युच्छ्रि ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वाग्रेण भवतः पुष्करार्द्धमन्दरावप्येवं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

आयारस्सणं भगवओ सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देसणकाला प० धायइखंडस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पाचमे ६ छेठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्कंधे ५१ उद्देशा। बीजे श्रुतस्कंधे ५ चूलिका तेमाहि पाचमी निशीथ नामे ते दूहा नग्रही बीजी ४ ग्रही तेमांहीली बीजी चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमाहीपहिली चूलिकाना साते अ ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुअध्ययने बेबे उद्देशा एव उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजी चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजी चौथी चू लिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशण कालाथया। ८५ उद्देशानोधडो पूरो २५ मे समवायांगे मेलव्योछे। पूर्वापरधातकी खंडे बेमेरुपर्वतछे ते वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमाणेकह्या एकसहस्र योजनऊंडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया। एम पुष्करार्द्धे पणि कह्या।

चयथास्थूलोवैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान्प्रागबद्धान्शातयति एवंतैजसाहारकसमुद्घातावपिव्याख्येयाविति । तथाअर्थस्यसामान्यनिर्देशस्वरूपस्यशब्दादे
रवेतिप्रथमव्यंजनावग्रहानतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैश्चयिको व्यावहारिकस्त्वसंख्येयसामयिकः सचपोढा श्रोत्रादिभिरिंद्रियैर्न

दिअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे कत्तियानक्खत्तेछतारे प० असलेसानक्खत्तेछतारे प०
इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं छपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइया
णंनेरइआणं छसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणंछपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मी

वाहिरकाढीशरीरनंबाहल्यपणेविष्कंभपणे जंचपणें संख्यतायोजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकर्मना स्थूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजोलेश्यामूंकेतिवारे तेजसपुद्गल
निर्जरे ५ पूर्वधरसंदेहटा लिवानेअर्थे आहारकशरीरकरे आहारसमुद्घातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरावे ६ छ प्रकारेंअर्थावग्रह व्यंजनावग्रहानंतर
अर्थनों सामान्यपणेग्रहिवोते अर्थावग्रह ते एकसमयरहै व्यवहारें असंख्यातसमयेंरहै तेकहैछै श्रोत्रेंद्रियकान तेणेकरी सामान्यप्रकारें शब्दरूपअर्थनोग्रहिव
तेश्रोत्रेंद्रियोअर्थावग्रह १ चक्षुकहिये आंखतेणेकरी सामान्यप्रकारेंरूपनोंग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकायें गंधनोग्रहण ते घ्राणेंद्रियअर्थाव
ग्रह ३ जीभनेस्वाद ग्रहिवोतेजिह्वेंद्रिय अर्थावग्रह ४ शरीरेंकरी स्पर्शनोग्रहिवो तेस्पर्शेंद्रियार्थावग्रह ५ मनेंकरी अर्थनोग्रहिवो ते मनोइन्द्रिय अर्थावहग्र ६
कृत्तिकानक्षत्रनाछताराकह्या असलेषा नक्षत्रना छताराकह्या एणीयें रत्नप्रभापहिली पृथवीने विषेंकेतला एकदेवतानोंछपल्योपम मध्यआउखोकह्यो ।

चउणउइसहस्साइं छप्पणहियंसयंकलादोय जीवानिसहस्सेसत्ति ॥ ९४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानके किंचिल्लिख्यते। लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि पचनवतिः २ प्रदेशाउद्वेधोत्सेधपरिहानिभ्याविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्त्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलापेक्षया सहस्त्रमुद्वेधउण्डत्व मित्यर्थः तदनन्तर पचनवतिप्रदेशानतिक्रम्योद्वेधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपचनवति प्रदेशान् गत्वा उद्वेधस्य प्रदेशा परिहीयन्ते एवं पचनवति २ प्रदेशाति क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्वेधस्य हान्या पचनवत्यांयोजनसहस्त्रेष्वतिक्रान्तेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्वेधतः सहस्त्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वभवतीति तथा समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्त्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधश्चोच्चत्व तत्र समधरणीतलरूपा तत्तटा त्पचनवतिप्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

निसह नीलवंतियाणं जीवाउ चउणउइ जोयणसहस्साइ एक्कं छप्पन्न जोयणसय दोन्निय एगूणवीसइ भागे जोयणस्स आयामेण प० अजियस्सणं अरहउ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥ सुपासस्सण अरहउ पचाणउइगणा पचाणउइगणहरा होत्था जंबूद्दीवस्स ण द्दीवस्स चरमंताउ चउद्दि

वा ९४ हजार योजन एकसोछप्पन योजन उपरि बे उगणीसहाउया भाग एकयोजनना ९४१५६ योजन १९ काला आयामपणे लांबपणेकही। अजितनाथ अरिहंतने ९४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति ९४ मो समवाय थयो ॥ ९४ ॥ हिवे ९५ मो लिखेछे। सुपार्श्व सातमा अरिहंतने ९५ गछ ९५ गणधर हुया। जंबूद्वीपना चरमातथकी पूर्वादिक चिहुंदिशि लवण समुद्रमांहि ९५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश कह्या। तेकहेछे। पूर्वे मुदमांहि बडवामुख। दक्षिणे केतुक। पश्चिमें यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखंडथकी समुद्रमांहि उरहामध्यभाग भणी ९५ सहस्र

साणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणंछपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयवाई सयंभू सयंभूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगंतं वीरसेणियं वीरवत्तं वीरप्पभं वीरकंत वीरवन्नं वीरज्झयं वीरसिगं वीरसिद्धं वीरकूडं वीरुत्तरव डिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणंछसागरोवमाइंठिई प० तेणदेवाछएहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं छहिवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ

तोजीवालुकप्रभा पृथवीनेंविषें केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आउखोंकह्यो । असुरकुमारदेवतानीं केतलाएकनीं छपल्योपमआउखोकह्यो । सौध र्मईशान देवलोकने विषें केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आउखोकह्यो । तीजेसनत्कुमार चोथे माहेंद्र देवलोके केतलाएकदेवतानो छसागरोपम आउखो कह्यो । तीजेचोथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयवादी १ । स्वयभू २ । स्वयंभूरमण ३ घोस ४ । सुघोस ५ । महाघोस ६ । क्रष्टिघोस ७ । वीर ८ । सुवीर ९ । वीरगत १० । वीरसेनिक ११ । वीरावर्त्त १२ । वीरप्रभ १३ । वीरकांत १४ । वीरवर्ण १५ । वीरध्वज १६ । वीरशृंग १७ । वीरसिद्ध १८ । वीरकूट १९ । वीरोत्तरावतंसक २० । एहवेविमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो छसागरोपम आउखोकह्यो तेदेवता छठे अर्द्धमासे एतले छठेपखवाडेसासो सासले घणोसासले उचोलेनीतेउसास नोचोमेहिवोतेमोसास तेंदेवताने छहजारवर्षे आहारनी अर्थउपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवनेआंतरे सीझस्यें

मौर्यपुत्रो महावीरस्यसप्तमगणधरस्तस्य पंचनवतिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्व छद्मस्थत्व केवलित्वेषुक्रमेण पंचषष्टिचतुर्दशषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ९५ ॥ अथ षण्णवतिस्थानकं किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषण्णवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पंचाशत् उत्तरस्यांच षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव हारिएति व्यावहारिको येन गव्यूतादिप्रमाण चिंत्यते अव्यावहारिको लघुदीर्घो वा भवत्युक्तप्रमाणात् दंडोहि चतुःकरउक्तः करचतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्विं

णीए प० कुंथूणं अरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ ९५ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छन्नउइ छन्नउइ गामकोडीओ होत्था वायुकुमाराणं छन्नउइभवणावाससयसह

९५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनोऊंचपणो हजार योजननोटले १ हजारनो ऊंडपणो समुद्रनोथाय एतलो। कुन्थुनाथ अरिहंतर ३ सहस्र अने ७५० वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ९५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मोर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ९५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृहाश्रमे ६५ छद्मस्थपणे १४ केवली पणे १६ सर्वमिली ९५ वर्षथया। इति ९५ मो समवाय थयो ॥ ९५ ॥ हिवे ९६ समवाय लिखेछे। एकेका चातुरंतचक्रवर्तीने ९६ कोडी गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ९६ लाख भवनावासा कह्या। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख बिहुमिली ९६ लाख थया। व्यवहारिका दंड ६

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेस्वयंभ्वादीनिविंशतिविमानानीति ॥ ६ ॥ अथसप्तमस्थानकंविव्रियते तत्त्वकठं नवरमिहभयसमुद्घातमहावीरोच्चत्वस्वरवर्षधरवर्षचोणमोहार्थानिचसूत्राणिषट् नचत्वार्थानिपच स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीणीवेति तत्रेहलोकभयंयत्स

संतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजेबहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥ सत्तभयठाणा प० तं० इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेभगवंमहावीरे सत्तरयणीउ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था स

बूझस्यें मूंकासे भवमांहिथी सर्वदुखनो अंतकरिस्ये मोक्षजासे इतिछट्ठोठाणोसमत्तं ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेछे सातभयनाठामकह्या तेकहेछे स्वजातीयथकीभय उपजेतेइहलोकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यआश्रीउपजेते आदानभयबाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आकस्मिकभय आजीविका जीवकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनोभय तेमरणभय अस्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजे तेअस्लोकभय सातसमुद्घातपदनो अर्थछएठाणेकह्योछे तेकहेछे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोंकेवलीसमुद्घाततेहकोइक केवलीच्यार अघातीयाकर्मखपाववेअर्थें केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलगें विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरे श्रमण तपस्वी भगवतमहा

निसढकूडस्सणमित्यादि इहायंभाव: निषधकूटम्पञ्चशतोच्छ्रित निषधश्चचतु'शतोच्छ्रितइति यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ९०० ॥ सव्वेविणजमगेत्यादि उत्तरकुरुषु नीलवद्वर्षधरस्य दक्षिणत: शीतायामहानद्या उभयो: कूलयो र्द्वौ यमकाभिधानौ पर्वतौस्त' तेच पचस्वप्युत्तरकुरुषु द्वयोर्द्वयो र्भावादृश एव चित्त

णिज्ञाउ भूमिन्नागाउ नवहिंजोयणसएहिं सव्वुवरिमे ताराकूवे चारंचरइ निसढस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरि ल्लाउ सिहरतलाउ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्सकंडस्स वज्झमज्झदेसभाए एसणं नवजोयणसयाइं

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर असी योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनो तारोछे। तेह थी ३ योजने शुक्र नो तारो छे तेह थी ३ योजन बृहस्पति नो तोरो छे तेहने ३ योजन उपर मगल नो तारो छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्चर नो तारो छे एव नौ से योजन थया। निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलथकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो पहिलो काडनो बहुमध्य देश भाग एह ९ से यो जन आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले निषध पर्वत ४ से योजन ऊंचो अने रत्नप्रभानो पहिलो कांड हजार योजन तेहनो अर्द्ध ५ से योजननो एवं ९ से योजन थया। एमज नीलवंतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड नो मध्यभाग ९ से योजन जाणिवो॥ इति ९ से नो समवाय थयो ॥ ९०० ॥ हिवे हजार नो समवाय लिखे छे। सगलाई ९ ग्रैवेयक ना बिमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊचा ऊंच पणे कह्या। सगलाई यमक पर्वत उत्तर कुरुने विषे नीलवत पर्वत थी दक्षिण पासे शीता नदी ने बिहु पासे २ यमक पर्वत छे मेरुदीठ बे बे करता ५ मेरुने पासे दस थाय ते दससे

जातीयात् परलोकभयंयद्विजातीयात्आदानभयं द्रव्यमाश्रित्यजायते अकस्माद्भयंबाह्यनिमित्तनिरापेक्षंस्वविकल्पाज्जातं शेषाणिप्रतीतानि नवरं मश्लो कोऽकीर्त्तिरिति। समुद्घाताःप्राग्व नवरं केवलिसमुद्घातो वेदनीयनामगोत्राश्रयइति। तथा रत्नि वितताङ्गुलिहस्तइति ऊर्द्ध्वत्वेनेतिद्योत्याबभूवेति तथा

सत्तवासा प०

त्तवासहरप्पव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रूपी सिहरी मंदरे सत्तवासा प०

तं० भरहे हेमवंते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाओ स

त्तकम्मपयडीओ वेएई महानक्खत्ते सत्ततारे प० कत्तिआइआसत्तनक्खत्ता पुव्वदारिआ प० महाइआराइन

वीर सातरत्निवितताङ्गुलहाथ रत्निकहिये एतलेसातहाथऊंचापणेहुया। सातवर्षधरपर्वतकहिये भरतादिकक्षेत्र तेहनाधरणहारकह्या। मर्यादाकारीतेकहे छे। भरतक्षेत्र हिमवंतक्षेत्र मर्यादाकारीतेलघुहिमवंतपर्वत हिमवंतक्षेत्र हरिवर्षक्षेत्र मर्यादाकारी तेमहाहिमवत पर्वत हरिवर्षक्षेत्र महाविदेह मर्यादा कारी रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकक्षेत्रमर्यादाकारी निषधनीलवंतपर्वत रम्यक ऐरण्यवतक्षेत्र मर्यादाकारीरूपीपर्वत ऐरण्यवतऐरवत क्षेत्र मर्यादा कारी शिखरीपर्वत। पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारी मेरुपर्वत। जंबूद्वीपमांहिसातवासाकहिये सातक्षेत्रछे तेकहेछे भरतक्षेत्र मनुष्यनो १ हेमवतक्षेत्रयु गलियांनूं२हरिवर्षक्षेत्रयुगलियांनूं ३ महाविदेहक्षेत्रचोथो कर्मभूमियामनुष्यनो ४ रम्यकक्षेत्रयुगलियांनूं ५ एरण्यवतक्षेत्रयुगलियांनो ६ एरवतक्षेत्रमनुष्यनो ७ क्षीणसर्वथापिक्षयगयोछे मोहनीकर्म जेहनो एहवाभगवंतपूज्यते मोहनीयकर्म वरजीनें सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १। दर्शनावरणीय २। वेदनी

॥

णास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारश्च गोचरश्चेत्यादि यावद्गुप्तयश्च शय्यादिग्रहणं चव्रतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेतिसमाहारद्वंद्व स्तच्चतत्सुप्रश्र

स्तचेति कर्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्नक्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधान तत्सर्वंतत्प्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय

मिति सेसमासइत्यादि स आचरीयमधिकृत्य गृन्थस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्त्तते समासतः सक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचार' श्रु

तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्ववताव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि

त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्टितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आयारस्त्ति आचारगृन्थस्य या

मित्यलङ्कारे परित्तासख्येया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थ. कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्पिण्युत्सर्पिणीकाल वा प्रतीत्यपरीतेति सख्येयान्यनु

ग्गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थमाहिज्जइसे समासउ पंचविहो प० तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे आयारस्सणपरित्तावायणा सखेज्जाअणुउगदारा सखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा सखेज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणअंगठयाए पढमेअंगेदो

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदें तपनो करिवो ४ वीर्या

चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारागगृथना सख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेहनो

द्वार उपक्रमादिक। सख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेप्रतिपत्ति। सख्यातावेढा छद विशेष२ सख्याता श्लोक अनुष्टुप आदिक। सख्याता

॥

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा त्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिहतुमतान्तरमाश्रित्यकृत्तिकादीनिसप्तपूर्वद्वारिकादीनिभणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौतुबहुतराणिमतानि दर्शितानीहार्थं

रक्खादाहिणदारिआ प० अणुराहाइआसत्तनक्खत्ताअवरदारिया प० धणिठाइआसत्तनक्खत्ता उत्तरदारिया प० पाठांतरेण । अभीयाइयासत्तनक्खत्ता प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्थेगइयाणं सत्तपलिओवमाइंठिई प०

य ३ । आउखो ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेंवेदे भोगवें मघानक्षत्रना साततारकह्या कृत्तिकाआदिलेईनें सातनक्षत्र पूर्वद्वारिकाकह्या पूर्वदिशिजाणहारने भलूंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकह्या । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकह्या । धनिष्ठादिक सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकह्या । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयेरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्यम आउखोकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषें नारकीनोउत्कृष्टोसातसागरोपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषें नारकीनो सातसागरोपमजघन्य आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषें केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम

राय षड्जादयः सप्त गोत्राणि च काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जोइसंचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालनानि तिहिंठाणेहिं ताराकवे चलेज्जा इ त्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकविधस्य तवक्तव्यस्य तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यक प्रथमेऽध्ययने स्थाप्यतइतियोगः एव द्विविधवक्तव्यक द्विती येऽध्ययने एव तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यक दशमेऽध्ययने तथा जीवाना पुद्गलाना च प्ररूपणताख्यायतइतियोगः तथा लोगट्ठाइ त्ति णति लोकस्थायिनाच धर्मास्तिकायादीनाप्ररूपणता प्रज्ञापना शेष आचरसूत्रव्याख्यानादवसेय नवर मेकविंशति रुद्देशनकालाः कथ द्वितीयतृतीयचतुर्थेष्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार उद्देशनाः पचमे त्रय इत्येते पचदश शेषासु षट् षणामध्ययनाना षट्उद्देशनकालादिति बावत्तरिपदसहस्साइति अष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्विगुण

यंदुविहजावदसविहवत्तव्वयजीवाणपोग्गलाणयलोगट्ठाइचणपरूवणयाआघविज्जतिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा सखेज्जाओपडिवत्तीओ सखेज्जावेढा सखेज्जासिलोगा संखेज्जाओसगहणीओ सेणंअगठ याए तइएअगेपणसुयक्खंधे दसअज्झयणा एक्कावीसउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० सखेज्जाअ

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नै सर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४९ ज्योतिश तारारूप तेहना सचालन तिहिठाणे हिं। तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानागे थापिये। एक विधिनो कहिवो त्रिविधनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो। जीवनी पुद्गलनी प्ररूप णाठाणागे करी। लोकस्थापीये धर्मास्तिकायनी प्ररूपणा ठाणागे कही। वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप कही अनुयोगद्वार उपक्रमादिक सख्याती प्रतिपत्ति

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुञ्त्थेगइयाणं देवाणंसत्तपलिञवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पे देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा
सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिदेकप्पेउक्कोसेणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पेञ्त्थेगइ
याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा सम्मं समप्पभं महप्पभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणं
कुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तण्हं
ञ्रद्धमासाणं ञ्राणमंतिवा पाणमतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहिंवाससहस्सेहिं ञ्रा
हारठे समुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावसव्वदु

ञ्राउखोकह्यो । त्रीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कष्टो सातसागरोपम ञ्राउखोकह्यो । माहेंद्रचउथे देवलोके देवतानोउत्कष्टो भांझेरोसातसागरोप
म ञ्राउखोकह्यो । ब्रह्मपांचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपमञ्राउखोकह्यो । सनत्कुमारदेवलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ ।
प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्कुमारावतसक विमान ८ । एहञ्राठविमाननेविषे जेदेवताउपनाछे तेहदेवतानो उत्कष्टोसात साग
रोपम ञ्राउखोकह्यो । तेहदेवता सातमे पखवाडे सासोसासले घणोसासलेवे नीचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहस्रे सातहजारवर्षे ञ्राहारनी ञ्र
र्थेउपजेछे केतलाएकभव्यजीव जेहसातभवनेञ्रांतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुक्खनो ञ्रंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति सातमोठाणोसमत्तं ॥ ७ ॥



निखिलाना म्वक्तुमशक्यत्वा दर्थानां जीवादीना मेगुत्तरियत्ति एकउत्तरीयस्यांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतत्वात् क्रस्वत्व म्परिवुड्ढियत्ति परिवृद्धि श्चेति समनुगीयते समवायेनेति योग. तत्र च परिवर्द्धन सख्याया' समवसेय चशब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशत यावदेकोत्त रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवग्गेति पर्यवपरिमाण अभिधेयादि तद्धर्मसंख्यान यथा परित्तातसाइत्यादि पर्यवशब्द स्यच पल्लवत्ति निर्द्देश. प्राकृतत्वात् पर्यक. पल्लवका इत्यादिवदिति अथवा पल्लवाइव पल्लवा अवयवा स्तत्परिमाणं समणुगाइज्जति समनुगीयते प्रतिपाद्यते पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसयस्सत्ति स्थानकशतस्यैकादीना शताना संख्यास्थानाना न्तद्विशेषिताल्मादिपदार्थानामित्यर्थ. तथा द्वाद शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तत्द्वादशविधविस्तर तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किंभू तस्य जगज्जीवहितस्य भगवत' श्रुतातिशययुक्तस्य समा

ति ससमयपरसमयासूइज्जति समवाएणं एकाइयाणं एगठाणं एगुत्तरियंपरिवुड्ढीए दुवालसगस्सयगणिपिड गस्स पल्लवग्गेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयबारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सभगवओ समासे

त्रिणचार आदि कोटिलगे एक अर्थे जोवादिक पदार्थनो इकेक आगलि २ परे वधारिवो ते समवायांग कहिये। द्वादशाग केहवो छे। गणी आचार्य तेह ने पिटकरत्नकरडीया · सरीखो छे तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहा कहिये स्थानक शत एक आदि सो छे केहडे जेहने एहवो संख्या स्थानक तेहनो वारे प्रकारे विस्तारवो एहवो श्रुतज्ञानछे। ते श्रुतज्ञान केहवो छे। ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे । वली पूज्यछे। एहवा श्रुतज्ञानना संक्षेपे समाचार स्थानक २ प्रति अग अग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये छे । ते समवायाग ने विषे नाना विध जीव अजीव

इति स्थितिसूत्रेसमादीनिअष्टौविमाननामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकंच्चा आयते। सुगमंचैत नवर मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यहृक्षजंबू शाल्मलीजगतीकेवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीणीति। तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनितान्येव मदप्रधानतयादर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि जात्यामदोजातिमदएवमन्यान्यपि अथवामदस्यस्थानानितान्येवाह जाइमएइत्यादिशेषंतथैव तथाप्रवचनस्यद्वादशां गस्य तदाधारस्यवा संघस्य मातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्यादयोद्वादशांगेभिहिता आश्रित्य साचात्प्रसगतोवाप्रवर्त्तंते भवतिचयतो यत्प्रवर्त्तंते तस्यतदा श्रित्यमातृकल्पतेति संवपचेतु यथा शिशुर्मातरममुच न्नात्मलाभंलभते एवंसंघस्ताममुचत्संघत्वंलभते नान्यथेतोर्यासमित्यादीनांप्रवचनमातृकत्वमेवेति तथा

रकाणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अठ्ठमयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुय मए लाभमए इस्सरियमए अठपवयणमायाउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण

हिवे आठनोठाणोकहेछे। आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या। तेकहेछे जातिमदजातितेमातृपच तेणेकरीमद अभिमान तेजातिमद १। इमकु लजेपिढपचतेणेकरीमद तेकुलमद २। बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३। रूपतेसौंदर्यपणो ४। तपतेछठ आठमादिक ५। श्रुतजेशास्त्र घणोंभणे तेणेकरीम द ६। लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७। ऐश्वर्यतेठकुराई ८। यह आठमदकह्या। आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनूं आधारतेसंघ तेह ने मातासरिखो माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये। तेकहेछे ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचाले तेईर्यासमिति १। भाषानिवद्यबोलेते भाषासमिति २। ४२ दूषणटाली आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३। उपकरणपूंजीलेवो मूंकवोते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजीनिर्दोष स्थंडिले

णताया इद्दानाश्रयणा इन्यथा तद्दिगुणत्वे इत्यष्टाशीति सहस्राणिचभवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का स्ता ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता न्युदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्वं संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्तत स्त ज्ञातानिच धर्मकथाश्च ज्ञाताधर्मकथा स्तत्र प्रथमव्युत्पत्त्यर्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघकुमारादी ना नगरादीन्याख्यायते नगरादीनि द्वाविंशतिपदानि कंठ्यानिच नवरं मुद्यान पत्रपुष्पफलच्छायोपगतवृक्षोपशोभित विविधवेषोत्तममानश्च बहुजनो यत्र भोजनार्थं यातीति चैत्य व्यंतरायतन वनखंडो नेकजातीयैरुत्तमैर्वृक्षैरुपशोभितमिति आघविज्जति इहयावत्करणा दन्यानि पचपदानि दृश्यानि यावदयसूत्रा

साए एव चरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तंवियाहे ॥ ५ ॥ सेकिंतणायाधम्मकहाउ णायाधम्मकहासुण णायाणं णगराइ उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअ परलोइअइड्ढीविसेसाभोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव

लगे। चरण श्रमण धर्मव्रत करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्याअंग एतले भगवती अंगपांचमो जाणिवो ॥ ५ ॥ स्त्रूते ज्ञाता धर्मकथाग। ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेघकुमारादिकना नगर नाम। उद्यान पत्र पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यंतरायतन। अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित वनखंड। राजा। माता। पिता। एहनानाम समोसरण घणानो एकत्र मीलन। धर्माचार्यनाम। धर्मनी कथा। इहलोक मनुष्यलोक। परलोक देवगति तेहनो ऋधि विशेषनो भोग तेहनो त्या

अंतरदेवानांचैत्यवृक्षास्तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया श्छत्रचामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति । तेचैवंश्लोकाभ्यामवगन्त व्याः कलंबोउपिसायाणं वडोजक्खाणचेइय । तुलसीभूयाणभवे रक्खसाणतुकंडउय १ असोगोकिन्नराणंच किंपुरिसाणयचंपओ नागरुक्खोभुयंगाण गधव्वाण यतुबुरुत्ति ॥ २ ॥ तथा जबुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनेतितन्नाम एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्यवेणुदेवाभि

आंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती वाणमंतराणंदेवाणंचेइयरुक्खाअठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअठजोयणाइंउड्ढ उच्चत्तेणं प० कूडसामलीण गरुलावासे अठजोयणइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबुद्दीवस्सणं जगई अठजोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० अठसामइए केवलिसमुग्घाए प० त० पढमेसमएदंडंकरेइ वीएसमए कवाडंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

परिठवे तेपारिष्ठावणियासमिति ५ । मननोगोपिवो ठामेराखवो तेमनोगुप्ति १ इमवचननोगोपिवो २ इमजकायानो गोपिवो ३ । वाणमतरदेवतानाचैत्य वृक्ष तेहने निकटवरत्तोवृक्षतेचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरेंद्रना घरआगलवृक्ष छत्रकरोरह्याछे तेहचैत्यवृक्ष आठयोजनऊंचा ऊंचपणेकह्या । हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमा हिं जबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामे अणाढियादेवनोठाम आठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो निषधपर्वतहेठे देवकुरुक्षेत्रमांहि शाल्मलीवृक्ष गरुड जातोय वेणुदेवतानो आवासभूत तेहआठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो जबूद्वीपनें चउफेरजगतीछे जिमनगरनेचउफेर गढहोये तिमतेजगती आठयोजनऊं चीकही । केवलो छेहडे अंतर्मुहूर्त्त आउखोथके अघातियाकर्म वेदनी १ । नाम २ । गोत्र ३ । आयु ४ । बराबर करिवानेअर्थे आठसमयनो केवलसमुद्घा

य अतस्तैषामाराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगनिःशल्यशुद्धसिद्धालयमार्गाभिमुखानां किमतआह सुरभवने देवतयोत्पादे यानिविमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथासाख्यायते इति प्रक्रम इहच भवनशब्देन भवनपतिभवनानि व्याख्याता न्यविराधितसंयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतिषु नोत्पद्यन्तइति तथा भुक्ता चिरं भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् महतआत्यन्तिकान् अर्हान् प्रशस्त तया पूज्यानितिभावः ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतागा यथाच पुनर्लब्धसिद्धिमार्गाणां मनुजगता वचासन्नाभादीनां सन्तक्रिया मोक्षोभवति तथा ख्यायतइतिप्रक्रमः तथा चलितानाश्च कथञ्चित्कर्मवशत्' परीषहादा वधीरतया संयमप्रतिज्ञायाः प्रभ्रष्टानां सहदेवै र्मानुषा' सदेवमानुषा स्तेषां सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरत्वोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकरणकारणानि आख्यायन्तइतिप्रक्रमः' इयमत्रभावना यथा आर्यषाढो देवे नधीरीकृतो यथावा मेघकुमारो भगवता शैलकाचार्यो वा पान्थकसाधुना धीरीकृत एव धीरकरणकारणानि तत्राख्यायन्ते किम्भूतानि तानीत्याह बोधना

स्सल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूणचिरंच भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततोयकालक्कमचुयाणं जहयपुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया चलियाणयसदेवमा

दर्शनादि रहित अतीचार रहित थको सिद्धिना मार्गने अभिमुख छे तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञाताने विषे कहियेछे। तेह मनोज्ञ शब्दादिक पचेंद्रियना विषय महर्घ्य देवतासबधी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकथीचव्यो तथा वलीपाम्योछे सिद्धिनो मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सहुनी अतक्रिया ज्ञाताने विषे कहीछे । कोइक कर्मना वशथी जे चल्याछे संयमनी प्रतिज्ञाथी भ्रष्टथया छे देवता सहित मनुष्य तत्सबन्धी धीर

धानस्यदेवस्यायसइति । जगतीजंबूद्वीपनगरस्यप्राकारकल्पापालीति । तथा पार्श्वस्यार्हतस्त्रयोविंशतितमस्तीर्थंकरस्य पुरिषादाणीयस्मचि पुरुषाणांमध्ये आदानीयआदेयः पुरुषादानीय स्तस्याष्टौगणाः समानवाचनाक्रिया साधुसमुदायाः अष्टौगणधरास्तन्नायकाः सूरयः । इदंचैतन्नामाणं स्थानांगे पर्यूषणकल्पे च श्रूयते केवलमावश्यके अन्यथा तन्नह्युक्तम् । दसनवगंगणाणमाणं जिणंदाणंति । कोर्थः पार्श्वस्यदशगणाः गणधराश्च । तदिह द्वयोरल्पायुष्कत्वादिना का

चउत्थेसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंतराइपडिसाहरई छठेसमए मंथंपडिसाहरई सत्तमेसमएकवाडं परिसाहरई अठमेसमए दंडंपडिसाहरई ततोपच्छा सरीरत्थेनवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअस्स अठ गणा अठगणहराहोत्था तं० सुभेयसुभघोसेय वसिठेबंभयारिय ॥ सोमेसिरीधरेचेव वीरभद्देजसेइय ॥ १

तकरे । तेकहेछे केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशबाहिरकाढी दंडाकारकरे हेठेसातमीलगे ऊपरलोकांतलगे विस्तारेतेकहेछे । बीजेसमेकपाटकरेदचिणलोकांत लगेप्रदेशेकरीपूरे तीजेसमयें मथानकरेच्यारपांखडीनारवाइयानीपरे पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरे । आत्मप्रदेशविस्तारे । चउथेसमए च्यारविदिशिनाभाग आंतराप्रदेशेंकरीपूरे । पांचमेसमयेमंथाननाआंतराविदिशें जेप्रदेशपूर्याछे तेहआत्माना प्रदेशप्रतें साहरे पाछाले छठेसमये मंथानसंहरे । सातमे समयें कपाटसंहरे १ । आठमेसमये दंडप्रतेसाहरे ८ । तिवारपछे शरीरस्थथहोये मूलगेशरीरहोये । श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयशुकमनाथणीजेह नोवचनसहुनेग्राह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगछने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगछतेहना नायका ते गणधर यद्यपि पार्श्वनाथना १० । गणधर आवश्यके कह्याछे परं बे अल्पायुषहुआ तेमाटे आठलख्याछे तेकहेछे शुभेय १ । शुभघोष २ । वासिष्ट ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५

शब्दस्य प्रकारार्थत्वा देवंप्रकारार्थाः पदार्थाः वित्थरेणयन्ति विस्तरेण चशब्दात्कचित्केचित् संक्षेपेण आख्यायन्त इतिक्रियायोगः नायाधम्मकहासुणमित्या दि कथ्यमानिगमना नवरं मेकूणतीसमज्झयणत्ति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिर्द्वितीयेच दशेति दशधम्मकहाणवग्गा इत्यादौ भावनेयं मिहैकोनविंशतिर्ज्ञा ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वा ज्ञानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य कथा आख्यानकानीत्युक्तंभवति तासां च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततश्चार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येव दशवर्गाद्रष्टव्या स्तत्रज्ञातेष्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वाख्यायिकादिस

एकमेकं एए अस्सेय एवमाइत्यवित्थरेणय णायाधम्मकहासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदाराजावसं खेज्जाओ सगहणीओ सेण अगठ्याए छठे अगेदोसुअक्खधा एगूणतीस अज्झयणा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता

अन्यभो विस्तार थी तथा संक्षेप थी ज्ञातानि विषे कह्याछे। ज्ञातानि विषे संख्याती वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप। संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक। या वत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणिवी सूत्र थोडो अर्थ घणो ते संग्रहणी। तेह अगार्थ पणे। एम छठे अंगे बे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन त १९ ज्ञाताध्ययन संक्षेपथी बे प्रकारे कह्या। ते कहेछे। केईक अध्ययन मेघकुमारादिक चरित्ररूप। केईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मीडकी वा तकीधो। इत्यादिक। बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहा एकेकीये धर्मकथाये अधिकारना समूहात्मकअध्ययन ते मांहि ज्ञातानेविषे पहिला दश वर्ग ज्ञात। उदाहरण रूपतेहने विषे आख्यायिकादिकनो संभवनथी शेष ९ ज्ञातानि विषे एकेक ज्ञातामाहि पैंतालीस २ अधिक अख्यायिकाना सैंकडा

रणीनाविवचातुमंतव्येति सुभेत्यादिस्लोकः तथाअष्टौनक्षत्राणि चन्द्रेणसार्द्धंप्रमर्दं चन्द्रोमध्येनतेषांगच्छतीत्येवंलक्षणंयोगसंबंधंयोजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थेऽभिहि
तं स्लोकद्वयम् पुणव्वसुरोहिणीचित्ता महाजेठ्ठणुराहकत्तियविसाहा चदस्सयजोगत्ति । यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगीन्यपिकदाचिद्भवन्ति
यतोलोकश्रीटीकाक्षतोक्तं । एतानिनक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेणदक्षिणेनच युज्यन्ते कदाचिच्चन्द्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथार्च्चिरादीन्येकादशविमान

अठनक्खत्ताचंदेणं सद्धिंपमद्दंजोगंजोएंति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेठा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठपलिओवमा
इ ठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणंअठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थे
गइयाणं अठपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं.अठपलिओवमाइंठिई प०
बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अच्चिं १ अच्चिमालिं २ वइरोयणं

श्रीधर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनक्षत्रचंद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगे साथकरे तेकहेछे । कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्रा ५
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो आठपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीने विषेकेतलाएक
नारकीनो । आउसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोकनेविषे केतलाएकदेवतानो

तदण्डपटु प्रचलत्पताकिकाशतोपशोभितमहाध्वजपुरः प्रवर्त्तिमं विविधातोद्यनादगगनाभोगपूरणं चैवमादिलक्षणाः प्रतिकल्पितगन्धसिन्धुरस्कन्धारोहण च तुरङ्गसैन्यपरिवारणं छत्रचामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशन चैवमादयश्च सम्पद्विशेषाः समवसरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिकज्योतिष्काणां भवनपति व्यन्तराणां राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूना ऋद्धिविशेषा देवादिसम्बन्धिन स्तादृशा आख्यायन्त इतिक्रियायोगः तथा पर्षदा सञ्जय वैमाणित्थी सजइपुव्वेणपविसिओवीर मित्यादिनो ग्रन्थरूपाणा प्रादुर्भावाश्च आगमनानि छ जिणवरसमीवन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पञ्चविधा भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवर तथाख्यायतइतियोग' यथाच परिकथयति धर्म्मं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणाना श्रुत्वा च तस्येति जिनवरस्य भाषित अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्म्माणि येषांते तथा तेचते विषयविरक्तासेति अवशेषकर्म्मविषयविरक्ता. के नरा. कि यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं भगवओ जारिसाइड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउब्भावेय जिणस मीव जहयउवासंतिजिणवरं जहयपरिकहंतिधम्मलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सभासियं अव सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं सजमं तवंचाविबहुविहप्पगारं जहबहूणिवासा

णि छे जेम जगतने विषे, जिन शासन हितकारी छे। जेहवा ऋद्धिना विशेष छे। देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी परीष दा नो प्रादुर्भाव आविवो उपासयति पचविध अभिगम ने करी सेवा करवी। जिनने समीपे सेवा करे। जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरगण नेधर्म कथा प्रते कहे। तेह जिनवरनो भाषित सांभलीने। क्षीण प्रायछे कर्म जेहना। वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम पामे धर्म उदार

गामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानक सुखावबोधम् । नवरमिह ब्रह्मगुप्ति १ तद्गुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन ३ पार्श्वार्थसूत्राणांचतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थंत्र यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनावरणार्थंचतुष्टय मित्याद्यर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपायाः नोस्त्रीपशुपंडकैः संसक्तानि संको

पम्नंकरं ३ चंदाभं ४ सूराभं ५ सुपइट्ठाभं ६ अग्गिच्चाभं ७ रिट्ठाभं ८ अरुणाभं ९ अरुणुत्तरवडिंसगं वि माणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइठिई प० तेणंदेवा अट्ठएहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं अट्ठहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे अट्ठेहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥ नवबंभचेरगुत्तीउ प० तं० नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्ताभवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता भ

आठपल्योपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानों आठसागरोपमआउखोकह्यो । पांचमेदेवलोकें जेदेवता अर्चि १ । अर्चिमाली २ । वैरोचन ३ । प्रभंकर ४ । चंद्राभ ५ सूराभ ६ । सुप्रतिष्ठाभ ७ । अग्निराभ ७ रिष्टाभ९ । अरुणाभ १० । अरुणोत्तरावतंसक ११ । एम ११ विमाने देवता पणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाडें श्वासोश्वासलेज'चोसासले नीचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेव ताने आठेवर्षसहस्रे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जेआठभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये । इति आठमोठाणोस मत्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेछे । नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिनीपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

तेचान्येचेत्यानि पूर्ववत् नवरं दसअज्झयणातिन्निवग्गत्ति इहाध्ययनसमूहो वर्गो वर्गेचदशाध्ययनानि वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यत स्त्रयएवोद्देशनकाला भवती त्येवमेवच मत्या मभिधीयन्ते इहतु दृश्यन्ते दशेत्यत्राभिप्रायो नज्ञायत इति तथा सख्यातानि पदसयसहस्साइं पयग्गेणति किल षट्चत्वारिंशच्चाष्टौच सहस्राणि ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि प्रश्नः प्रतीत स्तन्निर्वचन व्याकरण प्रश्नानाञ्च व्याकरणानाञ्च योगात्प्रश्नव्याकरणानि तेषु अङ्गुत्तरम्मसिणसय

एए अन्नेय एवमाइत्थ वित्थरेण अणुत्तरोववाइयदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुजेगदारा सखेज्जाउ संगहणीउसेणं अंगठयाए नवमेअंगे एगेसुयखंधे दसअज्झयणातिन्निवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखेज्जाणि अक्खराणि जावएवंचरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तं अणुत्तरोववाइय दसाउ ॥ ९ ॥ सेकिंतं पराहावागरणाणि पराहावागरणेसु अट्ठुत्तर

स्यें मुनिवर अतक्रिया। एह पूर्वेजे कह्याते अनेरापणि एवमादिक पदार्थ इहां अनुत्तरोपपातिक दशामांहि कहियेछे। एणेंसूत्रे परित्ता वाचना। सख्याता अनुयोग द्वारउपक्रमादिक। यावत् सख्याती सग्रहणी लगें जाणवी। तेह अगार्थपणें नवमे अंगे एक श्रुत स्कंधना दश अध्ययन त्रिण वर्ग वली दश उद्देशन काल। दश समुद्देशनकाल। सख्याता पदना शत सहस्र ४६ लाख ८ हजार पदने परिमाणे कह्यो। सख्याता अक्षर थी जिहां लगे चरणसाधुव्रतनी प्ररूपणा होय तिहां लगे कहिवो। इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहां कहिये ते अनुत्तरोपपातिक दशा नोमो अग जाणिवो ॥ ९ ॥ अथ स्यूं ते प्रश्न व्याकरण प्रश्ननो व्याकरण कहिवोते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणने विषे अनुत्तर सर्वोत्तम प्रश्ननां अंगुष्ठबाहु प्र

र्यानि शय्यासनानि शयनीय पिष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिता भवतील्येका १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदायान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिन्द्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आचेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलोकिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टेवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी। नो पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाण यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी। नोपूर्वरत पूर्वक्रीडित मनुस्मर्ताभवति रतंमैथुनंक्रीडितंस्त्रीभिः सहतद्न्याक्रीडितसप्तमी। नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगंधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोश्लोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादंच

वइ नोइत्थीणं गणाइ सेवित्ता भवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता नो पणीयरसभोई नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलिआइ समर

ते कहेछे। नही स्त्रीपशुपंडक संसक्त व्याप्तशयनपल्यंकादिक आसन ते बाजोटादिकसेवितायुये । स्त्रीनीकथावार्तानकहे। स्त्रीना समुदायने सेवेनही स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखें एकाग्रचित्तध्यायेंनही। प्रणीतरसभोजी नहोय गलत्स्नेहरसबिंदुजिमेनही पाणीसरस भोजन अधिकमानाएअधिकाजीमे नहीं बत्रीसकवलउपरांत जोमेनही स्त्रीने पाछल्यासंभोगपूर्वक्रीडा संभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते अनुरागीथयनसांभले एमजरूडारूपजोवे नही रूडागंधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरें न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्माभी श्लाघा नवांछे एतलेशुं

इतियोग' पुनः किम्भूतानां अइसयगुणउपसमनाणप्पगार आयरियभासियाणति अतिशयायामर्षौषध्यादयो गुणाश्च ज्ञानादय उपसमश्च स्वपरभेद एतेना नाप्रकारा येषान्ते तथा तेच ते आचार्याश्च तै र्भाषिता या स्ता तथा तासा कथ भाषिताना मित्याह वित्थरेणति विस्तरेण महावचनसन्दर्भेण तत्राश्चिरम हर्षिभि' पाठान्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभासियाणचत्ति त्रिविधविस्तरेण भाषितानाञ्च चकारस्तृतीयप्रणायकभेदसमुच्चयार्थः पुन. कथम्भूताना म श्चाना जगहियाण जगद्धिताना म्पुरुषार्थोपयोगित्वात् किंसम्बन्धिनोना मित्याह अद्दागत्ति आदर्शयाङ्गुष्ट बाहव असिय खोमंच वत्थ आदित्यश्चेति द्वन्द्व स्ते आदि र्येषा कुड्यशङ्खघण्टादीना ते तथा तेषा सम्बन्धिनीना मङ्गविद्यानि रादर्शवादीना मावेशनात् किम्भूताना मभाना मतआह विविधम हाप्रश्नविद्याय वाचेव प्रश्नेसत्युत्तरदायिन्यः मन प्रश्नविद्याश्च मन' प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासा दैवतानि तदधिष्टातृदेवता स्तेषा प्रयोगप्राधान्येन तद्वा

याण अद्दागगुठबाहुअसिमणिखोमआइच्चभासियाण विविहमहापसिणविज्जमणपसिणविज्जा देवयंपयोग ॥

प्रश्न बोहवाछे। अतिशय आमर्षौषध्यादिक १। गुण ज्ञानादिक २। तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३। एह नाना प्रकारछे जेहने एहवाजे ॥ आचार्य तेणे विस्तार करी भाष्याछे। वीर महर्षि मोटायतीये अनेक प्रकार जेविस्तार वचनसदर्भ करी भाष्याछे। वली जगतने हित रूपछे। आरो सी अंगुष्ठ बाह खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशंख घटादिक एहमे आगलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवो पूर्वोक्त पदार्थ अधिष्ठान करीने उत्तरदे। तेमाटे ते प्रश्नविद्याये करी भाषित छे। विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछे थके तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या कही। मन प्रश्नविद्या मननी चितित अर्थ कहे एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकाशक। तथा

नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी। नोसातसौख्य प्रतिबद्धश्चापि भवति सातासातवेदनीया दुदयस्याप्य प्रौख्यसौख्यंतत्तथा अनेनच प्रश्नमसुखस्य व्यदास इतिनवमी इदच व्याख्यानवाचनाद्वयानुसारेणक्तं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तनभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंध प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नचत्रं साधिका नवमुहूर्त्तांश्चंद्रेण सार्द्धयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशी त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्ठिभागैः षट् षष्ट्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्ठिभागानामिति। तथाअभिजिदादीनि नवनचत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तत्रोत्तर

इत्तान्नवइ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोगंधाणुवाई नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाई नोसिलोगाणुवाई नो सायासोक्खपडिबद्धेयाविभवई नवबंभचेरगुत्तिओ प० तं० इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणसेवणया जावसायासुक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजओ सीओसणिज्जं सम्मत्तं आयंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुतं महपरिन्ना पासेणंअरहापुरिसादाणीए नवरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणंहो

गार नकरे साता सुखनेंविषे प्रतिबद्ध नहोयें न डूबीरहे नवब्रह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहे तेकहेछे। स्त्रीपशुपंडके संसक्तव्याप्तजे शय्यापल्यंकादिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाछल्या नवबोल वखाणाछे ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिथाय नउमूंबोले जेसातासुखनेविषे प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कह्या तेकहेछे। शस्त्रपरिज्ञा १। लोकविजय २। शीतोष्णीय ३ सम्यक्त ४। आयंती ५। मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६। मोचाध्ययन ७। उपधानसूत्र ८। महापरिज्ञा ९। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधाननवरत्नि

ध्वा तु सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभावः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहैवन्ति तिर्यग्लोके नरलोक मागताना मायुर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्व दीर्घत्व च एव वपु' शरीर न्तस्य स्थिरसंहननता वर्णस्योदारगौरत्व रूपस्यातिसुन्दरता जाते रुत्तमत्व कुलस्याप्येवं जन्मनो विशिष्टचैत्रकालनिराबाधत्व आरोग्यस्य प्रकर्षः बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेष' प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृल्लोकः स्वजनः पितृपितृव्यादिः धनधान्यरूपो यो विभवो लक्ष्मीः स धनधान्यविभव स्तथा समृद्धिः पुरान्तः पुरकोशकोष्टागारबलवाहनरूपा याः सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषा

सोक्खाणि अणोवमाणि ततोयकालतरचुआणं इहेवनरलोगमागयाण आउवपुपुसरूवजातिकुलजम्मआरो ग्गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधन्नविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा वक्कविहकामभोगुब्भवाणसोक्खा

पमादिक जेणे प्रकारे बांधे आउखो सुरगण ने विषे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रतें ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न जाय ते देवलोक थको कालातरे चव्या चवोने इहा मनुष्यलोक माहि आव्या तेहनो पूरो आउखो उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेंद्रिय पूरा जातिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो मातृपक्ष कुल ते भलो पितृपक्ष तिहा जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पंडिताई मित्रजन सुहृल्लोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कह्या भिभव सपदा घणी समृद्धि ते पुरान्त'पुर कोठार बल वाहनरूप समृद्धि सन्द्रा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथी ऊपना सुख

स्यांदिशि स्थितानि दक्षिणाशास्थित चंद्रेण सह्ययोगमनुभवंतीतिभावः बहुसमरमणिज्जाओ इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽस्यतस्माद्भूमिभा गात्तेपर्वतापेक्षया नापि स्वाचारापेक्षयेति तात्पर्यं आबाहाएत्ति अंतरेऽपलेतिशेषः उवरिल्लेत्ति उपरितनं ताराऽरूपं तारकजातीयं चारंभ्रमणं चरतिकरोति नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पंचयोजनसत्कामत्स्याः संभवति तथा नदीमुखेषु जगतीरंध्रेभिल्येनैव तावत्प्रमाणाः ज

त्या अन्नीजिनक्खत्तेसाइरेगेनवमुहुत्ते चंदेणंसद्धिंजोगंजोएइ अन्नीजियाइयानवनक्खत्ता चंदस्सउत्तरेणंजोगं जोएइ तं० अन्नीजिसवणोजावभरणी इमीसेणरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ नवजो यणसए उहुं आबाहएउवरिल्लेताराऽरूवे चारचरइ जंबूद्दीवेणदीवे नवजोयणियामच्छापविसिंसुवा ३ विजय

नवहाथ जाचपणे देहहुया अभीचनक्षत्रभाझेरो नवमुहूर्तलगे चंद्रमासाथेंयोग जोजे संबंधकरे अभीचियकी मांडीनव नक्षत्र चंद्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेसं बंधकरें चाले तेकहैछे। अभीचि १। श्रवण २। धनिष्ठा ३। शतभिषा ४। पूर्वभाद्रपद ५। उत्तराभाद्रपद ६। रेवती ८। अश्विनी ८। भरणी ९। एनव नक्षत्रजाणिवा। एणीरत्नप्रभा पहिलो पृथिवीनो घणोसमो घणोरमणीक जेभूमिभाग भूमिनोऊपलयोभाग तेहथकी नवशतयोजनऊंचे आंतरेएतले पृथि वीथकी नवशतयोजनऊंचो जइयें तिहांऊपिलयो ताराऽरूप एतलेशनीश्चरनोतारोऊंचोछे भ्रमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेनेउयोजन तारामंडलछे। ७९० योजने तारा १०। योजनेसूर्य ८०। योजनेचंद्रमा ४। योजनेअठावीस नक्षत्र ४ योजनबुधनोतारो ३ योजनमंगल ३ योजनशनैश्चर सर्वमिली नवसेयोजन थया। जंबूद्वीपमांहीं नवयो जनलांबामच्छपेसेछे लवणसमुद्रमांहि पाचसेयोजननांमच्छछे एणेजगतीनेछिद्रे नदीमुखें नवयोजननामच्छ जंबूद्वीपमांही

ण्डिका उच्यन्ते तासामनुयोगोर्थकथनविधि र्गण्डिकानुयोग: तथाचाह गडियाणुओगेअणेगेत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीना पूर्वजन्माद्यभिधीयते इति एव शेषास्वपि अभिधानवशतो भावनीय यावच्चित्रान्तरगण्डिका नवर दशार्हा' समुद्रविजयादयो दश वसुदेवान्ता' तथा चित्रा

१॥

रगइय जत्तियासिद्धापावोवगउय जो जहिजत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरुत्तमो तमरउघवि प्पमुक्कासिद्धिपहमणुत्तरचपत्ता एए अन्नेय एवमाइया भावामूलपढमाणुउगकहिआ आघविज्जांति पन्नवि ज्जांति सेत्तंमूलपढमाणुउगे सेकितगडियाणुउगे गडियाणुउगे अणेगविहे पन्नत्ते तंजहा कुलगरगडियाउ तित्थगरगडियाउ गणहरगडियाउ चक्कहरगंडियाउ दसारगंडियाउ वलदेवगंडियाउ हरिवंसगंडियाउ

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी। सम्यक जे यती तिहां जई जपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतियें जाई जपना तेहनी गतिनो कहिवो। जेतला २ यती सिद्ध सकल कर्मक्षय करी मोक्ष गया। पादपोपगमन। अनशन करिवानो अधिकार जेहयती जिहा २ जेणे २ ठामे जेतली २ भात छेदीने अंत कृत सं सारनो अत कीधो। मुनिवर उत्तम। तम अज्ञान रूप रज पापरज थकी मूकाणा। सिद्धिपथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेह प्रते पाम्या। एह पूर्वे कह्या ते तथा अनेरा पणि। एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषें कह्या। ते जिहा चौथा पूर्वना भेद माहि आख्यायते कहियें प्रज्ञापिये जाणवीये तेह मूलप्रथमानुयोग पहिलो॥ अथ स्यंते गंडिकानुयोग। इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखो वाक्यपद्धति ते गंडिका क हिये तेहनो अनुयोग अर्थकहिवानो विधि ते गडिकानुयोग। ते गडिकानुयोग अनेक प्रकारें कह्यो। तेकहेछे। कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनो गडि

॥ ३

गतीरंध्रो विस्तेनएतावानेव प्रवेशइति लोकानुभावोवायमिति विजय द्वारस्यजंबूद्वीपसंबंधिनः पूर्वदिश्यवस्थितस्य एगमेगाएत्ति एकैकस्मिन् बाहाएत्ति बाहौ

स्सणंदारस्सएगमेगाए बाहाए नवनवभोमा प० वाणमंतराणं देवाणं सभाउसुहम्माउनवजोयणाइंउद्धं उ
च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनउत्तरपगडीउ प० तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला
थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पभाएपुढ
वीए अत्थेगइयाणंणेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवसागरो
वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थे

खाडोमांहीआवे जबूद्वीपना विजयद्वारने एकेक वाहानेपासे नवनवभोमानगरछे तथा उत्तठामकह्योछे वाणमतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयोजन ऊंचीऊंच
पणेकह्योजाणवो। दर्शनावरणीयवोजोकर्म्म तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहेछे सुखें जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३
चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४। थौणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बलहुवे ५। चक्खुदंसणकहिये आंखतेहनो आवरण पडल तेचचुदंसणावरण ६। चक्षुविनाशेष
थाकतां च्यारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचचुदंसणावरण ७। अवधि दंसणावरण ८। केवलदंसणावरण ९। एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नार
कोनो नवपल्योपम आउखोकह्यो। चउथी नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो नवसागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपल्यो
पमआउखोकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवपल्योपम आउखोकह्यो। ब्रह्मदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम

मात्रस्य विवक्षितत्वा दितिशेषं सूत्रसिद्ध मानिगमना अवरं स खेज्जावत्थुति पञ्चविंशत्युत्तरे द्विशते सखेज्जाचूलवत्थुत्ति चतुस्त्रिंशत् ॥ १२ ॥ ॥

यस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ सखेज्जाओनिज्जुत्तीओ सखेज्जावेढा सखे ज्जासिलोगा सखेज्जाओसंगहणीओ सेणअगठयाएबारसमेअगे एगेसुयखधे चउद्दसपुव्वाइ संखेज्जावत्थू संखे ज्जाचूलवत्थू संखेज्जापाहुडा संखेज्जापाहुडपाहुडा सखेज्जाओपाहुडियाओ सखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ सखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण पन्नत्ता सखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयाकडाणिवद्धाणिकाइया जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जति पन्नविज्जति परूविज्जति

पूर्व तेहनो चूलिका छे ते पूठें कही छे । शेष थाकता दश पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूवनो पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परित्ता गणती वाचना छे। सख्याता अनुयोग द्वार उपक्रमादिक। सख्याती प्रज्ञप्ति। सख्याता वेढा। सख्याता श्लोक। सख्याती सगृहणी। सख्याती निर्युक्ति सूत्रने विषे अर्थनो योजवो। तेह अङ्गार्थ पणे अङ्ग पणे बारमें अगे एक श्रुतस्कधने विषे १४ पूर्व। सख्याती २२५ वस्तु। सख्याता नान्हावस्तु ३४। संख्याता प्राभृतक अधिकार विशेष। सख्याता प्राभृतप्राभृत अधिकार विशेष। सख्याती प्राभृतिका। संख्याती प्राभृतप्राभृतिका। सख्याता पदनां शतसहस्र लाख पदने परिमाणे लिख्या छे ते पूठें। सख्याता अक्षर वर्ण। अनतागमा अर्थना परिच्छेद। अनता पर्याय अक्षर पदना भेद। परित्ता अनतनही एतला २ सवेइन्द्रियादिक। अनता स्थावर वनस्पति प्रमुख पाच थावर । एह पूर्व मांहि भाव पदार्थ शाश्वता द्रव्यार्थ पणे विच्छेद रहित छे वली पर्याय पणे समे २ प्रति

गमं नवरं दंडओत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडओएवं ॥ अथानतरप्रज्ञप्ता ना नारकादीना मपर्याप्तापर्याप्तभेदाना स्थाननिरूपणायाह इमोसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं काव्य नवरं तेणनिरया इत्याद्यनच जीवाभिग

वीए केवइयंखेत्तंओगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पन्नत्ता गोयमा इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्त रजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं एगंजोयणसहस्सओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्सवज्जेत्ता मज्झे अठसत्त रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणंतीसं णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया

आणपाण४भाषा५मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरीकरी ते पर्याप्ता । छ माहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दडकाना जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता भणिवा जिहांलगे वैमानिकनो २४ मो दडक आवे तेहदडकनीगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइदिया ४ मणुया १ वतर १ जोइस वेमाणियाय १ अहदडओ एव एह ठाणागे बीजे ठाणे जिम जीवना भेद बेबे कह्याछे पणि इहा सर्वं कहिवो । हिवे २४ दडक मांहि पहिलो नारकीनोछे तेह नारकीने रहिवाना ठाम भगवंत आगलि गौतम स्वामी पूछेछे एणीयें हेभदत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो क्षेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने वली केतला नरकावासाकह्या । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उतरे आगलीछे जेहने एहवो १ लाख योजन वाहुल्य पणे जाडपणे पृथिवी पिडछे तेमाहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठें एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो जन पृथिवी पिड राखोये । इहा रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडाछे तेमाहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कह्याछे । तेनरकावासा माहि वाटला बाहिर

दीनिद्वादश सूर्यादपि द्वादशैव रविरादीन्येकादश ॥ ९ ॥ दशस्थानकं सुबोधमेव तथापि किंचिल्लिख्यते इहपंचविंशतिसूत्राणि तत्रलाघवं द्रव्यतो ल्पोपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोज्ञ साधुदानं वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशांतता

सिझियाजीवा जे नवहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ९ ॥
दसविहेसमणधम्मे प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५ सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चियाए ९ बंभचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुप्पज्जिज्जा स

उपजे । केतलाएक भव्यजीव नवें भवग्रहणे नवभवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये २५९ इति नवमू ठाणूंसम्मत्तं ॥ ९ ॥ हिवेदशनोअधिकारलिखेछे श्रमणकहिये साधुतेहनो धर्मदशप्रकारे तेश्रमणधर्मकह्यो तेकहेछे । क्षमाक्रोधनिग्रह १ । मुक्तिनिर्लोभपणो २ आर्जवमायानिग्रह ३ । मार्दवमाननिग्रह ४ । लाघव हलुआपणूं द्रव्यथकोहलको जेअल्पउपधि भावहलको गौरवत्रयत्याग ५ । सत्यभाषी ६ । संयम १७ प्रकारे ७ । तप १२ प्रकारे ८ । त्याग साधूनेआहारादिकदेवो ९ । ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १० । दशप्रकारेंचित्तना मननां समाधि प्रशांतपणो तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमाधिस्थानक कहिये तेकहेछे धर्मनोचिंता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरवो तेहनो स्वभावतेधर्म तेहनो चिंतविवो अथवाश्रुत चारित्रलक्षणधर्मनो चितावासे कहतां जेहपुण्यवंतने एहवोचिंतनहोयतेधर्मनी चिंताकहीछे । असमुत्पन्नपूर्वा पूर्वेंअतीतकाले नही उपनी तेंहधर्मनीचिंता उपन्यापछे सव धर्मजीवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जाणितए ज्ञपरिज्ञायेकरी जाणे प्रत्याख्यानपरिज्ञायेकरी छांडवायोग्य कर्महुए तेछांडीये तेधर्मचिंतापहिली स

अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थं तमसस्तमिस्रा नित्यान्धकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थं. कथमित्यतआह व्यप गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पद्दन्ति पथ शब्दो वाय व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमासानि शरीरावयवा स्तेषा यच्चिक्खिल्लं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलेपनेन सकृल्लिप्तस्य पुन'पुनर्लेपनेन तल भूमिका येषा न्ते मेदोवसापूयरुधिरमासचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रभृतीन्यौदारिकपचेंद्रियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश रीरत्वान्नारकाणा तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्रप्रोच्यन्त इति अशुचयो मिश्राः आमगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थं. अतएव परमदुरभिगधाकाजअगणिवस्मा भत्ति कृष्णाग्निर्लोहादीना ध्मायमानाना तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभा. तथा कर्कशः स्पर्शो येषाते कर्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढु शक्यते वेदना येषु ते दुरधिसह्या' अतएवाशुभानरकात्र शुभानरकेषु वेदना इति एवसत्तविभाणियव्वत्ति प्रथमा ममुचता सप्तइत्युक्त जजासुजुज्जइत्ति यत्र यस्या स्पृथि व्या वाहल्यस्य नरकाणाच परिमाण युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तत्र तस्यां वाच्य तच्चेदं असीतगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्षं रत्नप्र

भाउ जंजासुजुज्जइ असीयंबत्तीसं अठावीसतहेववीसंच अठारससोलसगं अठुत्तरमेववाहल्लं ॥१॥ तीसा

माहि कहेछे। पहिलोये १ लाख ८० हजार योजन पृथिवो पिड। बीजोये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिड। त्रीजिये १ लाख २८ हजार योज न पृथिवीपिड। चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिड। पांचमीयें १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिड। छठ्ठीये १ लाख १६ हजार योजन पृथिवीडिड। सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिड। पहिलोये ३० लाख नरकावासा । बीजोये २५ लाख त्रीजोये १५ लाख। चौथीये १०

तस्यस्थानान्याश्रया भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तत्रधर्मोजीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादयः स्वभावास्तेषां चिंतानुप्रेचा धर्मस्यवाश्रुतचारित्रात्मकस्य सर्वं
ज्ञभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मेभ्यः प्रधानोयमित्येवचिताधर्मचितावा शब्दोवच्यमाणसमाधिस्थानांतरापेचया विकल्पार्थः सइति य.कल्याण भागी
तस्यसाधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वस्मिन्नादौऽतीतेकाले ऽनुपन्नाता तदुत्पादेह्यर्धपुद्गलपरावर्त्तान्ते कल्याणस्यावश्यभावात् समुत्पद्येत जायेतसकिं प्रयोजनाय चेयम
तत्राह सर्वं निरवशेषधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगोत्पादादिक श्रुतादिरूपवा जाणित्तए ज्ञपरिज्ञयाज्ञातु ज्ञात्वाच प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय
कर्मपरिहर्तुमिदमुक्तंभवति धर्मचिताधर्मज्ञानकारणभूता जायतइति इयच समाधेरुक्तलचणस्य स्थानमुक्तलचणमेव भवतीति प्रथम तथास्वप्नस्य निद्रावशवि
कल्पज्ञानस्य दर्शनसंवेदनंस्वप्नदर्शन तद्वाकल्याणप्राप्ति रूपकसमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथाभगवतो महावीरस्या ऽस्थिकग्रामे शूलपाणियचोपसर्गावसाने किंप्रयो
जनवेद मित्याह अहातच सुमिणपासित्तएत्ति यथा येनप्रकारेणतथ्यः सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थः तस्वप्नं स्वप्नफलमुपचारात्तद्रष्टुमातु अवश्यभाविनोमुक्त्यादेः
शुभस्वप्नफलस्यदर्शनायसाधो. स्वप्नदर्शनमुपजायत इतिभावः क्वचित्सुजाणतिपाठ स्तत्रावितथमवश्य भाविसुयानसुगतिद्रष्टुज्ञातु सुज्ञानंवा भाविशुभार्थंपरि

छंधम्मंजाणित्तए सुमिणदंसणेवासे ज्ञसमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा अहातच्चंसुमिणंपासित्तए सन्निनाणवासे

मावि १ तथास्वप्नोदेखत्नो जेस्वप्नदीठे महाकल्याणनो प्राप्तिहोस्ये तेकहैछे असमुत्पन्नपूर्वक एहवो पूर्वदीठोनथी तेस्वप्नो स्यूंप्रयोजन अहातच सुमिणंपासित्त
ए यथातथ्यजूठोनही एहवोस्वप्नो फलजाणि वानेअर्थं अवश्यमीवजाणहार शुभस्वप्नदेखी चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीरस्वामीए छेहलीरात्रियें १०
स्वप्नपाम्या प्रभाते केवलज्ञानऊपनूं एहबीजू समाधिठाणू २ । सन्ना ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितनें संज्ञीकहिये तेहनूंज्ञान तेजातिस्मरण

हित्ता केवइयानिरया पन्नत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिएगंजोयणसहस्सं वज्जेत्ताम‌ज्झेतीसुत्तरे जोयणस यसहस्सेएत्थणं सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसंनिरयावाससयसहस्साभवतीति मक्खाया तेणनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि मन्त्रालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तंसुगम नवरं गाहाहितिगाथाभिः कारणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्यर्थः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

हस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तवि माणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणु त्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएण पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छठीए पुढ

ल एणी विधिये एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कह्या । हिवे १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान माहि सर्वविमान नी संख्या कहेछे । ॥ सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशानें २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेंद्रे ८लाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांत के ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्त्रारे ६ हजार विमान । सहस्त्रारलगे सहस्त्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से विमान । आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुदेवलोकमिली ७०० विमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमाहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयकें एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमान । सर्वमिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये त्रीजी वालुकप्रभा पृथिवीये चौथी पंकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छट्ठी तमप्रभा पृथिवीयें सातमी तमतमा पृथिवीयें

च्छेदसंवेदितुमिति कल्याणसूचका वितथस्वप्नदर्शनाच्चभवति चित्तसमाधिस्थानमिदंद्वितीयं तथासंज्ञानंसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाद दीर्घकालिकोपदे शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञाग्राह्येति सायस्यास्ति ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञान संज्ञिज्ञानं तच्चेहाधिकृतसूत्रान्यथा सपपत्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुव्वभवेसुमरिएत्ति पूर्वंभावात्स्मर्त्तुंस्मृतपूर्वं भवस्यसंवेगात्समाधि रुत्पद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शनं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्वाद्दर्शनंददति किंफलमि त्याह दिव्यांदेवर्द्धिप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यांदेवद्युतिंविशिष्टां शरीराभरणादिदीप्तिंदिव्यं देवानुभावउत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावं द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे वदर्शनाच्चागमार्थेषुश्रद्धानाद्यं धर्मेबहुमानश्चभवति ततश्चित्तसमाधिरितिभवति देवदर्शनचित्तसमाधिस्थानमितिचतुर्थं तथाअवधिज्ञानंवासेतस्यासमुत्पन्नपू

समुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा पुव्वभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे सियसमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं देवजुत्तं दिव्वदेवाणुभावंपासित्तए ओहिनाणेवासे सियसमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंजाणित्तए ओहिदं

कहिये से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्वं पूर्वेंउपनूंनथी सेइ अर्थेंउपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थें पूर्वभवसंभरे विशेष संवेगउपजे एत्रीजुंचित्तसमाधि स्थानक ३ तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्वं पूर्वेंउपनो नथी तेहजेने उपजे ते सेंअर्थेंउपजे। दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानो अनुभाव वैक्रिय करिवानी समर्थाई देखवानेअर्थें देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु इ एहचउथूठाणूं ४। अवधिज्ञान तेहजेने पूर्वेंनथी उपनूं तेहजेने उपजे अवधिज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थें विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एणां

भतेजोइसियाणंविमाणावासाइत्यादि अभुग्गयमुसियपहसियत्ति अभ्युन्नता सञ्जाता उत्सृता प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्ति स्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युन्नतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय अन्द्रकान्ताद्यो रत्नानि कर्केतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि श्चित्राश्चि त्रवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्धूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तस्य सूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्पार्श्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयत्य स्ताश्च त द्व र्जिताः पताकाश्च छत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलिता इति तुगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहतसिहरति गगनतल मम्बरमनुलिखद्भिर्लंघयच्छि

वासा अब्भुग्गयमुसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलि

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नेऊयोजन तारामंडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते ऊपरि ८० योजने चद्रमा ते ऊपरि ४ योजन नक्षत्र ते ऊपरि ४ योजन बुध ते ऊपरि ३ योजन शुक्र ते ऊपरि ३ योजन बृहस्पति ते ऊपरि ३ योजन मगल ते ऊपरि ३ योजन शनैश्चर छे । तारा मंडलथकी शनैश्चर १०० योजन माहि सर्व जोतिषीछे । ज्योतिषीना देवता असख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या । तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे । अभ्युन्नत कहतां ऊपना चिहुंदिशि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणेकरी शुक्ल ऊजला जेहनी एहवा । अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकातादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनी भक्ति भाति तेणेकरी चित्रा चित्रवत छे । वली केहवा आश्चर्यवत छे । वायरे कपावी विजय वैजयती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितछे । एतावता व्याप्तछे । वली केहवाछे । अति ऊंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलघताछे शिखर जेहना । घरनी भीतिने विषे जा

वंसमुत्पद्येत किमर्थमतआह मणोगतेजाणित्तए इत्याह अवधिनामर्यादया नियतद्रव्यक्षेत्रकालरूपेण लोकंज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थः भवतिचविशिष्टज्ञानाच्चित्तस माधिरिति पञ्चमतदिति। एवमवधिदर्शनसूत्रमपीतिषष्ठं। तथा मनःपर्यवज्ञान वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतेभावेजाणित्तए अ र्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनांपंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानांमनोगतान् भावान्ज्ञातुमेतत्ज्ञानायेत्यर्थः इतिसप्तमं। तथाकेवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्ये त केवलंपरिपूर्णंलोक्यतेदृश्यते केवलालोकेनेति लोकालोकस्वरूप वस्तुतत्वज्ञातुंकेवलज्ञानस्यच समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इहचामनस्कतया केवलि नश्चित्त चैतन्यमवसेय मित्यष्टमं। एवकेवलदर्शनं सूत्रंनवरंद्रष्टु मितिविशेष इतिनवमं। तथाकेवलिमरणंवाम्रियतेकुर्यात् इत्यर्थः किमर्थमतआह सर्वदुःखप्र

सणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा उहिणालोगंपासित्तए मणपज्जवनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जि ज्जा। जावमणोगएभावेजाणित्तए केवलनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा केवलं लोग जाणित्तए केवलदं सणावासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा केवललोयंपासित्तए केवलिमरणंवामरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए।

चमूंठाणूं ५ अवधिदर्शन सेतेहनेपूर्वें जपनूं नथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेंउपजे अवधिदर्शनेकरी लोकस्वरूपदेखवाने अर्थे एछठ्ठुंठाणूं ६ मनपर्यवज्ञानसेजेहने पूर्वें ऊपनूंनथी तेहजेहने ऊपजे तेसेअर्थेंऊपजे अढाईद्वीपमांही संज्ञी पचेंद्रियनो मनोगतभावजाणे एहवूंज्ञानपामी चित्तसमाधिहोय एसातमूंठाणूं ७ केव लज्ञान सेजेहने पूर्वेंउपनूंनथी तेहजेहने उपजवाने अर्थें केवलसकललोकजाणिवानेअर्थें एहचित्तसमाधिनूं आठमूंठाणूं ८ केवलदंसण सेजेहने पूर्वेंउपनूंनथी तेह जेहने उपजवाने अर्थेंजपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थें एहचित्तसमाधि नवमूंठाणूं ९ केवलीनेमरणे एतलेकेवलज्ञान उपार्जीनेमरे तेसे अर्थें सर्वदुःख

त्यादि औरालियसरीरस्सेत्यादि तत्रौदार मधानं तीर्थंकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवौरालम्विशालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य अथवा उरालखल्पप्रदेशोपचितत्वात् बृहत्वाच भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुबद्धं यच्छरीर त्तसमयपरिभाषया उरालमिति तच तच्छरीरश्चेति प्राकृत त्वादौरालियशरीर तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतक्षेत्र शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना अथ वौदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक शरीररूपावगाहना सा भदन्त केमहालिया किम्महती प्रज्ञप्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासख्येयभागंयावत् पृथिव्यादापेक्षया उत्कर्षेण सातिरेक योजनसहस्रमिति बादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्सेति इहएवं यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनेकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा हि एकेंद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनश्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां स्मादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्ताना जघन्यत उत्कृष्टतश्चा ङ्गुलासख्येयभागो वनस्पतीनां बादरपर्याप्ताना मुत्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासख्येयभागएव द्विचितुरिन्द्रियाणा मपर्याप्ताना मुत्कर्षतस्सानुक्रमेण द्वादशयोजनानि श्री णिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेंद्रियतिरश्चा जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां समूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्र एव स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्च्छन जाना मपर्याप्तानां गव्यूतपृथक्त्वं गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषां षट्गव्यूतानि उर.परिसर्प्पाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्र एपामेव संमूर्च्छनजाना योजन

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

णेरी योजन सहस्र बादर वनस्पतीनी अपेक्षायें । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिक बेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री पचेन्द्री ति र्यंचनो मान तिमज निरवशेस समग्रपणे तरतमयोगे कहिवो जिहा लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो २ गाऊ युगलियानी अपेक्षायें । हिवे

हाणायेति इदंतुकेवलिमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति। तथाअकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुक्खत्ति कल्पवृक्षाः।
उवभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उवत्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिंगत्ति भाजनदायिनः तुडियंगत्ति तुर्यांगसंपादकाः

मंदरेणपुव्वएमूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० अरिहाणं अरिठ्ठनेमीदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था क
ण्हेणंवासुदेवे दसधणुइंउड्ढंउच्चत्तेणं होत्था रामेणंबलदेवेदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था दसनक्खत्ता नाणवुड्ढि
करा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो। तिन्निअपुव्वाइमूलमस्सेसा। हत्थोचित्तायतहा। दसवुड्ढिकरायना
णस्स १ अकम्मभूमयाणंमणुआणं दसविहारुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुडि

यअकरिवाने अर्थे ए ३ केवलीमरणते सर्वोत्तमवित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरूपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेपिहुलपणेकह्यो अरिहंतअरि
ष्टनेमो बावीसमोतीर्थंकर दशधनुषऊंचपणेहुया कृष्णवासुदेव नवमो तेहनो देहदशधनुषऊंचोऊंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषऊंचा ऊंचपणेहुया
दशनक्षत्र ज्ञानना वृद्धिकरणहार कह्या भगवंते तेकहेछे मृगशिर १। आर्द्रा २। पुष्य ३ त्रणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४। पूर्वाषाढ ५। पूर्वाभाद्रपद ६। मूल ७
आश्लेषा ८। हस्त ९ चित्रा १०। एह दशनक्षत्र ज्ञानने वधारेएह मांहि भणवाबेसे तो काहीं विघ्नउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया
नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनेत्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ क्षेत्र युगलियानां सास्वतांछे। तिहांनां माणसें युगलियाने दशप्रकारेवृक्ष एतले कल्पवृक्ष।
उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आईरह्या थकाभोग्यआवे बांछापूरवे एहवा कह्यातिकहेछे। मत्तंगका मद्यनाकारणभूत जाणिवा १ भाजनदातार २

॥ नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः श्चायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्मानुभवलक्षणेतया अब्भुवगमुवक्कमियत्ति द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादिकां द्वितीयातु स्वयमुदीर्णस्यो दीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेंद्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्त्वौपक्रमिकी मेववेदयतीति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदया आभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र संज्ञिन उभयतो ऽसंज्ञिनस्त्व निदयेति एतद्द्वारविवरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रिंशत्तम स्वेदनाख्य न्पद मध्येयमिति अनन्तर वेदनाप्ररूपिता साच लेश्यावत् एव भवतीति

णंभंते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिण वेयणं। सीतोसिणंवेयणं। गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंभाणियव्वं।

साता साततेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो। सुखदु.खते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो। तथा अभुवगमुवक्कमियत्ति। बिहुप्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका। पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले। जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे। बीजी सेउदीरणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे। तिहां तिर्यंच पचेन्द्रिय मनुष्य बिहु वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे। तथा णीयाएत्ति। बिहु प्रकारे वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना। बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना। तिहांसज्ञी पचेंद्रियणीयावेदनावेदे। असज्ञीअणीयावेदनावेदे। हेपूज्यनारकी जिम शीतवेदनावेदे। किंवाउष्णवेदनावेदे किंवाशीतोष्ण वेदनावेदे। गौतम नारकीनी वेदना एहपन्नवणाना पैत्रीसमापदथकी भणिवो

दीवत्ति दीपशिखाः प्रदीपकार्यकारिणः जोइत्ति ज्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्ररसाभोजनदायिनः मण्यंगाआभरण
दायिनः गेहाकाराः भवनलेनोपकारिणः अनग्नत्वंसवस्त्रत्व तत्तितुत्वादनग्नाइति घोषादीन्येकादशविमाननामानीति । अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवर

अंगा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए
अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दसजोयणसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइ
आणं नेरइआणं दसपलियउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ
वीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाण नेरइ
याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा

याजित्रना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ७ घरनेकामआवनार ८ वस्त्रना
दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दशसहस्त्रवर्षनो आउखोकह्यो । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो
दशपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकावासा कह्या । चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कृष्टो दससागरोपमो
आउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दससागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनूं केतलाएकनूं जघ
न्य दशसहस्त्रवर्षनो आउखोकह्यो । असुरेंद्र चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्त्रवर्षनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्कृ

नदमित्ते दीहबाह्रमहाबाह्र । च्चइबलेमहाबले बलन्नद्देयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठ्ठूयदुविठ्ठूय च्चागमिस्सेणव
रिहणो । जयंतेविजएन्नद्दे सुप्पन्नेयसुदंसणे च्चाणंदे नदणेपउमे संकरिसणच्चपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणंनवरहं
बलदेववासुदेवाण पुव्वन्नवियाणवनामधेज्जान्नविस्संति । नवधम्मायरियान्नविस्संति । नवनियाणन्नूमीउ
नवनियाणकारणान्नविस्सति । नवपडिसत्तून्नविस्सति तजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजंघेयकेसरी पल्हा
एच्चपराजिए न्नीमसेणेमहान्नीमे सुग्गीवेयच्चपच्छिमे ॥ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
सव्वेविचक्कजोही हम्मिहतासचक्केहिं ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेएरवएवासे च्चागमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति
त्थकरान्नविस्सति तजहा । सुमगलेच्चसिद्धत्थे णिव्वाणेयमहाजसे धम्मज्झएयच्चरहा च्चागमिस्सेणहोस्कई १

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नदन ७ । पद्म ८ । सकर्षण ९ । एह ९ बलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध
र्माचार्य धर्मगुरू थास्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजंघ २
वज्रजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह पतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सबलाई प्रतिवासुदेव चक्री
करी युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जम्बूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकरहोस्ये तेकहेछे । सुमगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्व्वाण ३

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं भोमिजाणं अत्थेगयाइणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० बायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प० वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिउवमाइंठिई प०बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाण जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणदेवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं

छे जघन्य आउखो एकसागरोपम झाझेरोछे। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपल्योपमकह्यो। बादर प्रत्येक वनस्पतीकायनो उत्कृष्ट दसहजारवर्ष आउखोकह्यो भगवंते। वानवंतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दशसहस्रवर्ष आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतनो दशपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमे ब्रह्मदेवलोके केतलानो उत्कृष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो। छठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य दससागरोपम आउखोकह्यो। पांचमे देवलोके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंगलावर्त १० ब्रह्मलोकावतंसक ११ एणेविमाणे देवतामणेउपना तेहनो देवतानो उत्कृष्टो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवंते। तेहदेवता दशेपखवाडे स्वा

नमः श्रीवीराय प्रवरवरपार्श्वायचनमो । नमःश्रीवाग्देव्यैवरकविसभायाअपिनमः ॥ नमःश्रीसङ्घायस्फुटगुणगुरुभ्योपिचनमो । नमःसर्वस्मैचप्रकृतविधि
साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्यग्रन्थवरस्यवाचजलधे र्लक्षसहस्राणिच । चत्वारिंशदहोचतुर्भिरधिकामानम्पदानाममभूत् ॥ तस्योच्चैश्चुलुकाकृतिन्निदधतःकालादि
दोषात्तथा । दुर्लेखाऽखिलताङ्गतस्यकुधियःकुर्वन्तुकिम्मादृशाः ॥ २ ॥ स्वङ्कष्टेतिनिधायकष्टमधिकम्मामेन्यदाजायता । व्याख्यानेस्यतथाविवेक्तुमनसामल्पत्र्यु
तानाममु ॥ इत्यालोचयतातथापिकिमपिप्रोक्तमयातत्रच । दुर्व्याख्यानविशोधनविदधतुप्राज्ञाःपरार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इहवचसिविरोधोनास्तिसर्वज्ञवाक्यात् ।
क्वचनतदवभासोयःसमाधानृबुद्धे. ॥ वरगुरुविरहाद्वातीतकालेमुनीशे । गणधरवचनानाञ्चस्रसङ्घातनाद्वा ॥ ४ ॥ व्याख्यानयद्यपीदम्वरकविवचःपारतन्त्र्ये
णदृष्टं । सम्भाव्योस्मिंस्तथापिक्वचिदपिमनसोमोहतोर्थादिभेदः ॥ किन्तुश्रीसङ्घबुद्धेरनुसरणविधेर्भावशुद्धेश्चदोषो । मामेभूदल्पकोपिप्रशमपरमनास्ताच्चदेवीश्रु
तस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्द्धमानाभिधान् । सूरीन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणीतिप्रभोः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदर्प्यीयसांवा
ग्मिनां । तद्बन्धोरपिबुद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविवृतिःकृता ॥ श्रीमतःसमवायाख्य तुर्याङ्गस्यसमासत' ॥ ७ ॥
एकादशसुशतेष्वथ । विंशत्यधिकेषुविक्रमसमाना ॥ अणहिलपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानम्विनिश्चित ॥
त्रीणिश्लोकसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ ९ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥ * श्रीरस्तु

भिहप्रतिमाद्यर्थानि सूत्राणिसम स्थित्याद्यर्थानितुतदेति तत्रउपासंतेसेवंते श्रमणान्येते उपासकाः श्रावकास्तेषांप्रतिमाः प्रतिज्ञाअभिग्रहरूपाः उपासकप्रतिमाः तत्रदर्शनंसम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानांप्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा प्रतिमावंतोनिर्दिष्टः अत: एवमुत्तरपदेष्वपि अयमत्रश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानां प्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाभावार्थः सम्यग्दर्शनस्य शंकादिशल्यरहितस्याणुव्रतादि गुणविकलस्यायमभ्युपगमः सा प्रतिमाप्रथमेति । तथाकृतमनुष्ठितं व्रतादीनांकर्म तत्राणुव्रतंश्रानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येनप्रतिपन्नदर्शनेन सकृतव्रतकर्माप्रतिपन्नाणुव्रतादिरिति भावः

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं श्राहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइश्रा नवसिद्धियाजीवा तेहदसहिंनवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्कारसउवासगपडिमाउ प० तं० दंसणसावए कयव्वयकम्मे सामाइअकडे पोसहोववासनिरए दियाबंभया

सोखास घणोलेद्द । उ'चोखासले नीचोखासमूंके तेहदेवतानो दशसहस्रवर्षे गएथके आहारनो अर्थउपजेछेकेतलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति दशमूठाणूं सम्मत्तं ॥ १० ॥ हिवे ग्यारमो अधिकार लिखियेछे इग्यार उपासक कहतां श्रावकसाधुनी सेवाना करणहार तेहनी प्रतिमा तपविशेष तेकहेछे अनुक्रमे आगली दंसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन श्रावककहिये इहां प्रतिमावंत वोचेभेद नजाणिवो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरीने दर्शनश्रावकनो नामलिधोएम आगलीएतले सम्यक्तना अतिचार शंकादिकटाले तपनो अधिकार ग्रन्थांतरथी जाणवो एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ कृतव्रतकर्म अणुव्रत जेउचराछे तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजी प्रतिमा २ सावद्ययोगनो टालिवो निरवद्य

सकल भव्यजनोको सविनय निवेदन करतेहै कि लुंपकगणोपासक मुर्शिदावाद अजीमगंज निवासी श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ क्षपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तक ५०० जगह भंडारकरके स्थापित किये जिस्से साधु श्रावक प्रभृति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि होय उस आगम संग्रहका यह समवायांग चतुर्थभागहै इस ग्रथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह मतिमान् लोगोको यदि अशुद्ध नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरलें अशुद्ध रहजानेमे कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकोमें नये २ पाठ नजर आतेहै इस पुस्तकोमे इस पाठहै इसलिये बहुसमत टीकासमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारंपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो आपलोगो की साक्षीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्त्रकिरणे ग्रंन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।

पुस्तककमलविकासी ह्युनित्रांजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

———०००———

इतीयंद्वितीया। तथासामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जन निरवद्ययोगोपसेवनस्वभावं कृतंविहितंदेशतोयेनसामायिककृत आहिताग्न्यादिदर्शनात् क्तांतस्योत्त रपदत्वं तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्यप्रतिदिन मुभयसंध्यंसामायिककरणं मासत्रयंयावदिति तृतीयाप्रतिमेति। तथापोषंपुष्टिंकुशलधर्माणांधत्ते यदाहारत्यागादिक मनुष्ठानंतत्पौषध तेनोपसेवनमवस्थान महोरात्रंयावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्वदिन मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौष धोपवासइति इयंव्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्यशब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति तत्रपौषधोपवासे निरतआसक्तः पौषधोपवासनिर तः सएवंविधस्य श्रावकस्यचतुर्थीप्रतिमेति प्रक्रमः अयमत्रभावः पूर्वप्रतिमात्रयोपेतः अष्टमीचतुर्दश्यमावस्या पौर्णमासीष्वाहार पौषधादिचतुर्विधं पौषधंप्रतिप द्यमानस्यचतुरोमासान् यावत्चतुर्थी प्रतिमाभवतीति तथापंचमीप्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थंच सूत्रं अधिकृतसूत्रपुस्त केषुनदृश्यते दशादिषुपुनरुपलभ्यते इतितदर्थउपदर्शितः तथाशेषदिनेषु दिवाब्रह्मचारी रत्तीत्ति रात्रौकिमतआह परिमाणं स्त्रीणातद्भोगानांवा प्रमाणंकृतं येनसपरिमाणकृतइति अयमत्रभावोदर्शनव्रत सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्यपर्वस्वेकरात्रिक प्रतिमाकारिणः शेषदिनेषुदिवाब्रह्मचारिणो रात्रौब्रह्मपरि

योगनो सेविवो तेसामायिकव्रत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणलगे एत्रीजी प्रतिमा ३ कुशलधर्मनो पोखवो तेपौषध आहारादिकनो त्यागरूप अनुष्ठान तेपौषधतेणेकरी उपवसवो रहिवो अहोरात्रिलगेते पौषधोपवासनिरत पाछिलीत्रिणि प्रतिमासहित अष्टम्यादिक पर्वनेविषे मासच्यारलगे चतु र्विध पौषधकरे चउथी पौषधप्रतिमा ४ पांचमीप्रतिमानेविषे अष्टम्यादिकपर्वनेविषे एकरात्रि काउसग्गकरे शेषदिनेदीहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रेंपरिमाणकरे अरात्रिभोजी अस्नानीकाछडी नबांधे पांचमासलगे एतले एपांचमीप्रतिमा ५ छठ्ठीप्रतिमाएं दिवसे अनेरात्रिंएंपिण ब्रह्मचर्यपाले अस्नायीस्नाननकरे विकट

माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिभोजिनः अबद्धकच्छस्यपंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तंच अट्ठमिचउद्दसी सुपडिमठाएगराईया। पचार्द्धं असिणाणवि यडभोई मउलियडोदिवसबंभयारीएय। रत्तिंपरिमाणकडो पडिमावज्जेदिसुज्जेसुत्ति ५। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि वर्जकः क्वचित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तीत्यनिशादी वियडभोईत्ति विकटे प्रकटप्रकाशेदिवानरात्रावित्यर्थः दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुंक्तेऽथमाध्यभ्य वहरतीति यिकटभोजी मोलिकडेत्ति अबद्धपरिधानकच्छइत्यर्थः षष्ठीप्रतिमेतिप्रक्रान्तं अयमत्रभावः प्रतिमापंचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या वत्षष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरूपादिप्रतिज्ञानात्प्रत्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः श्रावकः सप्तमीप्रतिमेति प्रक्रान्तं इयमत्रभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरंभः पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञातः श्राद्धोऽष्टमीप्रतिमेति। इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जन मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञातः श्रावको नवमीति भावार्थश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरे ण्यकारयतो

री रत्तिपरिमाणकडे दिवाविराओविबंभयारीअसिणाई वियडभोई मोलिकडे सचित्तपरिन्नाए आरं

भोजीदिवसेजिमे मौलिकृतनथी बांध्योपहिरणानो कछजेणेमासछलगे छट्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पच्चक्खाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जेणेपरिज्ञात पच्चख्यो ते आरंभपरिज्ञात श्रावक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेख्या रंभनेविषे परिज्ञात पच्चखाणछे जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा श्रावककहिये एतलेनवमासलगे परपाछिं कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेश्रावकने निमित्ते उद्देसी

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमेति। तथाउद्दिष्टं तमेवश्रावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ठ भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेतिप्रकृतं इहायंभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधाकर्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुंडितशिरसः शिखावतोवा केनापिकिंचिद्गृहव्यतिकरे पृष्टस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमीप्रतिमेति। तथा श्रमणेति निर्ग्रन्थसद्देव्यस्तदनुष्टान करणात् सश्रमणभूतः साधुकल्पइत्यर्थः चकारःसमुच्चये अपिसंभावनेभवति श्रावकइतिप्रकृतं हेश्रमण हेआयुष्मन्इति सुधर्मस्वामिना जम्बूस्वामिन मामन्त्रयतोक्त मित्थेकादशीति। इहचेयभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलोचस्यवा गृहीतसाधुनेपथ्यस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्म मनुपालयतो भिक्षार्थंगृहिकुल प्रवेशेसति श्रमणोपासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षांदेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नश्रमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासान् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरेत्वेवंवाचना दसणसावएप्रथमा कयवयकद्वितीया। कयसामाइए तृतीया। पोसहोववासनिरए चतुर्थी। राइभत्तपरिन्नाए पंचमीसचित्त

त्तपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिठभत्तपरिन्नाए समणभूएत्थाविसमइ समणाउसो लोगंताउ इक्कारसएहिं एक्का

भातकरो तेजेणेपरिज्ञात पच्चख्यो तेउद्दिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगें दशमीप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाए पाछिली २ प्रतिमानीकिरिया साथलेता जइये एतलेइग्यारमी प्रतिमाएंश्रमण भूतहुए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले क्षुरमुंडितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवीजीमे मासइग्यारलगें इग्यारमीप्रतिमा साधुनोवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारेकहिये मुझश्रमणोपासकने भिक्षाद्योकोणेवापूछ्योथोको कहेहूं श्रावकछूं एतलेइग्यारमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमंत्रेछे हेआयुष्मन् चिरंजीवी सांभलि लोकनाछेहडाथकी इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेंयोजनेआबा

परिन्नाएषष्ठी दियानभयारी राओपरिमाणकडेसप्तमी दियाविराओवि बंभयारी। असिणाणपयाविभवति वोसट्ठकेसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिन्नाएनवमी उद्दिष्ठभत्तवज्जएदशमी समणभूएयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्तुआरंभपरिज्ञातइतिनवमी प्रेष्यरंभपरिज्ञातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः श्रमणभूतश्चैकादशीति तथा जंबूद्दीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनत्वेतिशेषः ज्योतिषंज्योतिश्चक्रचारपरिभ्रमणं। चरत्याचरति तथालोकांतान् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एक्कारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित याकुलेतिशेषः ज्योतिसतेति। ज्योतिश्चक्रपर्यंत. प्रज्ञप्तइति इदंचवाचनांतरं व्याख्यातं उक्तंच एक्कारएक्कावीसा सयएक्काराहियायएक्कारा। मेरुअलोगावाहे जोइसचक्कचरइठाइत्ति। अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकद्दयं व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतितिमक्खायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

रेहिंजोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसेहिं जोयणसएहिं जोइसेचारचरइ समणस्सणंभगवओमहावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गिभूई वायभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे मूलेनक्खत्तेएक्कारसतारे प०

धायेंपन्नतेकहतांकह्यो भगवते। एतलेअलोकथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्रकह्योछे। ज्योतिषनोछेहडोकह्यो भगवंते। जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथको वेगलोचो पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिषचक्रचारचरे भ्रमणकरे। श्रमणने भगवंतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर णहारहुया। तेअनुक्रमे कहेछे आगले। इन्द्रभूति १। अग्निभूति २। वायुभूति ३। व्यक्तनामे ४। सौधर्मा ५। मण्डित। ६। मौर्यपुत्र ७। अकंपित ८। अच

द्यमर्थो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्रुरूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपव्वए धरणितलाओसिहरतलेएक्कारस भागपरिहीणे उच्चत्तेणपन्नत्ते। अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कंभापेचया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्स उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रज्ञप्तः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततश्चोच्चत्वेनांगुलेगतेंगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एवमेकादशस्वं गुलेष्वंगुलंहीयते एतेनैवन्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततोनवनवत्यांयोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयंते। ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ शिखरेइति अथवा धरणीतलाद्धरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतैर्हीनोमूलं विष्कम्भापेचया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कम्भ

हेट्ठिमगेविज्जयदेवाणं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जविमाणसतंभवइत्तिमक्खायं मंदरेणंपव्वए धरणितलाउसिहरतले

लभ्राता ९। मेतार्य १०। प्रभास ११। मूलनचत्रना इग्यारताराकह्या नवग्रैवेयकमानमाहें सघले हेठल्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारअ धिकएकसो विमानभवनछे भगवंतेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानछे तिहांलगे विखंभनी अपेचाएं एकारसभाग परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलऊचा वडीये तिहां विखंभपणें एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार गाऊयेगाऊ हीनकरिये। इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरया। पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये। इमकरता नेउंसहस्र योजने ऊंचीवडिये तिहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन ऊगरयां। पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो ऊण्डोभूमिमध्ये नेऊसहस्र भूमिथकी ऊंचोस

मेति ब्रह्मादीनिद्वादशविमाननामानि। पादशस्थानमथतश्चसुगमं। नवरंस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागेकादशसूत्राख्याह। तत्रभिघूर्णांनिशिष्ट संहननमुतवतां प्रति

एक्कारसन्नागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारसपलिउव माइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमा इंठिई प० लंतकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्प भं बंभकंतं बंभवन्नं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताएउववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाएकारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ

थैमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत। मूलेदससहस्र पिहुलो। शिखरनेविषे एकसहस्र पिहुलो जाणिवो। एहअर्थ श्रीमहावीरें सुधर्मास्वामी पांचमे गण धर आगले वखाण्यो। एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतला एक नारकीनो इग्यार सागरोपम आऊखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतीनोकेतलाएक देवतानो इग्यार पल्योपम आऊखोकह्यो। सौधर्म इशानदेवलोक नेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पल्योपम आऊखोकह्यो। लांतक छठेदेवलोके केतलाएक देवनो इग्यार सागरोपम आऊखोकह्यो। छठेदेवलोकें जेहदेवता ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिष्ठ १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माअभिग्रहाभिक्षुप्रतिमा तत्रमासिक्यादयः सप्तमासिक्यन्ताः सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिर्येति तथासप्तसमरात्रिंदिवान्याद्यो

ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसएहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआभवसिद्धि आजीवा एक्कारसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ११ ॥ बारसभिक्खुपडिमाओ पन्नत्ता तंजहा मासिआभिक्खूपडिमा दोमासिआभिक्खूपडिमा तिमासिआभिक्खूपडिमा चउमासियाभिक्खूपडिमा पंचमासियाभिक्खूपडिमा छमासियाभिक्खूपडिमा सत्तमासियाभिक्खूपडिमा पढमासत्तराइदिआभिक्खूपडिमा दोच्चासत्तराइदिआभिक्खूपडिमा त

ने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता इग्यारे पखवाडे अर्द्धमासे स्वासोस्वास घणोले ऊंचो स्वासले नीचोस्वास मूंके तेहदेवतानो इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थं वंछाउपजेछे। संसारमाहें केतलाएक भव्यजीव जेह ११यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये। इतिइग्यारमूं ठाणूंसम्मतं ॥ ११ ॥ हिवे बारमो अधिकार लिखियेछे। भिक्षु उत्तमसंहनननो धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वनूं त्रीजूंवस्तु तेहनो पारगामीहोय। उत्कृष्टो दसपूर्व कोईएकगुरुनी पाज्ञा आंगी गछमांहि पिणहोइ महासत्वनो धणीजे यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे। पहिली भिक्षुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदाथीले एकमासदीठ भातपाणी नी एकेकदाती वधारे सातमासलगे सातमेंमासे सातसात भातपाणीनीदातीलें लवणखड मात्रदाती कहिये १। बीजी प्रतिमा बिमासिकी २। त्रीजीप्रति

वैस्त्रपानादिस्तंसंभोगिकः संभोगिकेनसार्द्धंतुद्गमोत्पादनैषणादोषैर्विशुद्धं गृह्णन्शुद्धः अशुद्धंगृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो यावत्त्रयंयावत्सम्भोगार्हश्चतुर्थवेला याः प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोपिविसंभोगार्हइति । विसंभोगिकेनपार्श्वस्थादिनावा सयत्यवासार्द्धं मुपधिशुद्धमशुद्धंवा निःकारणं गृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तोपि वेलात्रयस्योपरिनेसंभोग्य एवमुपधेः परिकर्मपरिभोगंवाकुर्वन् संभोग्योविसंभोग्यश्चेति उक्तंच एगंचदोयितिन्निच आउट्टंतस्सहोइच्छित्तं। आलोचयतइत्यर्थः आउट्टंतेवितओ परेणतिह्निं विसंभोगोत्ति सुयस्ससम्भोगिकस्य विसम्भोगिकस्य चोपसंपन्नस्यश्रुतस्य वाचनाप्रच्छनादिक विधिनाकुर्वन् शुद्धस्तस्यैवाऽविधिनोपसम्पन्नस्यऽनुसम्पन्नस्यवा पार्श्वस्थादेर्वात्रयवाचनादि कुर्वंस्तथैववेलात्रयोपरिसम्भोग्यः तथा भत्तपाणेत्ति । उपधिद्वारवद्दवसेया नवरमिहभोजनंदातुच परिकर्मपरिभोगयो. स्थानेवाच्यमिति तथा अंजलीपग्गहेइत्ति इहेतिशब्दउपदर्शनार्थः चकारः समुच्चयार्थः तत्उपलक्षणत्वा दंजलिप्रग्रहस्यवंदनादिकमपीहद्रष्टव्यं तथाहिसम्भोगिकानामन्यसम्भोगिकानांवा संविग्नानांवन्दनकं प्रणाममंजलिप्रग्रहं नमःक्षमाश्रमणेभ्यइतिभणनं आलोचनासूत्रार्थनिमित्तनिषद्याकरणंच कुर्वन् शुद्धः पार्श्वस्थादेस्तानिकुर्वंस्तथैवसम्भोग्यो विसम्भोग्यश्चेति। तथा दायणायत्ति दानन्तत्रसंभोगिकायवस्त्रादिभिः शिष्यमाणोपग्रहासमर्थं सम्भोगिकेऽन्यसम्भोगिकेऽन्यसम्भोगिकं यथाशिष्यगणंयच्छन्शुद्धः निःकारणविसम्भोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्यावा तंयच्छंस्तथैव सम्भोग्योविसम्भोग्यश्चेति तथा निकाएयत्ति नि

प० तं० उवहिसुअभत्तपाणे अंजलिग्गहेइ अदायणेअ निक्काएअ अब्भुठाणेतिआवरे किअकम्मस्सय

ही तेहसंभोगीनकरीये १ । श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनी वाचना पृछादिककरतो संभोगी तेहीज सिद्धांत अवधिएं भणतो ओथीने तथा पासथाने भणानो विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसभोगी ३ अंजलि प्ररिग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवो उपासत्यानेकरतो विसंभो

कसाधवोनुज्ञाप्याश्रिताः सप्रत्येकोवग्रहइति । एवचैतेष्ववग्रहेषु 'आकुआर्दिना अभाव्यंमचित्तशिष्य मचित्तंवस्त्रादिगृह्णतोऽनाभोगेनचगृहीतं तदनर्प्पयतः समनोज्ञा अमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांचावग्रह एवनास्ति तथापियदितत् क्षेत्रकुलकमन्यनैवचसंविग्नानिर्वहंतिततस्ततक्षेत्रपरिहरं त्येवायं पार्श्वस्थादीनांवावग्रहक्षेत्रं निस्तीर्णं संविग्नाद्यान्यत्र न निर्वहंति ततस्तत्रापि प्रविशति सचित्तादिवगृह्णति प्रायश्चित्तिनोपिनभवंतीति आहच समण ममणुन्ने अदिन्नअणा भवगिण्हमाणेवासम्भोगवीसुकरण पृथक्करणमित्यर्थः इयरेयअलंभिणव्लिन्ति इतरान्पार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निसिज्जायत्ति निषद्या आसनविशेषः साचसम्भोगकारणभवति तथाहि सनिषद्यागत आचार्यो निषदागतेन सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनोज्ञापा र्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाएयपबंधणेत्ति कथावादाद्यनिषद्या विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि ष्टः सूत्रार्थौप्रच्छति अतिचारान्यालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाएयपबंधणेत्ति कथावादादिकापचधातस्याः प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनतत्रसम्भो गाऽसम्भोगीभवतः तत्रसमभ्युपगम्यपचावयवेन त्र्यावयवेनवाक्येन यत्तत्समर्थनसच्छलजाति विरहितो भूतार्थाऽन्वेषणापरोवादः सएवच्छलजाति निर्गतस्थानप रोजल्पः यत्रैकस्यपचपरिग्रहोस्तिमापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्तावितण्डा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथावेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्रमणीवर्जैः सहकरोति श्रमणीभिस्तुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थवेलायांवा लोचन्नपिविसम्भोगा हइति रूपकद्वयस्य संक्षेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपचमोद्देशकभाष्यादवसेयइति तथादुवालसावत्ते किइकम्मेत्ति द्वादशावर्त्तंकृतिकर्मवन्दनकं प्रग्रसंद्वाद शावर्त्तंतामेवास्यानुवन्दनशेषाश्च तद्धर्मानभिधित्सितरूपकमाह दुओणएत्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रणमनमित्यर्थः द्वेऽवनतेयस्मिंस्तद्यवनतं तच्चैकय

सूत्रंसमापयतीति तथाविजय राजधानी असंख्याततमेजबूद्वीपे आद्यजंबूद्वीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पल्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं
वधिनीति तथारामोनवमोबलदेवः देवत्तिंगयत्ति देवत्वंपंचमदेवलोके देवत्वंगतः तथासर्वजघन्याराति रुत्तरायणपर्यंताहोरात्रस्यरात्रिः साचद्वादशमौहूर्ति

णसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसव्वाउयं पालित्तादेवत्तिंगए मंद
रस्सणं पव्वयस्सचूलिआमूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं प० जंबूदीवस्सणंदीवस्स वेइआमूले दुवालस
जोयणाइं विक्खंभेणं प० सव्वजहन्निआराइ दुवालसमुहुत्तिआ प० एवंदिवसोविनायव्वो सव्वठसिद्धस्सणं

वर्त छछवेला गुरुनेपगें वांदणाकीजे। अहोकाय एपाठकहीविहुवेलाथई १२ आवर्तथया चोसरां ४ वेला गुरूनेंपगें मस्तकनमाडिये। त्रिणीगुप्ती मनवचन
कायानी गुप्तिकीजे। उपवेसवींवेला वांदणानेअर्थे अवग्रहमांही आवीने एगनिखमण अवग्रहबाहिरि पहिलेवांदणे एकवेला नीकली वोजीवेला गरुपगें बेठा
ज वांदणो समापीएपाठकहो एहसमवयांग वृत्तिनोभाव। जंबूद्वीपनी पूर्वनी पोलीनोधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपेंछे बारयोज
नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेपिहुलपणेंकही रामबलदेव कृष्णवासुदेयनो वडोभाई बारसेवर्ष सर्वआउखूंपालीने देवपणूंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता
मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोछे। तेहनेसेविचि ४०० योजनऊंची चूलिकाछे। तेहनोमूल १२ योजनबीचो आठउपरि शिखरे च्यारयोजन पिहुलपणो
कह्यो। जम्बूद्वीपनी चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन ऊंचीछे। जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेंकही भगवंते सर्वजघ
न्यरात्रि उत्तरायणने छेहडे कर्कसंक्रातिनी आसाढीपूनिमनी घणीनान्हीरात्रि बारहमूहूर्तहुई एतले २४ घडीनी रात्रिकही। एमदिवसपणिजाणिवो।

वा इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं बारसपलिओवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थे गइयाणं नेरइआणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं बारसपलिओवमाइं ठिईप० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं बारसपलिओवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्थेगइ आणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिदज्झयं कंबु कंबुग्गीवं पुंखं सपुंखं महापुंखं पुंडं सपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहि आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा

नो बारसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपती देवतानो बारपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानकल्पे देवलोकें केतलाएक देवतानो बार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छठादेवलोके केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आउखोकह्यो। लातककल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २। कंबु ३। कंबुग्रीव ४। पुंख ५। सपुंख ६। महापुंख ७। पुंड्र ८। सपुंड्र ९। महापुंड्र १०। नरेन्द्र ११। नरेन्द्रकात १२। नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३। एणे १३ विमाने दे वतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो बारसागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो बारअर्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास ग्रणोले जंचोले नीचोउस्वासले

मश्वेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुकंबुग्रीवादीनि भयोदशविमानानीति ॥ अथ भयोदशस्थानके किंचिल्लिख्यते इहस्थिति सूत्रेभ्योऽर्वागष्टसूत्राणि । तत्रकरणंक्रियाकर्मनिबं धनवेष्टातस्याः स्थानानिभेदाःपर्यायाः क्रियास्थानानि तत्रप्रथाय शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डस्तसथावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानइतिप्रथमः १। तद्विलक्षणोऽनर्थदण्डः २। तथाहिंसामाश्रित्य हिंसितवान्हिनस्ति हिंसिष्यतिवा अयंवैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेनदण्डोविनाशनं हिंसादण्डः ३। तथा ऽकस्मादनभिसंधिना न्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डो ऽन्यस्यविनाशोऽकस्माद्दण्डः ४। तथादृष्टेर्विपर्यासितावादृष्टिर्विपर्यासिका दृष्टिर्विपर्यासितायां मतिभ्रमइत्यर्थस्त

जेबारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सं ति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दि

तेंहनो बारेवर्षसहस्रे आहारनो अर्थजपजें। केतलाएक संसारमाहे भव्यजीव बारभवग्रहणे १२ भवनेंअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बारमूंठाणूं सम्मत्तं २० ॥ १२ ॥ हिवे तेरक्रियानो अधिकार लखियेछे। तेरक्रियाठाणां कह्याकरिवो तेक्रिया कर्मबन्ध नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकह्या तेकहेछे शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थें त्रस थावरने दंडेंहणिये तेअर्थदंड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदंड २ एह मुझनेहणतोहुतोहणस्ये अथवा हणेछे तेमाटे हुंज एने पहिले हणूं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनेराने बधवा प्रवर्त्योंहुतो अने अनेरोहणाणो तेअ कस्मात्दंड ४। दृष्टिविपर्यास तेमतिभ्रम तेणेप्राणिवध तेदृष्टिविपर्यासदंड अमित्रनेबुद्धि मित्रनोहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थं जूंठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणछे जेहदंडनो तेमृषावाद प्रत्यया ६। एमअदत्तादानप्रत्यया ७। अध्यात्ममन तेहनेंविषेछे तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावनोचिंतवो ८। मानप्रत्ययअ

यादृच्छः प्राणिवधोद्दृष्टिविपर्यासितावा एकोदृष्टोद्दृष्टिविपर्यासितादृष्टोवा मित्रादेरमित्रादिबुद्ध्या हननमितिभावः ५। तथमृषावादे आत्मपरोभयार्थम लोकवचनंतदेवप्रत्ययः कारणंयस्यदंडस्य समृषावादप्रत्ययः ६। एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७। तथाअध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिको वाह्यनिनिमित्तानापेक्ष शोकाभिभवइतिभावः ८। तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९। तथामित्रद्वेषप्रत्ययः मातृपित्रादीनामल्पेप्यपराधे महादंडनिर्वर्त्तनमितिभावः १०।

ठिविपरिआसिआदंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मा यावत्तिए लोभवत्तिए इरिआवहिए नामंतेरसमे सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरसविमाणपत्थडा प० सोहम्म

भिमानेकरी आगळाने दंडदेवो ९। मित्रद्वेषप्रत्यय मातापितानें थोडोअपराधे घणोदंडदेवो १०। मायाप्रत्यय मायाकपट तेणेनिवर्त्योदंड ते मायाप्रत्यय ११। एमलोभप्रत्यय १२। ऐर्यापथिकीनामे तेरमोक्रियास्थानक काययोग प्रत्ययसंयोगी केवलीने पहिलीसमें क्रियालागे बीजेसमेवेदे तीजेस मेनिर्जरे १३। सौधर्मपहिलो देवलोक ईशानबीजोदेवलोक एहदोदेवलोक लगडाकारेछे तेमाटे बिहुंदेवलोके तेरविमान प्रस्तटछे उपराउपरि पावडीरूप कह्यो। पहिलो सौधर्मलोक मेरुथकी दक्षिणदिसें अर्द्धचंद्राकारछे। पूर्वपश्चिमेलांबो दक्षिणउत्तरेपिहुलो। तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रेंद्रनो आवासभूतविमान अथवा सौधर्मदेवलोकनो अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबारलाख योजनलांबपणें पिहुलपणेकह्यो। एममेरुथकी उत्तरदिसें अर्द्धचंद्राका रईशानदेवलोक तेहने तेरमेप्रस्तटे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोजननोकह्यो। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे कुलकोटिनी योनिप्रमुखउत्पतिस्थानक शतसहस्रकह्या एतलेसढीबार कुलकोटि जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचनीछे। योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगोबर कुलते

कायानां व्यापाराणांप्रयोगः सत्रयोदशविधः पंचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारकाचारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तौहिसयमिनाम वस्तः सयमवतश्चसंयतमनुष्याणामेव नतिरश्चामिति तत्रसत्यासत्योभयानुभयस्वभावा श्चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति अष्टौपुनरौदारिकादयः पञ्च कायप्रयोगाः एवत्रयोदशेति । तथासूर्यमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूर्यमंडलयोजनं तत् । णमित्यलंकारेत्रयोदशभिरेकषष्ठिभागै र्येषां भागानामेकष ष्ठायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य सबंधिभिरूनंप्रज्ञप्त मष्टचत्वारिंशयोजनभागादूत्यर्थः वज्राभिलापेनद्वादश वइराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

असच्चामोसमणपउगे सच्चवइपउगे मोसवइपउगे सच्चामोसवइपउगे असच्चामोसवइपउगे उरालिअसरीरकायपउगे उरालिअमीससरीरकायपउगे वेउव्विअसरीरकायपउगे वेउव्विअमीससरीरकायपउगे कम्मसरीरकायपउगे सूरमंडलं जोयणतेरसेहिं एगसठिभागेहिं जोयणस्सऊणइमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं

मनोव्यापार सांचोनही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेसत्यवचनयोग १ एममृषावचनयोग तेहनूंकारण २। सत्यासत्य तेमिश्रभाषाएं बोलवो ३। असत्यामृषा तेव्यवहारवचनयोग जाइआवो लेदे एहवीभाषा ४। कायाना सातयोगछे तेमाहि आहारक १। आहारकमिश्र २। एह तिर्यंचनेनहोय तेहोय तेहपूरबधरनेहोइ तेमाटे पांचकाययोगलोजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाएं। कार्मणशरीर काययोग ५। एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ थया सूर्यनूंमांडलू योजनने एकसठीएतेरभा गेंजंणोकह्यो। एतले एकयोजनना ६१ भागकीजे तेहवा १३ भाग सूर्यनूंमंडलछे। एतले एकसठीया ४८भागसर्यनूंमांडलूं पिहलूंछे। एणीएरत्नप्रभा पहिलो

नानीति । अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधंच नवरमिहाष्टौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्तत्र सूक्ष्मासूक्ष्मनामकर्मोदयव र्त्तित्वात् पृथिव्यादयएकेंद्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मोदयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकोग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्तथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति द्वितीयः एवंबादराबादरनामोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्ततरभेदाद्द्विधा एवद्वीन्द्रियादयोपि नवरंपचेंद्रियाः संज्ञिनोमनःपर्याप्त्युपेताइतरेत्वसंज्ञिनइति

गसिंगं लोगसिद्धं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससा गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आरहेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेतेरसहिं भवग्गह णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥

चउद्दसभूअग्गामा प० तं० ॥ सुहुमाअपज्जत्तया सुहुमापज्जत्तया बादराअपज्जत्तया बादरापज्जत्तया

लोकोत्तरावतसक १२ । एम छत्रीसविमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानोउत्कृष्टो तेरसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासोश्वास घणोले ऊचोले नीचोमूंके । तेदेवतानो तेरवर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव तेरेंभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरिस्ये इति तेरमूंठाणूं सम्मत ॥ १३ ॥ हिवे चौदमो अधिकार लिखेछे । चौदभूतानाग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकहेछे । सूक्ष्मए केंद्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकर्मोदयथकी सूक्ष्मपणूंपाम्या एहवापृथिव्यादिक एकेंद्रिय तेकेहवाछे अपर्याप्तछे आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ स्वासोस्वास ४

नाणप्पवायंचत्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चप्पवायपुव्वंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा सभेदेनयत्र प्रोद्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंवत्ति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कम्मप्पवायपुव्वन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति पच्चक्खाणभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपंवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विज्जाअणुप्पवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशया वर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवञ्भपाणाउ बारसंपुव्वन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवध्यमेकादश यत्रप्राणाजीवाआयुश्चानेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो किरियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयंते तत्क्रियाविशालापुव्वं तह बिंदुसारवत्ति लोकशब्दोत्रलुप्तोद्रष्टव्य. तत

वायं तत्तोनाणप्पवायंच सच्चप्पवायपुव्वं तत्तोआयप्पवायंपुव्वंच कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवेनवमं विज्जाणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसपुव्वं तत्तोकरियविसालंपुव्वं तहबिंदुसारंच अग्गेणीअस्सणंपुव्वस्स चऊ

प्रकृयो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेंकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्वं सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां चिहुभेदेंकह्यो ६ । तिवारपछे आत्मप्रवादपूर्वं जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमूं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांवर्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्यानां अतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इग्यारमूं जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार पछीक्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्या १३ बिंदुसार जेह

यविशेषः तथा अविरतसम्यग्दृष्टिर्देशविरतोदेशविरत. श्रावकइत्यर्थः प्रमत्तसंयतः किञ्चित्प्रमादवान् सर्वविरतः अप्रमत्तसंयतः सर्वप्रमादरहितः सएव नियट्टि इहक्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिंवा प्रतिपन्नोजीवः क्षीणदर्शनसप्तकउपशांतदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तद्गुणस्थानकं समकालप्रतिप न्नानां जीवानामध्यवसाय भेदतत्प्रधानोबादरो बादरसंपरायोनिवृत्तिबादरः अणियट्टिबायरेत्ति अनिवृत्तिबादरः सचकषायाष्टकक्षपणारम्भान्नपुंसकवेदोपश मनारम्भादारभ्य बादरलोभखण्डं क्षपणोपशमनेयावद्भवतीति सुहुमसपराएत्ति सूक्ष्मः संज्वलनलोभासंख्येयखण्डरूपः संपरायः कषायोयस्यससूक्ष्मसंपरायो लो भानुवेदकइत्यर्थोयद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नक्षपकोवाक्षपकश्रेणिप्रतिपन्न इतिदशमजीवस्थानमिति तथा उपशांतः सर्वथानुदयावस्थो मोहो मोहनीयकर्मयस्यउपशांतमोहः उपशमवीतरागइत्यर्थोऽयचोपशमश्रेणि समाप्तावंतर्मुहूर्तंभवति ततःप्रच्यवतएवेति तथाक्षीणो निःसत्ताकीभूतोमोहोय ॥

म्मद्दिठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टिअनियट्टिबायरे सुहुमसंपराय उवसमएखीखव ॥

कांइक प्रमादवंत ६। अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७। आठमोठाणाथी क्षपकश्रेणि तथा उपशमश्रेणी जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४। क्रोध १ मान २ ॥ माया ३ लोभ ४। चणिमोहनो सम्यत्त १ मिथ्या २ मिश्र ३ एम ७। दर्शनसप्तक्षयकरतो क्षपकश्रेणी आरूढकह्यो अने निवृत्ति बादर आठमूगुणठाणूंकह्यूं ८ नवमूं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलोकषायाष्टखपायव्यानंतर नपुसकवेदोदयोपशमाव्यानंतर बादर लोभखण्डखपावे केउपशमावे ९। सूक्ष्मसपराय दसमूं तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्येय खंडरूपसपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदवोछे जिहा सूक्ष्मसपराय गुणठाणेठाणी जीव उपशमश्रेणी प्रतिपन्नहोय के क्षप कश्रेणी प्रतिपन्नहोय १०। इग्यारमूं उपसंतमोह सर्वथापि उपशांत अनुदयछे मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमूं गुणठाणे अंतमुहूर्तरह्यो कालकरेतो अनुत्तर

॥

स्यस तथाचयवीतरागइत्यर्थोऽयमप्यंतर्मुहूर्त्तएवेति तथासंयोगीकेवली मन:प्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाअयोगीकवली निरुद्धमन:प्रभृतियोग: शै
लेशीगतोह्रस्वपचाचरोच्चिरणमात्रंकालयावदिति चतुर्दशजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतैरवत्योजीवे इहभरतमेरवतचारोपितगुणको दण्डाकारपनस्तयज्जी
वेभवत: तत्रभरतस्यहिमवतोऽर्वागनन्तरा: प्रदेशा: श्रेणिजीवा: ऐरवतस्यचशिखरिण' परतोनतरप्रदेशाश्रेणीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्कवट्टिस्सत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे संजोगीकेवली अरहेवयाउणजीआउ चउद्दसचऊद्दसजोयणसहस्साइं चत्तारि
अएऊत्तरेजोयणसए छच्चएकूणवीसेभागेजोयणस्स आयामेणं प० एगमेरुसणंरन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ

विमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छट्ठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोचपकश्रेणी करेतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमूंकी बारमेवडेतेह ११। वार
मोचीणमोह सर्वथापि चीणछे मोहजिहांछिणयीतराग १२। तेरमो सयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवत केवलज्ञानी १३। चौदमो असंयोगी केव
ली मनप्रभृतियोगरुणि जिहांरुंध्याछे ह्रस्वपंचअक्षरकालमान १४ गुणठानकालमान मिछे १ सासण २ अविरय ३ परभवियाउणसे सगुणठाणमिछस्साति
सेभगछावलियाहोय सासणे १ तिन्नीसयरघाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपणग ५ तेरसम १३। लहुपचक्खरचरम १४ यतहुसे सगुणठाणा १८ भरतऐरवत एहविहु
चेत्रना जीव तिहां हिमवंतपर्वतथकी ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगी लांबीभरजीवा प्रत्यचाकारे अने ऐरवतचेत्रमाजीव शिखरीपर्वतथकी परहीश्रेणी जाणी
वी एहबीहु जीव चौदचौदयोजन सहस्रनो चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाछभागआयाम लांबापणेकह्या एकएकने राजाने पूर्वादिक
त्रणिसमुद्र चउथोहिमवत पर्वत एतलालगी भूमिमा अतभाग ४ छे। जिहातेह भूमिनोधणी एहवो चक्रयती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमाहि जे

त्वा रोन्ता विभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षयतिवस्तूनीति यदाह रत्नंनिगद्यते तज्जातीयदुत्कृष्टमिति गाहावइत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहियत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी वड्ढइत्ति वर्द्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहसप्ताद्यानिपचेंद्रियाणि शेषाण्येकेंद्रियाणीति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानांनामानीति

इस्सरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावइरयणे गहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूद्दीवेणंदीवे चउद्दसमहानईओ पुव्वा वरेणलवणसमुद्दं समुप्पंति तं० गंगा सिंधु रोहिआ रोहिअंसा हरिया हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकांता सुवण्णकूला रूप्पकुला रत्ता रत्तवई इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयायाणं नेरइआणं

उत्कृष्टवस्तु तेहनेरत्नकहिये तेकहेछे। स्त्रीरत्न १। सेनापतिरत्न २। गृहपतिरत्नतेकोठारी ३। पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४। वार्द्धकीसूत्रधार ५। अश्व घोडोरत्न ६। हस्तिरत्न ७। एहसातपचेंद्रियरत्न। असिखड्गरत्न ८। दंडरत्न ९। चक्ररत्न १०। छत्ररत्न ११। चर्मरत्न १२। मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३। काकिणी सुवर्णमयी अहिरणसठाणि ७ एह एकेन्द्रियरत्न चौद १४ कह्या। जबूद्वीपनेविषेचौद महानदीजाणवी। पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्थ्ये पहुचेछे। पूर्वलव णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पहुंचे तेंकहेछे। गंगा १। सिंधु २। रोहिता ३। रोहितंसा ४। हरिता ५। हरिकांता ६। सीता ७। सीतोदा ८। नरकांता ९। नारिकांता १०। सुवर्णकूला ११। रूप्यकूला १२। रक्ता १३। रक्तवती १४। एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदपल्योप

अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० अ
चऊद्दसपलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं
सुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण चऊद्दसपलिउवमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प०
देवाणं चउद्दसपलिउ वमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंतं सिरिमहिं
महासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेण चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
अं सिरिसोमनस लंतयं काविठ महिंद महिंदकंत महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं आणमंतिवा पाणमंति
देवाणं उक्कोसेणं चऊद्दससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा चऊद्दसहिं अद्धमासेहिं संतेगइआभ
वा ऊससंतिवा नीस्ससतिवा तेसिणंदेवाणं चऊद्दसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ

म आउखोकह्यो पंचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनी चौदपल्योपमआउखो
खोकह्यो। सोधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपल्योपम आउखोकह्यो। लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकह्यो
महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकह्यो छठेदेवलोके जेदेवता श्रीकांत १ श्रीमहांतक २ श्रीसोमनस १ लां
तक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेन्द्रोत्तरावतंसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। तेह
देवता चौदेअर्धमासे पखवाडे घणोस्वासले थोडोस्वासले ऊचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे। केएक भव्यजीव चौ

अथपंचदशस्थानकं सुगमेपिकिंचिल्लिख्यते इहस्थितेरवाक्सप्तसूत्राणि । तत्रपरमाश्चतेऽधार्मिकाश्च संक्लिष्टपरिणामत्वात्परमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसृषु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयंतीति तत्रांबेत्यादिश्लोकद्वयं एतेचव्यापारभेदेन पंचदशभवंति तत्रअंबेत्ति यःपरमाधार्मिकदेवो नारकान् हतिपातयति बध्नाति नीत्वावारं २ खतलेविमुंचति सइत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवत्ति यस्तुनारकान्निहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति सोंबरूषीति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारादिनातानधःशातनपतनादिकरोति वर्णतश्चश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति शबलइतिचापरः परमाधार्मिकइति प्रक्रमः सचांत्रवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतश्चशबलः कर्बुरइत्यर्थः ४ रुद्दोवरुद्दोत्ति यःशक्तिकुन्तादिषुनारकानान् प्रोतयतिसरौद्रत्वाद्रौद्रइति

वसिहिंति जीवाजेचऊहसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहमीआ प० तं० ॥ अंबे अंबरिसीचेव सामसबलेत्तिआवरे रुद्दावरुद्दकालेअ महाकालेत्तिआवरे असिपत्तेधणूकुंभे वालुए वेअरणीत्तिय खरस्सरेमहाघोसे

दभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति चौदमोठाणो समाप्तो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनो अधिकार लिखियेछे पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्लिष्ट परिणामनाधणी त्रिणिनरकलगे नारकीने वेदनानादेणहारकह्या तेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव नारकीने हणीपाडे अंबर आकाशे उछाले तेअबकहिये १ । हणीनारकीने रायशस्त्रेकरि अनेक खडकल्पीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंबरीषकहिये २ । जेहनारकीने हाथपगनें प्रहारेंकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकीकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हृदयाकालिजां उपाडेतेशबलक कहि

तवत् पलायमानान् नारकान् पशुन्द्रववाटकेषु महाघोषं कुर्वन्निरुणद्धिसमहाघोषइति १५ इमेएपन्नरसाहियं एवमित्यंबादिक्रमेणएते परमाधार्मिकाः पञ्च दशाख्याताः कथिताजिनैरिति ॥ भुवराहुणमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वणिपोर्णमास्याममावास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरागंकरोति सपर्वराहु र्यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहच । किण्हंराहुविमाण निच्चंचदेणहोइअविरहियं । चउरंगुलमप्पत्तं हेठ्ठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो ऽसौध्रुवराहुः णमित्यलङ्कारे बहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिवयन्तिप्रतिपद प्रथमतिथिमादौकृत्वेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागंपंचदशभागेनेति वीप्सायांद्विर्वचनादि

एतेपन्नरसाहिआ णेमीणंअरहा पन्नरसधणूइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था णिच्चराहुणं बहुलपक्खस्सपडिवए पन्नरसति भागेणं चंदलेसआवरेत्ताणं चिठत्ति तं० पढमाएपढमंभागं बीआएदुभागं तइयाएतिभागं चउत्थीएचउभागं पंचमीएपंचभागं छठीएछभागं अठमीएअठभागं नवमीएनवभागं दसमीएदसभागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पशुनीपरि इवाडेघालीमेले पोकारकरे तानेरूंधीमेले तेमहापाप परमाधर्मी एते पनरजातीना परमाधर्मीकह्या १५। नेमिनाथ अरिहंतएकवीस मा पनरधनुषऊंचा ऊंचपणेकह्या । राहुना बिहुंभेद पर्वराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पौर्णमासीएं अमावास्याए चंद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अंधारापक्ष नीरात्रीएं चंद्रमाने पनरमभागे चंद्रमानी लेश्यादीप्ति आवरीने आछादीने तिष्ठेरहे तेकहेछे । एक पडिवामांडि प्रतिदिनें राहुचंद्रमानी एकएककला आ छादे पहिली पडिवाहोय १ । बीजेदिने बीजोभाग २ । त्रीजेदिने त्रीजोभाग ३ । चउथें चौथोभाग ४ । पंचमीए पांचमोभाग ५ । छठेछठोभाग ६ । सातमे सातमोभाग ७ । आठमेदिने आठमोभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशीए इग्यारभाग ११ । बारसे बारभाग १२ । तेरसे

यथापदं पदेनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमितिभाव चन्द्रस्यप्रतीतस्यलेश्यामिति लेश्यादीप्तिस्तत्कारणत्वात् मण्डलंलेश्यातामावृत्याच्छाद्यतिष्ठति ॥
एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पढमाइत्ति प्रथमायातिथ्यां प्रथमंभाग पचदशांशलचणं चंद्रलेश्यायाआवृत्यतिष्ठतीति प्रक्रमः अनेनक्रमेणयावत् पन्नरसेसुत्ति
पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशभागमावृत्यतिष्ठति तचेवत्ति तमेवपञ्चदशभाग शुक्लपचस्य प्रतिपदादिषु चद्रलेश्यायाउपदर्शयन् पंचदशभागतः खयमपसरणतः
प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायभावार्थ. षोडशभागीकृतस्यचद्रस्य षोडशभागोऽवस्थितएवास्ते येचान्येभागास्तद्राहुः प्रतिदिनमेकैकभाग कृष्णपचे
आवृणोतिशुक्लपचेतु विमुचतीति उक्तंचज्योतिष्करण्डके सोलसभागेकाऊण उडुवइहायएत्थपन्नरस। तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवढइजोण्हंति। ननुचन्द्रविमा

वारसमीए वारमन्नागं तेरसीए तेरसन्नागं चउद्दसीए चउद्दसन्नागं पन्नरसेसु पन्नरसन्नागं सुक्कपक्खस्स उवद सेमाणे चिठन्ति तं० पढमाएपढमंन्नागं जावपन्नरसेसु पन्नरसन्नागं बणक्खत्ता पन्नरस मुहुत्तसजुत्ता प० तं० सतन्निसय नरणि अद्दा असलेसा साइ तहाजेठाय एतेबणक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं

तिष्ठेरहे
तरमोभाग १३। चौदसीए चौदभाग १४। पनरमेदिने पनरमी कलाढांके १५। तेहीज चन्द्रनो पनरमोभाग शुक्लपचे राहमूंकतो चंद्रनेप्रकटतो तिष्ठेरहे
शुक्लपचने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजेदिनेबीजोभाग एमयावत् पनरमेदिने पनरमोभागमूंके। छनचत्र पनरमूहूर्तलगे चंद्रमा साथे चंद्रसंयुक्तथका
रहे तेह तुलासंक्राति जाणिवो तेकहेछे। शतभिषा १। भरणी २। अर्द्रा ३। आश्लेषा ४। स्वाती ५। तथाज्येष्ठा ६। एह छनचत्र पनरमूहूर्त संयुक्तकहीये
१५ मुहूर्तलगे चंद्रमासाथेचाले। चैत्रआसो मसवाडे पनरमुहूर्तनो दिवस ३० घडीनोहुओ। तेणेमसवाडे पनरमुहूर्तनी ३० घडीनीरात्रीहोय। विद्या

नस्यपचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनाऽर्द्धयोजनप्रमाणत्वा त्कथंपंचदशैर्दिनैश्चंद्रविमानस्य महत्वेनेतरस्यच लघुत्वेनसर्वा वरणंस्यादित्यत्रोच्यते। यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतत्प्रायिकमिति । राहोर्ग्रहस्ययोजनप्रमाणमपिविमानसम्भाव्यते लवीयसोपिवाराहुवि मानस्यमहतातमिस्त्ररश्मिजालेन तस्यावरणाव्नदोषइति तथा पणनचत्राणि पचदशमूहूर्त्तानि यावचंद्रेण सयोगोधियांतानि पचदशमुहूर्त्तसंयोगानि तद्य था सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेसयाइजेट्ठाय। एएछनक्खता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता। संयुक्तं संयोगइति तथाचेत्तासोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैत्रेऽश्व युजिचमासे पचदशमुहुर्त्तो दिवसोभवति रात्रिश्च नियतस्तु मेषसंक्रातिदिनेचैवंद्रष्टव्यमिति पओगेत्ति प्रयोजनंप्रयोगः परिस्पदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापा रइत्यर्थः अथवा प्रकर्षेणयुज्यते संबध्यतेऽनेनक्रियापरिणामिनकर्मणासहाऽत्मनेति प्रयोगः तत्रसत्यार्थालोचननिबंधनंमनः सत्यमन स्तस्यप्रयोगोव्यापारः स

मासेसुपन्नरसमुहुत्ते दिवसोभवति सइञ्चपन्नरसमुहुत्ताराईभवति विज्जाञ्चणुप्पवायस्सणं पुव्वस्सपन्नरसव त्थू प० मणूसाणंपन्नरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसपओगे असच्चामोसमणप

अनुप्रवाद दसमो पूर्वतेहनो १५ वस्तुअध्ययन विशेषकह्यो। मनुष्यने पनरप्रकारें प्रयोगकहतांयोगकह्या। तेकहेछे। सत्यमनोयोग मननोसांचोव्यापार १। एमज मृषामननोव्यापार २। सत्यमृषामनोयोगमिश्र ३। असत्यअमृषा मनोयोग ४। एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५। मृषावचनयोग ६। मिश्रवचनयोग ७ असत्यामृषावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाइं ९ औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तादस्थाइं उत्पत्ति समय औदारिकपुद्गल अने कार्मणपुद्गलमिश्रीभावे अतर्मुहूर्तलगे रहेतेमाटे औदारिक मिश्रकाययोग १०। एमज वैक्रियकाययोग ११। वैक्रियमिश्रकाय

त्यमनःप्रयोगः एवशेषेष्वपि । नवरमौदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः अयचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः अयचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको वैक्रियेणमिश्रोयावदैक्रियपर्याप्त्यानपर्याप्तिगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य

उगे सच्चवइपउगे मोसवइपउगे सच्चमोसवइपउगे असच्चामोसवइपउगे उरालियसरीरकायपउगे उरालिअमीससरीरकायपउगे वेउव्वियसरीरकायपउगे वेउव्विअमीससरीरकायपउगे आहारयसरीरकायप्पउगे आहा

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाययोग १५ । जिवारें केवली ८ समयका केवलसमुद्घातकरे केवलीनेत्रीजे चौथे पांचमेकार्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरेंसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरेपल्योपम आउखोकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । सातमेदेवलोकें जेदेवता नंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ ४ । नंदकांत ५ । नंदवर्ण ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नंदमिद्द १० । नंदकूट ११ । नंदोत्तरावतंसक १२ । एहबारविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिके प्रवेशाद्वायामौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रतेत्येकैत्वा हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदभिनिवृत्तौ सत्या तस्यैवप्रधानत्वा तथाहारकाभिमशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्यः पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य जत्याहारकं तावदौदारिकेण सहमिश्रतेति आइमततत्तेनसर्वथामुक्तं पूर्वनिर्वर्तितं तिष्ठत्येवतत्वाथं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ ह्यात्येवं तथाकर्मणःशरीरकायप्रयोगे विग्रहेसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमंचेदं नवरं

रयमीसयसरीरकायप्पओगे कम्मयसरीरकायपओगे इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरस पलिओवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइआण नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तर

ने उत्कृष्टी पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवतापनरे पखवाडे सासोसासघणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा रनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव पनरभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति पनरमूंठाणूंसम्मत्त ॥ १५ ॥

गाथाषोडशकाद्देनि स्थितिसूत्रेभ्यआरात्सप्तसूत्राणि तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधे षं मद षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म
ध्ययनं षोडशयेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रसमेयत्ति नास्तिकादि समय प्रतिपाद श्री कत्वे परमध्ययन समयएवोच्यते वैतालीयछंदोजातिबद्धं वैतालीयमेवमेषा

वण्हिसग विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं प न्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर
सण्हं अद्धमासाण आणमंतिवापाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्सस ंतिवा तेसिणं देवाण पन्नरसहिं वाससह
स्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेपन्नरस हिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति
मुच्चिस्संति परिनिब्बाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहासोलसगा प०
त० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरएधम्मे

हिवेसोलवो अधिकार लिखियेछे । सूगडांगने पहिलेश्रुतसंधे सोल अध्ययन मांहि गाथा एहवोनाम सोलमोछे । तेकहेछे । समएति नास्तिकादिमतनो कथक
प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वेतालिकछंदेबाध्यातेवैतालिय २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७
वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । समाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपाखंडीनोमत जिहांतेसमोसरण १२ । सत्यभायकहीते यथातथा
नाम १३ । ग्रंथतेअध्ययन १४ । ग्रंथनोकथक यमकछंदेबांध्योतेयमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्ययननो जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकषायकह्याभग
वंते कषकहियेससार तेहनो आयलाभहोय जेहथी तेकषायकह्या तेकहेछे । अनंतानुबंधी क्रोध जेह अनंताभवनो अनुबंधकरे जावजीवरहे सम्यक्तआविवा

र्णा यथाभिधेयनामानि समोसरणेत्ति समवसरणं नयाणां षड्धिकानां प्रवादिशतानां मतपिंडनरूपं अहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तत्रतथ्या तथिका ग्रथाभिधायकग्रथः जमइत्ति यमकीयं यमकनिवद्धंसूत्रं गाहतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथोगाथावातद्प्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रेगाथा

समाही मग्गे समोसरणे ऋाहातहिए गंथे जमइए गाहा सोलसकसाया प० तं० ऋणंताणुबंधीकोहे ऋणंताणुबंधीमाणे ऋणंताणुबंधीमाया ऋणंताणुबंधीलोभे ऋपच्चक्खाणकसाएकोहे ऋपच्चक्खाणकसाएमाणे ऋपच्चक्खाणकसाएमाया ऋपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणेकोहे पच्चक्खाणावरणेमाणे पच्चक्खाणावरणामाया पच्चक्खाणावरणेलोभे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया संजलणेलोभे मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधेया प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपभेय गिरिराया रयणुच्चए पियदंसणे मज्झलोगस्सनाभीय ऋ

नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २। अनंतानुबंधीमाया २। अनंतानुबधीलोभ ४। एमज अप्रत्याख्यानक्रोध अणुव्रतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १। एमज प्रत्याख्यानमान २। प्रत्याख्यानमाया ३। प्रत्याख्यानलोभ ४। संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ संज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषायथया। मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे। मदर १। मेरु २। मनोरम ३। सुदंसण ४। स्वयंप्रभ ५। गिरिराज ६। रत्नोच्चय ७। प्रियदर्शन ८। मध्यम लोकनीनाभि १०। अर्थ ११। सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदक्षिणादे १२। सूर्यावरण रात्रें सूर्यने आवरेआच्छादे १३।

हपरिवड्ढीए प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिओवमाइं ठिई प० पंच मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया णं सोलसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिओवमाइंठिई प० जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव त्तं महाणदियावत्तं अंकुसं पलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेण सोलससारोवमाइं ठिई प० तेणदेवासोलसहिं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइयाभ

पाणी ऊचोगयोछे। तेहनी ऊंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलेसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमार देवनी केतला एकनोसोलेपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। महाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनोसोलेसागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता आवर्त १। विदावर्त २ नंदिकावर्त ३। महानंदिकावर्त ४। अंकुश ५। प्रलंब ६। भद्र ७। सुभद्र ८। महाभद्र ९। सर्वतोभद्र १०। भद्रोत्तरावतसक ११। एह इग्यारविमाने देवतापणेउपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलेसागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता सोलपखवाडेसासोसासलेवोले ऊंचोसासले नीचोसासमूके तेदे

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागद्रष्ट तथा अजीवकायासंयमो विकटसुवर्णबहुमूल्यवस्त्रपात्रे पुस्तकादिग्रहणं प्रेचायामसंयमोयः सतथा सचस्थानोपकरणादीनि

यसिद्धियाजीवा जेसोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु
क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेअसंजमे प० त० । पुढविकायअसंजमे आउका
यअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे वेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे च
उरिंदियअसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहट्टूअसंजमे अप्प

वतानो सोलसहस्रवर्षेआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव सोलभवने आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये ॥ इतिसो
लमूंठाणूं सम्पत्तम् ॥ १६ ॥ हिवे सतरमो अधिकारलिखियेछे । सतरप्रकारे असंजमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो पांचयोसंघटबो हणवोते
पृथिवीकाय असंजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्पतिकाय
असंयम ५ । वेइन्द्रियअसंयम ६ । तेइन्द्रियअसंयम ७ । चउरिंदियअसंयम ८ । पचेंदियअसंयम ९ । वस्त्रपात्र अणपुजीलेवो मेलवो तेअजीवकाय असंयम
१० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनोलेवो ११ । उपकरणनोअविधि पडिलेहवो तेप्रचासंयम १२ । असंयमयोगनेविषे व्यापारवो संयमयोगनेविषे अव्यापारवो
तेउपेचा असंयम १३ । अवविए परिठवणोमात्रादिकनो अवधिएपडिलेहवो तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननोभूंडोव्यापार तेमनअसंयम १५ । एमवचननो

अप्रत्युपेक्षणमविधि प्रत्युपेक्षणंवा उपेक्षाऽसंयमयोगेषुव्यापारणं संयमयोगेष्वव्यापारणंवा तथाऽपहृत्यसंयमः अविविनोबारादीनां परिष्ठापनतोयः तथाअप्र मार्जनाऽसंयमः पात्रादेरप्रमार्जनयावेति मनोवाक्कायाऽसयमास्त्रिणामकुशलानामुदीरणानीति असंयमे विपरीतः संयमः वेलंधरानुवेलधरावासपर्वतस्य

मज्जणाऋसंजमे मणऋसंजमे वइऋसंजमे कायऋसंजमे सत्तरसविहेसंजमे प० तं० पुढवीकायसंजमे ऋाउकायसजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे बेइंदिऋसंजमे तेइंदिऋसंजमे चउरिंदि यसंजमे पंचिंदिऋसंजमे ऋजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे ऋवहट्टूसंजमे ऋप्पमज्जणासंजमे मण संजमे वइसंजमे कायसंजमे माणुसत्तरेणपव्वए सत्तरसएक्कवीसजोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेसिंपिणवेलं धरऋणुवेलंधरणागराईणं ऋावसपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइ जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० लवणेणंसमुद्दे

असंयम १६। कायानोअसंयम १७॥ सतरप्रकारेसंयमकह्यो तेकहेछे। पृथिवीकायनो राखवो तेपृथिवीकयसंजय १। एम अपकायसजय २। तेजकायस जम ३। वायुकायसजम ४। वनस्पतिकाय संजम ५। वेइन्द्रियसजम ६। तेइन्द्रियसजम ७। चउरिंदियसजम ८। पचेंद्रियसंजम ९। वस्त्रपात्रपूंजीन लीजे तेअजीवसंजस १०। प्रेक्षासंजम ११। उपेक्षासंजम १२। अपहृत्यासंजम १३। अप्रमार्जनसंजम १४। मनसजम १५। वयणसजम १६। कायसंज म १७॥ जंबूद्वीपआखो धातकीखंडआखो पुष्करार्द्धअर्द्धो एमअढाईद्वीप रूपनगरने चउपखेरगढरूप माणुषोत्तरपर्वतछे तेहसतरसे एकवीसयोजन ऊंचो जंचपणेकह्यो सगलेवेलंधर अनुवेलंधर देवतानागकुमार भवनपति तेहना आवास जगतीथकी विंहुपासेछे चालीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांहिजई

रूप नीरसमासागाथाभिरवगंतव्यमेता । दसजोयणसहस्सा लवणसिहाचक्कवालउच्चंदा । सोलससहस्साउच्चा सहस्समेगंतुउगाढा । देसूणमद्धजोयण लवणसि
होवरिदगंतुकालदुगे । अतिरेगर परिवड्ढइ हायएवावि । अब्भंतरियवेल धारतिलवणोदहिस्सनागाण । वायालीयसहस्सा श्रोसत्तरिसहस्सावाहरिय । सट्ठीना
गसहस्सा धरतिप्रसणोदयसमुद्दस्स । वेलंधरश्रावासा लवणेयचउदिसिचउरो । पुव्वादि अणुक्कमसो गोथुभ १ दगभास २ संख ३ दगसीस ४ । गोथुभ १ सिव
ए २ संखे ३ मणोसिले ४ नागरायाणो । अणुवेलधरवासा लवणेविदिसासुसंठियाचउरो । कक्कोडे १ विज्जुप्पभे २ केलासरुणप्पभेचेव । कक्कोडयकद्दमए केल
सरुणप्पभेय नागरायाणो । वायालीससहस्से गंतुउवहिमिसव्वेवि । चत्तारिजोयणसए तीसेकोसंचउग्गयाभूमी । सत्तरसजोयणसए इगवीसेऊसियासव्वे

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाउ भूमिभागाउ

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतछेगोथुभ १ । एम दक्षिणादिकेदगभास २ । संख ३ । दगसीस ४ । तेहनाधणीगोथूभ १ शिव २ । भद्र ३ । मणसिल
अनुवेलधरनापर्वतविदिशिए ईशानकोणेककोंट १ । एमजअग्निकोणेविद्युतप्रभ २ । केलाश ३ । अरुणप्रभ ४ । एहनाधणीनागराजककोंट १ कर्दम २ कै
लास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रयोजन चक्रवालमोटलाकारे समपाणीछे तेहउपरि सोलसहस्रऊगाज ऊचापाछे तिहां दिनप्र
ति एवेटकावेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमांहिलेपासे जंबूद्वीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखंडभणी ७२ सहस्रदेवता क्रसहस्रशिखे वाटेकरी पा
णीबांधता उपराठामारेछे । वेलंधरअनुवेलंधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकासतरसेयोजन ऊंचाजचपणेकह्या । जगतीथकी पंचाणूं यो
जनसहसजइये समुद्रसांहि तिहा दससहस्रजोजन चक्रवालसमुद्रपाणीछे तिहाथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी ऊचाआकाशेगयाछे तोसमुद्रपाता

चारणाणंति जन्ञाचारणानां विद्याचारणानांच तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिछिकूट उत्पातपर्वतो यत्रागत्य मनुष्यक्षेत्रागमनायोत्पतति सचैतो ऽसख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राख्यतिक्रम्यभवति रुचकेंद्रोत्पातपर्वतस्त्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ

सातरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उड्ढंउप्पातित्ता ततोपच्छा चारणाणं तिरिच्छगती यावत्तती चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो तिगिंछिकूडेउप्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० बलिस्सणं असुरिंदरन्नोगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

समांहिजडो एकयोजनसहस्रऊंचो सोलहस्रसब्बगोणसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागछे तेहथकीभार्भेरोबीकोसअधिकसत्तरयोजन सहस्रलगेऊंचोउत्पति उडोनेएतलेलवणसमुद्रनी शिखालगेऊंचाउत्पतितिवारपछे जघाचारण विद्याचारणनी तिरछीगति पर्वततले तिरछिद्वीपे रुचिकवरद्वीपे एममंदीश्वरद्वीपें जीवप्रतिमावादिवाजाई चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानो इन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगिछकूट। उत्पातपर्वत जिहां चमरेंद्रादिकपातालथकी आवीनेमनुष्यक्षेत्रें आविवाभणीउत्पते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहिये। तेअसख्यातमे अरुणसमुद्रथकी दक्षिणदिशें ४२ सहस्रयोजनजईये तिहां पांमिएते तिगिछकूट। १७२१ योजन ऊंचोऊचपणेंकह्यो। बलींद्रनो असुरेंद्रनो वलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतरसे एकवीस जचोऊंचपणे तेद्दीपणि अरुणसमुद्र असख्यातमो तेहमांहि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो। सतरप्रकारेमरणकह्यो तेकहेछे। क्षणक्षणथितिए आउखनोदल उछायायते आवीचिमरण १। अवधिमर्यादातेणेंकरी मरवोते अवधिमरण जिमनारकोनरका

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं। तथाछद्मस्थमरणमेव केवलिमरणंतु प्रतीतं। वेहासमरणति विहायसि व्योमनिभवं वैहायसं विहायोभवत्त्वंच त स्य वृक्षशाखाद्युद्बंधनेसति भवेत् तथागृद्धैः पक्षिविशेषैः रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभिदंश स्पृष्ट स्पर्शनंयस्मिन् तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षण त्वाउंदरादियत्र तद्गृध्रपृष्ट मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मान भक्षयतो महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मंच भक्तपरिज्ञेतियदूहं। तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेष्ट्यते आसामनशनक्रि यामितीगिनी तया मरणमिंगिनीमरण तद्विचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्नि.प्रतिकर्मशरीरस्ये गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्था नं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमितिविग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः समममसमिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

तमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धपिठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगि णीमरणे पाउवगमणमरणे सुहुमसंपराएणंभगवं सुहुमसंपरायभावेवट्टमाणो सत्तरसकम्मपगडीउ णिबंध

मरणतेपण्डितमरण ९। श्रावकनूंमरणते बालपण्डितमरण१०। छद्मस्थपणेमरेते छद्मस्थमरण११। केवलीपणेमरेते केवलमरण१२। गलेफांसीलेईमरेतेविहा सकमरण १३। गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आंपणोआत्माखवाडीमरेते गृध्रपुष्टमरण १४। भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५। चारेआहा रपच्चखी भूमिनियमीसंथारेमूये भवतीवेयावचनकरावेते इंगिनीमरण १६। पादपवृक्षनीशाखाछेदी भूमिएपडेचलतोहालेनही तिमसंथारेकह्या पछीसा धुहाले वोलेनहीपासुंपालटे नहीतेपादपमरण१७। सूक्ष्मसपराय दशमूंठाणूं सूक्ष्मसलोभनोअसंख्यातमोभाग किट्टिरूपजेहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावेंवर्ततोथ

तद्भवतीति । तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः चपकोवासूक्ष्मलोभकषाय किट्टिकावेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि
त नातीतागत सूक्ष्मसपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थ. पूर्वंतरे गुणस्थानकेषुबंधप्रतीत्या
न्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका सातप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बधमश्रित्यनुयाति शेषाः षोडशैहैवव्यवच्छिद्यंते । यदाह नाण ५
तराय ५ दसग दंसणचत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसायं मिवोच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परैनबध्नतीत्यर्थः॥ शामानादीनि सप्त

ति तं० आभिणिणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चक्खु
दसणावरण अचक्खुदंसणावरण उहीदंसणावरणं केवलदसणावरणं सायावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चागो
य दाणंतराय लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थे
गइयाणं नेरइआणं सत्तरपलीउवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

की तथा चपभावेवर्ततोथको एकसोवीसप्रकृतिबंधछे तेमाहिलो सतरकर्म प्रकृतिनोबधपाडे तेकहेछे । आंभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रु
तज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदसणावरण ६ । अचक्षुदसणावरण ७ । अवधिदंसणावरण ८।
केवलदसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभांतराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६।
वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सतरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीए केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

रससागरोवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु
माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं
सत्तरसपलिओवमाइ ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पे दे
वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअ सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं भा
विअं विमाण देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरस
हिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाण सत्तरसहिं वाससहस्से

तरसागरोपमआऊखोकह्यो। छठीतमापृथिवीएं केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरप
ल्योपमआउखूकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवतानो सतरपल्योपमआउखोकह्यो महाशुक्रदेवलोके सातमेदेवतानोउत्कृष्टो सतरसागरोपमआऊ
खोकह्यो। सहस्रार आठमेदेवलोके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम आउखोकह्यो। सातमेदेवलोके जेदेवता सामायिक १। सुसामायिक २। महासामा
यिक ३। पदम ४। महापदम ५। कुमद ६। महाकुमद ७। नलिन ८। महानलिन ९। पौंडरीक १०। महापौंडरीक ११। शुक्र १२। महाशुक्र १३।
सिंह १४ सिंहकांत १५। सिंहविद १६। भाविक १७॥ एणेविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टोसतर सागरोपमआउखोकह्यो। जेहदेवतासतरे

॥ अथाष्टादशस्थानक मिहचाष्टौसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सूत्रमानिच मवरंभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिककामभोगान्

दशभिमानानां नामानीति ॥ १७ ॥ सहचुद्रकैर्व्यंतैश्च येचुद्रकव्यक्ता तेषां तत्तचुद्र

म भोगान् मनुष्यतिर्यग् सबधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसबधिनइत्यर्थः तथासखुडुगवियत्ताणति

हि आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति

मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ १७ ॥ अठारसविहेबंभे प०तं०।

उरालिएकामभोगे णेवसयं मणेणं सेवइ नोविअन्नंमणेणं सेवावेइ मणेणसेवंतंविअन्नं नसमणुजाणाइ उरालि

एकामभोगे नेवसयं वायाएसेवइ नेविअन्नवायापसेवावेइ वायाएसेवतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ उरालिएका

मभोगे नेवसयकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएण सेवावेइ काएणं सेवतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेव

मध्येभावे पचयाडे स्वासोस्वासघणोले जघोले नीचोस्वासमेले तेहदेवताने सतरवर्षसहस्त्रे आहारनोअर्थउपजे। केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीझ

स्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोचजास्ये॥ इतिसतरमूठाणूंसम्मत्तं ॥ १७ ॥ हिवेअठारमोठाणोलिखियेछे। अठारभेदेब्रह्मव्रतकह्योतिकहे

छे। उदारिककामभोग तेमनुष्यनास्त्रीअनेतिर्यंचनीस्त्रीतेसाथेपचेंद्रियानाविषयशब्दरूपतेकामघ्राणरस स्पर्शतेभोगमनेकरीपोतेसवेनही १। मनेकरीअनेरा

नेपिणसेवाडेनही २। मनेकरी अनेराएंमैथुनसेवताप्रति अनुभायनामकरे ३। औदारिक कामभोगनपोतेवचनेकरीसेवे ४। ननिसयेंअनेरानेप्रतिवचनेकरी

वसोडे ५ वचनेकरी अनेराने प्रतिसेवताथका अनुमोदनानकरे ६। औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७। अनेराने कायाएंनसेवाडे ८। कायाएंकरीअ

कारग्रसाश्रुतेनवा व्रता: व्रतानि येवयःश्रुताभ्यांपरिणताः स्थानानिपरिहाराः सेव्यतेसचाश्रयवस्तूनि व्रतषट्कं महाव्रतानि रात्रिभोजनविरतिश्च कायषट्कं पृथिवीकायादि अकल्पोऽल्पनीय पिडशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थः गृहिभाजनं स्थाल्यादिः पल्यंकंखट्वादि निषद्या स्त्रियासहासनं। स्नानंशरीरक्षालन

रायंमणेणंसेवइ नोविअन्नंमनेणंसेववाइ मणेणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंवायाएसेवइ नोविअन्नवायाएसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणाइ अरहतोणंअरिट्ठनेमिस्स अठारससमणसाहस्सीओ उक्कोसया समणसंपयाहोत्था समणेणं भगवयामहावीरेणं समणाणंनिग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अठारस ठाणा प० तं० वयछक्कं कायछक्कं अकप्पोगिहिभायणं पलियंकनिसेज्जाय सिणाणं सोभवज्जणं आयारस्सणंभ

नेरा प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनाकरे ९। देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १०। अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११। मनेसेवता आगिलाने पिण अनुमोदेनही १२ दिव्यतेक हता कामभोग देवांगनासबंधी वचनेसेवेनही १३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही १४ वचनेसेवतां प्रतिबीजाने अनुमोदेनही १५ देवांगनासबंधो कामभोगकायाएंसेवेनही १६ अनेरापाहिकायाएंसेवावेनही १७ कायएंसेवतांथकां अनुमोदेनही १८ अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमातीर्थंकने अठारश्रमणसहस्सनी उत्कष्टीसाधूनी संपदाहुई। श्रमणनेतपस्वीने निग्रथने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने क्षुद्रव्यक्तसाधेजेह तेसक्षुद्रव्यक्तएतले क्षुद्रबालिकव्यक्त तेवयकरी वडोतथाश्रुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाश्रयविशेष कांइकछांडवो कांइकआदरवो तेकहेछे। व्रतषट्क पंचमहाव्रत छठोरात्रि

शोभावर्जनं प्रतीतं तथाआचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिंडेषणाद्याः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्कंधात्मिकाः सचनवब्रह्मचर्याभिधाना
ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपस्तस्यैवचेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह । नवबंभचेरमइओ अट्ठारसपयसहस्सीओ । हवइसपचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणति
यस्य सचूलिकाकस्येति विशेषणं तत्तस्य चूलिकासत्ता प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नंदीटीकाकृता अट्ठारसपयसहस्साणि पुणपढमसुय
खधस्सनवबंभचेरमइयस्स पमाणं विचित्तत्थाणीय सुत्ताणि गुरुवए सवोतेसि अत्थोजाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं पदाग्रेति पदपरिमाणे
नेति तथा बंभित्ति ब्राह्मीआदिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितेनैव यादर्शिताक्षरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्त्या

गवतो सचूलिआगस्स अठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंभीएणंलिवीए अठारसविहलेक्खविहाणे प०तं०

भोजनविरति एमकायषट्क पांचप्रावरअनेछठी उत्तमकाय एम १२ अकल्पो अकल्पनीयपिंडशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४ । पल्यंकोमां
चादिक १५ । निषद्यासिंहासन १६ । स्नानशरीरधोइवो १७ । शोभावर्जन शरीरशृंगाररचना १८ । आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे
तहनां पूज्यनांबीजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकामांहि १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसहस्रजेतले अर्थनीसमा
प्ति तेहपदकहीए । पदार्थसर्वसंख्याएंकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परंचूलिकाछे । पाचबीजेश्रु
तस्कंधे १८ सहस्रपदमांहिनही उक्तंच । नवबंभचेरमइओ अट्ठारसपयसहस्सीओ । हवइयपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति । अनेंसूत्रमांहि चूलिकाग्रहीछे ते
एकसूत्रनासंबंधीमाटे परंतेहनोप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो । ब्राह्मीश्रीआदिनाथ भगवतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानाभेदकह्या ।

ब्राह्मीलिपेर्यमित्यलंकारे लेखोल्लेखने तस्याविधानंभेदो लेखविधानं प्रज्ञप्तं तद्यथा एतत्स्वरूपं नष्टमिति नदर्शितम् । तथायल्लोके यथास्ति यथावानास्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायस्तत्तदेवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वंतस्य । तथा धूमप्रभापंचमी । अष्टादशोत्तर मष्टादशयोजनसहस्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिंडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रातावित्यर्थः उत्कर्षेणोत्कर्षतोऽष्टादशमुहूर्तोदिवस

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोट्टिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुत्थिया भोगवयत्ता वेयणतिया णिण्हइया अंकलिवि गणिअलिवि गंधव्वलिवि आदस्सलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिदिलिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअठारसवत्थू प० धूमप्पभाएणं पुढवीए अठारसुत्तरंजोयण सयसहस्सं वाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अठारसमुहुत्तादिवसेभवइ सइउक्कोसेणं अठारस

तेकहेछे । ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेंकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषजपरिका ३ । वरोट्टियाप्रभृति णिन्हइयापर्यंत नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गांधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहेश्वरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिदिलिपि १८। आस्तिनास्तिलोएसासएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउथूंपूर्व तेहना १८ वस्तु अधिकारविशेषकह्या । धूमप्रभापांचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहल्यपणे जाडपणेकह्यो । पोसाआसाढमासइत्ति एकदाउत्कृष्टपणेअठारमुहूर्तीयोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आसाढीपुनीमे अठारमुहूर्तीयोदिवसहुए सतित्ति एकवार मकरसंक्रांति अढारमुहूर्ती रात्रिहुई । एणीए रत्नप्र

मुजतारात्तीन्नवइ इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए ञ्रत्थेगइयाणं नेरइयाणं ञ्रठारसपलिउवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए ञ्रत्थेगइयाणं नेरइयाणं ञ्रठारससागरोवमाइं ठिई प० ञ्रसुरकुमाराणं देवाणं ञ्रत्थेगइयाणं ञ्रठारसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु ञ्रत्थेगइयाणं देवाणं ञ्रठारसपलिउवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं ञ्रठारससागरोवमाइं ठिई प० ञ्राणएकप्पेसु देवाणं ञ्रत्थेगइयाणं जहन्नेण ञ्रठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं ञ्रंजणं रिठिसालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुसुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीञ्रं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं ञ्रठारससागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं ञ्रठा

भा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो अढारपल्योपम आउखोकह्यो छठीतमा पृथिवीयें केतलाएकनारकीनो अढारसागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमारदेवतनो केतलाएकनो अढारपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पे केतलाएकदेवतानो अढारपल्योपम आउखोकह्यो ।सहस्रारआठमेदेवलोके केतलाएकनोजघन्यो अढारसागरोपम आउखोकह्यो । आठमेदेवलोके जेदेवता काल १ । सुकाल २ । महाकाल ३ । अंजन ४ । रिष्ट ५ । साल ६ । समान ७ । द्रुम ८ । महाद्रुम ९ । विशाल १० । सुसाल ११ । पद्म १२ । पद्मगुल्म १३ । कुमुद १४ । कुमुदगुल्म १५ । नलिन १६ । नलिनगुल्म १७ । पौंडरीक १८ । पौंडरीकगुल्म १९ । सहस्रारावतंसक २० ॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे । तेहदेवतानो अढारसागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता अढारअ

भवति षट्त्रिंशद्घटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांतौ रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि विंशतिर्विमाननामानि ॥ १८ ॥
अथैकोनविंशतितमस्थान तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टांता स्तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्कंधवर्त्तीनि उक्खि

रसेहिं अट्ठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंति तेसिणं देवाणं अठारसवास सहस्से हिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जेअठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्झयणा प० तं० । उक्खित्तणाए संघाडे अंडेकुम्मेअ सेलए तुंबेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के ते

ईमासे पखवाडे स्वासोस्वासले षणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतनो अठारहर्षसहस्रे आहारनो अर्थंउपजे। केतलाएकभव्यजीव अठारभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॥ इति अठारमूंठाणूं सम्मत्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेछे। ज्ञाताछठोअंग तेहने प्रथमश्रुतस्कंधे १९ ज्ञायरूपनीतेमार्गं सूचकअध्यनकह्या। तेकहेछे यथाक्रमे। उत्खिप्तज्ञाय जेहाथीएं पगउपाड्यो पगहेठिससलोराख्यो तेहमेघकुमारहुयो १। धनावहसेठीनो संघाडकज्ञाय २। त्रीजोमोरडीनाईडानो ३। चउथोकाछवानो ४। पाचमो सेलकाचार्यनो ५। छठोउछडानो ६ सातमो रोहिणीलघुवहूनो ७। आठमोमल्लिकुमारीनो ८। माकंदीसुतजिनरक्षतेजिनपालक ९। दशमोचंद्रमानो १०। इग्यारमोदावदवनामवृक्षनो ११। बारमोउदकचौयजितशत्रु सुबुद्धिमंत्रीनो १२। मंडुकडेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहुतानो १४। पनरमोनंदिफलनो १५। सोलमो अमरकंका

वसएछव्वीसे छच्चकलाविरूयडंभरहवासमित्यादिषु जंबूदीपगणितपु या:कलाउच्यंते तायोजनस्येकोनविंशतिभागच्छेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभाव: आगारमज्झेवसित्तत्ति अगारंगेहं अस्येकोनविंशति चिरकालंराज्यपरिपालनत: आमर्यादायदीचां वसित्वाउषित्वा तत्रावासंविधायेति अथ्येव्यप्रव्रजिता: श्रे षास्तुपच कुमारभावएवेत्याह । वीरंअरिठ्ठनेमिं पासंमल्लिंचवासपुज्जंच । एएमोत्तूणजिणे अवसेयाआसिरायाणोत्ति ॥ १९ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्थयरा अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ताणं अगाराओअणगारियंपव्वइआ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसंपलिओवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एहवी छकला प्रमाकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मल्लिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थंकरविना वीजा उगणीसतीर्थंकर गृहस्थाश्रमेवसीने मुंडपणूंपाम्या द्रव्यमुंडलोचादिकभावमुंड तेकषायत्याग गृहस्थाश्रमथकी अनगारपणाथकी प्रव्रज्याघरनथी जेहनेते अनगारीतेहपणूंपाम्या । एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । छठ्ठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पे केतलाएक देवतानोउगणीस पल्योपम आउखोकह्यो । आनतनवमेकल्पेउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानो

णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प०
जेदेवा आणतं पाणतं णतं विणत पणं सुसिरं इंदं इंदकंतं इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि
णंदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइ ठिई प० तेणंदेवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पा
णमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणवीसाए वास्ससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संते
गइया भवसिद्धियाजीवा जेएगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुंच्चिस्संति परिनिव्वाइ
स्संति सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्सति ॥ १९ ॥ वीसंअसमाहिठाणा प० तं० । दवदवचारिआ

जघन्यो उगणीससारोपम आउखोकह्यो । जेदेवता आनत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुषिर ६ । इन्द ७ । इन्द्रकां
त ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानो उगणीसे अर्ध
मासे पखवाडे स्वासोस्वासे घणोले ऊचोले नीचोमूंके तेहदेवतानो उगणीसवर्षसहस्त्रेगए आहारनोइच्छाउपजे केतला एकभव्यजीव उगणीसभवने
आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरीसे मोक्षजासे ॥ इति उगणीसमूंठाणूं सम्मत्तम् ॥ १९ ॥ हिवे वीसनो अधिकारलिखिये
छे । वीस असमाधिस्थानककह्या । तेसूचित्तठामिराखिवू मोक्षमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेअधिकार तेहनास्थानकभेद तेअसमाधिस्थान तेकहेछे
अनुक्रमे । द्रवद्रवउतावलो चालतो व्यग्रचित्तपणेघणा जीवनेहणे तेमाटे संयमने अबाधाउपजावे अनेपडेतो आत्माने असमाधिउपजावे १ । अणपूज्येचालेअर्थ

ने किंचिल्लिख्यते। तत्रस्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सप्तसूत्राणि तत्रसमाधानं समाधिश्चेतसः स्वास्थ्यंमोक्षमार्गेवस्थानमित्यर्थः नसमाधिरसमाधिस्तस्याः स्थानान्याश्रयभेदा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारित्ति योद्विद्रुतंचरतिगच्छति सोऽनुकरणशब्दतोदवदवचारीत्युच्यते वापीत्युत्तरासमाधिस्थानापेक्षया समुच्चयार्था भवतीतिसिद्धम्। सचद्रुतं २ संयमात्मनिरपेक्षेव्रजन्नात्मान प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति अन्यांश्वसत्वान् घ्नन्ऽसमाधौयोजयति सत्वबधजनितेनचकर्मणापरलोकेप्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतोद्रुतगंतृत्व मसमाधिकारणत्वादसमाधिकं स्थान मेवमन्यत्रापियथायोगमवसेयं १ तथा अप्रमार्जितचारी २ दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदनत्वग्वर्त्तनादिष्वात्मादिविराधनांलभते तथा अतिरित्ता अतिप्रमाणाशय्यावसतिरासनानिच पीठकादीनि यस्यसंति सोतिरित्त शय्यासनिकः सचातिरित्तशय्या सनिकः सचातिरित्तायां शय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपिकोटिकादय आवसयंति इतितैः सहाधिकरणत्वादसमाधिस्थानमेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेयं तथाअप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारीच संभवादात्मापरेचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिक्येपि वाच्यमिति ४

विग्गवइ अपमज्जिअचारिआविग्गवइ दुप्पमज्जियचारिआविग्गवइ अतिरित्तसज्जासणिए रातिणिअप

पूर्वनीपरी २। भूंडीपरीपूजीचालेमर्यादाथकी अधिकशय्यापाटीपाटला आसनादिकसेवे३। अधिकउपाश्रयराखे तिहां योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाद करवोपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४। रात्रिकपरिभाषी आचार्यादिकाएंसाम्होबोले तथापराभवे एमकरतो आत्माने असमाधिउपजे ५। थविरतेगुर्वादिकतेहने उववातीमारे तेस्थविरोपघाती ६। एमभूतएकेंद्रियादि तेहनेहणेतेभूतोपघाती ७। चणचणक्रोधकरेतेसंज्वलन ८। अनंतक्रोधांधहुए तेक्रोधन ९। परपूठिपारकोअवर्णवादबोलेतेपुष्टिमांस १०। अभीक्ष्णमवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने निःशंकितथकोकहे तथापारकागुणखमीसकेनही नवांअधिकरणकलहतथा

राजनीतिपरीभाषी आचार्यादिषु परिभवकारी सचात्मानमन्यांश्चासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेण शीलदोषेणच ज्ञा नादिभिर्वाबहतीत्येवशील: सएवचेतिस्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकेंद्रियांस्तानन‌र्थंत उपहतीति भूतोपघातिकः ७ तथारुज्वलतीति सज्वलनः प्रतिक्षणं रोषणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्कुद्धोऽत्यतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिमांसिकः पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकरी १० अभिक्खण २ ओहारयित्तति अभीच्णमभीच्ण मवधारयिताशंकितस्याप्यर्थस्य निश्शंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अवहारयितापरगुणाना मवहारकरी यथाअदासादिकमपिप रभणति दासस्त्वचौरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणनां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणाणंति पुरातनानां कलहानां क्षमितव्युपशमितना क्षमितत्वेनोपशातानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादो यःसचेतनादिरजोगुण्डितेनहस्तेन दीयमानाभिक्षांगृह्णाति तथायोऽस्थंडिलादेः स्थंडिलादौ संक्रामन्नपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधेकारणे सचित्तादिपृथिव्यां कल्पाविना अनंतरितायां मासनादिकरोति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त

रिन्नासी थेरोवघाइए भूतोवघाइए संजलणे कोहणे पिट्ठिमंसए अभिक्खणं उहारइत्ताभवइ णवाणंअधिक रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताभवइ पोराणाणंअधिकरणाणं खामिअविउ सविआणंपुणोदीरेत्ताभवइ ससर

गाडलादिक तेपूर्वेंअनुत्पन्नछे उपनानथी तेहउपजावेछे १२। पुरातनजूनानेकलहाने खमाविवापणे उपशमाव्याछे तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३। सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरड्याएंहाथेंभिक्षदेताले अथवासचित्त अचित्त स्थंडिलजेपगनपूंजे १४। अकालेस्वाध्यायकरे पहिले प्रहरेंअने पाछिले प्रह रें कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अणेचौदप्रहरलगी उत्कालिक दशवै कालिक नभणे १५। अकालेभणतादेवतादिकनोउपद्रवहोय। कलहकरे १६। शब्दकोरे

था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्त्तव्यकारी १६ तथाशब्दकरः रात्रौमहताशब्देनोल्लापःस्वाध्यायादिकारको गृहस्थ भाषाभाषकोवा १७ । तथाझंझाकरोत्येवं येनगणस्य भेदोभवति तत्तत्कारी येनच गणस्यमनोदुःखसमुत्पद्यत्यतोझंझा १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्तम य यावदशनपानाद्यभ्यवहारी १९ एषणाअसमितश्चापि अनेषणानैव परिहृति प्रेरितश्चासौसाधुभिः कलहायते तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवोकोपराधो वर्त्तते एवचात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिद विंशतितममिति २० तथावनोदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिका. इन्द्रसमानर्द्ध यः साहस्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतीबन्धसमयादारभ्यबन्धस्थितिः स्थितिबन्धइत्यर्थः प्रत्याख्याननामकपूर्वंनवमं सातादीनिचैकविंशतिविंमानानीति ॥

रक्कपाणिपाए अकालसज्झायकारए आविभवइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणभोई एसणासमिते आ विभवइ मुणिसुव्वएणंअरहा वीसधणूइं उड्ढउच्चत्तेणंहोत्था सत्तमिएणंघणोदही वीसंजोयणसहस्साइं बाह ल्लेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरण्णोवीसं सामाणिअसाहस्सीओ प० णपुंसयवेअणिज्जस्सणं कम्मस्सवीसं

रात्रिएमाटे सादेसज्झायकरेगृहस्थनेपरी उपडोबोले १७ । झंझकार जेणेकरी गच्छनोभेदहोय एहवोकरे १८ । सूरप्रमाणभोजी सूर्यआथमे तिहांलगीन जिमे १९ । एषणाऽसमित असूझतो भातपाणीले बीजोयतो इसीषदेतां कलहकरे २० । एहवीसअसमाधिस्थानकह्या २० । मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष उंचाउचपणेथया । सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलभूतपाणी तेघनोदधि । वीसयोजनसहस्र जाडपणेकह्यो । प्राणतदेव लोकदशमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेंद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकह्या । नपुसकवेदनीयकर्म अर्थात् नपुसककर्म

सागरोवमोकोडाकोडीउ बंधउ बंधठिई प० पच्चरकाणंपुव्वस्सवीसंवत्थू उरसप्पिणिमंडले वीसंसागरोवम कोडाकोडीउकालो प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ याणं वीसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेण वीससारोवमाइ ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमा इं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थिय पल रुइलं पुप्फं सुपु

मी वीससागरोपम कोडीबंधसमयथकीमांडी बंधनी स्थितिकही। प्रत्याख्यान नवमापूर्वनावीसवस्तु अधिकारविशेषकह्या। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीमंड लनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो। एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालजाणो। एणी ए रत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोक ह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो वीसपल्योपम आउखोकह्यो प्राणतदशमेक ल्पें देवनोउत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। आरणइग्यारमेकल्पे देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्पे जेदेवता। सात १। विसात २ सिद्धार्थ ३। उत्पल ४। भित्तिल ५। तिगिच्छा ६। दिसा ७। सौवस्तिवा ८। पल ९। रुचिर १०। पुप्फ ११। सुपुप्फ १२। पुप्फावर्त १३। पुप्फप्रभ १४।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलंकर्बुरं चारित्रंयःक्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त
द्योगात्साधवोपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेष कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलोभवत्येकः १ एवंमैथुनंप्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २

प्फं पुप्फावत्तं पुप्फपन्नं पुप्फकंतं पुप्फवन्नं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमा
णं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइ प० तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आ
णमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससतिवा नीस्ससतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमु
प्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परि
निव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एक्कवीसंसबला पन्नता तंजहा ।

पुष्पकांत १५ । पुष्पवर्ण १६ । पुष्पलेश १७ । पुष्पध्वज १८ । पुष्पशृङ्ग १९ । पुष्पसिद्ध २० । पुष्पोत्तरावतंसक २१ । एहविमाने देवतापणे उपनाछे तेह देव
तानो उत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे
आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिवीसमूं ठाणूं सम्पत्तम् ॥
॥ २० ॥ हिवे एकवीसमो अधिकार लिखियेछे ॥ एकवीस सबलाकह्या जेणेकरी शबल चारित्र करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकर
तोथको साधुपणो शबलकह्यो तेकहेछे । हस्तकर्ममुष्टिजापकरतो शबलकह्यो । १ । मैथुनप्रतें सेवतोथको शबल २ । रात्रिभोजन करतोथको ३ । आधाक

तथाराभिभोजनं दिवाग्टहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिशतु र्भिभगक रतिक्रमादिभिश्वभुंजानः ३ आधाकर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ जद्देशिकं क्री तमाहृत्यदीयमानभुजानः उपलक्षणत्वात् पामिश्चेच्छादानिसृष्टग्रहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्कारणोपात्तपदान्येवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णंप्रत्याख्यायाऽ शनादिभुजान' ७ अन्तः षण्मासानामेकतोगणाद्गणमन्यंसंक्रामन् ८ अतर्मासस्यत्रीनुदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ६ अंत र्मासस्यत्रीणिमायास्थानानिस्थानमितिभेदः १० राजपिण्डंभुजानः ११ आकुट्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुट्यामृषावादंव

हत्थकम्मंकरेमाणे सबले मेहुणंपडिसेवमाणे सबले राइभोयणंभुंजमाणे सबले आहाकम्मंभुंजमाणे सबले सागारियपिंडं भुंजमाणे सबले उद्देसियकीयं आहट्टदिज्जमाण भुंजमाणे सबले अभिक्खणं अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ताणं भुंजमाणे सबले अंतोछण्हं मासाणंगणाओ गणंसंकममाणे सबले अंतोमासस्स तओदगले वेकरेमाणेसबले अंतोमासस्सतओमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिंडंभुंजमाणेसबले आउट्टियाए पाणाइवायं

र्मीभोजन भुजतोथको ४। जेहनो उपासरोहुयो तेग्टहस्थाना घरनोपिंड आहारभुजतोथको ५। उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेवहृश्च कतथा क्रीतवेचातो प्राण्यो आहृतसमाहृतआण्यो आहारते तोशबल ६। अभीचर्ण्यं बलीबली अशनादिक्र पच्चक्खीने जीमतो ७। छेहले छमासमांहि गच्छ पालटथको शबल ८। एकमासमांहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ६। मासमांहि त्रिणिठाण सेवतोथको १०। राजपिंडभुंज तो ११। आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेहणतो १२। आकुटि एमृषावाद वदतो १३। आकुटीए अदत्तादान प्रतिलेतोको १४। आकुटीए

दन् १३ अदत्तादानंटह्लन् १४ आकुव्यवानंतर्हितायापृथिव्यास्थानं वानैषेधिवाचेत् यत्कायोत्सर्गस्वाध्यायभूमिं वाकुर्वंन्नित्यर्थः १५ एवमाकुव्या सस्निग्धसरज
स्कायांपृथिव्या विस्तारवत्यां सचित्तवत्यांशिलायां लेष्टौवा कोलावासेदारुणि कोलाघुणाः तेपामावासः १६ अन्यस्मिंश्च तथाप्रकारे सप्राणिसबीजादौ स्थाना

करेमाणेसवले आउट्टियाए मुसावायंवदमाणे सबले आउट्टिआएअदिन्नाणंगिराहमाणे सबले आउट्टिआए
अणंतरहिआए पुढवीएठाण वानिसिहियंवावेलिमाणेसबले एवंआउट्टियाचित्तमंताए पुढवीए एवंआउट्टि
या चित्तमंताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहियंवा चेतेमाणेसबले जीवपइठिएसपाणेसबीएसहरीए
सउत्तगेपणंगदगमट्टीमक्कडासंत्ताणए तहपगारठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतेमाणे सबले आउट्टियाए
मूलभोअणंवा कंदभोयणवा तयाभोयणंवा पवालभोयणंवा पुप्फभोयणंवा फलभोयणंवा हरियभोयणंवा

सचित्त पृथिवीऊपरि बैसतो अथवा सूवतो वा स्वाध्याकरतो १५। सचित्तशिला तथा पाषाण पृथिवी सचित्तउपरि घुणसहितकाष्ठ ऊपरिबैसतो सूवतो
अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६। जीवप्रतिष्ठित एहवो सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतोथको एकेंद्रिय बेइन्द्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रय इत्यादिक जीवविराधना
करतोअथवा उपरिसूतो सज्झायकरतो १७। आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कंदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन
वलीफलभोजन हरियभोजन करतोथको १८। एकवर्षमाहि दसदगलेपकरतो सबल १९। वर्षमाहि दसमायाठाण सेवतोथको २०। अभीक्ष्णम् वलीवली शातो

दिकुर्वन् १७ आकुट्यामूलकंदादिभुंजानः १८ अंतः संवत्सरस्यदशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथांतःसंवत्सरस्यदशमायास्थानानिच २० तथाअभीक्ष्णंपौनःपुन्येनश
तोदकलक्षण यद्विकटवततेनव्यापारितोव्यामोयः पाणिर्हस्तः सतथा तेनअशन प्रगृह्यभुजानः शबलाइत्येकविंशतितमः २१ तथाहि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकर
णस्याष्टमगुणस्थानकवर्त्तिनइत्यर्थः णवाक्यालंकारे क्षीणंसप्तक मनंतानुबंधिचतुष्टयदर्शनत्रयलक्षणं यस्यसतथा तस्यमोहनीयस्यकर्मणः एकविंशतिकर्मांशा अ
प्रत्याख्यानादिकषाय द्वादशनोकषायनवकरूपाउत्तरप्रकृतयः सत्कर्मसत्तावस्थंकर्मप्रज्ञप्तमिति तथाश्रीवत्सम् श्रीदाम कांड माल्यकंठिं चापोन्नत आरणावतं

भुंजमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्स दसदगलेवकरेमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्सदसमाईठाणाइं सेवमाणेसबले अभिक्खणं सीतोदयवेयडवग्घारियपाणिणा असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहित्ताभुंजमाणे सबले णिअट्टिबादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कावीसकम्मंसासंतकम्मा प० त० अपच्च क्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणकसाएकोहे पच्चक्खाणाव

दकलक्षण जेविकटजल तेणेकरी वग्घारीयतिव्यापार्यो तथा व्याप्योभीनो पाणिहाथ जेहनो तेणेकरि असनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सचित्त
पाणीभीने हाथेकरि जीमतोशबल २१ निवृत्तिबादरअपूर्वकरण आठमे तिहांवर्ततांने तथा खपाव्योछेजेणेसप्तकचारअनतानुबधी कषाय अने त्रिणिदसण
मोहनीएम ७ प्रकृति जेणेखपावीछे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना अंशउत्तरकर्म प्रकृति संतकम्मत्ति सत्तकर्मसत्तावस्था एकह्याते कहेछे।
अप्रत्याख्यान कषायक्रोध १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यानावरणी त्रीजोकषायक्रोध ५। प्रत्याख्यानावर

रणकसाएमाणे पच्चक्खाणावरणकसाएमाया पच्चक्खाणावरणकसाएलोभे संजलणकसाएकोहे संजलणकसाए माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोभे इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे हासे अरति रति भय सोक दुगंच्छा एक्कमेक्काएणंउस्सप्पिणी पंचमछठाउसमाउ एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइंकालेणं प० तं० दूसमा दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमबितिआउसमाउ एकवीस एकवीससहस्साइंकालेणं प० तं० दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीस पलिउवमाइं

ण कषायमान ६। प्रत्याख्यानावरण कषायमाया ७। प्रत्याख्यानावरण कषायलोभ ८। संज्वलचौथो कषायक्रोध ९। संज्वलकषायमान १०। संज्वलनकषायमाया ११। सज्वलनकषायलोभ १२। स्त्रीवेद १३। पुरुषवेद १४। नपुसकवेद १५। हास्य १६। अरति १७। रति १८। भय १९। शोक २०। दुगंछा २१। एकेकीए अवसर्पिणीएं पडते अरे पाचमोअरो अने छट्ठोअरो समयकाल एबेवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे। दुखमअरो पांचमो २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमआरो बिलवासीनो छट्ठो २१ वर्षसहस्रनो एकेको उत्सर्पिणीएं चडेते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे। उत्सर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्रनो दुखमा बीजो आरो २१ वर्षसहस्रनो। दुखमाबीजो आरो २१ सहस्रवर्ष। एणीऐ रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपल्योपम आउखोकह्यो। छट्ठीतमापृथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशा

ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीस पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण एक्कवीसपलि उवमाइं ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीससागरोवमाइ ठिई प० अच्चुतेकप्पे देवाणं जहन्ने णं एक्कवीस सागरो वमाइ ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छ सिरिदामं कंडं मल्लकिट्टं चावोसतं अरस्रवडिं सग विमाण देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कवीसाए अ द्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणदेवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आ हारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेएक्कवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

नकर्पे केतलाएक देवतानो एगवीस पल्योपम आउखोकह्यो। आरण इग्यारमेकल्पे देवतानो उत्कृष्टो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। अच्युते बारमेक ल्पे देवतानो जघन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ काड ३ माल्यकृष्ट ४ चापोन्नत ५ आरणावतंसक ६ एहछ विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो एकवीसे अर्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोले नोचोमूंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अतकरीस्ये

सर्कं चेतिषट्विमाननामानीति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमंतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणिषट्स्थितेरर्वाक् तत्रमार्गच्यवननिर्ज्जरार्थं परिषह्यंते इति परीषहाः दिगिंछति बुभुक्षासैवपरीषहो दिगिंच्छापरीषहइति सहनंचास्यमर्यादानुल्लंघनेन एवमन्यत्रापि १ तथा पिपासाह्वट् २ शीतोष्णप्रतीते ४ तथादंशाश्चमशकाश्च दंशमशकाउभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्वामहत्त्वकृतश्चैषांविशेषो ऽथवा दंशोदशनंभक्षणमित्यर्थः तत्प्रधानामशका दंशमशकाः एतेचयूकामत्कुणमत्कोटकमक्षिकादीना मुपलक्षणमिति ५ तथाचेलानांवस्त्राणांवासगधनवीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वेषांवाअभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि

च्छिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० । दिगंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे

मोक्षजास्ये इतिएकवीसमूं ठाणूंसम्मत्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमो समवाय लिखियेछे। बावीस परीसह परिसामस्तपणे निर्जराने अर्थेसहिवो खमवो तेपरीसहकह्या । तेकहेछे। दिगंछा परीसह दिगछाशब्द देशीभाषए क्षुधा तेहनो सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो तेदिगंछापरीसह १। एम पिपासा तृषापरीसह २। शीतठाढ तेहनोपरीसह ३। उष्णतापनोपरीसह ४। डांस मसा तथा जू माकणनो परीसहवो ५। आंचलवस्त्रनो अभावनोपरीसह ६। अरतिमानसी विकारपरीसह ७। स्त्रीनोपरीसह ८। चर्याग्रामादिकनेविषे अनियत विहारनोपरीसह ९। सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १०। अम

द्वाविंशतिःसूत्राणि तत्रसर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयाद्यर्थस्तसमासूत्राणि च्छिन्नच्छेयणाइयाइं ति इहयोनयः सूत्रंच्छिन्नंच्छेदनेच्छति सच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल मुक्कट्ठमित्यादिश्लोकः सूत्रार्थतः च्छेदनस्थितो नद्वितीयादिश्लोकानपेक्ष्यते इत्येव यानिसूत्राणिछिन्नछेदनयवंति तानिच्छिन्नछेदनयिकानि तानिचस्वसमयायाः जिनमताश्रितायाः सूत्राणांपरिपाटिः पद्धतिस्तस्याः स्वसमयसूत्रपरिपाट्यांभवन्ति तयावाभवंतीति तथा अछिन्नच्छेयणपियाइं त्ति इहयोनयः सूत्रमच्छिन्नंच्छे देनच्छतिसोच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमगलमुक्कट्ठमित्यादिश्लोको ऽर्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेक्षमाण इत्येवंयान्यच्छेदनयवंति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता निचाजीविकासूत्रपरिपाट्या गोशालकमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसर्वज्यात्मकप्रतिवद्धसूत्रपद्धत्यां तयावाभवन्ति अक्षररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्यो

अछिन्नछेअणाइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रथमानुयोग ४ । चूलिका ५ । तिहां बीजेभेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाथकी सूत्रकहिये छिन्नछेयनया इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहतांछेद्यांखंड्यांछेदवेकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोमंगलमुक्किट्ठं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थथकी छेदवेकरीरह्योबीजाश्लोकनी अपे च्छा वांछानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवंत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्धतिने विषेछे । बावीससूत्र अ छिन्नछेदनयकछे नयकहता सूत्रछेदवेकरी छिन्नथी खंडितनथी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थथकी बीजाश्लोकनी वांछाकरी तेबावीससूत्र अछिन्नछेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिबद्धसूत्र परिपाटी सूत्रपद्धतिनेविषेछे । बावीससूत्र त्रिकनयवंत तेहगोसालकमतानुसारीय

णामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुरर सपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणा मे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे गुरुलहुपरिणामे इमी सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए उक्कोसे णं बावीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं साग रोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६। दुरगि दुर्गंधपरिणाम ७। तीखेरसे परिणत तेतीक्ष्णरस परिणाम ८। कटुकरस परिणाम ९। कषायरस परिणाम १०। अंबिलरस परिणाम ११। मधुररस परिणाम १२। कर्कशस्पर्शे करी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३। मृदुस्पर्शपरिणाम १४। गुरुस्पर्श परिणाम १५। लघुस्पर्शपरिणाम १६। शीतस्पर्श परिणाम १७। उष्णस्पर्श परिणाम १८। स्निग्धस्पर्श परिणाम १९। रूक्षस्पर्श परिणाम २०। अगुरुलघुस्पर्श परिण तद्रव्य तेस्थिरसिद्धिक्षेत्र घटाकारेरह्यामनुष्यक्षेत्र बाहिर जोतिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यग्गामि जोतिषविमान जाणिवो तथा वालुआ दिक २२ एणीयेंरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो छट्ठीतमापृथिवीयेंउत्कृष्टो बावीससागरोपमआउखोकह्यो हेठेसातम पृथिवीयें केतालाएकनारकीनो जघन्योबावीसस ागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो सौधर्मईशानदेवलोके

तेवीसंसुयगडज्झयणा प० तं० । समए वेतालिए उवसग्गपरिन्ना त्थीपरिन्ना नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरिए आहत्तहिए गंथे जमईए गाथा पुंडरीए किरियाठाणा आहारपरिन्ना पच्चक्खाणकिरिआ अणगारसुयं अद्दइज्जं णालंदइज्जं जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेणं उसप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसेणंउसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था तं० अजितसंभवअभिणंदणसुमई जाव पासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

यनकह्या तेकहेछे । समय १ । वैतालिक २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्तुति ६ । कुशीलपरिभाषा ७ । वीर्याध्ययन ८ धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मार्गनाम ११ । समोसरण १२ । याथातथ्यमान १३ । ग्रंथनाम १४ । जमक १५ । गाथा १६ । एहसोल अध्ययन प्रथम श्रुतस्कंधे बीजेश्रुतस्कंधे सात अध्ययनछे तेकहेछे । पुंडरीक १७ । क्रियाठाणो १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारश्रुत २१ । आर्द्रकुमार २२ । नालंदीनो २३ । जंबूद्वीपनेविषे भरतक्षेत्रने विषेएणी अवसर्पिणीयें । आदिनाथथकीमांडि पार्श्वनाथलगे तेवीस जिनने तीर्थंकरने सूर्यनेउदय मुहूर्ते एतले प्रभाति केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनोज्ञानतेविशेषावबोध दर्शनतेसामान्यावबोध गाथाचात्र तेवीसाएनाणा उप्पन्नजिणवराणपुव्वण्हे ; वीरस्सपच्छिमन्हा पमाणपत्ताइचरिमरद्द ॥ १ ॥ जंबूद्वीप नामद्वीप इण अवसर्पिणीयें आदिनाथविना बीजातेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे एकादशांगीहुया इग्यारअं

चत्वारि सूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधेषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसप्ततेषांचान्वर्थस्तद्विगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ चतुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जम्बूद्वीपलक्षणक्षेत्रस्य

ठिई प० तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए नवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥ चउव्वीसं देवाहि देवा प० तं० । उसन्न अजित संभव अभिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुविधि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म संति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वद्धमाण

छे तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीसे पखवाडे स्वासोस्वासादिक वोलकरे उचोले नीचोमूके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वांछाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेत्रेवीसभवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोचजास्ये ॥ इति तेवीसमो समवाय सम्मत्तम् ॥ २३ ॥ हिवे चोवीसमो समवाय लिखियेछे । चौवीस देवाधिदेव देवइन्द्रादिक तेमाहि अधिकादेव पूज्यपणाथकीते देवाधिदेवकह्या तेकहेछे ऋषभ १ अजित २ । सभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । श्रेयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३ अनंत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुंथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मल्लिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पार्श्वनाथ २३ । वर्द्धमान

रेनिवर्त्तते सर्वाभ्यन्तरमंडलात्द्वितीयमण्डलमागच्छति आहच आसाढमासेदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदीप्रवहति वोढुंप्रवर्त्तते सचपद्मद्रहात्तोरणेन ॥

साअहमिंदा अपुरोहिआ उत्तरायणगतेणंसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायंणिव्वत्तइत्ताणं णिअट्टति गंगा सिंधूउण महाणदीउपवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती उणंमहाणदीउ पवाहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइया

क इन्द्रसहितकह्या। शेषथाकता नव ग्रैवेयक पाचअनुत्तरना देवता अहमिंद्र सेवक स्वामीनोभावनही। उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे सर्वाभ्यन्तरमांडले कर्कसंक्रांतिदिने सूर्य चोबीस अगुले हस्तप्रमाणे चणनीछाया एपोरुषीछाया प्रहरदिवसनी छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तेरहे। आसाढेसि दुपयाइति वचनात्। गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी। प्रवहे तोजेस्थानकथकी पद्मद्रहथकी निकली तेप्रवाहनेविषे सातिरेकझाझेरी चौवीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथकी २५ कोसहुई। रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुंडरीकद्रहनेविषे सातिरेक झाझेरी २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो झांझेरापणाथकी २५ कोस। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौवीसपल्योपम आउखोकह्यो। हेठीए सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतलाएकनो चौवीस पल्योपम आउखो ॥

॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधनवरमिहस्थितेरर्वाग्नवसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्सन्ति पञ्चानांयामानां महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा
ओत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रेर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा
लोकभाजनभोजन आलोकनपूर्वंभाजनपात्रेभोजन भक्तादेरभ्यवहरण अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचिंत्यभाषणतादिकाद्वितो
यस्यतत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञान ज्ञातायाचसीमायांस्वयमेव उग्गह
मिति अवग्रहस्यानुग्रहणता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः ३ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां सविग्नानामवग्रहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

लोयआयणभोयणं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ५ अणुवीतिभासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयवि
वेगे हासविवेगे ५ उग्गहअणुणवता उग्गहसीमंजाणणया सयमेवउग्गहंअणुगेण्हणया साहम्मियउग्गहंअ

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे। ईर्यासमितीयें मार्गें जोईचालवी एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १। एमसगलेकहेछे
मनोगुप्ति २। वचनगुप्ति ३। आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४। आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निक्षेप मूकवो तिहां समिति पूंजीकरी पछे
लेवो मूकिवो ५। हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पाच विचारी बोलवो १। क्रोधनो त्यागछांडिवो २। लोभनोत्याग ३। भयनोत्याग ४। हासनो छांडिवो
५। हिवे त्रीजा महाव्रतनी भावना पाच। गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थं अवग्रह आज्ञानो जणावणो १। अवग्रहग्रहस्थेदीधेथके सीमामर्यादानो ज
णावणो २। सीमाजाणेथके स्वयमेवपोतेज अवग्रहनो अनुग्राहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३। साधर्मिक अनेरा यतीने अवग्रहमागिएं तथा उपाश्रयने

शादिविवरूपः साधर्मिकावग्रहस्ततोनचानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतांस्थानं साधर्मिकाणां चेन्वेवसतौवा तैरनुज्ञातएववास्तव्यमितिभावः ४ साधारणं सामा न्य यन्नन्नादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्यपरिभोजनचेति ५ ॥ तथास्त्र्यादिससक्तशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्थस्य प्रणीताहारोतिस्नेहवानिति । तथाश्रोत्रेंद्रिय रागोपरत्यादिकाः पंचमस्य अयमभिप्रायोयोयत्रसजनितस्य तत्परिगृहेवतरति ततश्चशब्दादौरागंकुर्वता तेपरिगृहीताभवंतीति परिगृहविरतिर्विराधिता

गुण्णवियपरिभुंजणया साहारणन्नत्तपाणं अणुण्णवियपडिभुंजणया ५ इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्ज णया इत्थीकहविवज्जणया इत्थीणंइंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरत्तपुव्वकीलियाणंअणुस्सरणया पणीता हारविवज्जणया ५ सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिदियरागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई

विषे तेहीज साधर्मीकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनतारहिवो ४ । साधारण सहूने समुदायें भातपाणी विहस्योहोय तेह आचार्यादिकने अनु ज्ञाप्य जणावीने भोजनता जिमिवो ५ । हिवे चौथाव्रतनी भावना ५ स्त्री पशु पडकनपुंसके ससक्तव्याप्त शय्यासननो वर्जिवो १ । स्त्रीसाथे कथानो वर्जिवो १ । स्त्रीनाइन्द्रियनो मुखकुचादिकनो आलोकन जोइवो तेहनोवर्जवो ३ । पूर्वेंगृहस्थपणे सभोगे क्रीडाकीधीहुई तेहनो अनसभारवो ४ । प्रणीत आहार घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनो वर्जिवो ५ । हिवे पांचमा महाव्रतनी पाचभावना । श्रोत्रेंद्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनो विषय तेह उपरि राग तेहनो उपरति छांडवो १ । चक्षुरिंद्रियराग २ । घ्राणेंद्रियराग ३ । जिह्वेन्द्रियराग ४ । स्पर्शइन्द्रियराग एम पाचइन्द्रियनो वियषराग तेहनो छांडियो ५ । जेह

फासिदियरागोवरई ५ मल्लीणंअरहापणवीसंधणुउद्दंउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविदीहवेयड्ढपव्वयापणवीसंजोयणाणि उद्दंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊआणिउव्विद्धेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा प० आयारस्सणंभगवओ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजओ सीओसणीअ सम्मत्तं। आवंति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिन्ना ॥ १ ॥ पिंडेसण सिज्जिरिआ भासज्झयणायवत्थ पए

परिग्रहने भोगवीए तेपरिग्रह मांहिलिखवीयें ५ मल्लिनाथ उगणीसमा तीर्थंकर अरिहंत पंचवीसधनुष ऊचाऊंचपणेहुया। सवलाइ दीर्घवैताढ्य जंबूद्वीप मांहिल्या ३४ धातकी खंडना ६८ पुष्करार्द्धभाग ६८ एवं १७० दीर्घवैताढ्यपर्वत पंचवीस योजन ऊंचोऊंचपणेकह्यो। पचवीस पचवीसगाऊ ऊंडपणे भूमिमाहि कह्या। वीजी नरक पृथिवीयें पचवीस शतसहस्र एतले पंचवीसलाख नरकावासाकह्या। आचारांगना प्रथम पूज्यना पांचचूलिकासहितना पचवीस अध्ययनकह्या तेकहेछे। शास्त्रपरिज्ञा १। लोकविजय २। शीतोष्णीय ३। सम्यक्त्व ४। आवंती ५। मतांतरे लोकसार। धूताध्ययन ६। विमोचाध्ययन ७। उपधानश्रुत ८। महापरिज्ञा ९। पिंडेषणाध्ययन १०। सिज्जा ११। ईर्या १२। भाषाध्ययन १३। वस्त्रैषणा १४। पात्रैषणा १५। अवग्रह प्रतिमा १६। सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कंधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भव्याछे अनेपांचमानो

भवत्यन्यथावारोधितेतिवाचनांतरे आवश्यकानुसारेणदृश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्गत्या संक्लिष्टपरिणामइत्युक्तमयमपि द्वींद्रियाद्यपर्याप्तादिका: कर्म्मप्रक्र
तीर्वध्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिग्रहण विकलेंद्रियोद्वित्रिचतुरिंद्रियाणामन्यतम: वामित्यलकारे पर्याप्तोन्याअपिवध्नातीत्यप
र्याप्तग्रहणमपर्याप्तकएवध्नेता अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावध्नातिसोप्येता: संक्लिष्टपरिणामोवध्नातीति संक्लिष्टपरिणामइत्युक्त मयमपिद्वींद्रियाद्यपर्याप्त

सा उग्गहपडिमा सत्तिकसत्तया जावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्झयणंपणवीसइम मिच्छादिठिविगलिंदिए

सीय चूलिकानो अधिकारनथी परचूलिकाकही सूत्रमांहि तेमाटे इहांनिसीथपद ग्रन्थाख्य विमुत्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पचवीसनो जाणिवो
आचारांगे बीजोश्रुतस्कंधछे तेमांहि पहिलेश्रुतस्कंधे नवअध्ययन तेमांहि नवमो अध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देश्या १६ तेहदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रम
णें विछेदोपल्योपूछ्याये आठअध्ययन उगर्या तेहना उद्देश्या ४४ छे एकावनमे ठाणेलिख्याछे। हिवे बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ उद्देश्या २५ तेचूलिकामांहि
अंतर्भव्याछेतो पहिला श्रुतस्कंधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ एवं पचवीस अध्ययनकह्या। अने पहिला श्रुतस्कंधना ९ अध्ययनना उद्देसा
६० बीजा श्रुतस्कंधना उद्देश्या २५ सर्वमिली ८५ उद्देश्याथया। हिवे बीजे श्रुतस्कंधे १६ अध्ययनछे तेमाहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे
आगल्या ७ अध्ययन एकसरा बीजी चूलिकारूप पनरमूं अध्ययन त्रीजी चूलिकारूप सोलमूं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पाचमा निशीथाध्ययननो इहां अ
धिकारनथी। मिथ्यादृष्टि। विकलेंद्रिय बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रिय अपर्याप्तथका संक्लिष्टपरिणामे महाभूंडो अध्यवसायें उपार्ज्योकर्म तेहनो पचवीस उत्तर
प्रकृतिबांधे तेकहेछे। तिर्यंचगति नामकर्म १। विकलेंद्रिय जातिनाम २। औदारिक शरीरनाम ३।तैजस शरीरनाम ४। कार्मण शरीरनाम ५। हुडक

कप्रायोग्यवध्नाति तत्रविगलिंदियजायनामंति कदाचित् द्वीद्रियजात्यासह पंचविंशतिः कदाचित्त्रींद्रियजात्या एवमितरथापीति । गंगेत्यादि पचविंशतिगं
व्यूतानि पृथुलेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहत्रोत्ति द्वयोर्दिशोः पूर्वतोगगा प्रपरत. सिंधुरित्यर्थः पद्मह्रदाद्विनिर्गते पच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वादत्त्वि

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठ्ठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगडीउणिवंधति तिरियगतिनामं विगलिं
दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं ऊडगसठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग
नामं छेवठ्ठसघयणनामं वन्ननामं गधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघाय
नाम तसनाम वादरनाम अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनाम दुभगनामं अणादेज्जना
मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनाम २५ गंगासिंधूउणंमहाणदीउपणवीसगाऊयाणि पोहत्तेण घडमुहपवित्तिए

संस्थाननाम ६ । औदारिक शरीरना अगोपांग ७ । छेवठ्ठसघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यंचनी आनुपूर्वी
१३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपघातनाम १५ । त्रसनाम १६ । वादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम
२१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनादेयनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गगासिंधूनदीपंचवीस पचवीस गाउनेप्रवाहे पिहुलपणे पद्म
द्रहथकी निकली पांचसय योजन हिमवतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशि प्रवर्ती घडमुहपवत्तिएण घडानामुखनीपरी पचवीसकोस पिहुलीजीभीयें मगर
मुखप्रणालीयें मुक्तावलीहारसंठाणे सस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतथकी हेठीउतरी गगानदी गगाप्रपात कुडमां पडेछे सिंधुनदी सिंधुप्रपाते पडे

याभिमुखेप्रवृत्ते यवमुहपवित्तिएयंति घटमुखादिव पचविंशतिक्रोशे पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्तेनमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं स्थितेन प्रपतज्जलसतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयोः प्रपततः एवरक्तारक्तावत्यौ नवरशिखरिजर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

णं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति रत्तारत्तवईओणं महाणदीओपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि त्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेण रयणप्प भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीस पलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० मज्झिमहेठिमगेवेज्जाणं दे

छे। रक्तारक्तवती ऐरवतखेत्र सबधिनी महानदी पचवीसगाऊ पिहुलपणे पुंडरीकद्रहथकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पाचसय योजन चालीने मगरमुखप्रणालीये मुक्ताहारसठाणप्रपातेकरि हेठीउतरीछे रक्ता रक्ताकुडमाहिपडेछे रक्तवती रक्तावतीकुडमांहि पडेछे। लोकबिंदुसार चौदमा पूर्वना पचवीसवस्तुअधिकार विशेषकह्या। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो पचवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठीयें सातमी पृथिवीये केतलाएकनो २५ सागरोपम आउखोकह्यो। असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकें एतले अधोग्रैवेयक विमाने देवतानो जघन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके त्री

पुडरीकद्रहात्प्रपतत्तद्दति तथालोकविन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालायत्रश्रुतस्कन्धेऽध्ययनेच याव

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा पणवीसाए श्रद्धमासेहिं श्राणमंतिवा पाण मंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं श्राहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भ वसिद्धियाजीवा जेपणवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ छव्वीसंदसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला प० त० । दसदसाणं

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टी २५ सागरोपम श्राउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्रे श्राहारनो श्रर्थउपजे । छेकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने श्रांतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये ससारना परितापथकी ठाढाथा स्ये सर्वदुःखनो अतकरिस्ये इति पचवीसमो ठाणो सम्पत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छब्बीसमो समवाय लिखेछे । छवीस दशाकल्प व्यवहारना उद्देश नकाल जेह श्रुतस्कधे जेतला अध्ययनहुया तेतला उद्देसनकाल उद्देशनना अवसरकह्या तेकहेछे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना

न्यध्ययनान्युद्देशकावा तत्रतावंतएवउद्देशनकाला उद्देशावसराःश्रुतोपचाररूपाइति । तथा अभव्यानांत्रिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्ता यांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मांशाभवतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितिरर्वाक् तत्रअनगाराणा साधूना गुणाश्चारित्रविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि पचेंद्रियनिग्रहाश्चपंच क्रोधादिविवेकाश्चत्वारः सत्यानित्रीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना करणसत्यंयत्र

तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसंसागरोवमाइ ठिई प० तेणं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिण देवाणं छव्वीसंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेछव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं० । पाणाइवायाउ वेरमणं मुसावायाउ वेरमणं अदिन्नादाणाउ वेरमणं मेहुणाउ वेरमणं परिग्गहाउ वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चक्खिं

सागरोपम आउखोकह्यो । जेदेवता मध्यम हेठिम एतले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो२६ सागरोपम आउखोकह्यो । ते हदेवता छव्वीसे पखवाडे स्वासोस्वास वणोले ऊचोले नीचोमेले तेहदेवताने २६ वर्ष सहस्र आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीवजे२६ भवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये ससारदु खनो अतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छव्वीसमो समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमो समवाय लिखेछे सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र विशेषरूपगुणकह्या तेकहेछे । प्राणातिपातनो विरमण १ । मृषावादनो विरमण २ । अदत्तादाननो विरमण ३ ।

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तांसम्यगुपयुक्तः कुरुते योगसत्यंयोगानांमनःप्रभृतीनामवितथत्व १७ क्षमाऽनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभा वः अथवाक्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहितइति नपुनरुक्ततापीति १८ विरागता अभिष्वंगमात्रस्य भावः अथवामायालोभयोरनुदयो मायालोभविवेकशब्दाभ्यांतूदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतोह्यापिनपुनरुक्ततेति १९ मनोवाक्कायानां समाहरण तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानांनिरोधास्त्रय. २२ ज्ञानादिसंपन्नतास्त्रिस. २५ वेदनातिसहताशीताद्यतिसहन २६ मारणांतिकातिसहनता क

दियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो भविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणअहियासणया मारणंतियअहियासणया जंबूद्दीवेदीवेभारि

मैथुननो विरमण ४। परिग्रहनो विरमण ५। श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह ६। चक्षुरिन्द्रिय निग्रह ७। घ्राणेन्द्रिय निग्रह ८। रसनद्रिय निग्रह ९। स्पर्शनेंद्रिय निग्रह १० क्रोधनो विवेकत्याग ११। मान विवेक १२। माया विवेक १३। लोभ विवेक १४। भावसत्य शुद्धआत्माराखिवो १५। करणसत्यइन्द्रियनिरोधप्रतिलेखनादि क क्रियानेविषे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६। योगसत्य मन.प्रभृतियोगत्रिक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७। खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८। विराग ता केहसाथेप्रसंगनही १९। मननो समाहरणता अकुशल व्यापारथकी रुंधिवो २० एम वचन समाहरणता २१। काय समाहरणता २२। ज्ञानकरी स म्पन्नता सहितपणो २३। एम दंसण सम्यक्तसंपन्नता २४। चारित्र संपन्नता २५। वेदना अधिसहनता सातादिकनो सहिवो २६। मारणांतिक अधिसहन

स्याणमित्नवुद्यामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपेनधातकीखण्डादौ अभिजिदर्जैः सप्तविंशत्यानक्षत्रैर्व्यवहारः प्रवर्त्तते अभिजिन्नक्षत्रस्योत्तराषा
ढचतुर्थपादानुप्रवेशनादिति । तथामासोनक्षत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदा त्पचविधान्योक्तनक्षत्रमासः चंद्रस्यनक्षत्रमण्डलभोगकाललक्षणः सप्तविं
शतिरात्रिंदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिंदिवाग्रेणेत्यहोरात्रपरिमाणापेक्षयेदंपरिमाणं नतुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यंवाहोरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकवि
शत्येति । विमाणपुढवित्ति विमानानांपृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त्व बधाः क्षायोपशमिकसम्यक्त्वहेतुभूतशुद्धदलिकपुंजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिस्तस्य

इवज्जेहिं सत्तावीसाएणक्खत्तेहिं संववहारेवट्टति एगमेगेणंणक्खत्तमासे सत्तावीसाहिंराइंदियाहिं राइंदियग्गे
णं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स

ता मारणांतिकोपसर्गनो सहिवो २७ साधुगुण । जम्बूद्वीपनेविषे अभिजिन्नक्षत्र तेउत्तराषाढाना चौथापायामांहि पइठोछे तेमाटे अभीचिनक्षत्र वर्जीने अ
श्विनी प्रमुख सत्तावीस नक्षत्रेकरी व्यवहार प्रवर्त्तेछे । नक्षत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे
तेमांहि एकें नक्षत्रमासें सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिवाग्रें सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणें पूरोथाय । सौधर्म ईशान देवलोके
विमाननी पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुल्यपणे जाडपणेंकही सत्तावीससया इपुढवी पिंडोइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त्व बध तेक्षायोपशमिक सम्य
क्त्वनो कारणभूत शुद्धदलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनो उपरोति क्षियोजक वेगलानो करणहार तेहने मोहनीय कर्मनी प्रकृति २८ छे तेमाही
सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकर्म्मे सत्तापणेंकही १६ कषाय ९ नोकषाय एव २५ थई मिश्रमोहनी एवं १७ प्रकृतिसत्तायें हुए एकसम्यक्त्व मोहनीटली २८

तमदिन तत्रोक्तरूपापौरुषीछायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरंमिहपंच स्थितिःप्राक्सूत्राणि तत्रआचारः प्रथमांगस्तस्य

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि
उवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसंपलिउवमाइं ठिई प० मज्झिम
उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं सत्तावीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देव
त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तावीसाए अद्धमासे
हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे स
मुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छठे विमाने देवतानो जघन्य सत्तावीस सागरो
पम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही। ते
हदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोचजा
स्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिवे अठावीसमो समवाय लिखेछे। अठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विशेष

प्रकल्पोध्ययनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रक्वचित्ज्ञानाद्याचारविषयेअपराधमापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तंदत्तं पुनरन्यमपरा ।विशेषमापन्नस्तत स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यमासिक प्रायश्चित्तमारोपितमित्येव मासिक्यारोपणाभवति तथापंचरात्रिकशुद्धियोग्यंमासिकश्चशुद्धि योग्यचापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वंदत्तप्रायश्चित्तेसपंचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारोपणात्सपंचरात्रमासिक्यारोपणापट् ६ एवंद्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्यः ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाःतथासार्द्धदिनद्वयस्य पंचस्यचोपघातनेनलघूनामासादीनाप्राप्तीनप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्धेणछिन्नसेस पुव्वद्धेणंतुसजुयकाउं॥ देज्जायलहुयपक्खाण गुरुदाणतत्तियचेवत्ति ॥ यथामासार्द्धं १५ पंचविंशतिकार्द्धंच सार्द्धद्वादशवर्षसर्वमीलने सार्द्धसप्तविंशतिरितिलघुमासाः तथामासद्वयार्द्धं मासोमासिकस्यार्द्धपंच उभयमीलनेसार्द्धोमासइति लघुद्विमासिक २५ तथातेषामेवसार्द्ध दिनद्वयाद्यनुघातनेनगुरूणामारोपणा अनुघातिकारोपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्तावतीनांतच्छुद्धीनामारोपणाकृत्स्नारोपणा

मासियाआरोवणा सपंचराइमासियाआरोवणा सदसराइमासियाआरोवणा सपक्खरसराइमासियाआरोव

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनो प्रकल्पस्थापिवो तेआचारप्रकल्प अठावीसभेदेंकह्या तेकहेछे । किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपाम्यो तेहनो कांइक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेओ तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेमासिको प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिकारोपणाकुइ पहिली १ । सपंचरायेति पंचरात्रीयें शुद्धियोग्य तथा मासें शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पंचरात्रिसहित मासप्रायश्चित्त आरोपणाथकी सपंचरात्रि मासिकी आरोपणाकही बीजी २।एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाआरोवणा सपंचवीसराइमासियाआरोवणा एवंचेवदोमासियाआरोवणा सपंचराइ
दोमासियाआरोवणा एवतिमासियाआरोवणा चउमासियाआरोवणा उवघाइयाआरोवणा अणुघाइया

मासिकारोपणा ३। एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४। सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५। संपचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६। एमज पूर्वनेप
री कह्यीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे वेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेवेमासिकारोपणाकही
७। पंचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीयें अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चितनें पंचरात्रिसहित वेमासिक आरोपणाकर
वी तेसपंचरात्रि वेमासिकारोपणाकही ८। एमज सदसरात्रि वेमासिकारोपणा नौमी ९। सपनरसरात्रि वेमासिकारोपणा १०। सवीसरात्रि वेमासि
कारोपणा ११। सपंचवीसरात्रि वेमासिकारोपणा १२। पूर्वनीपरीछे त्रिमासिकारोपणा एवं १८। चौमासिकारोपणा एव २८ मासनोअर्द्ध १५। अनेपूर्व
पूर्वपचवीसनोअर्द्ध १२॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनूंअर्द्ध मासवली मासार्द्ध १५ विहूंमि
ली देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७॥ दिनआरोपी तेहउपघातकारोपणा पंचवी
समी २५। यदाह। अद्वेणछिन्नसेस पुव्वद्देणतु संजओकाओ। देज्जायलहुपहाण गुरुदाणंतत्तियंचेव॥ वेमासमांहिथकी अढीदिनकाढी एतले १ मासदिन
साढासत्ताईस एहने उपघातआरोपणाकही तेमांहि अढीदिनघाति एतले पूरावेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधला
ग्योहोय तेहने तेतलोपूरी आलोयणां आरोपी तेहकृत्स्नारोपणा २७ जेहने घणोजघणो अपराधलाग्योछे परछमासी उपरांत आलोयणनथी तोवीजा सग

२६ तथाबह्लनपराधानापन्नस्य षण्मासांततेषु इतिषण्मासाधिकातपःकर्मंतेष्वेवांतर्भाव्यंशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साअकृत्स्नारोपणेत्यष्टाविंशतिरेतच्च सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावांस्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवचितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्येत द्वातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायंतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिसूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्पे एतावताय आयरियव्वे ॥ भव सिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ णिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आभिणिबोहिअणाणे अठा

लायेंकर्म छमासीमाहि अतर्भव्याछे एमजाणी छमासीमते आरोपीये तेअकृत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलोश्रो आ चार आचरिवोकह्यो । जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीछे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथामोहनीयकर्मनो अठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये कही तेकहेछे । सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १ । मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनी २ । सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले मिश्रमोहनी ३ । सोलकषाय अणंता नुबंधी यादिक कषकही संसार तेहनोआय लाभहोय जेहथकी तेकषाय कषायसरीखूं फलदे तेहास्यादिकानव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोह नी कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेंलिखीछे । आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठावीसप्रकारेंकह्यो तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

श्रुभयोरादेयानादेययोश्वपरस्परंविरोधित्वेनैकदाबन्धभावादव्यभचरद्ब्रातीत्युक्तं तत्रचैकाग्रन्दगृहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकसूत्रेविंशतिस्ताएव प्रकृतयो

वीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे चक्खिंदियअत्थावग्गहे घाणिंदियअत्थावग्गहे जिब्भिंदियअत्थावग्गहे फासिंदियअत्थावग्गहे णोइंदियअत्थावग्गहे सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदिअवंजणोग्गहे जिब्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदिअ वंजणोग्गहे सोतिंदियईहा चिक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियईहासोतिंदियावाए चक्खिंदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिअ

प्रकारें गृहिवो तेश्रर्थावगृह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी काइक अर्थनो गृहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावगृह २। एम घ्राणेंद्रियार्थावगृह ३। जिह्वेंद्रियार्थावगृह ४। स्पर्शेन्द्रियार्थावगृह ५। नोइंद्रियमन तेहनो अर्थावगृह तेह नोइंद्रियार्थावगृह ६। शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराई तिवारपछी शब्दज्ञान उपजे तेश्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावगृह ७। गंधपुद्गल नासिकामांहि आवी भराई तिवारपछी गंधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यंजनावगृह ८। एम जिह्वेंद्रियव्यंजनावगृह ९। स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावगृह १०। आंखीने अने मननोव्यंजनावगृह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावगृह जाणिवा। श्रोत्रेंद्रियेकरी शब्दनेविषे ईहा देवी आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकरेस्त्रीनो एहश्रोत्रेंद्रियईहा ११। आखेंकरी आलोचवो स्थाणुर्वापुरुषोवा एहचक्षुरिंद्रियईहा १२। एमघ्राणेंद्रियईहा १३ जिह्वेंद्रियईहा १४। स्पर्शनेंद्रियईहा १५। नोइंद्रियईहा १६। तेमनकरी आलोचवो। ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहे। श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेंकरी निश्चयकरिये ते श्रोत्रेंद्रियावाय १७। एम चक्षुरिंद्रियावाय तेखीलाने जपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८। इमघ्राणेंद्रियावाय १९। जिह्वें

धारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा नोइंदियधारणा ईसाणेणं कप्पे अठावीसविमाणवाससहस्सा प० जीवेणदेवगइम्मिबंधमाणे नामस्सकम्मस्स अठावीसंउत्तरपगडी उ णिबंधति तं० देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनाम तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंससठाणणामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वन्ननाम गधनामं रसनाम फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगु रुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं

द्रियावाय २०। स्पर्शनेंद्रियावाय २१। नोइंद्रियावाय तेमनेंकरी निश्चयार्थवारिवो २२। अवाय अर्धमुहूर्त्तरहे। पूर्वेंकाननेकरी शब्दसांभल्योहोय तेसांभलि ये तेश्रोत्रेंद्रियधारणा २३। नेत्रेंकरी संभारिये तेचक्षुरिंद्रिय धारणा २४। एमज घ्राणेंद्रिय धारणा २५। जिह्वेंद्रियधारणा २६। स्पर्शनेंद्रियधारणा २७ नोइंद्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवो २८। एहधारणा कालसंख्याता असंख्यातालगेरहे। एहमतिज्ञानना २८ भेदकह्या। ईशान बीजे देवलोके अठावीसला खविमान भगवतेकह्या। जीवदेवतानो भवबाधतोथको नामकर्मछठो तेहनी १०३ उत्तर प्रकृतिछे तेमाहिथी २८ उत्तरप्रकृतिबांधे तेकहेछे। देवगतिना मकर्म १। पचेंद्रिय जातिनाम २। वैक्रियशरीर नाम ३। तैजसशरीर नाम ४ कार्मणशरीर नाम ५। समचउरससस्थान ६। वैक्रिय शरीरांगोपाग ७। वर्णनाम ८ गंधनाम ९। रसनाम १०। फरसनाम ११। देवानुपूर्वीनाम १२। अगुरुलघुनाम १३। उपघातनाम १४। परावातनाम १५। यशनाम १६ प्रशस्त विहायोगतिनाम १७। त्रसनाम १८। वादरनाम १९। पर्याप्तनाम २०। प्रत्येकशरीरनाम २१। स्थिर तथा अस्थिर एहविहुमाहे अन्यतर अनेरो

पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणंदोराहं ग्रुस्सयरंएगनामंणिवंधइ सुत्रासुत्राणंदोराहं ग्रुस्सयरंएगनामंनिबंधइ सुत्र
गनामं सुस्सरनामं ग्राइज्जग्रणाइज्जनामेणं दोराहंग्रुस्सयरं एगंनामणिवंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं
एवंचेवनेरइयाविनाणत्तं ग्रप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडगसंठाणनामं ग्रथिरनामं दुब्भगनामं ग्रसुत्रनामं दुस्स
रनामं ग्रणादिज्जनामं ग्रजसोकित्तीणामं इमीसेणं रयणप्पत्राए पुढवीए ग्रत्थेगइयाणं नेरइयाणं ग्रठावी
सं पलिउवमाइं ठिई प० ग्रहेसत्तमाए पुढवीए ग्रत्थेगइयाणं नेरइयाणं ग्रठावीसं सागरोवमाइं ठिई
प० ग्रसुरकुमाराणं देवाणं ग्रत्थेगइयाणं ग्रठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

एकनामबांधे २२ शुभतथा अशुभ एहबिहुमांहे एकबांधे २३। शुभगनाम २४। सुस्वरनाम २५। आदेयनाम अनादेयनाम एहविहुमांहे एकनामबांधे २६ यशकीर्त्तिनाम २७। निर्माणनाम २८। एमज जीवनरक गतिनो वधकरतो एहीज २८ नाम कर्मनी प्रकृतिनो बंधकरे। एतलो विशेष जाणिवो इहां अप्रशस्त विहायोगतिनाम १। हुंडकसंस्थान २। अस्थिरनाम ३। दुर्भगनाम ४। अशुभनाम ५। दुस्वरनाम ६। अनादेयनाम ७। अजस अकीर्त्तिनाम ८। नरकगती ९। नरकानुपूर्वी १०। एह १० प्रकृति बीजी प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतियें नामकर्मनी होय। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेंविषें केतलाएक नारकीनो अष्ठावीस पल्योपम आउखोकह्यो। नीचे सातमी पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनो अष्ठावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानी केतलाएकनों अष्ठावीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोकने विषें केतलाएक देवतानी अष्ठावीस

ऽष्टानांतुस्थाने अष्टावत्याबध्नातिएतद्देवाह्व एवंचेवेत्यादि नानात्वंविशेष: ॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि स्थिते:प्राक् तत्रपापोपदानानिश्रुतानि तेषांप्रसंगस्तथासेवनारूप: पापश्रुतप्रसंग'। सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्त' पापश्रुतविषयतया

अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अठावीसंसा गरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उवरिम गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उ क्कोसेण अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं अठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया नवसि द्धियाजीवा जेअठावीस नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति वुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण मतकरिस्सति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसंगेण प० तं। नोमे उप्पाए सुमिणे अं

पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम हेठिम एतले सातमे ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही। मध्यम उपरिम एतले सातमे छठेग्रैवेयक विमाने जेदेवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी अठावीस सागरोपमनी स्थितिकही। तेदेवता अठावीस पखवाडे सासोस्वास उचीले घणोले नीचोमेले तेदेवतानें अठावीस वर्षसहस्रगयें आहारनी व छाउपजे। छेकेतलाएक भव्यजीव जेअठाईस भवनें आतरे सीझस्यें बूझस्यें मूकास्यें सर्वदु:खनों अंतकरस्यें मोक्ष जास्यें अठावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवें गुणतीसमो समवाय लिखियेंछे। उगुणतीस प्रकारें पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापश्रुतान्येवोच्यतेऽतएवाह भोमेइत्यादि तत्रभौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधानं निमित्तशास्त्रं तथाउत्पातं सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवस्वप्न स्वप्नफलाविर्भावक अन्तरिक्षमाकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदक अंगशरीरावयवप्रमाणस्पंदितादिविकारफलोद्भावक स्वरंजीवाजीवाश्रितस्वरस्वरूपफलाभिधायक व्यञ्जनंमषादिव्यंजनफलोपदेशक लक्षण लांछनाद्यनेकविधलक्षणव्युत्पादक मित्यष्टावेतान्येवसूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाच्चतुर्विंशतिः तत्रागवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिर्लक्षप्रमाणावार्त्तिकवृत्तेर्व्याख्यानरूपंकोटिप्रमाण मंगस्यतुसूत्रंलक्षण वृत्तिःटीकावार्त्तिकमपिपरिमितमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्जानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या

तरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे भोमेतिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए एवंएक्केक्कंतिविहं विकहाणुजोगे

तशास्त्र तेपापश्रुत तेहनोप्रसग सेवारूप तेपापश्रुतप्रसंग कह्या । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकपादिक फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्र जेआकाशथी रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहना फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशथी ऊपनो ग्रहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अंगफुरकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कह्यो तेत्रिहुभेदे कहेछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेंकरी एमजपूर्वे अष्टांग निमित्तकह्यो तेत्रिणभेदे । एवं सर्वमिली २४ भेदथया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञप्त्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेटकादिमन्त्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि हरमेखलादि योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्य' सवाशाय:प्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुतत्वानामनुयोगो विचारस्तत्कारणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थ. सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकांतरितापञ्चमासा एकोनत्रिंशद्रात्रिदिवसपरिमाणेनभवति स्थूलन्यायेनकृष्णपक्षे प्रत्येकरात्रिदिवस्यैकस्यक्षयादाहच। आसाढब हुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गुणवइसाहेसुय बोवब्बा ओमरत्ता ओत्ति १ इयमत्रभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागानां द्वात्रिं शत् ऋतुमासश्च त्रिंशदेवदिनानिभवन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासाऽह्योरात्रिषष्टिभागाना त्रिंशताधिकोभवति ततश्चप्रत्यहोरात्र चद्रदिनमेकेकेनद्विष

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिआइंरा इंदियग्गेण प० भद्दवएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फग्गुणेणमासे वइसाहेणंमासे मासोचंदादिणाणं

कामनसाधनोपायशास्त्र २७। योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८। अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक घो प्र वर्त्यो पोतानो आचार तेहनो अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह गर्थ २९ । आसाढमास गुणतीस रात्रिदिवसनो २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूरोथाय एकतिथि अधारा पखवाडानी घटे एम एकांतरित छपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय। यदाह ॥ आसाढबहुलपक्खे । भद्दवएकत्तिएअपोसेअ ॥ फग्गुणवेसाहेसुअबोधव्वा ओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनो। कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनो । पोसमास २९ रात्रि दिवसनो। फागुणमास २९ रात्रिदिवसनो। वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनो। चद्रदिवस पडिवातिथि एगूणतीसमुहूर्त्त झाझेरानो २९ मुहूर्त्तनो कह्यो। जोयभला

ष्ठिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्ठ्याचंद्रदिवसानामेकपष्ठ्यहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्विहचंद्रप्रज्ञप्तेरवसेयइति तथाचन्द्रदिणेणंति चंद्रदिनं प्रतिपदादि कातिथिः तच्चेकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंश दिनानि द्वात्रिंशच्चदिनद्विषष्टिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिन चद्र मासस्यत्रिंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ता द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्ठिभागालभ्यतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे णवैमानिकेषुत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्बध्नाति तात्र्चेमाः देवगतिः १ पंचेंद्रियजाति २ वैक्रियद्वय ४ तैजसकार्मणशरीरे ६ समचतु रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्क ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघात १४ पराघात १५ उच्छासं १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रस १८ बादर १९ पर्याप्त २० प्रत्येक २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभगं २४ सुस्वर २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थ

एगूणतीसंमुहुत्ते सातिरेगेमुहुत्तगेणं प० जीवेणंपसत्थज्झवसाणजुत्ते भविएसम्मदिठी तित्थकरनामसहियाउ णामस्सणियमा एगूणतीसउत्तरपगडीउनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प

अध्यवसाय युक्तथको भव्यक्ष सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चे २९ उत्तर प्रकृति बांधीनें वेमानिक देवतानेंविषे देवतापणे उपजे। ते कहेछे। देवगति १। पचेंद्रिय जाति २। वैक्रिय शरीर ३। वैक्रियागोपांग ४। तेजस ५। कार्मण ६। समचउरससंस्थान ७। वर्ण ८। गंध ९। रस १०। स्पर्श ११। देवानुपूर्वी १२। अगुरुलघु १३। पराघात १४। उपघात १५। यशनाम १६। प्रशस्तविहायोगति १७। त्रस १८। बादर १९। पर्याप्त २०। प्रत्येक २१। स्थिर अस्थिर मांहियेक २२। शुभ अशुभ मांहियेक २३। शुभग २४। सुस्वर २५। आदेय अनादेय मांहियेक २६। यशः कीर्त्ति २७। निर्माण

करस्येति ॥ २९ ॥ त्रिंशत्तमस्थानकंसुगमं नवरं स्थितेरर्वागष्टौसूत्राणि तत्रमोहनीयंसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्यस्थानानिनि मित्तानि मोहनीयस्थानानि तथाआवितस्सेत्यादिश्लोकः यश्चायत्रसान्प्राणान्स्त्र्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतेनमारयति कथमाक्रम्यपादा दिनासइतिगम्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्संक्लिष्टचित्तत्वाच्चभवशतदुःखवेदनीयमात्मनोमहामोहंप्रकरोति १ तदेवभूतत्रसमारणैकं मोहनीय स्थानमेवसर्वत्रेति १ सीसाश्लोकः शीर्षावेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेनयः कश्चिद्वेष्टयतिस्त्र्यादित्रसानितिगम्यते अभीक्ष्णभृशन्तीव्रोऽशुभः समारःसइति इत्यस्यगम्यमानत्वा त्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनआत्मनो महामोहंप्रकुरुतइति यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

च्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २९ ॥ तीसंमोहणियठाणा प० तं० । जेयावितसेपाणे । वारिमज्झेविगाहिया ॥ उदएणकम्ममारेई । महामोहंपकुव्वइ ॥ १ ॥ सीसावेढेइजेकेई ।

सारना परितापथी ठाढायासे सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये । इति गुणत्रीसनों ठाणो समत्तम् ॥ २९ ॥ हिवे तीसमो ठाणो लिखियेछे त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या । तिहां सामान्यंकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या। तेकहेछे । जेकोइ स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पांणीमांहे बोलीनें उदक शस्त्रें करीने आक्रमें तेमहामोहनीय कर्मबांधे। भवनाशतसहस्रलगें वेदनीयकर्म उपार्जें १ । शीर्षा वेष्ठनेंकरी चर्ममय बाधेंकरी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थें बींटे तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारतानें महामोह उपजाविवापणाथकी आत्मानें

चितुद्दश्यंत एवेतितेव्याख्यायन्ते २ पाणिनाहस्तेनसंपिधाय स्थगयित्वाकिंतत् श्रोतोरंध्रंमुखमित्यर्थः तथाआहृत्यावरुध्य प्राणिनंतत अतनंदंगलमध्येरवकुर्वत
घुरुघुरायमाणमित्यर्थः मारयतिसद्दतिगम्यते महामोहप्रकरोतीतिद्दतीयं २ जाततेजसवैश्वानर समारभ्यप्रज्वाल्यबहुप्रभूतं अवरुध्यमहामण्डपवाटादिषुप्रचि
प्यजनलोकं अतर्मध्यंधूमेन वह्निलिंगेन अथवा अतर्धूमोयस्यासावंतर्धूमस्तेनजाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौमहामोहप्रकरोतीति चतुर्थं ४
शीर्षंशिरसियः प्रहतिखड्गमुद्गरादिना प्रहरतिप्राणिनमितिगम्यते जिभूते भावत शिरसिउत्तमांगे सर्वावयवाना प्रधानावयवे तद्विघातेऽवश्यमरणा चेतसा

अवहेइअग्निरकणं ॥ तिव्वासुत्तसमायारे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २ ॥ पाणिणारंपहित्ताणं । सयमाचरियपा
णिण ॥ अंतोनदंतंमारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३ ॥ जायतेयंसमारब्भ । वजनरुंभियाजणा ॥ अंतोधूमेण
मारेई । महामोहपकुव्वइ ॥ ४ ॥ सीसम्मिजेपहणइ । उत्तमंगम्मिचेयसा ॥ विभज्जमत्थयफाले । महामोहंप
कुव्वइ ॥ ५ ॥ पुणोपुणोपणिधिए । हरित्ताउवहसेजणं ॥ फलेणअदुवदंडेणं । महामोहपकुव्वइ ॥ ६ ॥ गूढा

महामोह उपार्जे २। हाथेंकरी आगलानो मुखरूंधी आच्छादी भीचोनें गलामांहे घुर्घुराट शब्दकरताथकानेंमारे तेमहामोहनीय कर्मउपार्जे ३। जाततेजा
अग्नि बहोत प्रज्वालीने वाडादिकनें अवरूंधीने रोकीने अतो मंडपादिकमां धूमेंकरी मारे तेमहा मोहनीय कर्मकरे ४। जेप्राणी दुष्टपरिणामे वाली प्राणी
ना उत्तमागनें माथानेविषे खड्गादिकेंकरी मारें विहचीनेमस्तकनें काटीने मारे तेपुरुष महामोहनीयकर्म उपार्जे ५। पुन' पुनः वारंवार कपटें करीनें जि
मवाटपाडा वाणियानो वेशकरीने मार्गें परने साथेचालीनेमारे मारीनें आनंदपणाथकी उपहसे विजोरादिक फलेकरी अथवा दंडेकरी हण्यमान सूखेंज

संक्लिष्टेनमनसा यथाकथंचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदानेन स्फोटयतिविदारयति ग्रीवादिकं कायादपोतिगम्यते सद्दत्यस्यगम्यमानत्वात् मह
मोहप्रकरोतीतिपचमं ५ पोनःपुन्येनप्रणिधिनामायातः यथा २ वणिजकादिवेषं विधाय गलावर्त्तकाःपथिगच्छतासहगत्वा विजनेमारयंति तथाहत्वा विना
श्यइतिगम्यते उपहसेत् आनन्दातिरेकात् जनमूर्खलोकंहन्यमानं केनहत्वा फलेन योगविभावितेनमातुलिंगादिना अथवा तथादण्डेन प्रसिद्धेन सद्दतिगम्यते
महामोहप्रकरोतीतिषष्ठ ६ गूढाचारीप्रच्छन्नाचारवान् निगूहयतेगोपयेत् स्वकीयंप्रच्छन्नंदुष्टमाचारं तथामायापरकीयां माययास्वकीययाच्छादयेत् यथा
शकुनिमारकाश्छदेरात्मानमावृत्यशकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायांछादयन्ति । तथाअसत्यवादीनिह्नवी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर
गुणप्रतिसेवायाः सूत्रार्थयोर्वामहामोहप्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वसयतिमाययाभ्रंशयति इतियःपुरुषोभूतेनासद्भूतेनकं अकर्मकमविद्यमानदुश्चेष्टित आत्मकर्मणा
त्मकृता ऋषिघातादिना दुष्टव्यापारेण अदुवा अथवायदात्मनः कृततदाश्रित्य परस्यसमक्षेसचलमकार्षीरिव तन्महापापमिति वदति वदिक्रियायोगः गम्य

यारीनिगूहिज्जा । मायंमायाएछायए ॥ असच्चवाईणिरहाई । महामोहंपकुव्वइ ॥ ७ ॥ धंसेइजोअभूएणं । अ

नने हसे ते महामोहनीयकर्म उपार्जन करे ६ । गुप्तछे आचार कपट जेहनो तेगूढाचारी पोतानुं प्रच्छन्न दुष्टाचारप्रते गोपवे परनी मायाप्रते पोतानी माया
करीढांके असत्यवादी झूंठबोलिवो मूलगुण उत्तरगुण खडीने गोपवे ते महामोहनीयकर्म उपार्जे ७ । नथी चेष्टितहेकर्म जेहनों एहवा पुरुषप्रते पोताना
कीधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरीमारे अथवा पोतानुं कीधुं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमक्षेकहे जे एह खोटोकर्म एहनेहीज कीधो तेमहा मोहनी

सत्यामृषा किंचित्सत्यानि वह्

मानत्वात् सद्वत्यस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टम ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थं सत्यामृषा किंचित्सत्यानि वह्

सयानि वस्तूनि नाश्यानिवाभाषते अचोणझंझ. अनुपरतकलहः य.सइतिगम्यते माहामोहम्प्रकरोतीति नवम९ अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान्

नीतिमानमात्यः सतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्र दारवा अर्थागमस्योपाय ध्वसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति स्ववधः किञ्चत्वा विपुल प्रचुरमित्यर्थं विचोभ्य

सामंतादिपरिकरभेदेन सचोभनादनायक तस्यचोभजनयित्वेत्यर्थं कृत्वाविधाय गमित्यलङ्कारे। प्रतिवाह्या मनधिकारिणी दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार

न् राज्यवास्वयमधिष्ठायेत्यर्थः। तथाऽपगतमपि समीपमागच्छतमपि सर्वस्वापहारेक्षते प्रावृतेना तुल्योपमे करुणैर्वचनैरनुकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थं. भ्रं

पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशकृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भि वचनै रेताद्दशस्ताद्दशस्त्वमित्यादिभि रित्यर्थं भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

जाणमाणोपरिसउ। सच्चमोसाइभासइ कम्मंअत्तकम्मणा॥ अदुवातुममकासित्ति। महामोहपकुव्वइ॥ ८॥ अणायगस्सनयवं। दारंतस्सेवधंसिया॥ विउलविक्खोभइत्ताणं अज्झाणकऊपुरिसे। महामोहपकुव्वइ॥ ९॥

यकर्म उपार्जे ८। जाणतोथको पर्षदामाहि बेसीने सत्यामृषा वाङ्क साची काईएक झूंठी वाणीबोलि कलहथको पोमस्योनथी निवर्त्यो नथी तेपुरुष महामो

हनीयकर्म उपार्जे ९। नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहवा राज्यना नयवत अमात्यमत्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय

प्रति ध्वसे विनसाडे स्यूं करी ध्वसे प्रचुर सामंतादिकप्रति विक्षोभीने भेदपाडीने वली करीनें स्यूं करीने कलत्रथको अथवा अर्थागमद्वारथको लेवाने योग्य

नथी एहवी राज्य लक्ष्मीयें पोतेंज अधिष्ठान करीने तथा समीपे आवताने एतले सर्वधन लीयेंथकें दीनस्वरेकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने झांपीने सामो

विदारयतियोसौमहामोह प्रकरोतीतिदशम १० अकुमारभूतो ऽकुमारब्रह्मचारीसन् य' कश्चित् कुमारभूतोहंकुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु गृद्धोवसकश्स्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिश्रास्ते समहामोहप्रकरोतीत्येकादशं ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोय' कश्चित्तत्कालएवासेव्यात्ब्रह्मचर्यं ब्रह्मचारी साम्प्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपचनायवदति तथाच एवमशोभावह सतासनादेय भणन् गर्दभइवगवांमध्ये विस्वरंनवृषभवन्मनोज्ञं नदतिमुञ्चति नदनादंशब्दमित्यर्थः तथायएवभणन्नात्मनोऽहितो नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगशाव्यान्तत प्रभूतभाषते यद्येवंनिदितभाषते कया स्त्रीविषयगृद्धा

किच्चाणंपडिवाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतपिकंपित्ता । पडिलोमाहिंवग्गुहिं ॥ भोगभोगेवियारेइ । महामोहंप कुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेई । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिद्धेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥ अबंभयारीजेकेई बंभयारीत्तिहवए ॥ गद्दहेव्वगवंमज्झे । विस्सरनयईनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएबाले । माया

श्रोसियालो करीने प्रतिकूलवचने करी रे तूं एहवो नीचछे एहवा वचनेंकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थें विदारे हरे तेमहामोहनीय कर्म करे १० । नथी कुमार भूत एतले परण्यो छे जेकोई लोकमाहि हु कुमारभूतछु एतले बालब्रह्मचारी छु छूं एहवूं कहे वली स्त्रीसाथें गृद्ध लोलुप वली स्त्री ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेंवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथको जेकोई लोकमाहि छु ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छूं एहवो कहे ते शोभा रहित साधुजनने अग्राह्य गर्दभनीपरे गायना टोलामां वृषभनीपरें मनोज्ञ नथी एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानी अहितकारी अ ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लपट थईने माया सहित मृषा घणू बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकरी

हेतुभूतया सद्दर्थभूतोमहामोहंप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानराजामात्यादिकं वा निश्रितश्राश्रितउद्दहते जीविकालाभेनात्मानंधारयति कथंयशसातस्य राजादेः सत्कोयमितिप्रसिद्धाश्रभिगमनेन वासेवया श्राश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहप्रकरोतीति त्रयोदशं १३ ईश्वरेणप्रभुणा भट्टया अथवा ग्रामेणजनसमूहेन श्रनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संप्रगृहीतस्य पुरस्तस्य प्रश्वादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाश्रसाधारणाश्रागताप्राप्ता श्रतुलवायथाभवतीत्येव श्रीः समागता श्रागता श्रीकस्य प्रश्वाद्युपकारकविषये ईर्ष्यादोषेणाविष्टोयुक्तः कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षणपापेनाविलमाकुलवाचेतोयस्य सतथा यौतरायंव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगाना चेतयतेकरोति प्रश्वादे रसौमहामोहप्रकरोतीति चतुर्दश १४ सर्पीनागीयथाश्रण्डउड

जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥ मोसंवक्कंस्से ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥ तस्ससपयहीण तस्सलुब्भइवित्तम्मि । महामोहंपकुव्वइ ॥ १५ ॥ ईसरेणश्रदुवागामेणं । श्रणिस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससपयहीण स्स । सिरीश्रतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणश्राविट्ठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेश्रंतराश्रचेएइ । महामोहंपकु

श्रात्मानेधारे श्रने राजसबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवायकी तेश्राश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहामोहनीय कर्मकरे १३। ईश्वरें ठाकुरें अथवा ग्रामें जनसमूहें श्रनीश्वरहुतो तेईश्वरकीधो असमर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वें श्रनीश्वरहुतो सपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी श्रतुल श्रसाधारण श्रावी पामीछे जेहनेते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादोषें मच्छरदोषेंकरी श्राविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेंकरी श्राकुल व्याप्यो छे चित्त जेहनो एहवो जेकोइ उपकारी प्रभुने अतरायप्रति चेतेकरे तेहनी श्राजीविकानो विछेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४। सर्पिणी जिम पोता

अण्डककूट स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटंसंवद्धदलद्वयरूपंहिनस्ति एवंभर्त्तारंपोषयितारं योविहिनस्ति सेनापतिंराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपा
ठकवासमहामोहंप्रकरोतीति तन्मरणेवहुजनदुस्थताभवतीति पंचदशं १५ योनायकंवाप्रभुंराष्ट्रस्यराष्ट्रमहत्तरादिकमितिभावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु
निगमस्यवाणिजकसमूहस्य वांश्रेष्ठिनंश्रीदेवताङ्कितपट्टवद्धांकितभूत वहुरवभूरिशब्द प्रभुतरयशसमित्यर्थः हत्वा महामोहम्प्रकुरुतेइतिषोडश १६ वहुजनस्यपञ्च
षादीनांलोकाना नेतारंनायक द्वीपइवद्वीप.ससारसागरगतानामाश्वासस्थान अथवादीपइवदीपो ऽज्ञानांधकाराहतबुद्धिदृष्टिप्रसराणा शरीरिणांहेयोपादे
यवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् त अतएवत्राणमापद्रक्षणंप्राणिनां एतादृशं यादृशागणधरादयोभवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुषहत्वामहामोहम्प्रकरोतीति सप्तदश

वुइ ॥ १७ ॥ सप्पीजहाअंडउडं । भत्तारंजोविहिंसइ ॥ सेणावइपसत्थारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ १८ ॥
जेनायगंचरठस्स । नेयारंनिगमस्सवा ॥ सेठिंवडुरवंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ १९ ॥ बहुजणस्सनेयारं ।
दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ २० ॥ उवठियंपडिविरयं । जेभिक्खुंजगजीवणं ॥

ना ईण्डानापुट समूह हणेमारें। तिम पोताना भर्तार पोषकने हणेमारे सेनापतियें राजायें प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारे तेमहामोहनीय कर्म
करे १५। जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक्समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेष्ठि नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टवद्ध तथा घणायशनो
धणी एहवाने हणेमारे ते महामोहनीय कर्मकरे १६। वहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभूत
आपदाथकी रक्षक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७। प्रव्रज्यानेविषे उपस्थित सावधान थयोछे तथा सर्वसावद्य थकी निवर्त्यो जे कोइ

१७ उपस्थितप्रव्रज्यायांप्रविव्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरत सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतंसाधुंसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतंधोभनंवातपः श्रितमा श्रित क्वचित् जेभिक्खुजगजीवणतिपाठः तत्रजगन्ति जगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्माच्छ्रुतचा रित्रलक्षणाद्भ्रंशयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तन मोहनीयस्थान तथैवेदमपि अनतज्ञानिना ज्ञानस्यानतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजि नानामर्हतां वरदर्शिना चायिकदर्शनत्वात् तेषां येज्ञानाद्यनेकातिशयसपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवर्णवअवर्णवादोवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथाना स्तिकवान् सर्वज्ञोज्ञेयस्यानतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाण अज्जाविअणतओअलोगोवि अज्जाविनकोइविउहं पावंतिसब्बसुयजीवो अहपावतितोसभोहोइ अ लोउनवेयमठतित्ति अदूषणचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञान युगपल्लोकालोकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकांतर्वर्त्तिदीपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमा दिति बालोऽज्ञोमहामोह प्रकरोतीति एकोनविंशतितम १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रांतस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोक्षपथस्यदुष्टोद्विष्टोवा ऽपकरोति

तेसिंच्चवसवंबा

कम्मधम्माउन्नसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २१ ॥ तहेवाणतणाणीण । जिणाणंवरदंसिण ॥ तेसिंच्चवस्सवंबा ले । महामोहपकुव्वइ ॥ २२ ॥ नेआइच्चस्समग्गस्स । दुठेच्चवयरईबक्ज ॥ तंतप्पियतोन्नासेइ । महामोहंप

भिक्षु जगजीवन अहिंसादि धर्म जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे वारी बलात्कारे धर्मथकी भ्रंसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। तिमज पूर्वनोपरी अनतज्ञानी अनत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणी तथा ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

अपकारंकरोतीति बहुअत्यर्थंपाठांतरेणापहरति बहुजनं विपरिणमयतीतिभाव: तंमार्गंतिप्पथंतीत्ति निंदन्भावयति निंदयाद्वेषेणवावासयति आत्मानंपरं चय:समहामोहंप्रकरोतीति विंशतितम २० आचार्योपाध्यायैः श्रुतस्वाध्यायविनयच चारित्रग्राहित: शिचित: तेनैवखिंसतिनिन्दति अल्पश्रुताएतेइत्यादि ज्ञानत' अन्यतीर्थिकससर्गकारिणइत्यादिदर्शनत: मन्दधर्माण: पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिन: इत्यादि चारित्रत: य:सएवंभूतोबालो महामोहप्रकरोतीत्येकविंश तितम २१ आचार्यादीन्श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिभिस्तर्पितवत' उपकृतवत. सम्यक्नताम्प्रतितर्पति विनयाहारोपध्यादिभि र्नप्रत्युपकरोतीति तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथास्तब्धोमानवान् समहामोहम्प्रकरोतीति द्वाविंशतितम२२ अबहुश्रुतश्चय: कश्चिच्छ्रुतेन प्रविकत्थते आत्मानश्लाघते श्रुत वानहमनुयोगधरोहमित्येव अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभणति आत्मन:स्वाध्यायवाद वदति विशुद्धपाठकोह मित्यादिकंय: स

कुव्वइ ॥ २३ ॥ आयरियउवज्झाएहिं । सुयंविणयंचगाहिए ॥ तेचेवखिंसईबाले । महामोहपकुव्वई ॥ २४ ॥
आयरियउवज्झायाणं । सम्मंनोपडितप्पइ ॥ अप्पडिपूयएथद्धे । महामोहपकुव्वइ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुएयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणें आचार्यें उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र ग्रहिवाड्यो सिखाड्यो तेहीज आचार्यने खीसे निंदे बाल अज्ञानी ते महामो हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्प्पेनही उपराठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे२२। अबहुश्रुत अपडितथको जेकोइ श्रुतेंकरी शास्त्रेंकरी आत्माने प्रविकथे स्लाघायेंहु श्रु तवतछु एम कहे वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहु पाठकछु एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपेकरी पोताना आत्मानें

॥ चौरो भावचौरत्वात् महामोहं श्रुतालाभहेतु प्रकरोतीति त्रयोविंशतितम २३ सुगमं पूर्वार्द्धं पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्परः प्रकृष्टस्तेनः चौरो भावचौरत्वात् महामोहं श्रुतालाभहेतु प्रकरोतीति त्रयोविंशतितम २३ सुगमं पूर्वार्द्धं पूर्ववत् नवरम्

पकुव्वइ अतपस्विनोहेतु प्रकरोतीति चतुर्विंशतितम २४ साधारणार्थ मुपकारार्थं य.कश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूतप्रभु समर्थ उ पकुव्वइ अतपस्विनोहेतु प्रकरोतीति चतुर्विंशतितम २४ साधारणार्थ मुपकारार्थं य.कश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूतप्रभु समर्थ उ पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकार नकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्विद्वेषेणासम पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकार नकरोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणेत्याह ममाप्येषनकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्विद्वेषेणासम पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकार नकरोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणेत्याह ममाप्येषनकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्विद्वेषेणासम पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकार नकरोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणेत्याह ममाप्येषनकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्विद्वेषेणासम

विवोधना चशब्दात्परेषांवाऽबोधिकः अविद्यमानो वोधोऽस्मादितिव्युत्पादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ्मुखाभवति तेषामबो धिकस्तथेति सएवभूतो महामोहम्प्रकरोतीति पञ्चविंशतितमं २५ यः कथावाक्यप्रबंधःशास्त्रमित्यर्थं स्तद्रूपाख्यधिकरणानि कथाधिकरणानिकौटिल्यशास्त्रा दीनि प्राणुपमर्दनप्रवर्त्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा चेत्राणि क्षपत गानमसूयतेत्यादि तया अधिकरणानि तथाविधप्रवृत्तिरू पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानिच यन्त्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानितानि समयुक्ते पुनःपुनरेव सर्वतीर्थानां भेदायसंसारसागरतरण कारणत्वात् तीर्थानिज्ञानादीनि तेषासर्वथानाशायप्रवर्त्तमानः समहामोहंप्रकरोतीति षड्विंशतितम २६ । काव्य नवरं अधार्मिकायोगानिमित्तवशीकरणा दिप्रयोगः किमर्थंश्लाघाहेतोः सखिहेतोर्मित्रनिमित्तमित्यर्थः इतिसप्तविंशतितम २७ । यश्चमानुष्यकान्भोगान् अथवापारलौकिकान् तेत्ति विभक्तिपरिणामः

कुव्वइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिगरणाइं । सपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्थाणभेयाणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३० ॥
जेअअहम्मिएजोए । संपउंजेपुणोपुणो ॥ साहाहेउसहीहेउ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३१ ॥ जेअमाणुस्सएभोए ।

उपमर्दहेतु आत्माने दुर्गतीमांहि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाशे प्रवर्त्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रते श्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थेसप्रयुजे वली वली व्या पारे ते महामोहनीय कर्मकरे२७। जेकोइ मनुष्य संबधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकनेविषे अतृप्तहुओथको भोगप्रते आस्वादे अभिलासे आश्र यणकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८। जेकोइ बाल अधर्मी ऋद्धि विमानादिकनी सपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्त्ति वर्ण शुक्लादि शरीर सबंधी

जावसव्वदुक्खप्पहीणे एगमेगेणंअहोरत्ते तीसंमुहुत्ते मुहुत्तगेणंप० एएसिणंतीसाएमुहुत्ताणं तीसंनामधेज्जा प० तं० रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे आणंदे विजए विस्ससेणे पाया वच्चे उवसमे ईसाणे नठ्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते नठवे भूमहे रिसभे सव्वठसिद्धे रक्खसे ३० । अरेणंअरहा तीसंधणु उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सहस्सारस्सणं देविंदस्स देवरन्नो तीसं सामाणियसाहस्सीओ प० पासेणंअरहा तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए समणेभगवं महावीरे तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए

मर्ब्देकरी कर्मथकी मूकाणी सर्वदुःखथकी प्रचीणथयी । एकएक अहोरात्र त्रीस मुहूर्तनो होय । ते त्रीसमुहूर्तना त्रीसनामधेयनामकह्या । तिकहेछे । रौद्र १ शक्त २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अभिचंद्र ६ । माहेंद्र ७ । प्रलंब ८ । ब्रह्म ९ । सत्य १० । आनंद ११ । विजय १२ । विश्वसेन १३ । प्राजापत्य १४ । उपशम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भावितात्मा १८ । वैश्रमण १९ । वरुण २० । शतऋषभ २१ । गांधर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवर्त्त २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । ऋषभ २८ सर्वार्थसिद्ध २९ । राक्षस ३० । अरनाथ अठारमा तीर्थंकर त्रीस धनुष ऊंचपणेथया । सहस्रारनामा आठमा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या । पार्श्वनाथ अरिहंत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास माहि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणो यतीपणो पाम्या श्रमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणो पाम्या । रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या । एणीयें र

रयणप्पभाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण तीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसंपलिओवमाइं ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमतिवा उस्ससंतिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं आहारठ्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिब्बाइस्संति सब्बदुक्खाणमंतं करि

त्नप्रभा पृथिवीने विषें केतलाएक नारकीनो त्रीस पल्योपमनो आउखोकह्यो । हेठे सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो त्रीस सागरोपमनी स्थितिकही केतलाएक असुरकुमार देवतानी त्रीस पल्योपमनी स्थितिकही । उपरिम उपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयक विमानें देवतानी जघन्य त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही । जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी उत्कृष्टी त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही । ते देवता त्रीसें पखवाडें स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्रगये आहारनो अर्थ उपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जे त्रीसभवने आत

वरणादिचयस्वरूपादिति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कंभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी त्यधिकमण्डलशतभवति मण्डलचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनशते पचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवंति तथालवणसमुद्रं त्रीणित्रिं

हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइआउए खीणे तिरिआउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुभनामे खीणे असुभनामे खीणे दाणंतराए खीणे लाभांतराए खीणे भोगांतराए खीणे उवभोगांतराए खीणे बीरिअंतराए ३१ मंदरेणंपव्वए धरणितले एक्कतीसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियमंडलं उव

दर्शनमोहनीय एतले सम्यक्त मोहनीय क्षय १७। चारित्रमोहनीय क्षय १८। नरकायुक्षय १९। तिर्यंचायुक्षय २०। मनुष्यायु क्षय २१। देवायु क्षय २२। उच्चैर्गोत्रक्षय २३। नीचैर्गोत्र क्षय २४ शुभनाम क्षय २५। अशुभनाम क्षय २६। दानांतराय क्षय २७ लाभांतरायक्षय २८। भोगांतराय क्षय २९ वीर्यांतराय क्षय ३०। उपभोगांतरायक्षय ३१। मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छसे त्रेवीस योजन कांइक न्यून परिधीये कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार योजन पिहुल पणेछे तेहनी परिधी त्रिगुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रेतीस योजन कही। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जंबूद्वीप मांहि एकसो चौरासी मडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमडलें उपसक्रमी आवीने सूर्य मकर सक्रातिदिने भ्रमण करे। तेणे दिनें भरतक्षे

शदधिकानियोजनशतान्यवगाह्येवीनविंशत्यधिकं सूर्यमण्डलशतंभवति तत्रचसर्ववाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानांपर्यंतिमं तस्यचायामविष्कम्भो लक्षंषट्शतानि चयोजनानांषष्ठ्यधिकानि परिधिसुवृत्तक्षेत्रगणितन्यायेनत्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानिपंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावत्क्षेत्रमादित्योऽहोरात्रद्वयेनगच्छति तत्रचषष्ठिमुहूर्त्ताभवन्ति षष्ठ्याभागापहारे यल्लब्धतन्मुहूर्त्तगम्यक्षेत्रप्रमाण भवति तच्च पचसहस्राणित्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५। १५। ६० मुहूर्त्तं एतच्चदिवसार्द्धेनगुण्यते यदाचसर्ववाह्येमण्डलेसूर्यश्चरति तदादिनप्रमाण द्वादशमुहूर्त्ताः तदर्द्धंचषट् अतः षड्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणित मुहूर्त्तगतिप्रमाणं चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणभवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१। ३० अभिवर्द्धितमासोऽभिवर्द्धितसंवत्सर

संकमित्ता चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिंयएक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाएसट्ठिभागे जोयणस्स सूरिएचक्खुफासं हव्वमागच्छइ अभिवड्ढिएणं मासे एक्कतीसं

त्रगत मनुष्यने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचत्रीसभाग अधिक वेगलोथको सूर्य चक्षुस्पर्शे शीघ्र आवे । एतलेपोसी पूनिमे मकर सक्रांतिदिने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठीया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहांना मनुष्यने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्द्धितमास त्रीजे वर्षे आवे तेरहमासनो वर्ष होय । ते अधिक मास एकत्रीस रात्रिदिवस प्रमाणेंसातिरेक कांइएक भांभेरोजाणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे तेआदित्यमास सूर्यमा

द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरस्यासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचंद्र
स्य चतुश्चत्वारिंशदहोरात्रद्विषष्टिभागाधिकत्र्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरस्यासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचंद्र
मासात्मकत्वाच्चन्द्रमासस्य एकोनत्रिंशताद्दिनाना द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानांभवतीति साइरेगाइंति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्यु

सातिरेगाइ राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० आइच्चेणं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं
दियग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसं पलिउवमाइं ठिई प०
अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अ
त्थेगइयाणं एक्कतीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसंपलिउव
माइं ठिई प० बिजय बेजयंत जयंत अपराजियाण देवाणं जहस्रेण एक्कतीसंपलिउवमाइं ठिई प० जे

स कहिये एकत्रीसरात्रिदिवस काईक विशेषाधिक अथा ओछा अहोरात्रिअर्द्धे अथा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरो कह्यो । एणीयें रत्नप्रभा पहिली
नरक पृथिवी यें केतलाएक नारकोनी एकत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही । हेठिम सातमीनरक पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो एकत्रीससागरोपम आउखो
कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानी एकत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही । सौधर्मईशाने कल्पें केतलाएक देवतानो एकत्रीस पल्योपम आउखोकह्यो ॥ पू
र्वेदिशाथकीमांडीकरीने विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । जेदेवता
उपरिमउपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकविमाने देवतापणेउपनाछेतेहदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता एकत्रीसें पखवाडे

त्तरश्रतेनाधिकानीति आदित्यमासेयिनकालेनादित्योराशिंभुंक्ते किंचिविसेसूणाइंति अहोरात्रार्द्धेनन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ द्वात्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तं। नवरं। युज्यते इतियोगा मनोवाक्कायव्यापारास्तेचेहप्रशस्ताएवविवक्षितास्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसग्रहणानि संग्रहाः प्रशस्तयोगसगृहाः प्रशस्तयोगसंगृहनिमित्तत्वादालोचनादय एवतथोच्यन्ते। तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंश्लोकपंचकं आलोयणेत्याद्यस्यगमनिका तत्रआलोय

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एक्कतीसं वाससहस्सेहिं आहारठे समुपज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति वुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥

बत्तीसं जोगसंगहा प० तंजहा आलोयण निरवलावे आवई सुदढधम्मया। अणिस्सिउवहाणेय सिक्खा,

स्वासोस्वास घणोले ऊचोले नोचोमूके ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्त्रगयें आहारनी इच्छाउपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये कृतकर्मना पडल टालवायकी ठाढाथास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिएकत्रीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिवे बत्रीसमो समवाय लिखेछे। बत्रीस योग सगृह मन बचन कायानायोग तेहनो सगृह शिष्यें आलोयणालेवी गुरूयें कहीआगली-नकहिवी इत्यादि प्रकारें सगृह करिवो प्रशस्त योगना कारण ते योगसंगृह ते कहेछे। मोक्षसाधक योगसंगृहभणी शिष्ये आचार्यभणी आलोयणकही १। आचार्यभणी आलोयण

णत्ति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या न्नान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवईसुदढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसग्रहाय साधुनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि स्सिओवहाणेयत्ति शुभयोगसग्रहायैवानिश्रितंच तदन्यनिरपेक्षमुपधान परसाहाय्यानपेक्षतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसग्रहायशिक्षासेवितव्या सा चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षाद्यासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निप्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नाययत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू जाद्यर्थिलेनाऽमकाशयन्निं स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषहादिजयः ९ अज्जवेत्ति आर्जवः ऋजुभावः १० सुइत्तिशुचिः सत्यसयमइत्यर्थः ११ सम्मदिट्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाधिश्चचेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणओवएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

निप्पडिकम्मया ॥ ७ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिठी समाहीय । आयारे

कही अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आव्यांथकी दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रायें अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ । सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिक्षानी सेवो ५ । शरीरनी निष्प्रतिकर्मना करवी एतले सुश्रूषानकरवी ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोथको तपकरे ७ अलोभताकरवी ८ । तितिक्षा परीषहनो जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० सत्यसनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनूं स्वस्थपणूं १३ । आचार सहित थईने मायानकरे १४ । विनय यक्तहोय मायानकरे १५ । अदीनपणूं १६ । सवेग संसारथीभय अथवा मोक्षनी इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

चारोपगतःस्या अमायांकुर्यादित्यर्थः १४ विनयोपगतोभवेन्नमायांकुर्यादित्यर्थः १५ धिइमईयत्ति धृतिप्रधानामतिर्धृतिमतिरदैन्य १६ सवेगोत्ति सवेगः ससा
राद्भयमोचाभिलाषोवा १७ पणिहित्ति प्रणिधिर्मायाशल्यंनकायमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठानं १९ सवरस्र आश्रवनिरोधः २० अत्तदोसोवसहरेत्ति स्वकीयदोष
स्यनिरोधः २१ सव्वकामविरत्तयत्ति समस्तविषयवैमुख्य २२ पच्चक्खाणेत्ति प्रत्याख्यानमूलगुणविषय २३ उत्तरगुणविषयच २४ विउसग्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावभे
दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ लवालवेत्ति कालोपलक्षण तेन क्षणे २ सामाचार्यनुष्ठानकार्यं २८ झाणसंवरजोगेत्ति ध्यानमेवसवरयोगो ध्यान
सवरयोगः २८ उदएमारणंतिएत्ति मारणांतिकेपिवेदनोदयेनक्षोभःकार्यः २९ संगाणयपरिन्नत्ति संगानांज्ञपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणउवए ॥ २ ॥ धिईमई य सवेगे । पणिहीसुविहिसंवरे ॥ अत्तदोसोवसहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥
पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमादेलवालवे ॥ ज्झाणे सवरजोगेय । उदएमारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणंयपरिन्ना

शुभ अनुष्ठान करिवो १९ । संवर आश्रवनिरोध २० पोताना दोषनो निरोध रोकिवो २१ । सर्वविषयथी विमुखपणो २२ । पचक्खाणनो करिवो २३ ।
व्युत्सर्ग द्रव्यथकी उपधीनो त्याग भावथकी त्रिणगौरवनो त्याग २४ । प्रमाद टालिवो २५ । क्रियानोकालें समाचरिवो २६ । धर्मध्यानादि करिवो २७ ।
संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपजे मननें क्षोभ न करिवो २९ । सगनी परिज्ञा स्वजनादिक संगनो पचक्खवो ३० । प्रायश्चित्तनो करिवो ३१ ।
आराधना करी मरे ३२ । एह बत्रीस योग संग्रह जाणिवा ॥ बत्रीस देवेंद्र कह्या ते कहे छे । चमरेंद्र १ । बलेंद्र २ धरणेंद्र ३ । भूतानेंद्र ४ । वेणुदेव ५ ।

२० पच्छित्तकरणेइत्ति प्रायश्चित्तकरणंचकार्यं २१ आराहणायमरणंते मरणरूपोन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्वात्रिंशद्योगसंग्रहाइति २२ इन्द्रसूत्रेयावत्करणाद्वेणु देववेणुदाली हरिकंते हरिस्सहे अग्गिसीहे अग्गिमाणवे पुण्णे वसिट्ठे जलकंते जलप्पहे अमियगइ अमियवाहणे वेलंबे पहंजणे घोसे महाघोसे इतिद्रष्टव्यम्पुनर्या वत्करणात् माहिंदेबंभेलंतएसुक्के सहस्सारेत्तिद्रष्टव्यमिद षोडशानांव्यन्तरेन्द्राणा षोडशानामेव या अणपण्णकादीन्द्राणामल्पेंद्रकत्वेनाविवक्षितत्वा दसंख्यातानामपिचंद्रसूर्याणां जातिमहणेनद्वयोरेवविवक्षितत्वाद्वात्रिंशदुक्ताइति। कुंथुनाथस्यद्वात्रिंशदधिकानि द्वात्रिंशच्छकेवलिशतान्यभूवन् द्वात्रिंशद्विधनाट्यमभिनयविषय

या। पच्छित्तकरणेविय॥ आराहणायमरणंते। बत्तीस जोगसंगहा॥५॥ बत्तीसं देविंदा प० त० चमरे बली धरणे भूआणंदे जाव महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए कुंथुस्सणंअरहओ बत्तीसं जिणसया होत्था सोहम्मेकप्पे बत्तीसं विमाणवाससहस्साणं प० रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे प०

वेणुदाली ६। हरिकांत ७। हरिशिख ८। अग्निशिख ९। अग्निमाणव १०। पूर्ण ११। वशिष्ठ १२। जलकान्त १३। जलप्रभ १४। अमितगति १५। अमित वाहन १६। वेलंब १७। प्रभंजन १८। घोष १९। महाघोष २०। चंद्रमा २१। सूर्य २२। शक्रेंद्र २३। ईशानेंद्र २४। सनत्कुमारेंद्र २५। माहेंद्र २६। ब्रह्मेंद्र २७। लांतकेंद्र २८। शुक्रेंद्र। २९। सहस्रारेंद्र ३०। प्राणतेंद्र ३१। अच्युतेंद्र। ३२। भवनपती ना इन्द्र २० सौधर्मेंद्रादिक इन्द्र १० ज्योतिषी ना २ एम ३२ यद्यपि ३२ व्यंतरेंद्र छे पणिते अल्पऋद्धिया तेमाटे न लख्या ज्योतिषी चंद्र सूर्य असंख्याता छे पणि जातिवाची लख्या कुंथुनाथ १७ मां अरिहंत ने ३२ से जिन केवली थया। सोधर्म पहिले कल्पे बत्तीस विमान रूप आवासनि विमान वास शत सहस्र कह्या। एतले ३२ लाख विमान

बत्तीसतिविहेणहे प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाण बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० जेदेवा बिजय बेजयंत जयंत अयराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमतिवा उस्ससंतिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं बत्तीसं वाससहस्सेहि आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेबत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुरकाणमंतं करि

कह्या । रेयती नक्षत्रना बत्रीस ताराकह्या । बत्रीसभेद नाटकना कह्या तेरायपसेणीथकी जाणवा । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनी बत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही । छेठेंसातमीपृथिवीयेंकेतलाएकनारकीनी बत्रीस सागरोपमनीस्थितिकही । केतलाएक असुरकुमारनी बत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही । सौधर्म ईशाने कल्पे केतलाएक देवतानी बत्रीसपल्योपमनीस्थितिकही । जे देवता विजय १ । वेजयत २ । जयत ३ ।अपराजित ४ । एहचिहुंअनुत्तरविमाने देवतापणेउपनाछे तेहदेवतानीबत्रीससागरोपमनीस्थितिकही । तेदेवता बत्रीसमे पखवाडे थोडोस्वासले घणोस्वासले ऊर्च स्वासले नीचोस्वासमूंक तेहदेवताने बत्रीसवर्षसहस्रेआहारनीवांछाउपजे । छेकेतलाएकभव्यजीव जे बत्रीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु.खनो अतकरिस्येमोक्षजास्ये ॥

वस्तुभेदा यथाराजप्रश्नकृताभिधाने द्वितीयोपांग इतिसम्भाव्यते द्वात्रिंशत्यात्रप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानकं तत्र आयः सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्यशातनाः खण्डनानिरुक्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्निकस्य बहुपर्यायस्य आसन्नमासत्ति र्यथारजोबलादिस्तस्यलगति तथागन्ताभवतीत्येवमाशातनाशैक्षस्ये त्येवंसर्वत्र पुरओत्ति अग्रतोगंताभवति सपक्खत्ति समानपक्षं समपार्श्वंयथाभवति समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थः चिठ्ठत्तिस्था ताश्रासिताभवति यावत्करणा इयाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याइहद्रष्टव्यास्ताश्चैवमर्थतः आसन्नपुरः पार्श्वतःस्थानेन तिस्रोऽन्ननिषीदनेनचतिस्रः तथाविचारभूमौ

स्संति ॥ ३२ ॥ तेत्तीसंआसायणाओ प० तं० । सेहेराइणिअस्स पुरओ गतान्नवइ आसाय णासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्खंगतान्नवइ आसायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स आसन्नंगतान्नवइ आसायणासेहस्स ३ एवंएएणंअन्निलावेणं सेहेराइणियस्स पुरओचिठ्ठित्तान्नवइ आसायणासेहस्स ४ सेहेरा इणियस्स सपक्खंचिठ्ठित्तान्नवइ आसायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स आसन्नंचिठ्ठित्तान्नवइ आसायणासेह

इति बत्रीसमोसमवाय थयो ॥ ३२ ॥ हिवेतेत्रीसमोसमवाय लिखियेछे । तेत्रीस आशातना । ज्ञानदर्शनचारित्रप्राप्तिनो लाभवो खडवो तेआ शातना कहो तेकहेछे । शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्निकघणो दीक्षानोधणी तेहने आसन्नो ढूंकडोगताहोय चालेएहपहिलीतेआशातनाशिष्यने १ ।रा त्निकवडानेआगलथकोगंताहोयचालेतेआशातनाशिष्यनें २ । रात्निकने सपक्खकहताबराबरीचालवोते आशातनाशिष्यने ३ । इम एणे अभिलापें शिष्यवडाने आगलऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ४ । शिष्यगुरुनेआगल ऊभोरहेतेआशातनाशिष्यने ५ । शिष्यगुरुने बराबरऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ६ । शिष्यगुरु

गतयोः पूर्वतरमाषमतः अवमार्शातना १० एवं पूर्वंगममनागमनमालोचयतः ११ तथारात्रौकोजागर्त्तीतिपृष्ठे रात्निकेनतद्वचनमप्रतिश्रृण्वतः १२ रात्निकस्य।

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरत्तोनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपक्खंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसन्नंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएएणअभिलावेणं सेहेराइणिएणंसद्धिंवहिया विहारभूमिनिक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसीहतराए आयामइपच्छाराइणिए आसा यणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसद्धिं बहियाविहारभूमि वा निक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसीहतराएआलोएइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सराओवावियालेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत त्थसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पडिसुणेत्ताभवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुव्वं सलवत्तए तंपु

मे आगलथको वेसे तेआशातनाशिष्यने ७। शिष्यगुरूने बराबरे वेसे तेआशातनाशिष्यने ८। शिष्यआसन्नंकहतां ढुकडोथकोवेसे तेआशातनाशिष्यने ९। एवएणी भाभिलापे ८। आशातना। शिष्यगुरूवेहुफेरंगयाथका तिहांशिष्यपहिलेआचमनलेई जलशुचि करे तेआशातनाशिष्यने १०। शिष्यगुरूसाथें बहिर्भूमिथंडिलें चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकायें जातांथका पहिलेशिष्य इरियावही पडिकमे पछेगुरूपडिकमे तेआशातना शिष्यने ११। शिष्यगुरूनेपहिलेंहीज आवणहा रसाथे गुरु बोल्याविना बोले तेआशातना शिष्यने १२। शिष्य प्रतें गुरूयें पूछ्यो कवण रात्रियेसूतोछे अथवा कवण जागेछे एहवं पूछेथके शिष्य जागतो थ

पूर्वमालपनीय कथनभवमस्यपूर्वतरमालपतः १३ अशनादिलब्धमपरस्य पूर्वमालोचयतः १४ एवमन्यस्योपदर्शयतः १५ एवंनिमंत्रयतः १६ रात्निकमनापृच्छ्या ऽन्यस्मैभक्तादिददत. १७ स्वयप्रधानतर भुजानस्य १८ क्वचित्प्रयोजनेव्याहरतो रात्निकस्यवचवाप्रतिशृखवतः १९ रात्निकमतितल्लमचताप्रहताश्रब्देन बहुधा

सेहामेवसीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १३ सेहे० असणंवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा पडिगाहित्ता तपुव्वामेवसीहतराएगिहस्सआलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणासेहस्स १४ सेहेअसणवा४ पडिगाहित्तापुव्वामेवसीहतराएगिहस्सपडिदसेइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १५ सेहेअसणवा४पडिगा हित्ता पुव्वामेवसीहतराएअन्नस्स उवणिमंतेइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १६ सेहेराइणिएणंसद्धिंअस णवा४पडिगाहित्तातराइणियं अणापुच्छित्ता जस्सजस्सइच्छइ तस्सतस्सखद्धं२दययइ आसायणासेहस्स१७

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्यने १३ । शिष्यअशनपान खादिम स्वादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलोईनेपछे गुरुनेआगलआलोवे तेआशातना शिष्यने १४ । शिष्यअशनपान खादिमस्वादिम विहरीनेपेहिले बीजासाधुने देखाडेपछे गुरुने देखाडे तेआशातना शिष्यने १५ । शिष्य अशनपान खादिम स्वादिम विहरीने पहिले बीजासाधुने निमंत्रणादे पछे गुरुने निमन्त्रे तेआशातना शिष्यने १६ । शिष्यगुरु साथे अशन पान खादिम स्वादिम विहरीने गुरु ने अण पूछे यको जेजे साधुवांछे तेह तेहने आपे तेआशातनाशिष्यने १७ । शिष्य गुरुने साथे असनपान खादिम स्वादिम विहरीने मनोज्ञमनोज्ञ स्निग्धस्नि

भाषमाणस्य २० ब्याहृतोनमस्तकेनवन्दे इतिवक्तव्येकिंभणसीतिभुवाणस्य २१ प्रेरयतिराभिके कस्त्वंप्रेरणायामितिवदतः २२ आचार्यग्लानंकिंनप्रतिचरसीत्या युक्ते त्वंकिंनतंप्रतिचरसीत्यादिभणतः २३ धर्मंकथयतिगुरावन्यमनस्कतां भजतोऽनुमोदयतइत्यर्थः २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदतः २५ धर्मकथामाच्छिदतः

सेहेराइणिएणंसद्धिंअसणंवा ४ आहारेमाणे तत्थसेहे रुक्खं रुक्खं झायं झायं रसियं रसियं उसढं उसढं मणुन्नं मणुन्नं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्खं लुक्खं आहारेत्ता भवइ आसायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स बाह रमाणस्सअप्पडिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं खद्धं खद्धं वत्ताभवइ आसायणासेहस्स २० सेहेराइणियं किंवइत्ताभवइ आसायणासेहस्स २१ सेहेराइणियंतुमंइइवत्ताभवइ आसायणासेहस्स २२ सेहेरायणियं तज्जाएणं तज्जायंपडिभणित्ताभवइ आसायणा० २३ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसु

मध रूचरूच आप भोजनकरे ते आशातना शिष्यने १८। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको वलतो उत्तर न आपे ते आशातना शिष्यने १९। शिष्य गुरुयें बोलाव्यो यको ठामे बेठोथको उत्तर दे ते आशातना शिष्यने २०। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको मत्थेण वंदामि एहने स्थाने शूंकहोछो एहवूं बोले ते आशातना शिष्यने २१। वडायें प्रेरणाकरतां कांईक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तूं कोण प्रेरणा करणहार एहवो बोले तेआशातना शिष्यने २२। शिष्यप्रते वडाये ग्लान आचा र्यनी पर्युपासना केमनथी करतो एम कहतांथकां तूं केमनथी करतो एहवूं बोले ते आशातना शिष्यने २३। गुरुयें धर्मोपदेश करतांथकां अन्यचित्त होय तेणे जेशिष्य अनुमोदे ते आशातना शिष्यने २४। शिष्य गुरुयें काइएक वार्ता कहतांथकां तम्हे भूली गयाछो एमनथी एमछे एहवो बोले ते आशातना

२६ भिक्षावेलावर्त्ततेइत्यादिवचनतः पर्षदभिंदानस्य २७ गुरुपर्षदभेदोत्थितायास्तथैवव्यवस्थितायां धर्मंकथयतः २८ गुरोः संस्तारकंपादेनघट्टयतः २९ गुरोः संस्तारकेनिषीदतः ३० उच्चासनेनिषीदतः ३१ समासनेप्येव ३२ भयस्मिन्नत्तमासूत्रोक्ताच रात्रिकस्यालपतस्तत्रगतएवासनादिस्थितएव प्रतिशृणोति

भिणेन्नवइ आसायणासेहस्स २४सेहेरायणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसरसि एववत्ताभवइ आसायणा०२५ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स कहआच्छिदित्ताभवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराइणियस्स कहकहेमाणस्स परिसभित्ताभवइआसायणासेहस्स २७ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स तीसेयपरिसाए अणुठिआए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपितच्चंपि तामेवकहंकहेत्ताभवइ आसायणासेहस्स २८ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथारगंपाएणं संघट्टित्ता हत्थेणंअणुन्नवेत्तागच्छइआसा० २९ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथारए चिठित्ता वा निसीइत्ता तुयट्टित्तावा आसा० ३० सेहेराइणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा चिठित्तावा निसीइत्तावा तुयट्टित्तावा भवइआसायणासेहस्स ३२ सेहेराइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

शिष्यने २५। जेशिष्य गुरुयें धर्मकथा कहता थका धर्मकथानो छेदन करे ते आशातना शिष्यने २६। शिष्य गुरु सभाये बेठा थका भिक्षानी वेलाथई इत्यादि कहीने पर्षदानो भेदकरे ते आशातना शिष्यने २७। शिष्य गुरु सभायें बेठा थका पर्षदाप्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना शिष्यने २८। शिष्य गुरुना आसनप्रतें पांवसकी संघट्टकरे ते आशातना शिष्यने २९। शिष्य गुरुने आसनें बेसे ते आशातना शिष्यने ३०। शिष्य गुरु थकी ऊंचे आसने बेसे ३१।

आगत्यहिप्रत्युत्तरंदेयमिति श्रयस्याशातनेति ३३ तेत्तीसंभोमत्ति भौमानिनगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंसूरिएइत्यादि इहसूर्यस्यमण्डलयो
रतरे द्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्विगुणपचयोजनानि पचत्रिंशच्चैकषष्ठिभागा एतावताऽऽनविष्कम्भ सर्वबाह्यमण्डलाद्वितीयं मण्डलभवति
ततश्चवृत्तत्वेनपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकषष्ठिभागैर्न्यून द्वितीयमडलसर्वबाह्यमडलाद्भवति एवत्तृतीयमडले एतद्विगुणेनहीनभ
वति तथाहि तद्विष्कम्भतएकादशभिर्योजनै नवभिश्चैकषष्ठिभागै. पर्यन्तिमाद्धीनभवति परिधितस्तुपचत्रिंशतायोजनैः पचदशभिश्चैकषष्ठिभागैर्न्यूनभवति तच
चौणिलचाणि अष्टादशसहस्राणि द्वेशतएकोनाशीत्युत्तराःपट्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाइति तथान्तिममडलान्मडलेद्वाभ्यामुहूर्त्ताभ्यैकषष्ठिभागाभ्यांदिनवृद्धिर्भ
चेत्रपक्खिणित्तात्नवइ आसायणासेहस्स ३३ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचचाएरायहाणीए एक्क
मेक्कबाराएतेत्तीस २ भोमा प० महाविदेहेण वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० जयाणंसू
रिए वाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ताणं चारंचरइ तयाण इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से
गुरुने समान आसने बैसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुयें कांइक वार्ता पूछ्यां थका आसने बेठांई उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एह तेत्रीस आशा
तना कही ३३ ॥ असुरेंद्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेंद्रनी चमरचचा राजधानीने विषें एकेकें वारें तेत्रीस तेत्रीस नगरने आकारें भला स्थानक
कह्या । जबूद्वीप सबधी महाविदेहक्षेत्र तेत्रीस हजार योजन झाझेरो पिहुलपणें कह्यो । जिवारें सूर्य सर्वबाह्य मडल थकी त्रीजे मडले आवीने भ्रमणकरे
तिवारें भरतक्षेत्रगत मनुष्यने तेत्रीस हज़ार योजनथकी दृष्टिगोचर आवे । ते पोसी पूनिमे मकर सक्राति पछें माह बदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायणे

यादिति ॥ ३२ ॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानकं किमपिलिख्यते बुद्धाइसेसंति बुद्धानांतीर्थंकतामप्यऽतिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषाः अवस्थितमट्ठाि

असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहि आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेतेत्तीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंबुद्धाइ

अप्पइट्ठाण नरकें नारकीनी जघन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। विजय १ वेजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्रीस सागरोपमनी स्थितिकही। जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता तेत्रीस पखवाडे गयेथकें स्वासोस्वासले घणोले उचोले नीचो मूंके तेह देवतानें तेत्रीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे। छे केतला एक भव्यजीव जे तेत्रीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्ष जास्ये। इति तेत्रीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

१ निरामया नीरोगा निरुपलेपा निर्मला गात्रयष्टिस्त्

स्वभावंकेशाश्शिरोजाः स्मश्रूणिचकूर्चरोमाणिचशेषशरीरलोमानि नखाश्चप्रतीताइतिद्वन्द्वैकत्वमित्येकः १ निरामया नीरोगा निरुपलेपा निर्मला गात्रयष्टिस्त् गुलतेतिद्वितीयः २ गोक्षीरपाण्डुरंमांसशोणितमितितृतीयः ३ तथापद्मचकमलगन्धद्रव्यविशेषोवा यत्पद्मकमितिरूढं उत्पलंच नीलोत्पलमुत्पलकुष्टंवा गन्धद्रव्य विशेषस्तयोर्यौगन्धः सयत्रास्ति तत्तथोच्छ्वासनिःश्वासमितिचतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हारं अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यमसच मांसचक्षुषा नपुनरवध्यादिलोचनेन इतिपंचम ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्कंजन्मप्रत्यय आकाशकंचक्रंषष्ठ तथाआगाशगतव्योमवर्ति आकाशकंवा प्रकाशमि

सेसा प० तं० अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलठ्ठी २ गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६

अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनी अपेक्षाये अधिक पणो कह्या तेकहेछे।

हिवे चौवीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौवीस बुद्ध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनी अपेक्षाये अधिक पणो कह्या तेकहेछे। पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वा वधेनहीमस्तकनाकेश श्मश्रूडाढीमूछ शरीरनारोम । नीरोगवलीनिर्मलशरीर २ । गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३ । पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वा सोस्वास नो गंध ४ । अदृश्यदीसेनही मांस चक्षुयेंकरी येतले चर्मचक्षुयेकरी, एहवोप्रछन्नगुप्त आहार जीमणनोविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५। एणी येछद्मस्थदृष्टीयें येपाचअतिशयथया । तेमाहिपहिलो मूकीवीजाथकीपचमालगें चारअतिशय जन्मथकी मांडी ने होय ५। जेहनोआकाशगत धर्मचक्रचा ले ६ । आकाशगत छत्र ७ । आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८ । आकाशनीपरें अत्यंत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९ । आका

त्यर्थः चक्रंधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशकेछत्रमितिसप्तमः एवमाकाशगछत्रंछत्रत्रयमित्यर्थः ७ आकाशकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णकेइत्यष्टमः ८ आगा सफालियामयत्ति आकाशमिवयदत्यत मच्छंस्फटिकं तन्मय सिंहासनसहपादपीठमितिनवम ९ आगासगओत्ति आकासगतोऽत्यर्थतुङ्ग मित्यर्थः कुडिभित्तिल घुपताका. सभाव्यन्ते तत्सहस्रे. परिमंडितश्चासावभिरामश्चातिरमणीय इतिविग्रह. इदज्झओत्ति शेषध्वजापेचयातिमहत्वादिन्द्रश्चासौध्वजश्च इन्द्रध्वजइति पुरओत्ति जिनस्याग्रतोगच्छतीतिदशमः १० चिठ्ठतिवानिसीयतिवेत्ति तिष्ठतिगतिनिवृत्त्यानिषीदत्युपविशतितक्खणादेवत्ति तत्क्षणमेवाकालहीनमित्यर्थः पत्रैः संच्छिन्नइतिवक्तव्येप्राकृतत्वात् संच्छन्नपत्रइत्युक्त सचासौपुष्पपल्लवसमाकुलश्चेतिविग्रहः पल्लवा अंकुराः सच्छत्र सध्वजः सघंट. सपताकोऽशोकवरपादप

आगासगयं छत्तं ७ आगासगयाउ सेयवरचामराउ ८ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगा सगउ कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इदज्झउ पुरउ गच्छइ १० जत्थ जत्थ वियणंअरहंताभगवंताचिठं तिवा निसीयतिवा तत्थ तत्थ वियणं तक्खणादेव सछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सछत्तो सज्झउ सघंठो सपडा

अगत एतले अत्यतउचो लघुपताकाना सहस्रकरी परिमंडित मनोहर एहवोइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेचायें मोटो तेमहेंद्रध्वजजिननेआगलथकी चाले १० । जिहा जिहा अरहत भगवत उभारहे अथवा वैसे तिहातिहा तत्काल पत्रे करीछायो अने फूलपल्लवकरी सर्वतः व्याप्त ध्वजासहित घटापताका सहित वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरें ११ । वेगलो थोडोपूठे मस्तकने प्रदेशे तेजमंडल भामडल होय तेभामडल अंधकारने दसोदिशि नसाडे १२ । जिहा

त्येकादश: ११ ईसित्ति ईषदल्प पिठ्ठओत्ति पृष्ठत: पश्चाद्भागे मउडठाणमिति मस्तकप्रदेशेतेजोमण्डलं प्रभापटलमितिद्वादश: १२ बहुसमरमणीयोभूमिभाग इतित्रयोदश: १३ अहोसिरत्ति अधोमुखा: कटका भवतीति चतुर्दश: १४ ऋतवोविपरीता: कथमित्याह सुखस्पर्शाभवतीति पंचदश: ५१ योजनयावत् क्षेत्र शुद्धि: संवर्त्तकवातेनेति षोडश: १६ जुत्तफुसिएणत्ति उचितबिन्दुपातेनेति निहयरयरेणुयति शातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भूवर्त्तीतुरेणुरिति गंधोदकवर्षाभिधा न:सप्तदश: १७ जलस्थलज यद्भास्वरंप्रभूतच कुसुमतेनवृंतस्थापिताऊर्द्धमुखेनदशार्द्धवर्णेन पंचवर्णेनजानुनोरुत्सेधस्य उच्चत्वस्ययत्प्रमाण यस्यसजानूत्सेधप्रमाणमा

गोच्छसोगवरपायवे अन्निसंजायइ ११ ईसिपिठ्ठउ मउडठाणंमि तेयमंडलं अन्निसंजायइ अंधकारे वियणं दसदिसाउ पन्नासेइ ११ बहुसमरमणिज्जे न्नूमिन्नागे १३ अहोसिरा कंटया जायति १४ उऊविवरीया सुहफासा न्नवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरन्निणामारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वउ समता संपमज्जिज्ज

तीर्थंकर विहारकरे तिहा वणीसम रमणीक भूमिभाग होय १३। जेणें मार्गें तीर्थंकर विहारकरे कांटा अधेमस्तकेहोय १४। ऋतु विपरीत एतले उष्णा लायें शीयालानोभाव शीयालायेउष्णालानोभाव तेमाटें सुखरूपस्पर्शहोय १५। शीतल सुखस्पर्श सुगंधि ठाढो मंद गंधयुक्त एहवा संवर्तवायरेकरी एकयोज नमंडललगे सगली दिसाविदिसा प्रमार्जें १६। जेणे मार्गें तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेंमेघआकाशवर्तीरज भूमिवर्तीरेणु गंधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म बिंदु ये करीनसाडे १७। स्थल कुसुम तेचपाजाईप्रमुख जलकुसुम तेकमलादिक भास्वर तेजवंत प्रभूतघणा नीचाढ़ेवींट जेहना एतलेऊर्द्धमुखे पांचवर्णं फूलेंकरीढीं

न: पुष्पोपचार: पुष्पप्रकरइत्यष्टादश: १८ तथाकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धयाभिरामे भवइत्ति कालागुरुर्गंधद्रव्यविशेष: प्रवरकुंदुरुक्कश्चचीडा
भिधान गंधद्रव्यतुरुक्कंचशिल्हकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्ततएतल्लक्षणो योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलसौरभ्यो योगधउद्धुतउद्भूतस्तेनाभिराममभिरमणी
ययत्तत्तथा स्थाननिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकोनविंशतितम: १९ तथाउभयोपासिंचणं अरहंताणं भगवताण दुवेजक्खाकडयतुडियथंभियभुयाचामरुक्खेव
ण करंतित्ति कटकानिप्रकोष्टाभरणविशेषास्तुटितानि बाह्वाभरणविशेषास्तैरतिबहुलेनस्तंभिताविवस्तंभितौभुजौययोस्तौ तथायचौदेवावितिविंशतितम: २०
वृहद्वाचनायामनंतरोक्तमतिशयद्वयनाधीयते अतस्तस्यापूर्वेष्टादशैव अमनोज्ञानांशब्दादीनामपकर्षोऽभावइत्येकोनविंशतितम: १९ मनोज्ञानांप्रादुर्भावइति
विंशतितम: २० पव्वाहरओत्ति प्रव्याहरतोव्याकुर्वतोभगवत: हिययगमणीउत्ति हृदयगम: जोयणनीहारीत्ति योजनातिक्रमी स्वरइत्येकविंश: २१ अद्धमाग

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ १७ जलथलयभासुरपभूतेणं विंटठावियदसद्धवन्नेणं
कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं अवकरिसो
भवइ मणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ १९ उभओ पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवे

चणना जंचप्रमाणमात्रे फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८। खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गंधनो अभाव होय १९। मनोहर शब्दस्पर्शरसरूपगंधनो प्रादुर्भाव होय
सिद्धांत मूलमतोयें वलीवाचनांतरे कृष्णागुरुप्रमुख धूपउखेवे विहूंपासे वेयचजभा चामरउखेवे २०। वखाण करतां भगवंतनो हृदयंगम अनेसोहामणोयोज

हीयत्ति प्राकृतादीनाषषांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणार्द्धमागधीत्युच्यते तयाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश. २२ भासिज्जसाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणति आर्यानार्यं देशोत्पन्नाना द्विपदा मनुष्याश्चतुष्पदागवादय मृगाअटव्या. पशवोग्राम्या. पक्षिण प्रतीता' सरीसृपा उर.परिसर्पाभुजपरिसर्पाश्चेति तेषाकिमात्मनआत्मातया आत्मीयत्वेत्यर्थ. भाषा तया भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्ध. किंभूतासौभाषेत्याह हितमभ्युदय' शिवंमोक्ष. सुखश्रवणकालोद्भवमानन्ददातीतिहितशिवसुखदेतिचयोविंश. २३ पूर्वभवांतरेऽनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्ध निकाचित वैरमभिन्नभावोयेषांतेतथा तेपिच आसतामन्येदेवावैमानिका असुरानागाश्चभवनपतिविशेषा.

जक्खा कणगतुकिंपुरिसगरुलागंधव्वमहोरगा २० पल्हायंति वियणं हियगमणीअं जोयणनीहारी सरो २१ भगवंचणं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ २२ सावियणं अद्धमागहीभासा भासिज्जमाणी तेसिसव्वेसि आरियमणारियाणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं अप्पप्पणोहियसिवसुहदायभास

नलगे विस्तरतो शब्दहोय २१। भगवंत छ भाषामाहि अर्द्धमागधीभाषायेकरी धर्मप्रते कहे २२। तेहीजपणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनाउप नानेद्विपदमनुष्यने चतुष्पदगवादिकने मृगअटवीजीव पशुग्रामसबधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्मानेहित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनंदतेहने देएहवी भाषापणे परिणमे २२। भवांतरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकबद्धनिकाचित वैर बाध्या जेणे एहवादेव मावैनिका १। असुरनागकुमार एहभवनप तीदेव सुवर्ण शोभनवर्णोपितते ज्योतिषीयक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष एह चारव्य..र विशेष गरुडलाञ्छनपणायकी सौपर्णकुमार भवनपति विशेष गंधर्वमहोर

सुवर्णाःशोभनवर्णा एतेचज्योतिष्कायचराक्षसकिन्नरा.किंपुरुषाःव्यंतरभेदाःगरुडागरुडलांछनत्वात् सुपर्णकुमाराभवनपतिविशेषा गन्धर्वामहोरगाश्चव्यंतरवि शेषाएव एतेषाद्वंद्वः पसतचित्तमाणसा प्रशांतानिसमग्रतानिचित्राणि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यंतःकरणानियेषांते प्रशातचि त्तमानसा धर्मनिशामयति इतिचतुर्विंशः २४ वृद्धवादतयाइदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वदंतोभगवंतमितिगम्यते इतिपंचविंशः २५ आगताः संतोऽर्हतः पादमूले निःप्रतिवचनाभवति इतिषड्विंशः २६ जत्रोजत्रोवियणति यत्रयत्रापिचदेशे तत्रो २ त्ति तत्रतत्रापिच पंच विंशती योजनेषु ईतिर्धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिसप्तविंशः २७ मारिर्जनमरकइत्यष्टाविंशः २८ स्वचक्र स्वकीयराजसैन्य तदुपद्रवका

ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेरावियणं देवासुरनागसुवन्नजरकरकसकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाअरहत्त पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अन्नउच्छियपावयणिया वियणमागया वदंति २५ आगया समाणा अरहत्त पायमूले निप्पडिवयणाहवंति २६ जत्त जत्त वियण अरहंतो भगवतो विहरति तत्त तत्त

गन्यतरविशेष एहसगला वैरभावछाडीने अरिहतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशांतथयोछे चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रतेंसाभले २४। अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाधणीतेहीपणिआव्याथकाभगवतप्रते वादे २५। तेहअन्यशास्त्रनावादीप्रतिवादीआव्याथका अरिहतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थथया २६। जेणेप्रदेशे अरिहत भगवतविहरे विचरे तिहा योजन पचवीसलगे ईति धान्यादिउप द्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७। मारी लोगमरकीनहोय २८। स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकरे २९। परचक्र परदेशी कटकनो भयनहोय ३०।

रिनभपतीति एकोनत्रिंशः २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितित्रिंशः ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षप्रत्येकत्रिंशः ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावइतिद्वात्रिंशः ३२ दुर्भिक्षं दुःकालइतित्रयस्त्रिंशः ३३ उप्पाइयावाहित्ति उत्पातानिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तद्धेतुकाये अनर्थास्तेऽपि तथा व्याधयो ज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति चतुस्त्रिंशत्तमः ३४ अन्यच्च पव्वाहरओइत प्रारभ्यये भिहिताश्चे प्रभामंडलचक्रभेवयस्ताः शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृतादृति एतेचयदन्यथापिदृश्यंते तन्मतांतर मेवमतव्यमिति चक्कवट्टिविजयत्ति चक्रवर्त्ति विजेतव्यानिक्षेत्रखंडानि उ ग्गोसेणंएएचोत्तीस तित्थगरासमुप्पज्जतिति समुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थः नत्थिकासमशेजा

वियणं जोयणपणवीसाएणं ईती नजवइ २७ मारी नजवइ २८ राचक्का न जवइ २९ परचक्कं न जव इ ३० अइवुठी न जवइ ३१ अणावुठी न जवइ ३२ दुभिक्ख न जवइ ३३ पुव्वुप्पन्नाविसणं उप्पाइया

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनहोय ३१। अनावृष्टि अवर्षणनहोय ३२। दुर्भिक्षकालनहोय ३३। पूर्वे उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा व्याधि ज्वरादिक तत्कालेंज उपशमे ३४। एह एकावीसमाथकीमांडी चौवीसमालगे अनेप्रभामंडल एतला अतिशय कर्मक्षयथकीहोय शेषवीजाभवप्रत्यय थकी वीजादेवकृतछे मतांतरे अन्यथा पणिछे। एहचौत्रीस अतिशयकह्या॥ जंबूद्वीपनेविषे चौत्रीस चक्रवर्तीने जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखं ड तेचक्रवर्तिविजय कह्या तेकहेछे। मेरुथकी पूर्वापर महाविदेहेंमिली ३२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिली विजयखंड ३४ जंबूद्वीपनेविषे ३४। दीर्घवैताढ्यकह्या बत्रीस महाविदेह विजयना ३२। भरतऐरवतना २ एव जंबूद्वीपनेविषे उत्कृष्टपणे ३४। तीर्थंकरउपजे विदेहना बत्रीसविजय भरतऐरवत ना २ एवं ३४ एकसमेंजघन्यअन्योचारहोय शीताशीतोदाने बिहुंकांठे एकसमगें चेवेहोय प्रवर्तता ३४ कह्या। महाविदेहेरात्रीयेंतिवारे भरतऐरवते दिवस

यन्ते चतुर्णामिवैकदाजन्मसंभवात्तथाहि मेरौपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनेभवतोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरेवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो स्तदानीदिवससद्भावा न्नभरतैरावतयोजिनोत्पत्तिरर्द्धरात्रएवजिनोत्पत्तेरिति पढमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांत्रिंशन्नरकावासानाल क्षाणि पंचम्यांत्रीणिषष्ठ्यांपंचो नलक्षं सप्तम्यां पंचनरका एवं सर्वं मीलने चतुस्त्रिंशल्लक्षाणिभवंतीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे

वाही खिप्पामेवउवसमंति ३४ जंबूद्दीवेणंद्दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो नरहेरवए जंबूद्दीवेणद्दीवे चोत्तीसंदीहवेयड्ढा प० जंबूद्दीवेणंद्दीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं नवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमछठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प०

होय अनेहांरात्रिहोय तिवारें तिहां दिवसहोय। तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्रीसनो जन्मसमकालेनकह्यो। मेरुनो पूर्वपश्चिम शिलात लने उपर दोयदोय सिंहासनछे एहथी बेबेनो होज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो। असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवास शतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या। पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छठीयें पांचजणा एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिली चौत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्रीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैंत्रीसमो समवायलिखेछे पैंत्रीस सत्यवचनना अतिशयकह्या। संस्कारवचन संस्कृतलक्षणवत्तपणो १। उदात्तत्व ऊंचेस्वरेंबोलवो २। उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल

न दृष्टा एतेतुग्रंथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंद्विगुणवद्वाच्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६ अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविधं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदारं २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उपगतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताछिन्नकौतूहलम् २६ अद्भुतं २७ अनतिविलंबितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिगृहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति। वचनम् महानुभावैर्वक्तव्यमिति तत्रसंस्कारवत्वसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्वृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्राम्यता ३ गंभीरशब्दंमेघस्येव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वंसरलत्वम् ६ उपनीतरागत्वं मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाअतिशयाः अन्येत्वर्थाश्रयास्तत्रमहार्थत्वम् बृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम् पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वंअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तु:शिष्टतासूचकत्वं वा १० असंदिग्धत्वं असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणाविषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

वो ३। गंभीर छांडेस्वरेबोलवो ४। बोलतां प्रतिशब्दहोय ५। सरसवचनबोलवो ६। मालकोसादि राग सहित स्वरे बोलवो ७। थोडेवचनें अर्थघणोएहवूं बोलवो ८। पूर्वापर विरोध रहित ९। सिद्धांतनो प्रतिपादक १०। संदेह रहित ११। अनेरावादीना वचने पराभवे नही १२। सांभलहारनो मनहरे १३। दे

स्तत्वम् सुसंबंधस्यसतः प्रसरणं अथवाऽसंबद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परेण पदानां वाक्यानांवासापेक्षता १७ अभि
जातत्वच्चुः प्रतिपाद्यस्येवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २० अ
र्थधर्माभ्यासानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वगुंफगुणविशेषवा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्ला
घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्लाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिंगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्रोतॄ
णा जनितमविच्छिन्न कौतुक येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबितत्वचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तृ
मनसोभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवाभिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितरोषभयाभिलापादिभावानां युगपद्वासकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्त
यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा

प्रकालें उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकारी अणमिलतोनहोय १५। कहिवाने वस्तुने अनुसारेहोय १६। पहिलापदने पाछिलूंपद सापेक्षपणेबोलवो १७
प्रत्यक्ष समभवायोग्य बात कहिवी १८। घृतगुडनीपरे मधुर अनुभवे १९। अनेराना मननेव्यथा नकरे एहवो २०। अर्थ धर्म सहित बोलवो २१। उत्कृष्ट
अर्थनूं कथक २२। परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३। प्रसंसा करवा योग्य २४। कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकरे २६
बोलता उतावलोनहोय २७। रहो रही ने अक्षर उच्चारण करवूं एहदोषरहित २८। भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुयें सबद्ध क्रोधभयादि रहित बोल
वो २९। जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिवो ३०। वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षाये बोलवो ३१। वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२।

तथा गोलवट्टत्ताववर्त्तुलायेसमुद्गकाभाजनविशेषास्तेषु। जिणसकहाउत्ति जिनसक्थीनि तीर्थंकराणांमनुजलोकनिर्वृतानांसत्कान्पस्थीनिप्रज्ञप्तानीति बीयचउत्थी
त्यादि द्वितीयपृथिव्यांपचविंशतिर्नरकलक्षाणिचतुर्थ्यान्तुदशेति पचविंशत्तानीति ॥ ३५ ॥ षट्त्रिंशस्थानकंस्पष्टमेव नवरं चैत्राश्वयुजोर्मासयोः

रिंच ऋद्धतेरसऋद्धतेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसजोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणस
कहाउ प० बितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३५ ॥ छत्ती
सउत्तरज्झयणा प० तं०। विणयसुयं १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ ऋसंखयं ४ ऋकामसकाममरणिज्जं ५
पुरिसविज्जा ६ उरब्भिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० बहुसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं
१२ चित्तसंभूय १३ उसुयारिज्जं १४ सभिक्खुगं १५ समाहिठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८

वीतरागनी दाढा कही बीजीपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी बिहुंनामिली ३५। नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले बीजीयें २५। लाख नरकावासा
चौथी यें १० लाख नरकावास कह्या ॥ एह पैंत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छत्रीसमो समवाय लिखेछे। छत्रीस उत्तराध्ययनना अध्य
यन कह्या तेकहेछे। पहिलो अध्ययन विनयश्रुत १। परीसहाध्ययन २। चउरंगीयो ३। असंखय ४। अकाम सकाम मरणाय ५। अविद्यावतपुरुषनो ६
उरभिकबोकडानो ७। कपिलकेवलीनो ८। नमिप्रव्रज्यानमिराजानो ९ द्रुमपत्रकनो १० बहुश्रुतपूजानो ११। हरिकेशीबलनो १२। चित्रसभूतिनो १३
इषुकारियराजानो १४। भिक्षु अध्ययन १५। समाधिस्थानक १६। पापश्रमणनो १७। सयतीराजानो १८। मृगापुत्रनो १९। बलीअनाथीनो २०।समुद्र

सकृदेकदापूर्णिमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिकां पदत्रयमाना मान्हच चेत्तासोएसुमासेसुतिपया

मियाचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्ज २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ २४ जन्नतिज्ज २५ सामायारी २६ खलुंकेज्ज २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गो ३० चरणविही ३१ पमायठाणाइ ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयण ३४ अणगारमग्गो ३५ जीवाजीवविभत्तीय ३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुहम्मा बत्तीसजोयणाइं उड्ढउच्चत्तेणं होत्था समणस्सणं भगवउ महावीरस्स बत्तीस अज्जाणंसाहस्सीउ होत्था चेत्तासोएसुमासेसु सइबत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

पालनो २१ । रथनेमीनो २२ गोतम गणधर केशीअणगारनो २३ । सुमति गुप्तिनो २४ । जयघोष विजयघोषनो २५ । समाचारीनो २६ । खलुकीय गर्गाचार्यनो २७ । मोक्ष मार्गनो २८ । अप्रमादनो २९ । तप मार्गनो ३० । चरण विधिनो ३१ । प्रमादस्थानकनो । ३२ । कर्मप्रकृतिनो ३३ । लेश्याध्ययन ३४ । अणगारमार्गनो ३५ । जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन ऊंची कही । श्रमण तपस्वी भगवत श्रीमहावीरने छत्रीस आर्यांना सहस्र थया । एतले छत्रीस सहस्र साधवी हुई । चैत्रअने आसोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने छत्रीसे अंगुले सूर्य नक्षत्र पौरुषी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाणे त्रणनी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया त्रिणनी होय

हीइपोरसीति ॥ ३६ ॥ सप्तत्रिंशस्थानकम् पिव्यक्तम् नवरम् कुंथुनाथस्येहसप्तत्रिंशद्गणधराउक्ता आवश्यकेतुपञ्चत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमवतादिजीवयोरुक्तप्रमाणसम्बादगाथा सत्ततीससहस्सा छच्चसयाजोयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किंचूणासोलसकलायत्ति कलाएकोनविंशतिभागोयोजनस्येति तथाविजयादीनिपूर्वादीनिजंबूद्वीपद्वाराणि तन्नायकास्तन्नामतोदेवास्तेषाराजधान्यस्तन्नामिकाएव पूर्वादिदिक्षुइतोऽसंख्येयतमे जंबूद्वीपइति चुद्रि

बायंनिवत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणंअरहओ सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्था हेमवयएरन्नवयाओणं जीवाओ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्चचउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारे पोरुषी होय। इति छत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३६ ॥ हिवे सैंत्रीसमो समवाय लिखे छे॥ कुंथुनाथ अरिहंत ने सैंत्रीस गच्छ। अने सैंत्रीस गणधर कह्या। आवश्यकें पैंत्रीस सांभलियेंछे तेमतांतरछे। हिमवंत चेत्र १। ऐरवत २। एहवेहु युगलचेत्रनो जीवा सैंत्रीस सैंत्रीस योजन सहस्र छ से चिहुत्तरियोजन ३७६७४। १९ कला ऊपरि १६ भाग उगणीसभाग छाइआ एक योजनना काइक विशेषऊणी लांबपणे कही। सगलाई जंबूद्वीप ना पूर्वादि दिशे चार पोलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूर्वे विजय दक्षिणे वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैंत्रीस योजन ऊंच पणे कह्यो। चुद्रिकायें लहडीयें विमान प्रविभक्ती कालिकश्रुत विषे पहिले वर्गें सैंत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदीठ उद्देशाना काल कहतां अवसरकह्या। आ

कायां विमानप्रविभक्तीकालिकश्रुतविशेषस्तत्र किलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्येकालाइति यद्यश्वयुजः पौर्णमा स्यांपट्‌त्रिंशदगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामगुलस्य वृद्धित्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशस्थानकव्या त्तमेव नवरं धणुपिठ्ठंत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यत तत्पर्यंतभूतेसरलप्रदेशपङ्क्तीतु जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तथाअत्थसत्ति अत्थोमेरुर्यतस्तेनां

तीसं सत्ततीसं जोयणाइ उड्ढउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएण विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण काला प० कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता ण चारंचरइ ॥ ३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजोपूनिमे हस्त प्रमाण त्टणनो छाया मापीये ३६ अगुलें पोरुषी होय अने अगुल सत्तरेण सातेदिने एकेक अगुल छाया वधारिये तिवारें कार्तिक कृष्ण सातमी दिने सूर्य सैत्रीस अगुल पौरुषी छाया प्रते निवर्तावीकरीने चारप्रते करे। इतिसैत्रीसनो समवाय सपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम वाय लिखेछे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि मह्त्ता सोभागी तेहने अठत्रीस आर्यांना सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी संपदा हुइ। जवूद्वीपल क्षण वृत्तक्षेत्र ने हेमवत ऐरवत वीजे अने छठे क्षेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यत भूत सरल सूक्ष्मप्र देश पङ्क्ति ते जीवा सरीखी जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठतीस सहस्र सातसे चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगुणीसहाइया ए

तरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टत्रिंशद्योजनसहस्राण्युन्नतत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्ठिसहस्राणिच दाह मेरुस्सतिन्निकंडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रयएयजायरूवे अंकफलिहेयवीयंतु एक्कागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेणचवीयंतु २ तेवट्ठिसहस्सातइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिचूलाओ च्चिट्ठोजोयणदुवीसंत्ति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानकं व्यक्तमेव नवरं अहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पा: पर्वता: कुलानिहिलोकानां मर्यादनिबन्धनानि भवन्तीती

या होत्था हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिठे अठतीस जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएण विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अठतीसंउद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीस आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

क योजनना कांईएक विशेष ऊंणा परिक्षेपे परिधिये कह्ही। जेणीये अतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरूपर्वत सकलपर्वतनो राजा तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो। मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे। क्षुद्रिकाये लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवसर कह्या ॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे नमिनाथ एकवीसमा अरिहतने अवधि ते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९। हुया एतले ३९। से अवधिज्ञानी हुया। समय

छतेरूपमाक्षता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषणांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयोः पूर्वेतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशद्दिति दोच्चेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति श्चतुर्थ्यांदश पचम्यात्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति । नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनीयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३९ ॥

स कुलपव्वया प० त० तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोच्च चतुत्थ पंचम छठ सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीस निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीस उत्तरपगडीओ प० ॥ ३९ ॥ अरहओ

चेत्र अढाई द्वीप तेमाही ३९ । कुल पर्वत चेत्रना मर्यादा कारी तेभाटे कुल पर्वत कह्या लोकामाहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणछें तेकहेछे । जंबू द्वीप माही ६ हिमवंतादिका वर्षधर धातकीखंडमाहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध माहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर थया इषुकार चार पर्वत बेधातकी खड माहि बेपुष्करार्द्ध माहि एव ४ । मेरू ५ । जबूद्वीप माहि एक मेरू धातकीखंडमाहि २ मेरू पुष्करार्द्धमाहि २ मेरू एवं ५ मेरू स र्वमि लीकुल पर्वत ३९ थया । बीजी नरक पृथिवी ये २५ लाख नरकावासा चउथी ये १० लाख पांचमी यें ३ लाख छठीये पाचे ऊंणा १ लाखसातमी यें ५ नरकावासा सर्वमिली ३९ । लाख नरकावासा कह्या । ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनीयनो २८। गोत्रनी २ आउखानी ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३९ गोसमवाय सपूर्ण ॥ ३९ ॥ हिवे चालीसमो समवाय लिखे छे । अरिष्टनेमी

नकव्युत्क्रमेव नवरं बायालीसंत्ति छद्मस्थपर्यायेद्वादशवर्षाणि षण्मासार्द्धमासाश्चेति केवलिपर्यायस्तुदेशोनानि त्रिंशद्वर्षाणीति पर्यूषणाकल्पेद्विचत्वारिंशदेवव र्षाणि महावीरपर्यायोभिहित इहतु साधिक उक्त स्तत्र पर्यूषणाकल्पे यदल्पमधिकं तन्नविवक्षितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकरणात् बुद्धेमुत्तेअंतगडे परि निव्वुडेसव्वदुक्खप्पहीणेत्ति इत्थं जम्बूद्वीपस्येत्यादि पुरत्थिमिल्लाओचरिमताओत्ति जगतीबाह्य परिधेरपसृत्य गोस्तूभस्यावासपर्वतस्य वेलधरनागराजसवंधि नः पाश्चात्यसीमातश्चरमविभागोवा यावतांतरेणभवति एसणत्ति एतदंतरंद्विचारिंशत्योजनसहस्राणिप्रज्ञप्त मतरशब्देन विशेषोप्यभिधीयते इत्यतआह अ

समणेभगवंमहावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमते एसणं बायालीस जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे संखो दयसीमेय कालोएणंस

त् शब्दे करी बुद्ध थया मुक्त थया सर्वदुःख थकी मुक्तथया अजरामर थया। जंबूद्वीपनां छेहल्या प्रदेश थकी जगतीना बाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम वेलधर नागराजानो आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनो चरमांत छेहल्यो प्रदेश एतले जगती थकी मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमात एतलाविच ४२ सहस्र योजन आवाधा विचे आंतरो कह्यो। एम चिहुंदिसे दक्षिण जम्बूद्वीपनी जगती थको माडी ४२ योजन सहस्रे दक्षिण समुद्रमांहीज दगभास पर्वत वे लधर नागराजानो एम पश्चिम जगती थको माडी पश्चिम समुद्र माहि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम। पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चद्र मा ४२ सूर्य उद्योत करेछे। समूर्च्छिम भुजपर सर्पनो जंदर गोह नोलियादिकनो उत्कृष्टो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाणे आउखूं कह्युं। नाम कर्म छद्दीते ४२ भेदें कह्यो

बाहाएत्ति व्यवधानापेक्षयायदतरतदित्यर्थः कालोयणोत्ति धातकीखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकेंद्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरंकरोति यदुदयादंगानाशिरः प्रभृतीनाउपागानांचांगुल्यादीनाविभागोभवति तच्छरीरोपागनाम बध्यमानानाच सबधकारण शरीरोपागनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलाना पूर्वबद्धाना बध्यमानानाच सबधकारणशरीरबन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलानाग्टहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसघातनाम तथाज्ञायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनाविशेषोभवति तत्सहननननाम सस्थानसमचतुरस्रादिलक्षणभवति तत्सस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

मुहे बायालीस चंदाजोइंसुवा जोइतिवा जोइस्सतिवा बायालीससूरियापन्नासिंसुवा ३ समुच्छिमनुयपरिसप्पाण उक्कोसेणं बायालीसंवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० त० गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरंवंगनामे सरीरोबंधणनामे सरीरसंघायणनामे सघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

तेकहेछे । नरकादिक नीगतिपामवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जातिपामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एमजेकर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अगोपाग अगते अगुलीनखादि ते अग उपाग ४ औदारिकादिक पाच शरीरनो बधनो करवो ते शरीर बधननाम ५ औदारिकादि पाचशरीरनांपुद्गल ग्रही ने रचनानो करिवो ते शरीरस घातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचनाना विशेषते सहनन नाम ७ सस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गध सुगधादिक सुरभि गंध दुरभिगध १० रस मधुरादिक पांच

दगुरुलघु स्वयशरीरंजीवानांभवति तदगुरुलघुनाम तथायतोंगंगावयवः प्रतिजिह्विकादिरात्मोपघातंकोजायते तदुपघातनाम तथायतींगावयव एवविषात्म कोदंष्ट्रान्वगादि परेयामुपघातकोभवति तत्पराघातनाम तथायदुदगांतरालेगतौजीवोयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छास

रसनामे फासनामे अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आयव नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दुब्भगनामे

जाणिवा ११ स्पर्श गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनो शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरु लघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकारी आत्माने उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अतराल गतिये जीव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उस्वास नीसासलीजे तेउसास नाम १७। जेह कर्मने उदे शरीर तापवत होय ते आतप नाम १८। जेह कर्मने उदे शरीर उद्योतवत होय ते उद्योत नाम कर्म। १९। जेह कर्मने उदयें भली भूंडी गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २०। जेह कर्मना उदय थको जीव चाले ते त्रस नाम २१। जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर रहै ते स्थावर नाम कर्म २२। जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३। जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय तेबादर नाम कर्म २४। पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५। पूरी पर्याप्ति नकरै तेअपर्याप्ति नाम २६। जेह कर्मने उदये अनता जीवनो एक शरीर पामिये ते साधारण नाम २७। जेह कर्मनें उदयें एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९। अगोपाग ताणांयका तूटे ते

नाम तथायदुदयाज्जीवस्तापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यबिंबपृथिवीकायिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायतः शुभे तरगमनयुक्तोभवति त.द्विहायोगतिनाम नसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणांदन्ताद्यवयवानांनिष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतयभ्रूजिह्वादीनाम स्थिराणानिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एव।शिर' प्रभृतीनाशुभाना तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेपाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातोजीवदेहेषुस्थ्या दिलिंगाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमान निर्माणनामेति पचमछट्ठीओसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचेत्यर्थः पढमबीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अभ्भितरियंवेलं धारंति महालियाएणं विमाण पविभत्तीए बितिएवग्गे बायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पचमछट्ठीओसमाओ बायालीसं

अस्थिर नाम २० शुभनाम २१। अशुभनाम २२। जेह कर्मने उदये सहुने वल्लभ होय ते सुभगनाम २३। जेह कर्मथी सहुने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम २४ जेह कर्मने उदये कंठभलोहोय तेसुस्वर नाम २५। भंडोकंठहोय ते दुस्वर नाम २६ जेहकर्म थो बचन सहुने मान्यथाय तेआदेयनाम २७। बचनकोईनमाने ते, अनादेय नाम २८। यशकीर्त्ति वाधे ते जसोकित्तिनाम २९ यश कीर्त्ति नहोय ते अजस कीर्ति नाम ४०। ठामो ठाम अगोपांगनो रचिवो ते निर्माण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहुने पूज्यथाय ते तीर्थंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बैतालीस हजार नागदेवता जंबूद्वीप तरफनी पाणीनी बेला प्रते धरेछे। बडी विमान प्रविभक्तीयें बीजेवर्गें ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या। एकेक अवसर्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छट्ठो दुःखमा

ति ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते कम्मविवागज्झयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्यफलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानिएतानिच एकादशांगद्वितीयांगयोः सत्राव्यतइति जंबूदीवस्सणमित्यादि जंबूद्वीपपौरस्त्यातान्तोत्सुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विष्कम्भश्च सहस्रतदधिकाया द्वाविंशतेरल्पत्वेना विवक्षणा देवं त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणिभवन्तीति एवंचउदिसिपित्ति उक्तादिगतर्भावेन चतस्रोदिशउक्ता अन्यथा एवति

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयाउ समाउ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्दीवस्सण द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिपि दगभासे

दुखम दुखमा वेहु मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो छठ्ठो २१ हजार वर्षनो वेहु मिली ४२ सहस्र प्रमाणे कह्यो एकेक उत्सर्पिणी कालें चढतेकाले पहिलो आरो अने दूजो आरो वेहु मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे कह्यो ॥ इति बैतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालीसमो समवाय लिखिये ॥ तैयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म विपाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एव ४३ अध्ययन कह्या। पहिली यें ३० लाख चौथीयें १० लाख पांचमीये ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक पृथिवी नां मिली तेयालीसलाख नरकावासा कह्या। जंबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना छेहल्या प्रदेश

दिसिंपित्तिवाचंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्दीवस्सण दीवस्सदाहिणिल्लाश्रोदश्रोभासस्सणं श्रावासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणंतेयालीसंजोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वय नवरं पश्चिमायांसखो श्रावासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशत इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोकच्युताभासितानिक्कचित्पाठः देवलोयभुयाणं चोयालीसइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥

चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउआलीसंपुरि

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां श्रावास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहलो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आबाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थकी ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एव ४३ सहस्र योजन थया। एम चिहुदिशे दक्षिण जगतीथकी माडो दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडी विमान प्रविभक्तिये त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या ॥ इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चौतालीसमो लिखेछे। चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाछे देव लोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चौतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशेषनी परें अनुक्रमे साधमंपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुप्रष्टें सीधा निरंतर पणे ४३ पाट मोक्षे गया यावत् शब्दें करी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया। दक्षि

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिठ्ठन्ति आनुपूर्व्या अणुबधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख प्पहीणाइंतिदृश्य महालियाएण विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकाला.प्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेत्विदंलिख्यतेसमयखेत्तेत्ति कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्रः सीमतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

सजुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं

यादिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कह्या। बडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गें चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति चौतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमो लिखेछे। पेंतालीसलाख योजन प्रमाणें पहिलो पृथिवीये पहिले पाथडे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब

टवर्त्तिंयतस्तर्णाविमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिं वृत्तंविमानकेन्द्रकमुडुविमानमिति ईसिंपब्भारत्ति सिद्धिपृथिवी मदरस्सणपव्वयस्सेत्यादिसूत्रे लवणसमुद्रान त्तरम्परिध्यपेक्षातरद्रष्टव्यमिति सव्वेविणमित्यादि चन्द्रस्यत्रिंशमुहूर्त्तभोग्यनक्षत्रेन समक्षेत्रमुच्यते तदेवसार्द्धद्वयं द्वितीयमर्द्धमस्येतिव्द्वार्द्ध भित्येवव्युत्पादना त्तथाविधक्षेत्र येषामस्ति तानिद्वार्द्धक्षेत्रिकाणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्तां चंद्रेण सार्द्धयोग.सम्बन्धोयोजितवति तिन्नेवगाहा नीण्युत्तराणि उत्त

धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिंपि पणयालीस २ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० सव्वेविणं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिंजोगंजोइंसुवा जोइतिवा जोइस्सतिवा तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछनक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

पणे पिहुलपणे कह्यो । एमज धर्मनाथ अरिहंत पैंतालीस धनुष प्रमाण ऊंचपणे हुआ । मेरु पर्वत ने चिहुदिशें पैंतालीस पैंतालीस हजार योजननो अबा धायें आंतरो कह्यो । लवण समुद्रनो अभ्यंतर परिधी ने विचे आंतरो कह्यो। महाविदेह क्षेत्रनी जीवा लाख योजन लांबपणेछे तेमांथी दसहजार योजन नो मेरु काढिये तो नेउ लाख जवस्या तेहनो अर्द्ध मेरुथकी पूर्वनी जगती ४५ हजार योजन थाय। एम चिहुदिशे । चद्रमाने ३० मुहुर्त्त पर्यंत भोग्य जे नक्षत्रजेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेहोज क्षेत्र सार्द्ध कीजियें एतले ३० मुहुर्त्त मांहि १५ घातिये तो ४५ मुहूर्त्तनो क्षेत्रथाय ते ४५ मुहूर्त्तिया नक्षत्र द्वार्द्ध क्षेत्रि या कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पैंतालीस मुहुर्त्त लगे चद्रमाने साथे योगकरेछे। करता हुआ करस्ये । तेकिहा नक्षत्रछे तेकहेछे। उत्तराफाल्गुनी १ उत्त राषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त्त लगे चद्रमानें साथे योग करे । वडो विमान प्रविभक्तिये पा

राफाल्गुन्यु त्तराषाढो त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशस्थानके किंचिल्लिख्यते। दिट्ठिवायस्सत्ति द्वादशांगस्य माउयापयत्ति सकल वाङ्मयस्य अकारादिर्मातृकाः पदानीव दृष्टिवादार्थप्रसवनिबंधनत्वेनमातृकापदानि उत्पादविगमध्रौव्यलक्षणानि तानिच श्रेणिमनुष्यश्रेण्यादिनाविषयभेदे नकथमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशद्भवंतीतिसम्भाव्यते। तथाबभीएणं लिवीएत्ति लेख्यविधौ षट्चत्वारिंशन्मातृकाक्षराणि तानिचककारादीनिहकारां तानि सनकाराणि ऋऋलृलृळइत्येवं तदक्षरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभंजणस्सत्ति औदीच्यास्सेति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्य

त्तीए पंचमेवग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिट्ठिवायस्स णं बायालीसं माउयापया प० बंभीए णं लिवीए बायालीस माउयक्खरा प० पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स बायाली सं भवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसकमित्ता णं चारंचरइ

चमे वर्गे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या। इति पेंतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिवे छेतालीसमो लिखेछे॥ दृष्टिवाद पूर्व ना छेतालीस मातृकापद कह्या सकल शास्त्रने अकारादि छेतालीस अक्षर मातृकापद दृष्टिवादार्थप्रते प्रसवबाना कारणथकी मातासरीखा कह्याछे। ब्राह्मी लिपीने विषे छेतालीस मातृका अक्षर कह्या। अकारादिक हकारांत क्षकारे सहित ५२। मांहिथी ऋ ॠ लृ लृ ळ एह ५ अक्षर वर्जित कीजे ४६ जगरे प्रभजन अठारमो भवनपती बातकुमारेंद्र तेहना ४६ लाख भवनावास कह्या। इति छेतालीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिवारे सूर्य

सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमडलस्य विष्कम्भोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि

ते जयाणमित्यादि इत्रलचप्रमाणस्य जंबूद्वीपस्याभयतो ऽशीत्युत्तरेयोजनशते ३६०ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमडलस्य विष्कम्भोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि द्वेचैकपञ्चा पञ्चदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८९ एतचसूर्योमुहूर्त्तानापष्ठ्यागच्छतीति षष्ठ्याऽस्यभागहारेमुहूर्त्तं गतिर्लभ्यते साचपञ्चयोजनसहस्राणि द्वेचैकपञ्चा शदुत्तरेयोजनशते एकोनत्रिंशच्चषष्ठिभागायोजनस्य ५२५१। २९ यदाचाभ्यंतरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तोदिवसप्रमाण तदर्द्धेननवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्त गतिर्गुण्यते ततयत्थोक्तं चक्षुः स्पर्श प्रमाणमागच्छतीति अग्गिभूएति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्तास्यचेव सत्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्तः प्रावश्यकेतुप ट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासपूर्णत्वादविवचा इत्त्वसपूर्णस्यापि पूर्णविवचेतिसम्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशस्थानके

तयाणं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवठेहि जोयणसएहिं एक्कवीसाए यसठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफास हव्वमागच्छइ थेरेणं अग्गिभूई सत्तचालीसवासाइं अगारमझेव सित्ता मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सण रन्नो चाउरंतचक्क

सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढो पूनिमे कर्क संक्रांतिये निषध पर्वतने ऊपरि ६५ मांडलाछे तेमांहिथी पहिले माडले उपसक्रमीने भ्रमणकरे तिवारेइहा भर तक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेसे त्रेसठ योजन अने १ योजनना ६० ह्रिया २१ भाग एतनो वेगलो थके दृष्टिगोचर आवे। स्थविर बडा वयपर्या यश्रुतेवारी अग्निभूति बीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणो पाम्या। इति सेतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिवे अठतालीसमो समवाय लिखिछे॥ एकेक चिहुदिशिना अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अडतालीस हजार पाटण कह्या।

क्रिमपिलिख्यते। पट्टणति विविधदेशपण्यान्यागत्ययत्रपतंति तत्पत्तनंनगरविशेषः पत्तनरत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्ग णागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्यच्यते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेत्ति सूर्यविमानं येषांभागानामेकषष्ट्या योजनंभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो दशनिस्ते ऊनयोजननित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपचाशत्स्थानकंलिख्यते। सत्तसत्तमियाणं सप्तसप्तमानिदिनानियस्यासासप्त२ दिनानिभवति सप्तसु सप्तकेषु अतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपचाशतावादिनैर्भवतीति पडिमत्ति अभिग्रहः छन्नउणभिक्खासएणति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदि नमेकोत्तरयाभिक्षावृद्धा अष्टविंशतिर्भिक्षाभवति एवञ्चसप्तस्वपिषण्णवतिभिक्षाशतम्भवति अथवा प्रतिसप्तक मेकोत्तरयावृद्धायथोक्ता भिक्षामानभवति तथा

वाहिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणअरहओ अडयालीसंगणा अडयालीसं गणहरा होत्था सूर मंडलेण अडयालीसं एकसठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं भि

धर्मनाथ अरिहंत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया। आवश्यके ४३ पणि लख्याछे तेमतांतरछे। सूर्यनो मंडल एक योजन ना एकसठि या ४८ भागप्रमाणे विष्कंभपणे अने पिहुलपणे कह्यो। एक योजनना एकसठ भाग करिये ते मांथी १३ भाग ओछो सूर्य मंडलछे ॥ इति अठतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एकूनपचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विषे एहवी भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते सप्तसप्तमिका भिक्षुनीप्रतिमा उगुणपचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीये पूरीथाय। एकसो छन्नू १९६ भिक्षाये करी यथासूत्रोक्त विधिये सिद्धांतोक्तमार्गे आरा धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ त्रीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७। एम बीजे सप्तके पहिले दिन २ बीजेदिन ४ त्रीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४। एम

हि प्रथमेसप्तके प्रतिदिनमेकैकभिक्षाग्रहणात् सप्तभिक्षाभवंति द्वीतीयेद्वयो२ गंहणाच्चतुर्दश एवंसप्तमेसप्तानांग्रहणा देकोनपंचाशदित्येवंसर्वमीलनेयथोक्त मानभ्नवतीति अहासुत्तंति यथासूत्रयथागमंसम्यक्न्यायेनप्रटाभवतीति ग्रेषोक्त्वव्याः संपन्नजोव्वणाभवतिति नमातापित्रपरिपालनासपेक्षतइत्यर्थः ठिइत्ति आयुष्क ॥ ४८ ॥ तत्रपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनतजिज्जिनकालभावी तथाकथयत्ति उत्तरकुरुपुनीलवदादीना पद्मानामानुपूर्व्यांव्यवस्थिता

रकुपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नउयभिरकासएणं अहासुत्तं आराहिया भवइ देवकुरुउत्तरकुरा सुण मणुया एगूणपन्नराइंदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्नराइंदिया ठिई प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सणं अरहओ पंचासअज्जियासाहस्सीओ होत्था अणंतेणं अरहा पन्ना

त्रीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ त्रीजेदिन ९ एम सातमेदिन २१। एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ त्रीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम पाचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० त्रीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५। एम छट्ठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ त्रीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२ एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ त्रीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४९। एमसर्वमिली १९६ भिक्षाथई। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे युगलिया मनुष्य ४९ रात्रि दिवसें ४९ अहोरात्रीयें संप्राप्त यौवन होय एतले ४९ दिनलगें मातृत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्तें। तेइन्द्रिय जीवनो उत्कृष्टो ४९ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो। इति ४९ समवाय संपूर्ण ॥ ४९ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखेछे। मुनिसुव्रत वीस

नांमहाह्रदानांपूर्वापरपार्श्वयोः प्रत्येकदशकांचनपर्वताभवंति तेचसर्वेंशत एवदेवकुरुषुनिषधादीनां महाह्रदानां पार्श्वत' शतम्भवति सर्वएतेजंबूद्वीपेद्वि शतमानाभवति तेयोजनशतोच्छ्रिताः शतमूलविष्कंभा स्तन्नामकदेवनिवासभूतभवनालंकृतशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपचाशस्थानकं। तत्र

सं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वाउणं तिमिस्स गुहा खंडगप्पवाउ गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं२

मा अरिहंतने पचास आर्यानी साध्वीनी सपदाना सहस्र थया। अनतनाथ तेरमा अरिहत पंचास धनुष जंचा जंचपणे थया। अनतनाथने वारें पुरुषोत्तम नामा चौथो वासुदेव पचास धनुष ऊंचो जचपणे हुयो। सगलाई दीर्घ वैताढ्य ३४ जवूद्वीपना ६८ धातकीखडना ६८ पुष्कराद्धना एवं १७० दीर्घ वैताढ्य मूलने विषे पचास पचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणें कह्या। लातक छट्ठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या। सगला जवूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत छे एकेक वैताढ्यें बेंबे गुफा छे तेमाहि तिमिश्रागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नीसारानी एबिहु गुफा पचास पचास योजन आयासपणे कही। उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेक द्रहने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतछे तेसर्वमिली एम ज देव कुरुने विषे १०० सर्वमिली २०० कांचनगिरि हुआ। ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषें पचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसो योजन ज

बंभचेराणं॰ आचाराः प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमेसप्तोद्देशका इति सप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वार
चत्वारः एव पच अष्टी चत्वारः षट् सप्तेवमेकपञ्चाशदि॰ सुप्पहेति चतुर्थोबलदेवअनतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैकपचाशद्वर्षलक्षाण्यायुः पुनरुक्तमावश्यकेतु
पचपचाशदुच्यते तदिदमतातरमिति एकावन्नउत्तरपगडीओति दर्शनावरणस्यनव नाम्नोद्विचत्वारिंशदित्येकपचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपचाश

जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ५० ॥ नवण्हंबंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० चमरस्सणं
असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविठा प० एवचेवबलिस्सवि सुप्पभेणं बलदेवे
एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे दंसणावरणनामाणं दोण्हंकं

चाछे। इति ५० समवाय संपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मो समवाय लिखेछे। आचारागे प्रथमश्रुतस्कधे नव ब्रह्मचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते
हना ५१ उद्देशानाकाल कह्या। प्रथमाध्ययने ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१
उद्देशनकाला कह्या। बीजो विचार २५ ठाणे जाणिवो सही। चमरेंद्र असुरराजनो सुधर्मासभा एकावन से स्तभेकरी संनिविष्ट सहित कही। बलेंद्र अ
सुरेंद्रनो असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ सेस्तभेकरी संनिविष्ट कही। अनतनाथने वारे सुप्रभनामा चोथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उत्कृष्ट आउखो पालीने
सिद्धबुद्धथयो सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथयो मोक्षगयो। आवश्यके ५० लाखवर्षकह्या तेमतांतर। बीजोकर्म दर्शनावरणीय तेहनी उत्तरप्रकृति ९ छठोनामकर्म तेहनी

स्थानक॥ तत्रमोहणिज्जस्सकम्मस्सत्ति। इहमोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षुक्रोधादिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवेसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्तं तथा पिकषायसमुदायापेक्षया द्विपचाशन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चंडिक्केत्ति चाण्डिक्यं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेत्ति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नत्त उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेत्ति

म्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीओ प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स बावन्नंनामधेज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए। माणे मदे दप्पे थंभे अणुक्कोसे गब्बे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे। माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्हे किव्विसे आणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे। लोभे इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रकृति ४२ निहुकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही। इति ५१ समवायथयो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखेछे। मोहनीय चौथोकर्म तेहना ५२ नामधेयकह्या। मोहनीयकर्ममांहि ४ कषाय अवतस्याछे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे। क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अक्षमा ५ सज्वलन ६ कलह ७ चाण्डिक्य ८ भंडण ९ विवाद १०। मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थंभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९ उन्मत्त १० उन्नाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूमनीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दंभ ९ कूड १० जिह्म ११ किल्विषिक १२ आलरणता १३ गूहनता १४ बचनता १५ परकुचनता १६ सातियोग १७। लोभाश्रितनाम १४। लोभ १ इच्छा २ मूर्छा ३ कांक्षा ४ गृद्धि ५

व्ययमं कारेसि कल्लं कुरुएन्ति कुलकं भिमेति जह्नं तणालोभादीनि चतुर्दश लोभकायायस्य भिज्झा अभिज्झति अभिध्यानमभिध्येत्यस्य पिधानमित्यादा विव वैयाल्पिको गकारलोपे भिध्यावेति शब्दभेदावामद्वयमिति गोथूभेत्यादि गोस्तुभस्य प्राच्यांलवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो वेलंधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य पोरत्याच्चरमातादपसृत्य बडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाशात्यचरमांतोयेन भवतीति गम्यते एसणति एदतन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः द्विपंचाशद्योजनसहस्राणि भवन्ती व्यघरघटना भावार्थस्त्वय एक लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राण्यवगाह्य पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण वडवामुखकेतु

कंखा गेही तिएहा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे। गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमताउ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसण बावन्नं

तृष्णा ६ भिध्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीविताशा ११ मरणाशा १२ नदी १३ रागी १४। सर्वमिली ५२ थया। पूर्व लवण समुद्रमांहि गोस्तूभ नाम वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना परिमांत थकी छेहलाप्रदेश थकी मांडी वडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो चरिमांत छेहलो प्रदेश एह बावन सहस्स योजन आबाधा विचाले आंतरो कह्यो। जंबूद्वीपनी जगती थकी माडी चिहुदिसे ९५ सहस्स योजन लगे समुद्र अवगाहीये तिहां पूर्वादिक चिहुदिसि क्रमे वडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीयें तथा जंबूद्वीप पर्यंत थकी ४२ सहस्स योजने समुद्र मांहि जईं तिहां चिहुदिसे ४ वेलंधरनां पर्वत गोस्तूभादिकछे ते सहस्सना पिहुलाछे सर्वमिलो ४३ हजार योजन प्रमाण थया ते ९५ सहस्स मांहिथी ४३ सहस्स योजन काढीये तो पूठें गोस्तूभ पर्व॰नो वडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्स योजन आंतरोउगरे एमज चिहुदिसि एम दक्षिणे

कजूनश्विराभिधाना महापातालकलशा भवंति तथा जम्बूद्वीपपर्यंता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राण्यवगाह्य सहस्रविष्कम्भा श्चत्वारएव वेलंधरनागराजपर्वता गोस्तुभादयो भवंति ततश्च पंचनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपंचाशत्सहस्राण्यंतरं भवति सौधर्मे त्रिंशद्विमानानांलचाणि सनत्कुमारेद्वादश माहेन्द्रे चाष्टाविंशतिः सर्वाणि द्विपंचाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपंचाशस्थानके लिख्यते महाहिमवंतेत्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्साइं नवयसएजोयणाणिइगतीसे

जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एव दगभासस्सणं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसिण तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीउ प० सोहम्म सणंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु बावन्नं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

दगभास पर्वतनां पूर्वात थकी मांडी। केतुक पाताल कलश विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो कह्यो । पश्चिमें शंख पर्वतना पूर्वांत थकी माडी यूपनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत विचे ५२ सहस्र योजन । उत्तर समुद्रमांहि दगसीम पर्वतना पूर्वांत थी मांडी ईसरनाम पाताल कलशनो पश्चिमात विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो । ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अंतरायनी प्रकृति ५ एहत्रिहुंकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कही । सौधर्म कल्पे ३२ लाख विमान । सनत्कुमारे १२ लाख विमान माहेन्द्रे ८ लाख विमान । एम त्रिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास शतसहस्र कह्या एतले ५२ लाख विमानावास कह्या । इति ५२ मो समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिवे ५३ समवाय लिखेछे । देवकुरु उत्तरकुरु सदश्चिनी

जीनामहाहिमवश्रो अवकलाछक्कलाश्रोत्ति ॥ १ ॥ सवच्छरपरियागत्ति सवच्छरमेक यावत् पर्याय: प्रव्ज्यालक्षणो येषां ते संवत्सरपर्याया: महइमहालएसु महाविमाणेसुति महातिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया यात्यंतनुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालया स्तेषु महांतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति विग्रह: एतेचाप्रतोता अनुत्तरोपपातिकांगेतु ये धीयते तत्र नयविमत् बहुवर्षपर्याया येति ॥ ५२ ॥ चतु.पचाशस्थानके लिख्यते । पाउणित्ति प्राप्य

याउणं जीवाउ तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ तेवन्नजोयणसहस्साइ नवयएगतीसे जोयणसए छच्चएगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स तेवन्न अणगारारावच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

जीवा प्रत्यचारूप त्रेपनत्रेपन योजन सहस्र भाझेरी लाब पणे कही । महाहिमव । बीजो वर्षधर एह बिहु वर्षधरनी जीवा प्रत्यंचा त्रेपन २ सहस्र योजन प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहाइ छकाला । ५३९३१ योजन १९ । ६ काला आयामे लाब पणे कह्या । श्रमण भगवतमहावीर ना ५३ अणगारयती सवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय होवा जेहने एहवा ५३ हुया । पछे सर्वारोअरो प्रनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो विस्तीर्ण महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूर्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टो त्रेपन मर्प सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

एगणिसेज्जाएत्ति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइंति व्याक्रियंते अभिधीयते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागरिच्छत्ति व्याकृतवास्तानि चा प्रतीतानि अनंतनाथस्येह चतुःपचाशद्गणा गणधरा योक्ता. आवश्यकेतु पचाशदुक्ता स्तदिद मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाशत्

भरहेरवएसुण वासेसु एगमेगाएउसप्पिणीए उसप्पिणीए चउवन्न २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा ३ तं० चउवीसं तित्थकराबारसचक्कवट्टी नववलदेवा नवबासुदेवा अरहोण अरिट्ठनेमी चउवन्नराइंदियाइं छउमत्थपरिया यपाउणित्ता जिणेजाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी समणेभगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्ना इ वागरणाइं बागरित्था अणंतस्सणं अरहओ चउपन्न गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह

हिवे ५४ मो समवाय लिखेछे। भरत ऐरवत चेत्रने विष एककीये अवसर्पिणीये एककोये उत्सर्पिणीये चौपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे। उपजस्ये ते कहेछे। २४ तीर्थंकर। १२ चक्रवर्ती। ९ बलदेव। ९ वासुदेव। सर्वमिलो ५४ थया। अरिहंत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली ने जिन हुया केवली। सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसकल ससारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्या ये एके आसणे बेठे ५४। व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवत कहता हुया। अनतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया। इति चौपनमो समवाय थयो॥ ५४ ॥ हिवे ५५ मोसमवाय लिखेछे। मल्लिनाथ अरिहत पचावन वर्षसहस्रलगे उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया बुद्धथया यावत् सर्वदुःख थकी

पूर्णतया विवक्षितेति अंतिमरायसित्ति सर्वायुः कालपर्यवसानरात्रौ रात्रेरंतिमे भागे पापायां मध्यमायां नगर्यां हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्ति कमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यंकासनेनिषसः पंचपचाशदध्ययनानि कल्लाणफलविवागाइंति कल्याणस्य पुण्य स्य कर्मणः फल कार्यं विपाच्यते व्यक्तीक्रियन्ते यै स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याकृत्य प्रतिपाद्य सिद्धोवुडः यावत्करणात् मुत्ते अंतकडे परिनिब्बुडे सव्वदुक्खप्पहीणेत्ति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयाया पंचविंशति रिति पंचपचाशत् दसणेत्यादि दर्शनावरणी

गाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिरहं कम्मपगडीणं पणपन्न उत्तरपग डीओ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे छप्पन्नं नक्खत्ताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

त्रियें कार्त्तिकवदी अमावसनी रात्रिये पालठीवाली बेठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमे हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्य विपा कीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा। पाप फल विपाक मृगापुत्रादिकना कह्या सिद्ध तनेविषे सिद्ध थया बुद्धथया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी प्रक्षीणथया । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकह्या बीजीयें२५ लाख बिहु नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कह्या। दर्शनावरणीय प्रकृति ९ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमनीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही। इति ५५ मो समवा यथयो ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मोसमवाय लिखेछे। जंबूद्वीप द्वीपने विषे ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग सबध योजना करता हुया सबध करेछे संबंध

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्यवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथषट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते। जंबूद्दीवेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते र्भावात् षट्पंचाशन्नक्षत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा श्चोक्ताः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं मतांतर मिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते। गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणपिटकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययन विमुक्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कंधे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशीथाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशाना मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पंचदश सूत्रकृते

अरहउ बप्पन्न गणा गणहरा होत्था ॥ ५६ ॥ तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियाव ज्जाण सत्तावन्न अज्झयणा प० त० आयारे सूयगडे ठाणे गोथूभस्सण आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ

कारथी एनले जंबूद्वीपमांहि २ चंद्रमाछे एकेका चंद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ बिहु चंद्रमाना मिली ५६ नक्षत्र होय। विमलनाथ अरिहंतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे। इति ५६ समवाय संपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखेछे। त्रिण गणी कहिये आचार्य तेह ने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचारांग प्रथम श्रुत स्कंधे ९ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनछे। तेमाहेथी छेहल्या अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगडांग पहिले श्रुतस्कंधे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठाणांगे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कह्या। तेसूत्रनानाम कहेछे अनुक्रमे आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३। जगतीथकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

द्वितीयांगे प्रथमश्रुतस्कन्धेषोडशद्वितीयेसप्त स्थानांगे दशेत्यवं सप्तपंचाशदिति गोथूभेत्यादौ भावार्थोय द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभपर्वतयो रंतर सहस्र गोस्तुभस्य विष्कम्भः द्विपंचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रंतर दशसहस्रमानत्वा द्वडवामुखविष्कम्भस्य तदर्द्धं पचेति ततो द्विपंचाशतः पंचाना च मीलने राश पचाशदिति जीवाधणुपिट्ठत्ति मण्डलं खण्डाकार क्षेत्र इह सूत्रे सम्वादगाथार्द्ध सत्तावन्नसहस्सा धणुपिट्ठेणउयदुसयदसकलत्ति ॥ ५७ ॥

चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स वज्ञमज्झदेसभाए एराणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दयसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था महाहिमवंतरूप्पीणवासहरपव्वयाणं धणुपिट्ठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

मांहि पूर्वदिशे गोस्तुभनामा वेलधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांतथकी छेहल्या प्रदेशथकी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्य देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाधाये बिचाले आंतरो कह्यो एतले गोस्तूभ पर्वतथकी शुद्ध पूर्वे ५२ सहस्र योजने बडवामुख पाताल कलशछे अने ते वडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनो मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला करतां ५७ सहस्र योजन थया। एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशथको माडी केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमज पश्चिमे शंखनामा वेलधरथको मांडी यूपकनामा पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। उत्तरे दगसीम वेलधर थको ईश्वरनाम पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। मल्लिनाथ अरिहंतने ५७ मन पर्यवज्ञानी ५७०० थया। जम्बूद्वीप लक्षण मंडलक्षेत्र तेमांही हिमवत बीजो वर्षधर रूपी पाचमो एहबीहु वर्षधर पर्वतनी धनुपृष्टि ५७ योजन सहस्र वली बेसय अने पाणो

अष्टपंचाशत्स्थानकेपि लिख्यते । पढमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशतिः पंचम्यां त्रीणीति सर्वाण्यष्टपंचाशदिति नाणेत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पंच वेदनीयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अंतरायस्य पंचेति सर्वा अष्टपंचाशदुत्तर प्रकृतयः गोथूभस्सेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेण वसेयः एवंचउद्दिसिंपि नेयव्वति अनेन सूत्रेत्रयमतिदिष्ट तत्रैव दओभासस्सणआवासपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ केउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अट्ठावन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नते एवं संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ जूयगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदोच्चपंचमासु तिसुपुढवीसु अट्ठावन्नंनिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय आउय नाम अंतराइयस्स एएसिणपंचण्हकम्मपगडीणं अट्ठावन्न उत्तरपगडीउ प० गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमि

योजन दसभाग उगणीस हाइया एवा योजनना ५७२८३ योजनना एगुणोस हाइया भाग १० कला परिक्षेपे परिधि कही ॥ इति ५७ मो समवाय संपूर्ण ॥

५७ ॥ हिवे अठावन मो समवाय लिखेछे । पहिलीयें ३० लाख नरकावासा बीजीयें २५ लाख पांचमीयें ३ लाख एमत्रिणना मिली अठावन नरकावासा सतसहस्र एतले ५८ लाख नरकावासा कह्या । नाणावरणीना ५ प्रकृति वेदनीयनी २ आउखानी ४ नामकर्मनी ४२ अंतरायनी ५ एह ५ कर्मनी उत्तर प्रकृति अठावन कही । समुद्र मांहि पूर्वदिशें गोस्तूभ नामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत छे तेहना पश्चिम चरमांतथी छेहला प्रदेशथकी मांडी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । जंबूद्वीपनी पूर्व जगतीथकी मांडी ४२ सह

पातालस्स एवदगसोमस्स आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लाओ चरमंताओ ईसरस्स महापायालस्सत्ति ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानको लिख्यते। चंद्रस्सणमित्यादि संवत्सरो ह्यनेकविधः स्थानागादिषू क्त स्तत्र य श्चद्रगति मगीकृत्य संवत्सरो विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चऋतवो भवन्ति तत्रचेकैकाऋतु रेकोनषष्ठिरात्रिंदिवाग्रेण भवति कथ एकोनत्रिंशद्रात्रिंशच्च द्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्येवं प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

ल्लाउ चरमताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बज्झमज्झदेसन्नाए एसणं अट्ठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवचउदिसपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥ चंदस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि

स्र योजन गोस्तूभ पर्वतछे ते एकसहस्रनो पिहुलो छे ते एकसहस्र योजन हाथीलीजे अने गोस्तूभ थी ५२ सहस्र योजन वडवामुख कलशछे। तो गोस्तूभस वधो एक सहस्र ५२ सहस्र माहिं घालिये तो ५३ सहस्रथाय अने वडवामुख १० सहस्र पिहुलोछे तेहनो मध्य भाग पांच सहस्रनो ते ५३ सहस्र मांही घालिये एतले ५८ सहस्र योजन एतलो आंतरो जाणिवो। एम चिहुंदिशि ना वेलधर पर्वत अने चिहुं पाताल कलशनो आंतरो जाणिवो दगभास पर्वत दक्षिण समुद्र माहे तेहना उत्तर चरिमांतथी माडो केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमे शंखपर्वतनां पूर्वचरिमात अने यूप कलशनो मध्यभाग५८ सहस्र योजननो आंतरो कह्यो। उत्तरे दगसीम पर्वतनो दक्षिण चरिमांत ईसरं पातल कलश ५८ सहस्रनो। इति ५८ समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिवे ५९ मोसमवाय लिखेछे। चद्रमानी गतिने अगीकार करीने जे सवत्सर विचारिये ते चंद्रसंवत्सर कहीये। चद्र सवत्सर १२ मासनो ऋतु ६ होय। एकेक ऋतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस छे तिहां एहवो रात्रि दिवाग्रे ५९ अहोरात्रि प्रमाणे कह्यो तो चिहु

नां सूर्यमंडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ठ्याषष्ठ्यामुहूर्तैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एकस्मिनक्रियत्स्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अग्गोदयति षोडशराद्दस्रोच्छ्रिताया वेलायायदुपरिगव्यूतद्वयमान द्विहानिस्वभावतदग्रोदक वजिस्सत्ति औदीच्यस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवन वंभस्सत्ति ब्रह्मलोकाभिधान पचमदेवलोकेंद्रस्य सट्ठित्ति सौधर्मेद्वात्रिंशदीशानेचाष्टाव्रतिविमान लचाणीतिकृत्वा षष्ठिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानक तत्रपचेत्यादि पचभिः सम्वत्सरैर्निवृत्तमिति पचसांवत्सरिकं तस्यणमित्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचायं भावार्थः युगंहि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

लेण अरहा सट्ठिधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ प० बंभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सट्ठि विमाणावाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेण मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष जंचा जंचपणे हुया। वलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या। ब्रह्मनामा ५ मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशानें २८ लाख विमान बेहु देवलोकना मिली साठलाख विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेछे। चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच वर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चद्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपचनी पडिवा थी पौर्ण

तद्यथा चंद्रश्चंद्रोऽभिवर्द्धितश्चंद्रोभिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाण श्चन्द्रसम्वत्सर स्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यह्नांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकत्रिंशदह्नां एकविंशत्युत्तरंचशत चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ । १२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यह्नांत्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४ । ६२ तदेवत्रयाणांचन्द्रसंवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसंवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासश्च त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकषष्ठिःऋतुमासाइति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधाविभक्तास्तत्रप्रथमोभाग

सठिं उऊमासा प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पढमेकंडे एगसठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चंदमंडले

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणोकीजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे तिवारे १०६२ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाद्रय १२१ भाग प्रमाणें थाय तेहने १२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान ३८३ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणाकीजे ७६७ सातसे सडसठ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थायतेहने पहिले ३ चद्र वर्षका मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० नें ३० भागें हरिये तो १ युगनेविषें ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन ऊचपा

एकषष्ठिःसहस्राण्युक्ताः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदितिप्रोक्ताः त्रैत्रसमासेतु कान्देनसहलत्वप्रमाणस्त्रिधा विभक्त स्तत्र प्रथमकांडं सहस्रं द्वितीयंत्रिष ष्ठि स्तृतीयंषट्त्रिंशदिति । चन्दमण्डले चन्द्रविमानणमित्यलक्षतो एगसट्ठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितविभागैर्व्यवस्थापिते समांशसमविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांश योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पचाशद्भागप्रमाणत्वा त्तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवंसूर्यस्यापिमण्डलंवाच्यम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमानम् द्वितन्नचापरमंशांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठिस्थानक पचेत्यादि तत्रयुगेत्रयश्चंद्रसंवत्स राभवंति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवन्ति द्वौचाभिवर्द्धित संवत्सरौभवत स्तत्रचाभिव र्द्धितसंवत्सर स्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

एगसट्ठिं विभागविभाइए समंसे प० एवंसूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठिं पुन्निमाउ बावट्ठिं अमावसाउ प० वासुपुज्जस्स णं अरहउ बासट्ठिं गणा बासट्ठि गणहरा होत्था सुक्कपक्ख

कह्यो । मेरु पर्वत ९९ हजार योजन ऊंचोछे तेहना त्रेभाग कीजे तेहमा पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजननोकह्योत्रैत्रसमाससमेतो कादसहित मेरू येकलाख योजन प्रमाण छे तेहना तीनभागकीधाछे पहिलो १ हजार योजननो बीजो ६२ हजार योजननो त्रीजो ३६ हजार योजननो चद्रमानो मडल चंद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पनभाग प्रमाणें व्यवस्थापितछे तेमाटे समांस समभाग कह्योछे। चंद्रमाना मंडलमांहिथी ५ विषमांस नीकल्या तोरह्या ५६ समांस एणीपरे सूर्य मंडल मांथी १३ विषमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मो लिखेछे। पांच संवत्सरनो युगहोय तेमांहि ६२ पूनिम अनें ६२ अमावास्या कही १ युगमाहि ३ चंद्रवर्ष होय तेमांहि मास ३६ वारेत्रिक ३६ पूर्णिमाअने ३६

मास्यद्रत्येवं द्विषष्ठिस्ताभवंति इत्येवममावास्याअपीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्ठिर्गणागणधरायोक्ता आवश्यकेतु षट्षष्ठिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति। सुक्कपक्ख
रतेयादि शुक्लपक्षस्य संबन्धीचन्द्रोद्विषष्ठिभागान् प्रतिदिनंवर्द्धते एवंकृष्णपक्षेचंद्रः परिहीयते अयंभावार्थः सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाणं निच्चं
चंदेणहोइअविरहियं चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठाचंदस्सतं चरइ॥ १ ॥ बावट्ठिं बावट्ठिं दिवसे२ उसुक्कपक्खस्स जंपरिवड्ढइचंदो खवेइ तंचेवकालेण॥ २ ॥ पन्नरसयभागेणय
चंदंपन्नरसमेवतंवरइ पन्नरसयभागेणय पुणोविवतंचेववक्कमइ॥३॥ एवंवड्ढइचंदो परिहाणीएवहोइचंदस्स कालोवाजोण्हावाएयणुभावेणचंदस्स॥४॥ तथातत्रैवो
क्तं सोलसभागाकाऊण उडुवइंहायएत्थपन्नरस तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपविड्ढएजोण्हत्ति॥१॥ तदेवं भणितद्वयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रि
शदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशोयस्थितएवास्तेशेषाः प्रतिदिवसं द्विषष्ठिंकृत्वा वर्द्धन्ते ततःपंचदशे चंद्रदिनेसर्वेसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पंचद
शेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्यं व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावट्ठिं २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतेगाथे एवंव्याख्याते

रसण चंदे बासठिं बासठिं भागे दिवसे दिवसे परिवढइ तंचेवबहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्द्धितवर्ष २ तेहना मास २६ होय तेमाटेपूनिम २६ अमावास्या२६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अनें ६२ अमावास्या
होय। वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चंद्रमा प्रतिदिवसे ६२ बासठ भागें बधे एतले चंद्रमंडलनां ६२ भाग कल्पनाय
कीजेपछे १५ तिथि भागेहर्यिे तिवारे झाझेरा च्यार च्यार भाग आवे तो पनरेंदिन लगे राहुविमान झाझेरा च्यार २ भाग चंद्रमाने मूकें चंद्रज्योत्स्नावधे
पनरेंदिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपक्षे राहुविमाने झाझेराच्यार २ भाग दिवसे चंद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली झाझेरा च्यार २ भाग करतां

वावट्ठिं २ इत्यत्र द्विषष्ठि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्द्धते चन्द्र श्चतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् चपयन्ति तदे व कालेनै तदेवाह पंन्नरसइत्यादिना चंद्रविमान द्विषष्ठिभागान् क्षियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत श्चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्ठिभागानां पचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पचदशभागेन चोत्तलचणेन चद्रम्भिक्रत्य पचदशैवदिवसा स्तद्राहुविमान श्चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति अत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुतै र्निर्णयः कार्यइति सोहम्मीत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो स्त्रयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेंद्रयो र्दिश ब्रह्मलोके षट् लांतके पंच शुक्रे चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो श्चत्वार एव मारणाच्युतयोः ग्रैवेयके ष्वधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे ष्वेकइति द्विषष्ठि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक मुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानांता वृत्तविमानरूपा द्विषष्ठिरेव विमानेंद्रका भवन्ति तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्त्रचतुरस्त्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेव सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः पढ मावलियाएत्ति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेचया आद्या स्ततस् आवलिकायांस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूताद्विमानेंद्रकादारभ्य या चा

म्मीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए वासट्ठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

६२ भाग होय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १३ प्रतरछे तेमाहि पहिले प्रतरेपहिली आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां डिये तिहां पहिली श्रेणियें पूर्वादिक येकेकें दिशि आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणा मोटा कह्या । १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली वतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्ताग्र परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनत्कुमार मांहेंद्रें १२ ब्रह्में ६ लांतकें ५ शुक्रे ४ सहस्रारें ४ आनत प्राणते

वलिका विमानानुपूर्वी तया अथवोत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमाआद्यावलिका तस्यां पढमावलियत्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिका पेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्विषष्ठिविमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञप्तेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेंद्रकापेक्षया एकैकस्यां पूर्वादिका या दिशि द्विषष्ठिर्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिषु पुनः प्रस्तटेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्द्विषष्ठितमे ऽनुत्तरे प्रस्तटे सर्वार्थसिद्धदेवेंद्रकपार्श्वे तदेकैकमेव भवतीति तथा सव्वेत्ति सर्ववैमानिकानां देवविशेषाणां सम्बन्धिनो द्विषष्ठिर्विमानप्रतराः प्रस्तटाग्रेण प्रस्तटपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२

अथत्रिषष्ठिस्थानकं तत्र संपत्तजोव्वणत्ति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसहेणमित्यादि किलसूर्यमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

बासठिविमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं प० ॥ ६२ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए तेसठिं पुव्वसयस हस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए हरिवासरम्मयवासेसु णं मणुस्सा

मिली ४ आरण अच्युतना४ सर्व १२ देवलोकनां ५२ प्रतर नव ग्रैवेयकें ९ पांच अनुत्तरनो १ एवं सर्वमिली ऊर्द्ध लोकें ६२ प्रतर थया प्रतर २ दीठविचें एकेक विनानखखविमानेंद्रनो जाणिवो। इति ६२ सम्पूर्ण ॥ ६२ ॥ हिवे ६३ लिखेछे ॥ ऋषभनाथ अरिहंत कोशल देशना जपना तेह ६३ लाख पूर्वलगे महाराज्य वासमांहि वसीने मुंडपणो पामो गृहस्थाश्रमथकी अनगारतापणो यतीपणो पाम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व महाराजपणे १ लाख पूर्व चारित्रपालन कियो एव सर्व ८४ लाख पूर्वनो आउखो थयो हरिवर्षतोजोनेत्र रम्यकपांचमो क्षेत्र तेह युगल क्षेत्रने विषे माणस ६३ रात्रि दिवसे संप्राप्तयौवन थाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे माइतपालना करे। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे सदैव पहिलो आरो होय। हरिवर्ष रम्यक

जम्बूद्वीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युत्तरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नीलवद्वर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्ठिः सूर्योदयस्थानानि सूर्यमण्डलानी त्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्याउपरि शेषाणि तु लवणे त्रिषुत्रिंशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्ठि स्थानकं अट्ठेत्यादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यांसाष्टाष्टमिका यस्याहि अष्टौदिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवंत्येवेति भिक्षुप्रतिमा ऽभिग्रहवि

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति निसढेणं पव्वएतेवठिं सूरोदया प० एवंनीलवंतेवि ॥ ६३ ॥

अठ्ठमियाणं भिक्खुपडिमा चउसठीए राइंदिएहिं दोहियअठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जावभवइ

क्षेत्रे बीजोआरोहोय। हिमवत ऐरण्यवंतक्षेत्रे तीजोहोय। महाविदेहे चौथोआरोहोय। देवकुरु उत्तरकुरु ना युगलियां ने ४९ दिननी अपत्यपालनाछे। आरादीठ १५ दिननी वृद्धि अपत्यपालनामें छे। एम करतां ४९ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रे ६४ दिन थाय। इहां सूत्रमांहि ६३ दिन आंख्यां तेकिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवो। सूर्यना मंडल १८४ सगलाईछे तेमांहि निषधपर्वतने माथें १८० योजनमांही तेवठी तेवठी सूर्योदयस्थानरूपमांडला बेबे मांडला जगती उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११९ सर्वमिली १८४ एवनीलवंत पर्वत नेपणि एम जाणिवो ऐरवत क्षेत्र सबधी सूर्यनांजगवानां मांडला ६५ नीलवंतपर्वत जगती मिलीने बीजा ११९ पश्चिम समुद्रमांहि जाणिवा॥ इति ६३ मोसमवाय पूर्णथयो ॥ ६३ ॥ हिवे ६४ समवाय लिखेछे। आठ दिहाडा आठगुणांछे जेहनेविषे तेभिक्षु प्रतिमा अभिग्रह विशेष आठुंआठी चौसठदिनहोय जिहां तेअठ्ठमिया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये। पहिलेदिने एक भिक्षा बीजेदिने २ त्रीजे दिने ३ एम आठदिन एकेक भिक्षा वधारियेतो

शेषः अष्टावष्टकानि यतो सौ भवत्यत स्वतुः षष्ठ्या रात्रिंदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेष्टके प्रतिदिनमेकैका भिचा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा वष्टाविति सकलनया द्वेशते भिचाणामष्टाशीत्यधिके भवतो ऽतउक्तं द्वाभ्यां चेत्यादि यावत्करणात् अहाकप्पं अहामग्गं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किटिया सम्म आणाए आराहियावि भवतीति द्रुश्यम् सर्वेविणमित्यादि द्रतो ऽष्टमे नन्दीश्वराख्ये द्वीपे पूर्वादिषु दिचु चत्वारोजनकपर्वता भवन्ति तेषां चः प्रत्येक चतसृषुदिचु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति तासांच मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्तितेच षोडशपल्यंक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क म्भेन मूलादिषु दशसहस्र विष्कम्भत्वा त्तेषां क्वचित्तु विक्खभुस्सेहेणति पाठ स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कंभेनेति व्याख्येयं तथा उत्सेधेनो च्चत्वेन चतु

चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रन्नो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं दधिमुहापव्वया पल्लासठाणसंठिया सव्वत्थसमा विक्खंभुस्सेहेण चउसट्ठिंचउसट्ठिं जोयणसहस्साइं प०

आठेदिने ३२ भिचाथाय एम करतायकां आठ अष्टकलगे २८ भिचालोजे एतले सर्वमिली २८८ भिचाये यथामार्ग आराधीहोय पालीहोयने असुरनिकाय ना २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दचिण दिशे चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरें बली तेहने ३० लाख भुवन बिहु भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख आवास भवन कह्या। चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कह्या। जबूद्वीपथको आठमूं नंदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुदिशे ४ अंज नगिरि छे एकेक अंजन गिरिने चोफेर चार २ पुष्करिणी वावी छे ते वावोने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वत छे एतले सिहुं। पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन तेहने सठाणे आकारे संस्थित छे। सगले समान मूले विष्कंभ पणे पिहुलपणे दससहस्र योजन परिमाण जाणवा। उत्सेधे ऊंचपणे चउसठि २ हजार यो

ष्ष्ठिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मेद्वात्रिंशदीशाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारि विमानलक्षाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसट्ठिंलट्ठीएत्ति चतुःषष्टिर्लष्ठ नाशरागांयस्मिनसौचतुः षष्ठिलष्ठिकः मुत्तामणिमयेत्ति मुक्ताश्चमुक्ताफलानि मणयश्चंद्रकांतादिरत्नविशेषाः मुक्तारूपावामणयोरत्नानिमुक्तामणयस्तद्विकारो मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्ठिस्थानक तत्रमोरियपुत्तेणंति मौर्यपुत्रो भगवतोमहावीरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपञ्चषष्ठिवर्षाणि गृहस्थ पर्याय आवश्यकेप्येवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो बृहत्तरोभ्राता मण्डितपुत्राभिधानः षष्ठोगणधरः तद्दीक्षादिन एवप्रव्रजित स्तस्यावश्यके त्रिपञ्चाशद्वर्षाणि गृह स्थपर्यायउक्तो नचबोधविषयमुपगच्छति यतोबृहत्तरस्य पञ्चषष्ठिर्युज्यते लघुतरस्यत्रिपञ्चाशदिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मावतंसक विमान सौधर्मदेवलोकास्यम

सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसुकप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रन्नोचाउरंत चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घेमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे पणसट्ठिं सूरमंड ला प० थेरेणंमोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराओअणगारियं पव्वइए

जन प्रमाण कह्या । सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चौसठिलाख एतला विमानावास कह्या सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिना अतना धणीने चउसट्ठिलट्ठि कहतां शरी छे तिहां ते चतुष्षष्टि कहिये एतले ६४ शरी महग्घो महार्घ्य बहुमूल्य मोती मुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्यो । ॥ इति ६४ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पैसठमो समवाय लिखेछे । जंबूद्वीपने विषे १८० सूर्यमंडलछे निषधमाथे ६३ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कह्या । स्थविर वयश्रुत पर्यायें वडा मौर्यपुत्र सातमा गणधर

ध्यभागर्त्तिशक्रनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यांदिशिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तीनि भौमानि नगराकाराणिविशिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथषट्षष्ठिस्था नक तत्रदाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्धमर्द्धमनुष्यक्षेत्रं दक्षिणच तद्वेति दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रं तत्रभवादक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रा णामित्यलकारेषट्षष्ठिश्चद्राःप्रभासितव न्तः प्रभासनीयं अथवा लिङ्गव्यत्ययाद्विणानियानि मनुष्यक्षेत्राणामर्द्धानितानि तथातानिप्रकाशितवन्तः पाठांतरे दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रेप्रकाशनीयं प्रभासित वंत स्तेचएव द्वौजम्बूद्वीपेचंद्रौचत्वारोलवणसमुद्रे द्वादशधातकीखंडे द्विचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिश्पुष्करार्द्धे सर्वेचैतेद्वात्रिंशदधिकं शत एतदर्द्धंचषटष

सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा प० ॥ ६५ ॥ दाहिणद्ध माणुस्सखेत्ताण छावट्ठिं चंदापभासिंसुवा ३ छावट्ठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरद्धमाणुस्सखेत्ताणं

६५ वर्ष लगे गृहस्थाश्रम मांहि वसीने मुंड द्रव्यभावभेदे थईने अगार गृहस्थाश्रमथकी अणगार पणुं साधूपणुं पाम्या एतले ६५ वर्षगृहवास १४ वर्ष छद्मस्थप णे १६ केवलपर्याय सर्वायुवर्ष ८५ जाणिवा। सौधर्म देवलोके मध्यवर्त्ति सोधर्मावतंसकविमान शक्रेंद्रनोनिवासभूत तेह महाविमानने एकेकीये वाहाये एके की दिशिगढने समीपवर्त्ती ६५ भोमा नगराकारे विशिष्टस्थानक कह्या। इति पेंसठमो समवाय सपूर्ण ॥ ६५ ॥ हिवे ६६ मो लिखे छे। मनु ष्यक्षेत्र आखोअढी द्वीप २ समुद्र मिलीने ते मांहि दक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्र मांहि ६६ चंद्रमा प्रभासता हुया उद्योत करता हुया प्रभासेछे प्रभासिस्ये। एतले जबूद्वीप माहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र माहि ४ सूर्य ४ चंद्रमा धातकीखड मांहि १२ सूर्य १२ चद्रमा कालोदधि माहि ४२ सूर्य ४२ चद्रमा पुष्करार्द्ध माही ७२ सूर्य ७२ चद्रमा सर्वमिली १२२ सूर्य १३२ चद्रमाथया। सुदर्शण मेरुथकी चारपंक्ति चिहुदिसे मांडिये मेरुथकी दक्षिणदिशे मानुसोत्तर पर्वत

ष्ठिर्दक्षिणपङ्क्तौ स्थिता षट्षष्ठिश्चोत्तरपंक्तौ यदाचोत्तरपङ्क्तिः पूर्वस्यांगच्छति तदा दक्षिणापश्चिमायामित्येवं सूर्यसूत्रमप्यवसेयमिति ॥ छावट्ठिंगणत्ति आवश्यकेतु

पटसप्ततिरभिहिते तोदमतांतरमिति ॥ छावट्ठिंसागरोवमाइंठिइत्ति यच्चातिरिक्तं तद्दिहनविवक्षितं यतएवमिदमन्यत्रोच्यते दोवारेविजयाइसु गयस्सतिन्निचुए

छावट्ठिंचंदापभासिंसुवा ३ छावट्ठिंसूरियातविंसुवा ३ सेज्जंसस्सणं अरहओ छावट्ठिंगणा छावट्ठिंगणहरा ॥

लगे रात्रिये ६६ चंद्रमा प्रकाश करे एतले मनुष्यक्षेत्र मांहि १३२ चद्रमाछे। तेहनो अर्द्ध ६६ होय ते ६६ चद्रमा जबूद्वीप संबधी हरिवर्ष १ हिमवंत २ भरत ॥

क्षेत्र ३ एव दक्षिण धातकी खडे३ क्षेत्र एमज दक्षिण पुष्करार्द्धे एहीज त्रिहूंक्षेत्रे रात्रिकरे मेरुथकी उत्तर दिशें जबूद्वीप सबधी रम्यक १ ऐरण्यवत २ ऐर

वत ३ धातकी खंडना एहीज ३ पुष्करार्द्धना एहीज ३ क्षेत्रें ६६ चद्रमा प्रकाश करे तिवारे जबूद्वीप सबंधी पूर्वविदेह १ धातकीखंड पूर्वविदेह २ पुष्करार्द्ध

पूर्वविदेह ३ तिहां ६६ सूर्यतपे पश्चिम जबूद्वीप विदेह १ धातकीखंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्द्ध पश्चिम विदेहें ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरु

थकी दक्षिण पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुथकीउत्तर पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुथकी पूर्वपुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रि

करे तिवारे पश्चिम पुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चद्रमा कह्या। श्रेयांस ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यके ७६ गण

धर कह्याछे तेमतांतरछे। आभिनिबोधिकज्ञान एतले मतिज्ञाननी ६६ सागरोपम झाझेरालगे स्थितिकही। यदाह दोवारे विजयाइसु गयस्सतिन्निचुएअ

हवताइ अइरेगनरभवीअं नाणाजीवाणसिद्धंति। बिजयविमाने मतिज्ञानी दोवेलाजाय तिहांतितीस सागर २ बेलाउत्कृष्टो आउखो भोगेतो [illegible]सहूणा

वज्जीवायाः पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानचेत्रप्रदेशपक्की हैमवतवर्षजीवांयावत्ते हैमवतबाहुउच्येते एवमैरण्यवतबाहुअपिभावनीयौ इहप्रमाणसंवादः बाहासत्त ठ्ठिसट्टपणपन्नेतिन्नियकलाओत्ति कलाएकोनविंशतिभागः एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनु.पृष्ठात् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्स दसकलायधणुत्ति ॥ एव लच्चणात् ३८०४० । १० । १९ हिमवद्धनुःपृष्ठे धणुपिट्ठकलचउक्क पणवीससहस्सदुसयतीसहियत्ति एवलच्चण २५२३० । ४ । १९ । अपनीतेयच्छेषंतदर्द्धी क्वतसद्भवतीति आयामेनदैर्घ्येणेति मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वांताज्जम्बूद्वीपोपरस्यांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसानः पचपचाशद्योजनसहस्राणितावदस्ति ततः परद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तस्मिंश्चत्यसूत्रार्थं सम्भवति पचपचाशतोद्वादशानांच समषष्टित्वभावात्

सत्तठिं सत्तठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिन्नियगूणवीसइभागाजोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए

तिछे हिमवतचेत्रनी जीवालगे तेहिमवंतचेत्रनी बाहुसरीखीवाहुछे। एम शिखरीनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेऐरण्यवतचेत्रनी प्रदेशपक्तिछे ऐर ण्यवतचेत्रनी जीवालगे ते ऐरण्यवंतचेत्रनी बाहुकहिये। जेहिमवंत ऐरण्यवंतचेत्रनीबाहू६७से ५५ योजन एकयोजनना उगणीसहाय्यात्रिणिकला ६७५५। ३ १९ योजनना ३ भाग लांबपणे कही। मे५पर्वतना पूर्वचरिमातथकीमाडी लवणसमुद्रमांही पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल वणसमुद्राधिपति तेहनो निवासभूत गौतम द्वीपछे तेद्वीपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आंबाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। मेरूप र्वत १० हजार योजन विष्कभलीजे अने तिहांथी ४५ हजारे पश्चिम जगती तिहाथी १२ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आतरो थयो

यद्यपिसूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्दोनदृश्यते तथाप्यसौदृश्य. जीवाभिगमादिषु लवणसमुद्रे गौतमचंद्ररविद्वीपात्विनाद्वीपांतरस्याश्रूयमाणत्वादिति सव्वेसिपिणमि त्यादि सर्वेषामपि णमित्यलकारे नचत्राणांसीमाविष्कम्भः पूर्वापरतश्चंद्रस्य नचत्रभुक्तिक्षेत्रविस्तारः नचत्रेणाहोरात्रभोग्यक्षेत्रस्य सप्तषष्ट्याभागैर्भाजितोविभक्त समांसः समच्छेदः प्रशस्तः भागातरेणतुभज्यमानस्य नचत्रसीमाविष्कम्भस्य विषमच्छेदनाभवतिभागातरेण नवक्तुशक्यतेइत्यर्थः तथाहि नचत्रेणाहोरात्रगम्य स्य क्षेत्रस्यसप्तषष्टिभागीकृतस्यक्षेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्नचत्रस्यक्षेत्रतः सीमाविष्कम्भोभवति ॥ एतावतिक्षेत्रेचंद्रेणसह तस्ययोगोव्यपदिश्यतइत्यर्थ. तथातस्यामेवैकविंशतौ त्रिंशन्मुहूर्त्तत्वादहोरात्रस्य त्रिंशतागुणिताया ६३० सप्तषष्ट्याहृतभागायायल्लब्धम् तत्कालसीमाभवति चंन्द्रेणसहतस्य योगकालइ त्यर्थः साचनवमुहूर्त्ताः सप्तविंशतिश्चसप्तषष्टिभागाः ९ । २७ । ६७ आहच अभिइस्सचंदजोगो सत्तट्ठीखंडिए अहोरत्ते भागाओएक्कवीस होतिहिगानवमुहुत्ता यत्तिक्षेत्रतः कालतस्तथा शतभिषगभरण्यार्द्राश्लेषास्वातिज्येष्टाना त्रयस्त्रिंशत्सप्तषष्टिभागास्तद्भागार्द्धंच क्षेत्रसीमाविष्कम्भोभवति तस्यामेवसार्द्धत्रयस्त्रिंशतिः त्रिंश तागुणिताया १००५ सप्तषष्ट्याहृतभागायां यल्लब्धम् तदेषाकालसीमा तच्चपंचदशमुहूर्त्ता. आहच सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेससाइजेट्ठाय एएछन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसजोगत्ति ॥ १ ॥ तथोत्तरात्रयः पुनर्वसुरोहिणीविशाखाना सप्तषष्ठिभागानाशतं तद्भागार्द्धंच क्षेत्रविष्कम्भः सीमाभवति तथातस्मिन्नेवत्रिंशद्गुणि

अंतरे प० सव्वेसिं पिण नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तठिभागभइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

सगला नक्षत्रनी सीमा विष्कभपणे पिहुलपणें सतसठ भागें विभजिये भिहचेयकें समोअंश क्षेत्रनी भागआवे एम कह्यो नक्षत्रें अहोरात्रीयें जेक्षेत्रनी सी मा क्षेत्रथकी विष्कभपणो होय । एतले क्षेत्रे चंद्रमा सार्थे तेअभोचनो योग सबंध कहीये बीजा नक्षत्रनी वार्ता सर्वटीकाथकी जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

ते २०१५ तथैवहृतभागेयल्लब्धम् तदेषांकालसीमाभवति साचपचचत्वारिंशन्मुहूर्त्तोइति गहच तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछन्नक्खत्ता पी
णयालमुहुत्तसजोगत्ति ॥ १ ॥ शेषाणांपचदशानां नक्षत्राणांसप्तषष्टिभागानां चैन्नसीमान्यक्षभोभवति तस्माच्चतथैवगुणितायां २०१० हृतभागायांचयल्लब्धम्
तकालसीमातच्चत्रिंशन्मुहूर्त्ता आहच अवसेसानक्खत्ता पन्नरसविहुति तीसइमुहुत्ता चंसतेहिजोगोसमासओएसवक्खामि ॥ २ ॥ एवचैकस्यपक्षां २ पचद
शाना चेत्येवमष्टाविंशतेर्नक्षत्राणामष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानि सप्तषष्टिभागाना मेदेवद्विगुणं षट्पंचाशतो नक्षत्राणांभवति तत्त्वसहस्रत्रयंपञ्चशतानिष
ष्ट्यधिकानि ३६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्ठिस्थानके किंचिल्लिख्यते धायइसडेत्यादि इहयदुक्ताम् एवंचक्कवट्टी वलदेवावासुदेवत्ति तत्रयद्यपिचक्रवर्त्ति
नांवासुदेवानानैकदाअष्टषष्टिः सभवति यतोजघन्यतोप्येकस्मिन् महाविदेहेचतुर्णांतीर्थंकरादीनामावश्यभावः स्थानांगादिष्वभिहित: नचैकदैनैचक्रवर्त्ती
वासुदेवश्चैकदा भवतोऽतः अष्टषष्टिरेवोत्कर्षतश्चक्रवर्त्तिना वासुदेवानां चाष्टषष्ठ्याविजयेभवति तथापीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदभा

धायइसण्डेणं दीवे अडसठिं चक्का वट्टिविजया अडसठिंरायहाणीउ प० उक्कोसपए अडसठिंअरहंता स

य पूरीथयो ॥ ६० ॥ हिवे ६८ मो लिखेछे । पूर्व पश्चिम धातकी खंडे ६८ तीर्थंकरोनीविजय चक्रवर्तिये जीपिवा योग्य क्षेत्रना खंड कह्या । ॥
एतले पोधातकीखडे ३२ विजय विदेहमांहि अने भरत ऐरवत मिली २ एवं ३४ विजय धातकी खडे पणि ३४ सर्व मिली ६८ विजयहोय । ॥
जयदीठ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापरधातकी खडे ६८ राजधानीछे जिहाराजा थकरे तेराजधानी कहिये। उत्कृष्ट पदे पूर्वापरधातकी खडे वि
६८ अरिहंत उपजताहुया उपजेछे उपजसे । एतले एकेकविजयदीठ एकेक अरिहंत उपजेम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव जाणिवा । यद्यपि वर्त्तमान

राइति सर्वसंख्यैकोनसप्ततिरिति। मंदरस्सेत्यादि लवणसमुद्रंपश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राण्यवगाह्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमु द्राधिपतेर्भवनेनालङ्कृतोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवति पचचत्वारिंशतोजंबूद्वीपसंबंधिनाद्वादशाना मन्तरसंबंधिनांद्वादशानामेवद्वीपविष्कंभसंबंधिनांचमीलनादिति।मोहनीयवर्ज्जानाकर्म्मणामेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवतीति कथं ज्ञानावरणस्यपच दर्शना वरणस्यनव वेदनीयस्यद्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विचत्वारिंशद्गोत्रस्यद्वेअंतरायस्यपचेति ॥ ६९ ॥ अथसप्ततिस्थानकेकिमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा

सुयारा मंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइ अबाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीउ

भरत हिमवतादिक चेत्रछे ते पाचसतां पेंत्रीस थाय एकेक मेरुने पासें हिमवत महाहिमवतादिक ६ । ६ । वर्षधर छे छपच त्रीस वर्षधर थया धात की खंड माहि २ इषुकार पर्वतछे पुष्कराई माहि २ एवं ४ इषुकार पर्वतथया सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६९ मेरुना पश्चिम चरमांत थी गौत म द्वीपनो पश्चिम चरमात एहने ६९ हजार योजन नो विचाले आंतरो कह्यो । एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनी जगती छे तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननो पिहुलो छे ते सर्व एकी करिये तिवारे ६९ हजार योजन थाय । मोहनीय कर्म वर्जी नें सात कर्मनी ६९ उत्तर प्रकृतिकह्यो। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६९ समवाय सपूर्ण ॥ ६९ ॥ हिवे ७० मो लिखिए छे। श्रमण भगवान महावीर देव च्यार मास प्रमाण वर्षाकाल

क्रातिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्येणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्म्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरूपा च यतः स्थितिरवस्थान तेनभावेनाप्राच्यवन तत्र कर्म्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अबाहति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणित तावत्कर्म्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोनन्तरसमये कर्म्मदलिक पूर्वनिषिक्त उदये प्रवेशयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्म्मदलिकस्या ऽनुभवनार्थं रचना तच्च प्रथमसमये बहुकं निषिचति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयसमये विशेषहीन मेवयावदुत्कृष्टस्थितिकर्म्मदलिक तावद्विशेषहीन निषिचति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगबाहु पढमाएठिईएवहुतरदव्व सेसेविसेसहीणजावुक्कोसंतिसव्वेसि ति बाहृलोडने बाधत इति बाधा कर्म्मणउदयइत्यर्थः नवाधाअबाधा अन्तरं कर्म्मोदयस्येत्यर्थः तथा ऊनिका आबाधोनिका कर्म्मस्थितिः कर्म्मनिषेकोभवतीत्येगमेक्केगाहु रन्येपुनराहु रवाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्म्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्म्मनिषेको भवतिसच क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित्। चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसम्ब

कम्मस्स सत्तरिंसागरोवमकोडाकोडीउ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिसामाणियसाहस्सीउ प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

उदयेनाजे ते माटे ७० कोडाकोड सागर माहि थी ७ हजार वर्ष जणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कोइक कहेछे सात हजार वर्ष अधिक ७० कोडाकाडि सागर लक्षण कर्म निसेक होय। माहेंद्र चोथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० समवाय सपूर्ण ॥ ७०

त्सरा भवन्ति तत्राद्यौ चन्द्रसम्वत्सरौ तृतीयोभिवर्द्धितसम्वत्सर श्चतुर्थश्चन्द्रसम्वत्सरस्तृतीयोभिवर्द्धितसंवत्सरएव तत्रच एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशतच द्विषष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति श्रयञ्च द्वादशगुणः चन्द्रसंवत्सरो भवति त्रयोदशगुणश्चाय मेवा भिवर्द्धितो भवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्वत्सरत्रयेदिनानांसहस्रं त्रिनवतिः षट्द्विषष्टिभागाभवन्ति १०९२। ६। ६२ तथाआदित्यसंवत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्ठियभवति तत्त्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिकं भवति इत्थंचकिलचन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेकपूर्यते ऽपरञ्चश्रावणकृष्णप्रतिपदिश्रारभ्यते एवचादित्ययुगसंवत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसंवत्सरत्रय पंचभिर्दिनैःषट्पंचाशताचदिनद्विषष्ठिभागैरूनंभवतीतिज्ञात्वा आदित्ययुगसंवत्सरत्रय श्रावणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसंवत्सरत्रयत्वाषाढ्यां तत ।

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कंतेहिं सव्वबाहिराउ मंडलाउ सूरिएआउट्टिं करेइ बीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

हिवे ७१ मो लिखेछे। १ युग मांहि ५ संबच्छर होय ते चद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र सबच्छर एकेको चद्र मास २९ अहोरात्रि १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कीधां चद्र संबत्थाय तेहनां ३५४ दिन झांझेरा थाय २९। ३२। ६२ अहोरात्रि१३ गुणाकरिये तो अविभर्द्धित वर्षथाय तोदोय चंद्र संबत् १ अभियर्द्धित संवत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अनें आदित्य संबत्सरना त्रिणसे छासठिथाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चंद्रयुग अने सूर्ययुग येके आषाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग श्रावण बदी पडिवाये प्रारभियें एम आदित्ययुग संबत्सरनी अपेक्षायें चद्रसंबत्सरत्रिण पांच दिहाडे साठिया छप्पन्न भागें जणां करिये। आदित्ययुग संबच्छर ३ श्रावण बदी पचना चंद्र दिन थकी छहें दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संबच्छर ३ आषाढी पूनिमें पूरे तिवारपछी सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

श्रश्रावणकृष्णपचसप्तमदिनादारभ्य दचिणायने नादित्य श्चरन् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीना चतुर्णांहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त तितमे दिने माघमासे बहुलपचत्रयोदशीलचणे सूर्यश्रावृत्तिं करोति दचिणायनान्निवृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः॥ उक्तश्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्वत्स रेषूत्तरायणतिथयः क्रमेणैवं यदुतबहुलस्ससत्तमीए १ सूरोशुद्धस्सतोचउत्थीए २ बहुलस्सयपाडिवए ३ बहुलस्सयतेरसीदिवसे ४ सुद्धस्सयदसमीए ५ पवत्तएपं चमीउश्रावट्टी एयाश्राउट्टीश्रोसव्वाश्रोमाघमासमित्ति दचिणायनदिनानिचैव पढमाबहुलपडिवए १ वीयाबहुलस्सतेरसीदिवसे २ सुद्धस्सयदसमीए ३ बहुल स्सयसत्तमीए ४ सुद्धस्सचउत्थीए पवत्तएपचमीउश्राउट्टी एयाश्राउट्टीश्रो सव्वाश्रोसावणेमासेत्ति वीरियपुव्वस्सत्ति तृतीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभृतमधिकारवि शेषः। श्रजिएत्यादि तस्यहि श्रष्टादशपूर्वलचाणि कुमारत्व निपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाधिकाराज्यमित्येकसप्तति रिह्च पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न्न विवचित मिति

एकसत्तरिंपाऊझा प० श्रजितेणं श्ररहा एकसत्तरिं पुब्बसयसहस्साइं श्रगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता जा

सूर्य चालतोथको चउथा चंद्र युगना चउथा मासमांहि श्रतर्भूतछे एकसो श्रठारमा दिन कार्त्तिकीयें येकसो बारमां पोतानां मडलमांहि सूर्यचार करे तिवारपछे सीश्राला संबधी मागशिरादिक मासमांहि एकत्तर माडला सूर्य चरे पछे बहुत्तरिमें दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमांहिला सर्वबाह्यमां डला थकी सूर्य श्रावृत्तिकरे प्रदचिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका श्रधिकार विशेष कह्या। श्रजितनाथ

छद्मस्थभावे देशोनानिचिंशत्केवलित्वे इतिद्विसप्ततिः अयलभायत्ति अचलोमहावीरस्य नवमो गणधरः तस्यायु द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे द्वादशछद्मस्थताया चतुर्दशकेवलित्वे इति पुष्करार्द्धेद्विसप्तति चन्द्रास्तत्रैकस्यां पंक्तौ षट्त्रिंशदन्यस्याच तावंत एवेति बावत्तरिंकलाओत्ति कलाविज्ञानानीत्यर्थः ताश्च कमनीयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखनं लेखो ऽचरविन्यासः तद्विषया कला विज्ञान लेख एवोच्यते एवं सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र लिपि रष्टादशस्थानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदतस्तथा पत्रादि विविधवित्तोपाधिभेदतोवा ऽनेकविधेति तथाहि पत्र वल्ककाष्टदन्तलोहताम्ररजतादयो अक्षराणामाधार स्तथा लेखनोत्कीर्णनसूतव्यूतछिन्नभिन्नदग्धसंक्रांतितो ऽक्षराणि भवन्तीति विषयापेक्षयाप्यनेकधा स्वामिभृत्यपितृपुत्रगुरुशिष्यभार्यापति

गवंमहावीरे बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे अब्भितरपुक्खरद्धेणं बावत्तरि चंदापभासिंसु ३ बावत्तरिसूरिया तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीओ प० बावत्तरिकलाओ प० तं०

महावीरना नवमा गणधर अचलभ्राता ७२वर्ष लगें सर्वायुपालोने यतोपर्णू पामी सिद्ध थया सर्वदुःखथको प्रक्षीण थया। गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभावें १२ वर्ष केवलि पर्यायें १४वर्ष एम ७२ वर्षपालोने सिद्ध थया। पुष्करवरद्वोप १६ लाखनोछे तेमांहि ८ लाख मानुषोत्तर पर्वतमांहिते अब्भिंतर पुष्करार्द्ध कहिये तिहां ७२ चंद्रमा ७२सूर्य प्रभासता हुया प्रभासेछे प्रभासस्यें पहिली पंक्तियें ३६ दूजी ३६ एम ७२ थया। तपता हुया तपेछे तपस्यें एकेक चातुरंत चक्रवर्ती नें ७२ पुरवर मोटा श्री नगरना सहस्र कह्या। पुरुषनी ७२ कला कही ते कहेछे। लिखवो अक्षरनो स्थापिवो तेहीजकलाते लेख क

शत्रुमित्रादीनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वा त्तथाविधप्रयोजनभेदाच्च अक्षरदोषा श्चैते अतिकार्श्यमतिस्थौल्यं वैषम्यमपंक्तिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽवयवेष्वितिचेति ॥ १ ॥ तथा गणित संख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद म्पाटीप्रसिद्धं २ रूप लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माण ३ नाट्यकला भरतमार्ग स्थूलिकलास्यविधान मित्यादिभेदादष्टधा नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूप चात्रभरतशास्त्रादवसेयं ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्ग स्थूलिकमार्ग भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छनाएकविंशतिः तानाएकोनपञ्चाशत्समस्वरमण्डलं इयच्च विशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाद्यति वाद्यकला साच तत वितत शुषिर घन वादाना चतुः पंचत्रयेक प्रकारतया त्रयोदशधा ४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्तति रिति कलासंख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गायं ५ वाइयं ६ सगरयं ७ पुक्करगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पोरकच्चं १२ अट्ठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविही १५ पाणविही १६ वत्थविही १७ सयणविही १८

ला १८ भेदें कहीछे ।१। गणित अकनीकला २ । चित्राम करिवो ३ नाटकनीकला ४ गानकरिवानीकला ५ वाजित्र वजाव्वानीकला ६ । कंठ संबंधी स्वरने ओलखिवानीकला ७ । बाजित्रनीगतिनोजाणवो ८ । ताल देवानीकला ९ । जूवारमवानीकला १० । लोगथी आलाप सलापनी कला ११ नगररचादिकनी कला १२ । सारपासारमवानी कला १३। पाणीअनेंमाटी एकठीकीधांअसुकयोग होय तेकला १४। अन्ननीपजाविवा राधिवानीकला १५। पाणीनीपजावानी विधि १६ । वस्त्र नोपजाविवारगवानी पहिरवानीविधि १७। सोवानीविधि १८ । आर्या संस्कृतनोबंध तेहनो जाणियो १९ । प्रहेलिका

अज्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्ति २४ मधुसित्थं २५ आभरण विही २६ तरुणी पडिकम्मं २७ इत्थीलक्खणं २८ पुरिसलक्खण २९ हयलक्खणं ३० गयलक्खणं ३१ गोणलक्खणं ३२ कुक्कुडलक्खणं ३३ मिंढयलक्खण ३४ चक्कलक्खणं ३५ छत्तलक्खणं ३६ दंडलक्खणं ३७ असिलक्खणं ३८ मणिलक्खणं ३९ कागणिलक्खण ४० चम्मलक्खणं चंदलक्खणं सूरचरियं राहुचरियं गह चरियं सोभागकरं दोभागकरं विज्जागयं मतगय रहस्सगयं ४१ सभासचारं ४२ वूहं ४३ खंधावा

नीकला २०। मगधदेशसबंधीगाथानीकला २१। प्राकृतबंध गाथानो जाणपणुं २२। श्लोक रचवानी कला २३। गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४। मधुरादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५। आभरण घडवानो जडवानो पहरवानी कला २६। तरुणी स्त्रीजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनोसिखाविवो २७। स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८। पुरुषना बत्तीस लक्षणजाणिवानो कला २९। घोडाना लक्षण जाणिवानो कला ३०। हाथीना लक्षण जाणिवानीकला ३१। वृषभ लक्षण कला ३२ कूकुडाना लक्षण कला ३३। मींढाना लक्षण। ३४। चक्रना लक्षण ३५। छत्रना लक्षण ३६। दंडवंशलठीनालक्षण ७३। खड्गना लक्षण ३८। मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९। कांकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४०। चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सूर्यनो चरित्र एहवो ज्योतो एमथास्ये एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो विद्या प्रज्ञप्ति रोहिणी तन्नत विचार मन्त्र आराधे हरिणैगमेषीआवे। रहस्यगति प्रछन्न वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु मात्रना प्रयोग चार काटक मानो उ

सुचि दं ऽतर्भावोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथत्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। हरिवासेत्ति अत्र सम्वादगाथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजोयणसहस्सा जीवासत्तरसकलायअद्धकलाचेवहरिवासेत्ति तथा विजयो द्वितीयोबलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिवर्षलक्षणायु रुक्ता मावश्यकेतु पंचसप्तति रितीदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते। तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिंवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाउ णं जीवाउ तेवत्तरिं २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरं जोयणसए सत्तरसयएगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० विजएणंबलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थेरेणंअग्गिभूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पचीनो पचेंद्रियतिर्यंचनी उत्कृष्टी ७२ हजार वर्षनी स्थिति कही ॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखेछे। हरिवर्ष अने रम्यक एयुगल क्षेत्रसबधी जीवा धिणचरूप तिहुत्तरी २ हजार योजन जाणवी। नवसे एक योजन ७३९०१ योजन। एक योजनना उगणीसहाइया सत्तर भाग एकयोजननो वली उपरि अर्द्ध भाग आयामपणे लांबपणेकही। विजय बीजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगें पूरो आउखूंपालीने सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगी सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे ॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखेछे। स्थविर ब

शीतोदापप्रातकुंडे महयन्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दुहश्रोत्तिक्वचित्दृश्यते तदपपाठइतिमन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्तेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्सस्थान तेनसंस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वता अपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवरं नीलवद्वर्षधराद्दक्षिणाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जेत्यादि तत्र प्रथमायांत्रिंशत् द्वितीयायांपचविंशतिः तृतीयायांपञ्चदश पचम्यांत्रीणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनलक्षं सप्तम्यांपंचेत्येतानि मीलितानि चतुःसप्तति र्भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। सुविधे र्नवमतीर्थंकरस्य ना

सजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महयाघडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवडइएवंसीतावि दक्खिणमुहीभाणियव्वा चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरि नरयावाससयसहस्सा प०

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने सठाणे सस्थित एहवे प्रपातें पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सब्दें पडेछे। एम नीलवत पर्वत उपरि॰केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती शीता महानदी नीलवंत पर्वत हेठें शीताप्रपात कुडनेविषे पडेछे। सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो। चौथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीयें ३० लाख बीजीयें २५ लाख त्रीजीयें १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पाच जंणा १ लाख सातमीयें ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो सपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिवे ७५ मो लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ पुष्पदत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया। सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगी

मातरतः पुष्पदन्तस्येति तथाशीतलस्य पंचसप्ततिपूर्वसहस्राणि गृहवासे अथ पंचविंशतिः कुमारत्वे पंचाशत्राज्य इति तथाशांतिः पंचसप्ततिवर्षसहस्रा णि गृहवासमध्युष्य प्रव्रजितः अथं पचविंशतिः कुमारत्वे पंचविंशतिः मांडलिकत्वे पंचविंशति शक्रवर्त्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्थानके लिख्यते किंचित् । तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावासलक्षाणि दक्षिणस्यां चत्वारिंश दुत्तरस्यात् षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इहमेयभवनमान शेषा

॥ ७४ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहउ पन्नत्तरि जिणसया होत्था सीतलेणं अरहा पन्नत्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडे जावपव्वइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ छावत्तरिंविज्जुकुमारावाससयसहस्सा प० एवं दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं छएहंपिजुगलयाणं छावत्तरिस

गृहवास मांहिवसीनेमुंडथया यतीपणंपाम्या । २५ हजार पूर्व कुमारपणे ५० हजार पूर्व राज्याश्रमे एम ७५ हजार पूर्वथया २५ हजार पूर्व दीक्षा सर्वायु १ लाख पूर्व जाणिवो । शांतिनाथ अरिहंत ७५ हजार वर्षलगें गृहाश्रम मांहि वसीने मुंडथया गृहस्थथकी यतीपणूं पाम्या । २५ हजार वर्ष कुमारपणे २५ हजार वर्ष मडलीक राज्यपणें २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणेंवसीने प्रव्रज्या पाम्या । २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष । इति ७५ मो संपूर्ण ॥ ७५ ॥ हिवे ७६ मो लिखे छे । विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिशें ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एवं ७६ लाख भवन कह्या एमज द्वीप कुमार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ विद्युत्कुमार ४ स्तनित कुमार ५ अग्नि कुमार ६ एकेकना बेबे इंद्र करतां १२ थया । एहना कहेतर

र्यां द्वीपकुमारादि भवनपतिनिकायाना मिहार्थं गाथा दोवेत्यादि युगलानामिति दक्षिणोत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥
अथसप्तसप्ततिस्थानकं विव्रियते किंचित्तत्र भरतचक्रवर्त्ती ऋषभस्वामिनः षट्सु पूर्वलक्षेष्वतीतेषुजात स्त्र्यशीतितमेचतत्रातीतेभगवतिचप्रव्रजिते राजासंवृत्तः
ततश्चस्त्र्यशीत्याः षट्सु निष्कासितेषु सप्तसप्ततिस्तस्यकुमारवासोभवतीति अंगवंशोगराजसन्तानस्य संबंधिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गर्द्दतोयेत्यादि
ब्रह्मलोकस्याधोवर्त्तिनोष्वष्टासु कृष्णराजिष्वष्टौ सारस्वतादयो लोकान्तिकाभिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गर्द्दतोयानातुषितानांच देवाना मुभयपरिवार

यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ भरहेरायाचाउरतचक्कवट्टी सत्तहत्तरि पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासम ज्झेवसित्ता महारायाभिसेयसपत्ते अंगवंसाणं सत्तहत्तरि रायाणोमुंडे जावपव्वइया गद्दतोयतुसियाणं

२ लाख भवन कह्या दक्षिण उत्तर नामिलीने। इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ हिवे ७७ मो लिखेछे। श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गयें थके भ
रत चक्रवर्ती जन्म पाम्या। ८३ लाख पूर्वमांहीथी ६ लाख पूर्व काढियके ७७ लाख पूर्व उगस्या तोभरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार वासमांहि
वसीने महाराज्याभिषेक चक्रवर्त्तपदवीनोअभिषेक पाम्या। एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे १ लाख पूर्व दीक्षापणे सर्वायु चा
रासी लाख पूर्व जाणिवो। अंगराजाना संतान सबंधी अंगवंशना ७७ राजा मुंड थईने गृहस्थथकी अणगार पणूं पाम्या। पांचमो ब्रह्मलोक तेहने विषे अ
धोवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताछे तेमाहि गर्दतोय १ तुसित २ एविहुं देवतानो ७७ हजार देवतानो परिवार
कह्यो। एके के मुहूर्त ७७ लवकाल विशेष लवाग परिमाणे कह्या। इति ७७ मो संपूर्ण ॥ ७७ ॥ हिवे ७८ मो लिखेछे। शक्रेंद्र देवेंद्र देवरा

मंग्रगामित्व मित्यर्थः भट्टित्तति भर्त्तत्वं पोषकत्वं सामित्तंति स्वामित्वं स्वामिभावत्वं महारायत्तंति महाराजत्वं लोकपालत्वमित्यर्थः आणाईसरसेणावच्चति आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारेमाणेत्ति अनुनायकैः सेवकाना कारयन् पालेमाणेत्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरोमहावीरस्याष्टमोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथ ग्टहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् छद्मस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टेणति उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना न्निवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिएत्ति आदित्यः पढमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिशंगच्छतो रवे र्यत्प्रथमन्तस्मा त्नु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एगूणचत्तालीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यंतरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशेअउत्तरिति अष्टसप्तति एगसट्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुड्ढेत्तत्ति निर्वर्द्धाहापयित्वेत्यर्थः तथारयणिखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुड्ढेत्तत्ति अभिनिवर्द्ध्य वर्द्धयित्वेत्यर्थः चारंचरइत्ति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

पिए अठहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिएपढमाउ मंडलाउ एगू

स्थपणे ८ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया। उत्तरदिश गमन थकी निवर्त्यो प्रारंभ्यो छे दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्य पहिला मांडला थकी एकोन चालीसमे मांडले एक मुहूर्तना अठहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रने रात्रिने अभिवर्द्धावीवधारीने चार चरेछे एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यतर मडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त्त

स्वष्टसप्तत्यां चिन्तायां त्रयोदशमुहूर्त्ता सप्तदशैकषष्ठिभागाश्चेति एवंदक्षिणायननियहेत्ति यथोत्तरायणनिवृत्त एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति मेकषष्ठिभागान् हापयति वर्द्धयतिच एवंदक्षिणायननिवृत्तावपि सूर्यस्तान्हापयति वर्द्धयतिच केवलं दक्षिणायने दिनभागान् हापयति रात्रिभागां स्तवर्द्धयति इहतु दिनभागान् वर्द्धयति रात्रिभागांश्च हापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशीतितमे स्थानके किंचिल्लिख्यते । तत्र वलयामुहस्सत्ति वडवामुखाभिधानस्य पूर्वदिग्व्यवस्थितस्य पायालस्सत्ति महापातालकलशस्याधस्तनचरमांता द्रत्नप्रभापृथ्वीचरमान्त एकोनाशीत्यासहस्रेषु भवति कथंरत्नप्रभा हि अशीतिसहस्राधिकं योजनानां लक्षम्बाहल्यतो भवति तस्याश्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलक्षप्रमाणावगाही वलयामुखपातालकलशो भवति तत स्तच्चरमांतात् पृथिवी चरमांतो यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपित्रयो वाच्या इति छट्ठीरत्यादि अस्यभावार्थः षष्ठपृथिवीहि बाहल्यतो योजनानां लक्ष

रंचरई एवं दक्खिणायण नियट्टेवि ॥ ७८ ॥ वलयामुहस्सणं पायालस्स हिट्ठिल्लाउ चरमंताउ

॥ ७८ ॥ हिवे ७९ मो लिखेछे। पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलश वडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वीनो हेठिलो चरिमांत एह ७९ हजार योजन आवाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेमांहीथी एक सहस्र योजन समुद्र जंडोते काढीने १ लाख योजन पाताल कलशो छे तेकाढो तेहनो हेठलो त्रिभाग लीजे तो पूठें ७९ हजार योजन उगरा जाणिवा। एमज दक्षिण समुद्रें केतु पाताल कलश २ पश्चिमे यूप ३ उत्तरे ईसर कलश ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठिलोचरमांत एह बिचाले ७९

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधय स्तु यद्यपि सप्तापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्यु स्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं ष ष्ठपृथिवीबाहल्यार्द्धमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाण चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति भवति ग्रथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाहल्यत्वा त्पंचमीमाश्रित्येद सूत्रमवसेयं यत स्तद्बाहल्यमष्टादशोत्तरं लक्षमुक्त यत प्राह पढमासीइसहस्सा १ बत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाय ३ अट्ठार ५ सोल ६ अ ठ्ठय ७ सहस्सलक्खोवरिंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वा द्बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या श्चत्वा रिद्वाराणि विजयवेजयंतजयतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविष्कम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं केउ स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि छठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमते एसणं एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० जबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन आंतरो जांणिवो। छठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागथकी एतले छठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनो मध्यभाग ५८ हजार योजन छठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो छे तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७९ हजार योजन आबाधाये बिचा ले आतरो कह्यो। एतले छठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह ग्रथने मते एतले तेहनो हेठिलो चरमांत ७९ हजार योजन थयो। एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो। तेएहने मते छठीयेज कहियो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्य मित्यर्थः एसणति एतदेकोनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्येवंलक्षण मबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थोन्तर मप्रसं कथं ज
म्बूद्वीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूंषि १२८ अगुलानि १३ सार्द्धानीत्येव लक्षणस्यापकर्षितद्वारशाखाविष्कम्भस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥
७९ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिल्लिख्यते । श्रेयांसएकादशोजिन स्त्रिपृष्टः श्रेयांसजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलःप्रथमबलदेवोपि तथा त्रिपृष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणू इ उड्ढंउच्चत्तेण होत्था तिविठेणं वासुदेवे असीइधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उड्ढ उच्चत्तेण होत्था तिविठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था आउवकुले कठे असीइजोय

योजन कहिवो । जम्बूद्वीप नी जगतीना ४ द्वारछे पूर्वादिकें विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेका दरवाजो चार २ योजन पिहुलोछे । चार दरवाजानो परस्पर अंतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननोछे । जम्बूद्वीपनीपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाउ १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मांहीथी ४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीयें पूठे उगरया योजन चिंहु भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये । इति ७९ मो सपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिवे ८० मो लिखेछे । श्रेयांस इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष उचा उंचपणे हुया । श्रेयांस जिननेवारे त्रिपृष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष उंचो ऊ च पणे थयो । पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष उंचो उंच पणे थयो । त्रिपृष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगी महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष जाणिवो । रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेहनां ३ कांडछे । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षलक्षाणिसर्वायुरिति चत्वारिलक्षाणिकुमारत्वे शेषंतुमहाराज्येइति आउबहुइत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलक्षबाहल्याया
स्त्रीणिकाडानि भवन्ति तत्र प्रथम रत्नकांड षोडशविधरत्नमय षोडशसहस्रबाहल्य द्वितीय पककांड चतुरशीतिसहस्रमान तृतीय मब्बहुलकांड मशीतिर्यो
जनसहस्राणीति जंबूद्वीवेणमित्यादि ओगाहित्तत्ति प्रविश्य उत्तरकट्ठोवगयत्ति उत्तरां काष्ठादिश मुपगत उत्तरकाष्ठोपगतः प्रथममुदय करोति सर्वाभ्यन्त
रमडले उदेतीत्यर्थः ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानकं किंचिदुच्यते। नवमनवमिकेति नवनवमानि दिनानि यस्या सा नवनवमिका भवति नव
सु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यां च भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिंदिनानि भवत्येव नवानां नवकाना मेकाशीतिरूपत्वा त्तथा प्रथमेनवके प्रतिदिनमेकै

णसहस्साइं वाहल्लेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरन्नो असीइसामाणियसाहस्सीओ प० जंबूदीवेणं दीवे असी
उत्तर जोयणसय ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकठोवगए पढमं उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियाणं

जाडपणे। सोलेभेदे रत्नमय १ बीजो पक कांड ८४ हजार योजन। त्रीजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकह्यो। ईशानेंद्र बीजो इन्द्र देवतानो
राजा तेहना ८० हजार सामानिकदेवता आपणीसारिखा कह्या। जंबूद्विपनी जगतीने माहीले पासे एकसो असी योजनलगी अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य
उत्तरदिशि भणी अभिमुख थयोथको सर्वाभ्यतर माडले आषाढो पूनिम दिने निषध पर्वतने माथे प्रथम उदय करे। इति ८० ठाणूं संपूर्ण ॥ ८० ॥
हिवे ८१ मोठाणूं लिखेछे। पहिला नवदिनलगे एकेको भिक्षा बीजा ९ दिन लगे २ भिक्षा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारीये नवनवमिका
भिक्षुप्रतिमा एकासी दिने पूरीथाय। नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिक्षायें दातेंकरी यथासूत्र क

काभिधा एवमेकोत्तरया वृद्ध्या नवमेनवकी नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिक्षाशतानि भवन्तीत्यतउक्तं चउहियेत्यादि इहच भिक्षाशब्देन दतिरभिमेता अहासुत्तंति यथासूत्रं सूत्राणतिक्रमेण जावत्तिकरणा यथाकल्प यथामार्गंयथातत्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शो िता ती िता की तिंता आज्ञया राधिते तिद्रष्टव्यं विवाहपन्नत्तीएत्ति व्याख्याप्रज्ञप्त्या मेकाशीति महायुग्मशतानि प्रज्ञप्तानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा दिलक्षणराशिविशेषविचाररूपाणि अवांतराध्ययनस्वभावानि तदवगमावगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्वाशीतिस्थानके किमपिलिख्यते । तत्र जम्बूद्वीपे द्वाशीतिद्वाशीत्यधिकंमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशत तद्भवतीति वाक्यशेषः किंभूतं यत् सूर्योद्विःकृत्वो द्वौवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तद्यथानि

निक्खुपडिमा एक्कासीइराइंदिएहि चउहियपंचुत्तरेहिं निक्खासएहि अहासुत्तं जाव आराहियाकुंथुस्सणं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था विवाहपन्नत्तीए एकासीतिंमहाजुम्मसया प० ॥ ८१ ॥ जंबू द्दीवेद्दीवे वासीयं मंडलसय जंसूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ताणं चारंचरई तं० निक्खममाणेय पविसमाणेय

छेके सूत्रोक्त विधिमार्गे आराधी होय । कुंथुनाथ सतरमा अरिहतने ८१ शत मनपर्यवज्ञानी थया । व्यवहार पन्नतीने विषे ८१ शत महायुग्म कह्या । इहां शत शब्दें अध्ययन कह्याछे युग्मशब्दें गणितराशि विशेष एतले ८१ ठाणूं संपूर्ण ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ ठाणो लिखेछे । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मांडला सूर्यनाछे यद्यपि जम्बूद्वीप मांहो ६५ माडलाछे परं बाह्य मांडले पणि जम्बूद्वीप संबधी सूर्यनो चार छे तेमाटे जंबूद्वीप वाहिरला ११९ मांडला पणि जम्बूद्वीपना कह्या । जे १८२ मांडला सूर्य बे वेला सक्रमी प्रवेश करी चारचरे भ्रमे एतले १४८ मांडलाछे तेमांहि निषध ऊपरलो सर्वाभ्यंतर मांडलो अने

ष्कामय जंबूद्वीपात् प्रविशय जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमण्डलशतं भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसंक्रामति शेषाणि
तु द्वौवाराविति इहच द्व्यशीतिविवक्षये वेद द्व्यशीतिस्थानके ऽस्मीत मितिभावनीय यद्यपि जम्बूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मण्डलाना भवति तथापि जम्बूद्वीपादिकसं
चारविषयत्वा च्छेषाण्यपि जम्बूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्यशुक्लपक्षपष्ठ्या आरभ्यद्व्यशीत्या रात्रिदिवैर्व्यतिक्रान्तेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने
अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया देवानन्दाब्राह्मणो कुक्षित इत्यर्थः गर्भं त्रिशलाभिधानक्षत्रियाणी मध्यतो नीतो देवेन्द्रवचनकारिणा ह
रिणैगमेष्यभिधानदेवेनेति इद च सूत्रे द्व्यशीतिरात्रिंदिवान्यधिकृत्य द्व्यशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितम रात्रिंदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति मत्वा

समणेभगवमहावीरे वासीएराइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाउ गब्भं साहरिए महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स
उवरिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं वासीइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरेप०

समुद्रमाहिलो केहिलो सर्वाभ्यतर माडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक बाह्य सर्वाबाह्य वाकता १८२ माडला बेबेवारफिरमे सर्वाभ्यतर माडलावली
जम्बूद्वीपे निकलतो एकवेला जम्बूद्वीप माहे पेसतो एम बेवेला १८२ माडला सूर्यचरे भमे नगने फिरे। श्रमण भगवत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल छठी थकी
माडी ८२ रात्रिदिवस व्यतिक्रमे थके ८३ मोरात्री वर्त्ततेथके आसोजवदी १३ मोरात्रीये देवानन्दानो गर्भथको गर्भ त्रिशला देवीनी कूखिये हरिणैगमे
षी देवतायें साहरयो पहुचाड्यो ॥ महाहिमवंत बीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊंचो छे ते महाहिमवंतनो उपरलो चरमांत छेहलो प्रदेश तेह थको
मांडी रत्नप्रभाना सौगंधिक कांडनो हेठिलो चरमांत एह ८२ शत योजन आबाधाये विचाले आतरोआणो। कांड इहां पथरपुल ? तेमाहे पहिलो कांड

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उवरिल्लाओत्ति उपरिमा च्चरमांतात् सौगंधिककांडस्य। धस्तनचरमान्तो द्व्यशीतिर्योजनशतानि
कथ रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि कांडानि खरकाडं पंककांडमव्बहुलकाडं चेति तत्र प्रथम काण्ड' षोडशविधं तद्यथा रत्नकांड १ वज्रकांडं २ एववैडूर्य ३ लो
हिताच ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलका ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फाटिक १५ रिष्टकांडचे
ति १६ एतानि च प्रत्येक सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगधिककांडस्या ष्टमत्वा द्व्यशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येव त्र्यशीतिशतानीति
एव रुक्मिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्यं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्र्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते। इह शीतलजिन
स्य त्र्यशीतिर्गणा स्त्र्यशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकेत्वेकाशीतिरितिमतांतरमिदमिति तथा स्थविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चत्र्यशीतिवर्षा

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासीइं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए
राइंदिए वट्टमाणे गब्भाउ गब्भं साहरिए सीयलस्सणं अरहओ तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्था थेरेणं मंडि

१६ भेदे रत्नकाड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताच्च ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगधिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अजनपुलक ११
रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फाटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ कांड प्रत्येकें १ सहस्र योजन प्रमाणछे तोसौगंधिक कांड आठमो तो आठ कांड नि
चौने ८० शत योजनथया अने बेसे योजन महाहिमवत ऊंचोछे सर्वएकठा करतां ८२ शत योजनथयां। इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिवे
८३ मो लिखेछे। श्रमण भगवत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथकी ८३ मो अहोरात्रि वर्त्ततां थकां देवानंदाना गर्भ थकी त्रिशलाने गर्भ साहस्या हरिणे

णि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्र्यशीतिरिति तथा कोशलिएत्ति कोशलदेशेभवः कौशलिकः तेसीइंति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्र्यशीतिः तथा भरतश्चक्रवर्त्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्र्यशीतिमगारवासम ध्युष्य जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिक्षयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादिन्वययोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्सर्वभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्षं

यपुत्ते तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसभेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता णं जावपव्वइए भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

गमेसीये पहुंचाड्या। शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवश्यकें ८१ काह्या ये मतांतरछे। स्थविर मंडित पुत्र छठो महावीरनो गणधर ८३ वर्षल गे सर्वायुपालीने सिद्धथयो सर्वदु:ख रहित थयो ५३ वर्ष गृहस्थपणें १४ वर्ष छद्मस्थपणें १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्ष थया। ऋषभ आदिनाथ अरि हंत कोसल देशना उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांही वसीने द्रव्यभावभेदें मुंडथयीने अगार गृहस्थथकी अणगारी यतीपणूं पाम्या। २० लाख पूर्व कुमारपणें ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमें एवं ८३ लाख पूर्व वर्ष। भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अंतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७लाख पूर्व कुमारपणें ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एवं ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया। राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान जेहनेछेते केवली विशेष जाणे ते सर्वसामान्य बोधथकी सर्वभावदर्शी थया। इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेछे।

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलिलिंगं विहृत्य सिद्ध इति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानकं किमपि लिख्यते। चतुरशीति नरकावासलक्षाण्यमुना विभागेन त्रीसा पणवीसा २ पन्नरस २ दसेव ४ तिन्निय ५ हवंति पचूणसयसहस्सं पंचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रेयांसएकादशस्तीर्थंकरः एकविंशतिवर्षलक्षाणि कुमारत्वे तावंत्येव प्रव्रज्यायां द्विचत्वारिंशल्लक्षाणि राज्ये इत्येवं चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा त्रिपृष्टिः प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति भगवती

सयसहस्सा प० उसभेणं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइठाणे नरए नेरइ

सातें नरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीयें ३० बीजीये २५ त्रीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छठीये ५ ऊंणा १ लाख सातमीये ५ एम ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना उपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखोपालीने सर्वदुःख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणें एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरत चक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमंगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमंगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एटचार ८४ लाख पूर्व आयुपालो सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणें ४२ लाख वर्ष राज्यपणे २१ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयूपाली सिद्धथया। सर्वदुःखथी प्रक्षीणथया

नी नरकः सप्तमपृथिव्यां पंचानां मध्यम इति तथा समाणियत्ति समानर्द्धयः तथा बाहिरयत्ति जंबूद्वीपकमेरुव्यतिरिक्ता चत्वारो मन्दरा चतुरशीतिः सह स्राणि प्रज्ञप्ताः अंजणगपव्वयत्ति जंबूद्वीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कंभमध्यभागे पूर्वादिषु दिक्षुचत्वारोंजनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि वासेत्यादि चत्तारियभागजोयणस्सत्ति एकोनविंशतिभागा इहार्थेगाथार्द्धं धणुपिट्ठकलचउक्कं चुलसीइसहस्ससोलसहियत्ति तथा पंकबहुलंकाण्डं द्वितीयं

यत्ताए उववन्ने सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं वाहिरया मंद रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविण धणुपिठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सो लसजोयणाइ चत्तारियभागा जोयणस्स परिक्खेवेणं प० पंकबहुलस्सणं कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ

त्रिपृष्ट पहिलो वासुदेव श्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा छे तेमांही विचले अपइट्ठाण नरकावासेनारकी पणे उपनो। पहिला देवलोकनो राजा शक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता कह्या। जंबूद्वीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजासगलाधातकी खंडना २ पुष्करार्द्धना २ मेरु चौरासी चौरासीहजारयोजन ऊंचा ऊच पणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा छे सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जंबूद्वी पथकी आठमे नंदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागें पूर्वादिक चिहुदिशि ४ अंजनक पर्वत छे चारोअंजनक पर्वत चौरासी २ सहस्र योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा सर्वमिली ८५ हजारना। हरिवर्षनोजो रम्यकपांचमो तेहनो धनुवर्ती प्रत्यंचा चौरासी चौरासी सहस्र योजन उपरि सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिक्षेपे परिधीयें कही। रत्नप्रभायें त्रिणकांडछे तेमांही पंकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत छेहलो

तस्यच बाहल्यं चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थं इति तथा व्याख्याप्रज्ञप्त्यां भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्द्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिद्वेलचे अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानाभवन्तीति तथा चतुरशीति नागकुमारा वासलचाणि चतुश्चत्वारिंशतो दचिणाया चत्वारिंशच्चोत्तरायां भावादिति चतुरशीतिर्योनयोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराणियोनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लचाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगअगणिमारुय एक्केक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोंतिचउरो चोद्दसलक्खाउमणुएसुत्ति २

हेठिल्ले चरमंते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पांचमोअग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषें ८४ पदना सहस्र छे पदाग्रें पदने प रिमाणें जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरें आचारांगना १८ सहस्र पदछे पछे आगल्ये २ अगे वेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अगे २ ला ख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दचिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिलो नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या । ८४सहस्र पइन्ना यतीना कीधा ग्रथविशेष कह्या । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असख्यातछे पणि समान वर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका आंक पर्यवसान छेहे

इहचजीवोत्पत्तिस्थानानामसंख्येयत्वेपि समानवर्णं गन्धरसस्पर्शानां तेषामेकत्वविवक्षया अयथोक्त योनिसंख्याव्यभिचारोमन्तव्य इति पुव्वाइयाणमित्यादि पूर्वमादिर्येषांतानि पूर्वादिकानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषान्तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषांस्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसख्याविशेषा गुणकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थान स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानिच पूर्वस्थानानि स्थानांतराणिच अनतरस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि अथवास्वस्थाना त् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानातराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि तेषां चतुरशीत्यालक्षै रितिशेषः गुणकारोभ्यासराशिः प्रज्ञप्तः तथाहि किल चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाङ्ग भवतीति स्वस्थानांतरादेवचतुरशीत्यालक्षै र्गुणितं पूर्वमुच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एव पूर्वस्वस्थानातरादेव चतुरशीत्यालक्षै र्गुणित मनन्तरस्थान त्रुटिताङ्गाभिधान भवतीति इहसग्रहगाथे पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय नलिणत्थिनिउरअउय नउएपउएयनायव्वो ॥ १ ॥ चू लियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअंगसजुत्ता अट्ठावीसठाणा चउणउयहोइठाणसयंति ॥२॥ अभिलापास्तेषा पूर्वाङ्ग म्पूर्वं त्रुटितांगंत्रुटित मित्यादि रिति चउ रासीतिमित्यादि इहविभागोय बत्तीसअट्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवभलोगो विमाणसख्याभवेएसा १ पचासचत्तछच्चेव सहस्सालंतसुक्कसहस्सारे

स्साइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

डे छे स्वस्थानक थकी स्थानांतरे २ चौरासी आंकें गुणाकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पहिलूं स्वस्थानक पोतानूंस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष होय। ते ८४ लाख गुणीकरीये स्थानातरे तिवारे त्रुटितांग होय। इहां संग्रह गाथा। पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय। नलिणत्थिनिउरअनु

सयचउरीआणय पाणएसुतिन्नारणच्चुयओ ॥ एक्कारसुत्तरं हे ठ्ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणत्ति ॥ भवंतीति मक्खायंति एतानि
विमानान्येवभवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा च्चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्राचारस्य

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्था
उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण पामोक्खाओ चउरासीइ समणसाहस्सीओ होत्था सब्बेविचउरा
सीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवतीतिमक्खायं ॥ ८४ ॥

रानउएपउएयनायब्बो । चूलियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअग संजुत्ता । अट्ठावीसठाणा चउणउयंहोइठाणसय ॥ एम चौदेठामे८४ लाख ८४ लाख गुणाकरे
करतां करतां छेहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहां१८४ आंक आवे । आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गच्छ हुआ। कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिह
तने ऋषभसेन प्रमुख ८४ श्रमणयतोनी सपदा हुई । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके २८ लाख त्रीजे १२ चौथे८ पाचमे ४ लाख छट्ठे ५०
सहस्र सातमे ४० हजारआठमे ६० सहस्र नोमेंदसमे मिली ४०० इग्यारमेबारमें मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेत्रिके १११ मध्यत्रिके १०७ उपरिलेत्रिके १०० वि
मान । पाचे अनुत्तरविमाने ५ । १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान मिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ विमान भगवते कह्या । इति ८४ समवाय
थयो ॥ ८४ ॥ हिवे ८५ मोलिखेछे । आचारांग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देसण काल कह्या प्रथम श्रुतस्कधे ९ अध्ययन छे पहिले

दग्धद्वीपान्तर्गतः प्राकाराकृतीरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा तस्य सहस्रमवगाढस्ततश्चेतिरुच्छ्रित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वाग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छ्रितायां प्रथममेखलायां व्यवस्थितस्या धस्याधश्चरमांतात् सौगंधिककाण्ड स्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्त्यचरमातः पञ्चाशी तियोजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथ मध्वशतानि मेरोः समवशेनि प्रत्येक सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डाना मष्टमकाण्डमयोतिशतानीति ॥ ८५

सहस्साइं सव्वग्गेणं प० रुयएगं मंडलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० नंदणवणस्सणं हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कण्डस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस ण पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प०

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांहो गढने आकारे मडलाकारछे तेमाटे मडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगे सर्वप्रमाणे कह्यो । भूमियकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊंचो चढोवे तिहा प्रथममेखलानेविषे नंदन वन छे तेहना हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानो आठमो सौगधिक काड तेहनो हेठिलो चरमात एह ८५ से योजन अबाधाये विचाले आतरो कह्यो। रत्नप्रभाये ३ कांड छे पहिलो १६ हजारनो कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमो सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया । नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मो समवाय लिखिछे । नवमा सुविधिनाथ बीजूंनाम पुष्पदंत अरिहतने ८६ गणधर हुआ आवश्यकी

अथ षडशीतिस्थानके किमपि लिख्यते । तत्र सुविधे नवमजिनस्येह षडशीतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यके त्वष्टाशीति रिति मतांतरमिद तथा द्वितीयापृथिवीशर्करप्रभा साच बाहल्यतो द्वात्रिंशत्सहस्राधिकलक्षमाना तदर्द्ध षट्षष्ठिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बन्धित्वात् द्वितीयो विंशतिसहस्राणि बाहल्यत इति षडशीति यथोक्तमन्तर भवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताशीति स्थानके किंचिल्लिख्यते मन्दरेत्या दिमेरोः पौरस्त्यातात् जम्बूद्वीपातः पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विचत्वारिंशचसहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोस्तुभो वेलन्धरनागराजावासपर्वतः प्राच्यांदिशि भवत्येवं सूत्रोक्तमतर

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइगणा छलसीइगणहरा होत्था सुपासस्स ण अरहओ छलसीइ वाइसया होत्था दोच्चाएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमते एसणं छलसीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसण सत्तासीइं जोयणस

८८ गणधर तेमतातरछे सातमा सुपार्श्व अरिहतने ८६ से वादीनीसपदा हुई । बीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाडपणेछे तेह बीजी पृथिवीना बहु मध्यभागथकी माडी एतले १ लाख ३२ हजारनो अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे बीजीनोघनोदधि २० हजार नो तेहनो हेठिलो चरमात ८६ हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेछे । मेरुपर्वतना पूर्व चरमात थकी वेलधर नागराजा वास गोस्तूभ नामापर्वत तेहनो पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। मेरुपर्वतथकी पूर्वनी जगती

भवतीति एवमन्येषा नयाणा मतरमवसेयमिति तथा षष्णां कर्मप्रकृतीना मादिमोपरिमवर्जानां ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहनो यायुष्कनाम गोत्रसंज्ञितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथ दर्शनावरणादीनामषणां क्रमेणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वेचे त्यत

हस्साइं अबाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमं ताओ संखस्स वा पुरत्थिमिल्ले चरमंते एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वय स्स दाहिणिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० छण्हं कम्मपगडीणं आइम

४५ हजार योजन तिहांथकी ४२ हजार योजने गोस्तूभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन थया। दक्षिण चरमांतथकी दक्षिण समुद्रमांहो दगभास पर्वत तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतनो परें अबाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत थकीमांडी पश्चिमे श हनामा आवासनो पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतथकी उत्तर समुद्रमांहि दगसीम आवासपर्वतनो दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। आठेकर्मनी प्रकृति मांहो थी आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति उपरिम कर्मअंतराय तेहनी ५ प्रकृति एवं १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनी ८७ उत्तर प्रकृतिकही दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ मोहनीय २८ आउखो ४ ना

सार्त्तां मीलने सूत्रोक्ता संख्या स्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेशते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धिककाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डानां मित्येवं सौजिते सप्ताशीति रन्तरंभवतीति एवं रुप्पिकूडस्सविति रुक्मिणिपञ्चमवर्षधरे यद्द्वितीय व लिकूटाभिधानं कूट तस्याप्य तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्यं समानप्रमाणत्वा द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किंचिद्विलिख्यते ॥

उवरिल्लअज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगडीउ प० महाहिमवंतकूडस्सणं उवरिमंताउ सोगंधयस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई। महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह ऊंचो बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवत कूटछेते ५०० योजन ऊंचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया। तेमहाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमांहि सौगंधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमांत एतले आठो कांडना ८० से योजन थया अने महाहिमवतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। महाहिमवंत कूटनी परें पांचमोरूपीवर्षधर पर्वतनो रूपी नामकूट अने सौगंधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखे छे। चंद्रमा सूर्य असंख्या

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाश्चसूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्येत्यर्थः अष्टाशीतिर्महाग्रहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यत्र श्रूयते तथापि सूर्यस्यापीन्द्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिठ्ठिगएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पंच प्रकारस्य सुत्ताइति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवंति जहानंदीएति अतिदेशत. सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पंचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा त्तस्यच सहस्रविष्कम्भत्वा द्य थोक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभासशंखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाश्रित्य वाच्यमतएवाह

एगमेगस्सणं चंदिमसूरियस्स अठासीइ अठासीइ महग्गहा परिवारो प० दिठ्ठिवायस्सणं अठासीइसुत्ताइं प० तं० उज्जुसुय परिणयापरिणय एवं अठासीइसुत्ताणि भाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअठासीइं जोयणसहस्साइं

ताके तेसहुने प्रत्येके अठ्यासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्यासीनो परिवार कह्यो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चन्द्रमानोछे तोहीपणि सूर्य इंद्रछे तेहनो पिणएतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व बारमोअंग तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्वे कह्या तेहना सूत्ताइति बीजो भेद सूत्र पूर्वे तेहना ८८ सूत्रछे तेकहेछे। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवा। जिमनंदीसूत्रे कह्योछे तेम जाणिवो। मेरुपर्वतथको पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनछे तिहांथको पूर्वसमुद्रमांहि ४२ सहस्र योजन गोस्तूभपर्वतछे ते १ हजारपिहुलोछे सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्वत

एव चउसुविदिसासुनेयव्वमिति बाहिराओण मित्यादि बाह्यायाः सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याःकाष्ठायाः क्वचितु बाहिराओत्ति न दृश्यते सूर्यः प्रथ मषण्मास दक्षिणायनलक्षण दक्षिणायनादित्वात् सम्वत्सरस्य अयमाणित्ति आयात्आगच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो ष्टाशीतिमेकषष्ठिभागान् दिवस खेत्तस्सत्ति दिवसस्यैव निवुड्ढेतत्ति निवर्द्धह्रापयित्वा रयणिखेत्तस्सत्ति रजन्यास्तु अभिवर्द्ध्य सूरिएचारचरइत्ति भ्राम्यतीति इहच भावनैव प्रतिमण्डल न्दिन स्यमुहूर्त्तैकषष्ठिभागद्वयहाने दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रेस्तु तएव वर्द्धंत इति द्विःसूर्यग्रहण चेह दिनरात्र्याश्रितवा क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्त मवसेयमिति इदच सूत्रमष्टसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनीयमिति दक्खिणाओइत्यादि सूत्र पूर्वसूत्रवदवगन्तव्यं नवर मिह दिनवृद्धी

अबाहाए अंतरे प० एव चउसुविदिसासुनेयव्वं बाहिराउ उत्तराउणं कट्ठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अय माणे चीयालीसइमे मण्डलगते अट्ठासीति एगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स

ना चरमांतथकी नागराज वेलधरनो गोस्तूभ आवासपर्वतनो चरमांत ८८ हजारयोजनथयो अवाधायें बिचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुंदिसि जा णिवो दक्षिणे दगभास पश्चिमें शंख उत्तरे दगसीम एसर्वना आतरा जाणिवा । निषधपर्वत संबधी सर्वाभ्यतर मांडलाथकी सूर्य पहिलो छम्मास दक्षिणायन लक्षण तेहप्रतें अयमान दक्षिणायने आवतो चुमालीसमे मांडले गयोथको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसने घटाडी रजनीनोक्षेत्र रात्री तेहने वधारीने सूर्य चारचरेभ्रमे । सर्वाभ्यतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतथकी सर्वाभ्यतर म ण्डलथकी दक्षिणायने सूर्य चालतोथको दिनप्रतें एकमुहुर्तना एकसठिया बे भाग दिवस घटाडीये रात्रिवधारिये एकेमासे एकमुहूर्तबाधीये वली २१ मा

रात्रिज्ञानिय भावनीयेति ॥ ८८ ॥ अथैकोननवतिस्थानके किंचिद्विचार्यते। तद्यथाएसमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोननवत्यामर्द्धमासेषु

त्रिषु वर्षेषु अर्द्धनवमसु च मासेषु सत्स्वतिगम्यते ज्ञानत्तिकरणात् अतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते त्तिइदश्चं हरिषेणचक्रवर्त्तीदशम स्तस्यच दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारंचरइ दक्खिणकट्ठाउणं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलग

ते अट्ठासीइ इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं

चरइ ॥ ८८ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

मांडलाथकी एकसठिया दिनप्रतें बे बे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे माडले ८८ भाग वधेरात्रि। दिवस घटे। समुद्र माहिलो १८४ मों

सर्वबाह्य मडले मकर मक्रांतिये सूर्य ऊगो दक्षिण दिशि थकी सूर्य बीजे छम्मासे उत्तर दिशिभणी आवतो थको ४४ में माडले गयो थको १ मुहूर्त्तना

एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडो दिवस वधारी सूर्य चार करे सर्वबाह्य मांडले दिवसमान २४ रात्रिमान ३६ करीउत्तरायणें चालतो १ मुहूर्त्तना

एकसठिया बे बे भाग रात्रि घटता ३० मे माडले १ मुहूर्त्त रात्रि घटे दिवस वधे इमकरता ४४ मे माडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वधे इति ८८ थयो ॥

८८ ॥ छिये ८८ लिखेछे। श्रीआदिनाथ अरिहत कोशलदेसना उपना एणी अवसर्पिणी ने त्रीजा समाने सुखम दुखम नामने पाछिले

भागे ८८ अर्द्धमासे एतले ८८ पखवाडे त्रीजा आरा माहि शेष थाकते आखे त्रीजे आरे व्यतिक्रमे गये थके सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। आदिनाथने

मोक्ष पहुता पछी शेषवर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडा त्रीजो आरो रह्यो पछे चौथो आरो लाग्यो एह भाव। श्रमण भगवंत महावीर एणी

अथ शतानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाण्येकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोनमवतिरार्यिकासहस्राण्यु
क्तान्यावश्यकेत्वेकषष्टिः सहस्राणि शतानिचषडभिधीयत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८९ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते। तत्रा

ए पच्छिमेभागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस
प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेभागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्व
दुक्खप्पहीणे हरिसेणेण राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था संतिस्सणं अरहओ
एगूणनउइ अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८९ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमें गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख
प्रक्षीण थया। एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पछी ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडे गये थके चौथो आरो उतरी पांचमो आरो लाग्यो एह भाव
जाणिवो। नमिनाथने बारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८९ वर्षलगे एकसोवर्ष जणो नव हजार वर्षलगी महाराज चक्रवर्त्ती हुआ। शेष थाकतां ११००
वर्ष माहि कुमार पणे मंडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया। शांतिनाथ अरिहंतने ८९ हजार साध्वी
एके जणो हुई एतले ८९ सहस्र ८९९ उत्कृष्टी आर्यासाध्वीनो संपदा हुई इति ८९ मो समवाय थयो ॥ ८९ ॥ हिवे ९० लिखेछे। शीतलनाथ

जितनाथस्य शांतिनाथस्य चेह नवतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु पंचनवतिरजितस्य षट्त्रिंषत्तु शान्तेरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयम्भूस्तृतीय वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजय पृथिवीसाधनव्यापारः सव्वेसिणमित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताढ्याना शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा नवसु सहस्रेषु नवते. शताना माबात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ९० ॥

नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था अजियस्सणं अरहओ नउइगणा नउइगणहरा होत्था एवंसंतिस्सविसयंभु स्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था सव्वेसिणं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधिय कंडस्स हेट्ठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइ

दशमा अरिहंत ९० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुवा। अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुवा। आवश्यके ९५ गणधर कह्या एमतांतर। शांतिनाथ १६ अरिहंतने ९० गणधर हुवा। आवश्यके ३६ कह्या ते मतांतर छे। विमलनाथकालीन स्वयम्भू त्रीजो वासुदेव तेहने ९० वर्ष लगे विजय पृथिवी साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ९० वर्ष लाग्या एभाव। सगलाई वृत्त वैताढ्य २० जंबूमांहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरण्यवत ४ ए चिहु क्षेत्रे शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताढ्य छे धातकीखंड माहि एणेजक्षेत्रे आठछे पुष्करार्द्धे आठ सर्वमिलो २० वृत्त वैताढ्यछे सगला १ सहस्र योजन ऊंचा छे सगलाई वृत्त वैताढ्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थकी रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छे तेहनो हेठिलो चरिमांत ९० से योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले वृत्त वैताढ्य १००० योजन ऊंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिली ९० से योजन थया॥ इति ९० समवाय

अर्थैकनवतिस्थानकं किञ्चिद्विवियते। तत्र परेषामात्मव्यतिरिक्तानां वैयावृत्यकर्माणि भक्तपानादिभि रुपष्टम्भक्रिया स्तद्विषयाः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः परवैयावृत्तकर्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमात्वेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवल विनयवैयावृत्यभेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारा दिद्दशधा विनयः आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ सणभिग्गहो ४ तहय आसणअणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलि गहोय ७ ॥ १ ॥ इतस्सणुगच्छण या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छताणुव्वयय १० एसोसुस्सूणाविणओत्ति तत्र सत्कारोवंदनस्तवनादि अभ्युत्थानमासनत्यागः सन्मानोवस्त्रादिपूज न आसनाभिगृहः तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकमुपविशतात्रेतिभणनमिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारणं कृतिकर्मादीनि प्रकटानि तथा तीर्थंकरादीना म्पंचदशाना म्पदाना मनाशातनादि पदचतुष्टयगुणितत्वे षष्टिविधोऽनाशातनादिविनयो भवति तथाहि तित्थयर १ धम्म २ आयरि

परवेयावच्चकम्मपडिमाउ प० कालोयेणं समुद्दे एकाणउइजोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प०

यो ॥ ९० ॥ हिवे ९१ मो समवाय लिखेछे। ९१ भेदे वेयावच्च कर्म प्रतिमा परनो वेयावच्च कर्म भतापानादिके उपष्टम्भक्रिया तेहनेविषे प्र तिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच कर्म प्रतिमा कही। दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदें विनय आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ समणभिग्गहो तहय ४ आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्म ६ अजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गच्छंताणुवयण एह दशे प्रकारे विनय कह्यो तथा तित्थयर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणि ७ संघे ८ संभोगीय ९ किरिया १० । मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एव १५ बोलने विषे बोल लगाडी एह १५ नी आसातना टालवी १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवोयें ४ तोपनरचौकें साठिशया थके ७ लोकोपचार विनय अ

य ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोइय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव ॥ १ ॥ अत्रभावना तीर्थंकराणामनाशातना तीर्थंकराऽनाशातना तीर्थंकरप्रज्ञप्तस्य धर्मस्य अनाशातना एव सर्वत्र कायव्वापुणभत्ती बहुमाणोतहयवण्णवाओय अरहंतमाइयाण केवलणाणावसाणाणंति ॥ २ ॥ तथौपचारिकविनय. सप्तधा यदाह अभासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणण सव्वत्थेसुतहयअणुमईभणिया ७ उवचारिओविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासन उपचरणीयस्यान्तिके ऽवस्थान छन्दानुवर्त्तनमभिप्रायानुवृत्तिः कृतप्रतिकृतिनाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदान पटकारितनिमित्तकरण सम्यक्शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेषेण विनयेवर्त्तन तदर्थानुष्ठान च शेषाणि प्रसिद्धानि तथा वैयावृत्त्य दशधा यदाह आयरियउवज्झाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं। साहम्मियकुलगणसंघ सगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देश ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचविधत्वा त्तदेव चतुर्दशधेत्येकनवति विनयभेदा एते एव अभिगृहविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोयणेत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिर्लक्षाणि साधिकानि परिक्षेपेण आधिक्य

भासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुःखत्तगवेषणा ५ तहय तह देशकाल जाणण ६ सव्वत्थेसुतहयअणुमईभणिया ७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दर्शननो वेयावच्च करो आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाण ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ सघ १० सगयतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदें प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देस ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पछे उपाध्यायादिक नवने पांच १४ अने सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थंकरादिकनी आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिली ९१ बोलथया। कालोदधि वी

ष सप्तत्यासहस्तैः शड्भिःशतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोतरैः सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियक्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः आयु
गोत्रवर्ज्जानां षणामिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामान्तरायानां क्रमेण पच नव द्व ष्टाविंशति द्विचत्वारिंशत् पंच भेदानामिति ॥
९१ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते। त्रिनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्श्यन्ते तत्र किल पच प
तिमाउक्ता स्तद्यथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा श्रु

कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहियसया होत्था आउयगोयवज्जाणं छण्ह कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्त
रपगडीओ प० ॥ ९१ ॥ बाणउइपडिमाओ प० थेरेणं इंदभूती बाणउइवासाइं सव्वाउय पाल

जोसमुद्र ९१ लाख योजन साधिक भांभेरो ते वाहेछे ७० सहस्र ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ अगुल एतलो परिक्षेप परिधि कही। कुंथुनाथ अरिहंत
ने ९१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र संबधी अवधि ज्ञानी हुआ। चउथो आउखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष थाकता छ कर्मनी उत्तर
प्रकृति ९१ ज्ञानावरणीयनी ५ दर्शणावरणीनी ९ वेदनी २ मोहनी २८ नाम कर्म ४२ अंतराय ५ सर्व मिली ९१ उत्तर प्रकृति कही। इति ९१ समवाय
थयो ॥ ९१ ॥ हिवे ९२ लिखेछे। ९२ भेदें प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिलो ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३
प्रतिसलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिली समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२
भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदथया। उपधान प्रतिमा २३ यतिनी १२ श्रावकनी ११ एव २३ विवेकप्रती

तसमाधिप्रतिमा चारित्रसमाधिप्रतिमाच दर्शनं ज्ञानान्तर्गतमिति न भिन्नादर्शनप्रतिमा विवक्षिता तत्रश्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्ठिभेदा कथं आचारे प्रथ
मे श्रुतस्कन्धे पंच द्वितीये सप्तत्रिंशत् स्थानांगे षोडश व्यवहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एताश्च चारित्रस्वभावा अपि विशिष्ट श्रुतवतांभवन्तीति श्रुतप्रधानत
या श्रुतसमाधिप्रतिमात्वेनोपदिष्टा इतिसम्भावयामः पंचसामायिकच्छेदोपस्थापनीयाद्या श्चारित्रसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिक्षुश्रावकभेदा
त्तत्र भिक्षुप्रतिमा मासाईसत्तताइत्यादिना भिहितस्वरूप द्वादश उपासकप्रतिमास्तु दसणवए इत्यादिना भिहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति
र्विवेकप्रतिमा त्वेका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे र्बाह्यस्य विवेचनीयस्यानेकत्वे प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसंलीनताप्रतिमाप्येकैव इन्द्रि
यस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोइन्द्रियस्वभावस्यच योगकषायविविक्तशयनासनभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसंलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चम्येकविहारप्र
तिमैकैव नचेह सा भेदेन विवक्षिता भिक्षुप्रतिमास्वन्तर्भावितत्वादित्येवंद्विषष्टिः पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति र्महा
वीरस्य प्रथमगणनायकः सच गृहस्थपर्याये पञ्चाशत वर्षाणि त्रिंशति छद्मस्थपर्याये द्वादशच केवलित्व मालयित्वा सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मंदर

इत्ता सिद्धे बुद्धे मंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते

धादिकनो त्याग एकभेद प्रतिसंलीन ताये इन्द्रियनो गोपिवो एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ९२ पांच त्रेवीस एकएक सर्वमिली ९२ भेद प्रतिमाना
थया। स्थविर इन्द्रभूति महावीरनो प्रथम गणधर गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थ पर्याये ३० वर्ष १२ वर्ष केवल पर्याये सगलो ९२ वर्षनो आउखोपालीने सिद्धथया
मोक्षपहुता तलना ज्ञानीथया। मेरुपर्वतनो बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्र योजन तेहथकी ५ हजार योजननी जगतीइंई तेहथकी वेलधर नागराजानो आ

स्रेत्यादि भावार्थ. मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोस्तुभपर्वतः इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति एवं शेषा णामपि ॥ ९२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते। तेणउइमडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्वबाह्यात् सर्वाभ्यन्तरम्प्रति गच्छन् नि वर्त्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्वबाह्यप्रति गच्छन् व्यत्ययोवा व्याख्येयः सममहोरात्र विषमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्र तयोः समता तदा भवति यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यतरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्वबाह्येतु व्यत्ययः तथा त्यशीत्यधिकमण्ड लशते द्वौद्वावेकषष्टिभागौ वर्द्धेते हीयेतेच यदाच दिनवृद्धि स्तदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धौच दिनहानिरिति तत्र त्रिनवतितमे मण्डले प्रतिमण्डल मुहूर्त्तैकष

एसण वाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाएअंतरे प० एवंचउण्हंविआवासपव्वयाणं ॥ ९२ ॥

चंदप्पहस्सणं अरहओ तेणउइगणा तेणउइगणहरा होत्था सतिस्सणं अरहओ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया

वास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्र मांहि ४२ हजार योजनहुयो तो मेरुनामध्यभागथकी गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमात ९२ हजार योजन आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमात दगभास पर्वतनो उत्तरपासनो छेहलो भाग ९२ हजार योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरुपर्वतना पश्चिम चरमातनो शखआवास पर्वतनो पूर्वाभिमुख चरमांत ९२ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वतना उत्तराभि मुख चरमातनो दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशनो चरमांत ९२ सहस्रयोजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति ९२ समवाययथयो ॥ ९२ ॥ हिवे ९३ मोलिखेछे। चद्रप्रभ आठमा अरिहतना ९३ गछ ९३ गणधरहुया। शातिनाथ सोलमा अरिहंतने ९३ से चौदहपूर्वधर हुया। सूर्यनो एकसोचौ

ष्टिभागद्वयवृद्ध्या त्रयोमुहूर्त्ता एकैनैकषष्टिभागेनाधिकाः वर्द्धन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तेषु मध्येच्चितेषु अष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयत्रैकेनैकषष्टिभागेनाधिका हीनावा भवंत्यतो द्विनवतितममण्डलस्यार्द्धे समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति द्विनवतितमलण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थ इति ॥ ९३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिविद्विच्यते । निसहेत्यादि इहपादोना सम्वादगाथा

होत्था तेणउइमंडलगतेणं सूरिए ऋनिवट्टमाणे विनिवट्टमाणे बा समऋहोरत्त विसमंकरेइ ॥ १३ ॥

राशिमी मांडलो समुद्रमाहि तेसर्ववाह्य मडलतेहथकी सूर्यअभिवर्त्तमान सर्वाभ्यतर मडलभणी उत्तरायणि जातो तथा निषधमाथें सर्वाभ्यतर मंडल तेहथ को दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायछे तेवारे ९३ मे मडले सूर्य गयो थको दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अषाढो पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मडले नि षधमाथे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चौबीसो पछे श्रावणवदी १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्तना ६१ भाग करीये तेहवा प्रतिमांडले प्र तिदिन बे बे भाग दिवस घटाडी रात्री वधारी दक्षिणायने चालता ३१ मेमांडले एक मुहूर्त दिवसघटे रात्रिबढे । वली तेमज एकसठिया बेबेभाग दिवस घटाडी एमकरतां ९२ मांडलेजाय तिवारे आसोजीपुनिमे ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरैपछे ९३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवसघटे रात्रि वढे तेमाटे दिनरात्रि विषमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपूनिमेकरी उत्तरायणभणी चाल्यो तोही एक मुहूर्तना एकसठिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ९२ मेमांडले चैत्रीपूनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रीकरी ९३ मांडले दिवसरात्रि विषमकरे दिवस बढे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ९३ मो समवाय थयो ॥ ९३ ॥ हिवे ९४ लिखेछे । त्रीजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवत एबेहुनी जो

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिंप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिक्ये चोत्सेधहानि र्भवति एवं पचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव त्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्वेधता भवति लवणस्सेत्ति अथचोद्वेधा र्थं योत्सेधपरिहानिस्तस्यापंचनवतिः प्रदेशाः प्रमाणं सेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशेहान्यामुद्वेधः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंथुनाथस्य सप्तदशतीर्थंकरस्य कुमारत्वमाडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येक त्रयोविंशते वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पचनवतिवर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सिं लवणसमुद्दं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं उगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० वल या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्दस्स उभउ पासपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाउ उव्वेहुस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपथको परहा ९५हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेतो बिहूं ९५ मिली १ लाख ९० हजार योजन थया विचाले दस स हस्र योजन लगे समोपीठिकानेरूपे पाणीछे तिहा पृथ्वी तलनी अपेचायें १ हजार योजननी जडी खाड पडीछे १ हजार योजन लगे ऊचोपाणी चव्यां पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहिये तोते मध्यपिड १० हजार योजनलगे दगमालथकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय। त था जबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतोही ९५ आंगुले एकअगुल तथा ९५ हाते १ हात ९५ योजने १ योजन एम ९५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशें २ मात्रायें २ उद्वेधपणो जडपणोघटाडीये एमकरतां ९५ सहस्र योजन अतिक्रमेथके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय जंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट थकी ९५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनी उत्सेधनो ऊचपणो प्रदेशें २ मात्राये २ हानिकरी भूमिजडीकरतांजईये एमकरतां

शतै चतुर्गुणितायां षण्णवतिः स्यादेवेति अभंतराओ इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्त्तः षण्णवत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्थः सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यश्चरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशांगुलमान शंकुमाश्रित्य षण्णवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्त प्रमाण भवतीति मुहूर्त्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रियया छेदेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शङ्कुर्गुण्यत इति ततोद्वे शते षोडशोत्तरे भवतः २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ पनीते षण्णवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ९६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानके

रसा प० ववहारिएणं दंडे छण्णउइअंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसलेवि अब्भिंतरओ आइ मुहुत्ते छण्णउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ९६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ

तेजेणे गाउकोस चितवीयें अव्यवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दंड ९६ अगुल प्रमाणे कह्यो २४ अगुल नोहाथहोय चिहुंहाथे १ दंड होय एम करतां ९६ अगुल कह्या। एम ९६ अंगुलनोधनुषनालिका यूप भूसरो अत्र मूशलएहसर्व ९६। ९६ अगुलनो होय। निषधने माथे सर्वाभ्यं तर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यतर मंडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ९६ अंगुल छाया प्रमाणे होय १२ अगुलनो छणजभोकरीये तेहनो छाया ९६ अंगुल होय तिवारे कर्क संक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ९६ अगुल २ घडी दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अ गुल छण त्रिगुण कीजे एतले १८ वार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनो अर्द्ध १०८ एह आंकमांहि छण प्रमाण अगुल १२ काढी पूठी ९६ अगुल उगरे ॥ इति ९६ मो संपूर्ण ॥ ९६ ॥ हिवे ९७ मो लिखेछे। मेरु पर्वत १० सहस्र पिहुलो तेहथकी पूर्वनी जगती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

किञ्चिदभिधीयते। मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशती गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति हरिषेणो दशमचक्रवर्त्ती देशोनानि सप्तनवतिम्वर्षशतानि गृहमध्युषित स्तोणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रत्वा त्तदायुष्कस्येति ॥ ९७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किंचिदभिधीयते नंदणवणेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन म्मेरोः पचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पचयोजनशतोच्छ्रि

गोथुभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एव चउदिसिंपि अठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीओ प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ताण जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥

नंदणवणस्सणं उवरिल्लाओ चरमंताओ पंडयवणस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं अठाणउइजोयणसहस्साइं अबा

स्रयोजन गोस्तूभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथकी वेलधर नागराजानो गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ९७ सहस्र योजन आवाधाये विचाले आतरो कह्यो । एमज चिहुदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकह्यो आठे कर्मनी ९७ उत्तर प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म४२ गोत्र २ अतराय ५ सर्वमिली ९७ उत्तरप्रकृति हुई । नमिनाथ अरिहतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन काइकऊणां ९७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुंडथईने अगारथकी साधुपणूं पाम्यो ३०० वर्षमांझेरा दीक्षापाली १० हजारवर्ष सर्वायुपाली सीधोमोक्षपहुंतो ॥ इति ९७ मोसमवायथयो ॥ ९७ ॥ हिवे ९८ मोलिखेछे। मेरुनो नंदनवनपहिलो मेख

तं तन्नतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्ग्रहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम तो नवनवत्यामेरौ रुक्मैस्वस्य आद्ये सहस्रे अपकृष्टे यथो क्तामन्तर भवतीति गोस्तुभसूत्रभावार्थःपूर्ववं नवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे चिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेयड्ढस्सणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोप पाठः सम्यक्पाठ स्वाय दाहिणभरहड्ढस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेण पणत्ते इति यतोन्यत्रोक्त नवचेवसहस्साइं छावट्ठाइं सया इं सत्तभवे सविसेसकलाचेगा दक्षिणभरहधणुपट्ठति वैताढ्यधनुः पृष्ठ लेवमुक्त मन्यत्र दसचेवसहस्साइं सत्तेवसयाहवतितेयाला धणुपट्ठवेयड्ढे कलायपणर

हाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अट्ठा णउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणभरहस्सणं धणुप्पिठे अट्ठाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन ऊंचोछे तेमांहि ५०० योजना कूटऊंचाछे तोभूमीथकी तेकूटना शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगे नंदनवनकहीये मेरुपर्वत लाख योजनकह्यो तेमाहि १ हजार योजन भूमिमाहि १ सहस्रनो नंदनवन एव २ सहस्रनीकल्या लाखमाहियी तेमाटे नंदनवननो उपरिलो चर मांत मेरुने माथे पडकवनछे तेहनो हेठिलो चरमांत एह ९८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुईते थकी पूर्वं समुद्रमाहि गोस्तूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोछे। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोछे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी वेलधर नाग राजानो आवास गोस्तूभ पर्वत पूर्वसमुद्रमांहिछे। तेहनो पूर्वचरमांत ९८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। एमचिहुदिशि दक्षि ण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शख उत्तरसमुद्रमांहि दगसीम एहचिहुनोआंतरोगोस्तुभनीपरेजाणवो दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रनो धनुपृष्ट ९८।

सहवति उत्तराश्रीणमित्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवर मिह एकत्तालीसइमे इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः एगूणपंचासइमेत्ति एको

सयाइं किंचूणाइं आयामेणं प० उत्तराओ कठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडल गते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं चरइ दक्खिणाओणं कठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एक

से योजन कांइ ओछो लांबपणे कह्यो। उत्तर दिसथकी सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माथे आषाढी पूनिमे अठारह मुहूर्तनो दिवस १२ मुहूर्तनी रात्रिहुये पछे श्रावण वदी १ दिने सूर्य उत्तर दिशिथकी दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले आयो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग कीजे एहवा प्रतिदिन माडले बेबेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे चोसमे माडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे रात्रि वधे एमज सर्ववाह्य मडला लगें कीजे सर्ववाह्य मडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलीफरी माडी उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलाथकी मुहूर्तना ६१ या बेबे भाग प्रति दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागि मुहूर्त एक वांधोये सर्वाभ्यतर मडल लगे पछे सर्वाभ्यतर मडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुयें सूर्य प हिले छमाषे दक्षिणायन भणी आवतोथको एकोनपचासे माडले गयोथको ९८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसे घटाडी रात्रीनूं क्षेत्र रात्रियेवधारी सूर्य चारचरे। सर्ववाह्य मडल थको दक्षिणायनथको सूर्य बीजे छमासे उत्तरायनभणी आवतोथको एकोनपचासमे मडले गयोथको ९८ एक सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीनां क्षेत्रने घटाडीने दिवसनोक्षेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस वधे दक्षिणायने रात्रि वधे

नयचाश्रतो द्विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति द्वयगुणनव प्रतिमण्डल मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयवृद्धे दिनस्यरात्रे वैंति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथ
मानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तानिचतानिचेति कर्मधारयः तेषामेकोनविंशते र्नक्षत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्ता स्तथाहि रेवतिनक्षत्रं
द्वात्रिंशत्तार अश्विनीत्रितारं कृत्तिकाषट्तार रोहिणीपंचतारं मृगशिरस्त्रितार आर्द्राएकतार पुनर्वसुः पंचतारं पुष्यस्त्रितारं अश्लेषा षड्तारं मघा सप्ततारं
पूर्वाफाल्गुनीद्वितार उत्तराफाल्गुनीद्वितार हस्तः पंचतार चित्राएकतारं स्वातिरेकतार विशाखापंचतार अनुराधाचतुस्तार ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामी
लने यथोक्तं ताराग्रमेकोन ग्रंथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रंथाभिप्रायेण त्वेषा मेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तत्संख्याभवतीति ॥

सट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखित्तस्स बुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ रेवईप
ढम जेठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइताराउ तारग्गेणं प० ॥ ९८ ॥

दिवस घटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या बेबेभाग प्रति मंडले घटाडीये वधारिये । रेवतीनक्षत्रके पहिलो ज्येष्टानक्षत्रके पर्यवसान छेहडो जेहने एहवा ओ
गणीसनक्षत्र ने ९८ तारा ताराग्रेणतारापरिमाणे कह्या । रेवतीनक्षत्रना ३२ तारा । अश्विनीना ३ तारा । भरणीना ३ । कृतिकाना ६ । रोहिणीना ५
मृगसिरना ३ । आर्द्रानो १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्यना ३ । अस्लेषाना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानो १ ।
स्वातो १ । विशाखाना ५ । अनुराधाना ४ । जेष्टाना ३ । एह १९ नां सर्वमिली ९८ ताराथया । इति ९८ मो थयो ॥ ९८ ॥ हिवे ९९ मो लिखेछे

९८ ॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नंदनवणेत्यादि अस्यभावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतियोजनश
तानि चतु.पचाशच्चयोजनानि षट्योजनैकादशभागा बाह्योगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतुःपंचाशदधिकानि ष
ट्चैकादशभागा स्तथा पचशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कम्भो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर मायोभवति पढमसूरिय

मंदरेणं पव्वए णवणउइजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थि मिल्ले चरमते एसणं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं दक्खिणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते एसणंणवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० उत्तरे पढमसूरियमंडले नवणउइजोयणसहस्साइ

मेरूपर्वत ९९ सहस्र योजन ऊचो ऊचपणे कह्यो । भूमियको ५०० योजन मेरुने विषे ऊचा चढीये पहिलो मेखला तिहां नदनवन पामीये तेह नंदन
वन ५०० योजन पिहुलो छे नदनवनना पूर्व चरमांत तेहथी पश्चिम चरमात लगे ९९०० से योजन आबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो । मेरुनो विष्कम मू
ले १०००० योजन नंदनवन स्थाने बाह्य गिरि विष्कभ ९९०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नदनवन मांहि मेरुनो विष्कभपणो ८९ से योजन ५४
योजने ११ हीया ६ भाग नदनवन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलीजे अनेमेरुनो अभ्यतर विष्कभपणो लीजेतो ९९०० योजन आंतरो हुयो। एमज नदनवनना
दक्षिण चरमातथकी नदनबनना उत्तर चरमांतनो आंतरो ९९०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडलोछे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कांकणने

मण्डलेत्ति इह जम्बूद्वीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योराशिः सप्रथममण्डलस्यायामविष्कंभः सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशद धिकानि द्वितीयन्तु नवनवतिः सहस्राणि षट्शतानि पञ्चचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पञ्चत्रिंशदेकषष्टिभागाः कथं मण्डलमण्डलस्यचान्तर द्वेद्वेयोज ने सूर्यविमानविष्कम्भ श्चाष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणित पञ्चयोजनानि पञ्चत्रिंशदेकषष्टिभागाश्चेति जातमेतश्च पूर्वमण्डलविष्कंभे क्षिप्त जातमुक्तप्र

साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं प० दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खं

आकारे फिरतो पश्चिमनोनीलवंत ने माथे ते सर्वाभ्यंतर मांडलो जम्बूद्वीपमाही १८० योजनछे पूर्वदिशिनो अने पश्चिमनो पणि एतलोज छे तो जम्बूद्वीपन जीवा लांबपणे लाख योजनछे ते माहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिमाकाढी लाख योजनमांहि थी पूठें पूर्वसर्वाभ्यतर मडल अने पश्चिम सर्वा भ्यतर मडलने ९९६४० योजन आंतरो थयो। पहिलो सर्वाभ्यतर सूर्यनो मांडलो ९९ सहस्र योजन सातिरेक झाझेरोति ६४० योजन आयाम पनिमि लाव पणे दक्षिण उत्तरे विष्कम्भपिहुलपणे आंतरो जाणिवो लाख योजन माहिथी ३६० योजन काढी पूठें ९९६४० योजन ऊगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजो मांडलो अने पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो। तेकेम पहिला मांडलाथी बीजो मांड लो २ योजन अने मांडलानूं पिहुलपणूं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलोजविहुंदिशिमिली पहिला बीजामांडलानां आंतराना योजन मडल पिहुलपणो मिली ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाभ्यतर मांडलाना प्रथमना आंकमाहि घातिये एतले ९९६४० योजन मांही ५ योजन ६१ यापैंत्रीस भाग घातिये तिवारे ९९६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामांडलानो हुवे त्रिविसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो त्रीजो मांडलो ९९६५१ योजन ६१। २

माणमिति तृतीयमण्डलविष्कम्भोप्येवमेतावसेय: सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपंचाशत्योजनानि नवेकषष्टिभागाश्चेति इमोसेणमित्यादि भावा
र्थोयं अञ्जनकाण्डंदशम तनच रत्नप्रभोपरिमांताच्छतं शताना भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशतेच व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्य
न्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ९९ ॥ अथ शतस्थानकं किञ्चिल्लिख्यते। तत्र दशदशमदिनानि यस्या सा दशदशमिका याहि दिनानादशदशका

न्नेण प० तइएसूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं प० इमीसेणं रयणप्प
भाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ वाणमंतरभोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एसणं नव
नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९९ ॥ दसदसमियाणं भिक्खुपडिमा एगेणं रा

भाग पूर्व अने पश्चिमनां मडलने आंतरो दक्षिणने उत्तर मडले आंतरो तेहीपिण बीजामांडलानीपरे ५ योजन भाग ३५ त्रीजेमांडलेवधारियें ९९६४५ यो
जन भाग ३५ माहिघातियें तिवारे ९९६५१ योजन ६१। ९ भाग आंतरो थाय। त्रीजो मांडलो आयाम लाबपणे विखंभ पिहुलपणे कह्यो। एणीये रत्न
प्रभा पृथिवी ये ३ कांड माहिपहिलोकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननो तेकांडप्रत्येके १ सहस्रनोछै तो रत्नप्रभानो दशमो अंजन कांड तेहनो हेठिलो
चरमांत समभूतलथी १० हजारयोजनछे तिहांथकीमांडी उपरि रत्नप्रभाना १०० योजन मांहीवानव्यंतरनाभूमि संबंधी बिहार क्रीडा नगरछे तेहनोउ
परिलो चरमांत ९९०० से योजनआबाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन बाहिर काढीयें तिवारे
९९ से योजन उगरे। इति ९९ मोसमवाय थयो ॥ ९९ ॥ हिवे १०० मोलिखेछे। पहिला दस दिहाडा लगे एकेकी भिक्षा दातीले पछे बीजे

नि भवन्ति तत्रभवन्ति दशदशमदिनानि शतञ्च दिनाना मतउच्यते एकोनरात्रिंदिवसशतेने ति यस्यांच प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकैकाभिचा द्वितीयेद्वे द्वे एवं यावद्दशमेदशदशेत्येव सर्वभिचासकलने सूत्रोक्तसख्याभवत्येव इति पार्श्वनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्व सप्ततिचानगारत्वमित्येव शतमायुः पालयित्वा सिद्धः एवं थेरेविअज्जसुहम्मेत्ति आर्यसुधर्मामहावीरस्य पचमोगणधरः सोपि वर्षशत सर्वायुः पालयित्वा सिद्ध स्तथाच तस्यागारवासः पचाशद्वर्षाणि छद्मस्थपर्याय।

इंदियसतेणं अरुहठेहिं निक्कासतेहि अहासुत्तं जावआरगहियाविभवइ सयहिस्सिया नक्खत्ते एक्कसय तारे प० सुविहीपुप्फदतेणं अरहा एगंधणुसय उद्धं उच्चत्तेणं होत्था पासेणंअरहापुरिसादाणीए एक्कांवा ससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे सव्वेविणं दीहवेयद्धपव्वयाएगसेगं गा

दशके वे वे भिचा एम दस दसक लगे एकेक भिचावधारीयेते प्रतिमा दश दशमिका कहीये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिचा प्रतिमा एकरात्रि दिवस सते एतले १०० अहोरात्रियें अने साढे पाच से भिचाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गे आराधी होय एणी प्रकारे। शतभिषा नचत्रना एक सो तारा कह्या। नवम सुविधिनाथ बीजोनाम पुष्पदत अरिहत १०० धनुप ऊचा ऊंच पणे हुया पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषादानीय महासोभागी ३० वर्ष गृह हाश्रमे कुमारपणें ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगलो आउखोपालीने सिद्ध थया समस्तदुःखथकी प्रचीणथया। एमज श्री महावीरनो पाचमो गणधर आर्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थपणे ४२ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखोपालीने सिद्धथया। जबूद्वीप मांहि ३२ विजयना ३२ भ

द्विचत्वारिंश त्केवलिपर्यायोष्टीभवति चैतद्राशित्रयमीलने वर्षशतमिति वैताढ्यादिषूच्चत्वम् चतुर्थांशउद्वेधः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पद्मानां महाह्रदाना मुभयतो दशव्यवस्थिता स्तेच जम्बूद्वीपे शतद्वयसंख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्धा सूत्ररचनां परित्यज्य

उयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उड्ढउत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सव्वेविण कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसय उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसय मूले विक्खंभेण प० ॥ १०० ॥ चंदप्पभेणं अरहा

रत ऐरवतना २ एवं ३४ दीर्घवैताढ्य एह वेगुणा धात की खड पुष्करार्ध मांहि तो सगला दीर्घ वैताढ्य पर्वत एकेक सो गाउ ऊचपणें कह्या । एतले वैताढ्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाउ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि मांहिहोय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला चुल्ल लघु हिमवत वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां क्षेत्रतेहनी मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरोपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाउ उद्वेधपणे भूमि मांहि ऊंडपणें कह्या । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहूंपासे दस दस कांचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरूमां हि निषधादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहुंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरू उत्तरकुरू मिली २०० कांचनगिरि छे । जम्बूद्वीप माहि वेगुणा धातकी खड पुष्करार्द्धमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कह्या । एकेकसो गाउ उद्वेधें भूमि मांहि ऊडा एकेकसो योजन मूलें एतला पिहुला कह्या । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चद्रप्रभ आठमा अरिहत १५० धनुष ऊंचा ऊं

पश्चाश्च्छतादि द्वद्धा तां कुर्वन्नाह चदप्पहेत्यादि सुगमञ्च सर्वमाबादशाङ्गगणिपिटकसूत्रा न्नवरं॥ १५०॥२००॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसकाः शेखरकाः कर्ण पूराणिवा अवतसकाः प्रधानाइत्यर्थः प्रासादाश्च ते अवतंसकाः प्रासादानाम्वा मध्ये अवतंसकाः प्रासादावतंसकाः ॥२५०॥ तथा पचधणुसतियस्सणमित्यादि

दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणाबाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउमप्पन्नेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिन्नि धणुसयाइं उड्ढं

चपणें हुया। इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या। बारमेअच्युतकल्पे १५० विमान विहूंमिली ३०० विमानछे। इति १५० नो थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेछे। सातमा सुपार्श्व अरिहत २०० धनुष ऊंचा ऊंच पणें थया। सगला महाहिमवत पांच रूपी वर्षधर अढाई द्दीप माहिला बेबेसो योजन ऊचा ऊच पणें हुया। बेबेसे गाऊ उद्वेवपणे भूमिमांहि ऊंड पणें कह्या। जंबूद्दीपने विषे २०० कांचन पर्वत ते पूठें कह्याछे॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेछे। छठा पद्मप्रभ अरिहत २५० धनुष ऊंचाऊच पणें हुया । असुरकुमार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मोटाप्रासाद २५० योजन ऊंचाऊंच पणें कह्या॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

पञ्चधनु' शतप्रमाणस्य अतिमसारीरियस्सत्ति चरमशरीरस्य सिद्धिङ्गतस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषा जीवप्रदेशावगाहना प्रज्ञप्ता यतोसौ शैलेशीकार णसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहत्रिभाग म्विमुच्य घनप्रदेशोभूत्वा देहत्रिभागद्वयावगाहन: सिद्धिमुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैव तित्रिसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोय

उच्चत्तेणं होत्था अरिठनेमीणं अरहा तिन्निवाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्व इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेण प० समणस्स भगवन्त महावीरस्स तिन्निसयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था पंचधणुसइयस्सणं अतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स साति रेगाणि तिन्निधणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहन्त पुरिसादा

मो लिखेछे । पांचमा सुमतिनाथ अरिहत ३०० धनुष ऊ चा ऊ च पणेंहुया । बावीसमा अरिष्टनेमी अ(िहत ३०० वर्ष कुमारपणें वसी मुंडथया ७०० वर्ष दीचापाली सिद्धथया सर्वदुःख प्रचीण थया । वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनउ चा उ चपणे कह्या । श्रमण भगवंत श्री महावीरने ३०० चौदह पूर्वधरहुया । ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अतिम शारीरी होय चरमशरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विषे ३०० धनुष भाभेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही । केवलीनाजेतलो शरीर होय उ चपणें तेहनां ३०० भाग करीये त्रीजे भागे नासिका कर्णादिक ना शरीरांतर्गत पोलार पूरीये पछे २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ मे भागे आकाश प्रदेश छाईनेरहेतो ५०० धनुष त्रिभागोक्षत शरीरना ३३३ ध नुषआवे एतला सिद्धना जीवनी अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० मो समवायथयो ॥ ३०० ॥ हिवे ३५० मो लिखेछे पार्श्वनाथ अरिहत पुरु

होइबोधव्वो एसाखलुसिडाणं उक्कोसोमाहणाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणंवक्खारपव्वएत्यादि वच्चस्कारपर्वंता एकमेरुप्रतिबडाविंशति स्तेच वर्षधरा

णीयस्स अठ्ठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था अभिनंदणेणं अरहा अठ्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३५० ॥ सन्नवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं णिसहनीलवं तावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० रुव्वे विणं वक्खार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहरपव्वयएणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेण प० आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं भगवओ

षादानी महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया । चौथा अभिनदन अरिहंत ३५० धनुष ऊंचा उ च पणे कह्या । इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥ हिवे ४०० नो लिखे छे । तीजा सभवनाथ अरिहत ४०० धनुष उंचा उंच पणे हुया । सगलाही अढाई द्वीप मांहिला ५ निषध ५ नीलवतवर्षधरपर्वत चेत्र मर्यादा कारी चार चार से योजन उ चा उ च पणे हुया । चार चार से गाउ उद्वेध पणे उडपणे कह्या । जबूदीप मांहि सगलाई वीस वक्स्कार पर्वत छे ते किम महाविदेह मांहि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वच्चस्कार ४ गजदंत छे तो १६ वच्चस्कार अने ४ गजदंत छे तो १६ वच्चस्कार अने ४ गजदत मिली २० वच्चस्कार पर्वत कह्या । निषध नीलवत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन उंचा उ च पणे कह्या । सीता नदीने पासे मेरुने पासे ५०० योजन उंचा छे चार चार से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उड पणे कह्या । आनत प्राणत नवमा दशमा देवलोकने विषे ४०० विमान कह्या ।

सत्तौ चतुःचतुश्शतोच्चाः ॥४००॥४५०॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणंवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ अजितेण अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सागरेणं रायाचाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्खारपव्वयासीओओ सीओआउ महानईउ मंदरेणं वापव्वएणं पच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विण वासहरकूडा पंच पच जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

श्रमण तपस्वो भगवत श्रीमहावीरने ४०० वादीनो सपदा हुई। ते वादी केहवा छे। देवतायें करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उत्कृष्टी वादीनी सपदा हुई। इति ४०० नो समवाय सपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे। अजितनाथ अरिहत अर्द्ध पचम साढा चार से धनुष उ'चा उच पणे हुया। सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिहु दिशना अतनो धणी ते ४५० धनुष उ'चा उच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे। महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वक्खार पर्वत अने ४ गजदंत एव २० वक्खार निषध नीलवतने पासे उ'चा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे यो जन उ'चा उच पणे ते २० वक्खार निषध नीलवतने पा ते ४०० गाउ उ'डा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उद्वेध पणे उ'ड पणे कह्या। वर्षधर

धिकं कथं लहुहिमवनिसहे एक्कारसअट्ठनवयकूडाइं नीलाइसुतिसुनवगं अट्ठेक्कारसजहासंखं एतेषां म्मस्रगुणलात् वक्खारकूटानि त्र्यशीत्यधिकचतुः शतीसंख्या
नि कथ विज्जुपहमालवंते नवनवसेसेसुसत्तसत्तेव सोलसवक्खारेसु चउरोचउरोयकूडाइं एतेषां म्मचगुणलात् पंचगुणल जम्बूद्वीपादिमेरूपलचितचेत्राणां पंच

जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया
चाउरतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारप
व्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पव पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं व
क्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं

र कहिये हिमवंतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहां इंक ११ छे किहां इंक ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पांच पाच से योजन उंचा
मूले पांच पांचसे योजन विष्कंभपणे पिहुल पणे कह्या। आदिनाथ अरिहंत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। भरत राजा चातुरंत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उचा उच पणे हुया। मेरु पर्वत थकी विदिशि थकी नीकल्या ४ गजदंत एहवा कह्या सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवंत
४ एह चार वक्षस्कार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पांच पांच से योजन उंचा उंच पणे पाच पाच से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंडपणे कह्या। सगलाई
वक्षस्कार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जी ने एतले एह २ कूट। गजदंत संबधीकूट सहस्र योजन उंचा छे। ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पांच से योजन उंचा उच पणे कह्या। मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहुल पणे कह्या। सगलाई नंदनवनमा कूट पणि बलकूट वर्जीने

त्वा त्सर्वाण्येतानि पंचशतोच्छ्रितानि एवंमानुषोत्तरादिष्वपि वेताकूटानितु सर्वाग्रषट्योजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छ्रितानीति हरिकूट हरिसहकूट वर्जनविवरयोः सहस्रोच्छ्रयत्वादाह जिज्णभहरिकूडो हरिस्सहोमालवंतवक्खारो तहनंदणवणकूडो उव्विदाजोयणसहस्सति ॥

॥ ५०० ॥ चुल्लहिमवत कूडस्सेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छ्रित स्तत्कूट मप्यशतोच्छ्रितं इति सूचोक्तमन्तर भवतीति श्रभिचंदेणकुलकरेत्ति

आयामविक्खंभेणं प० सव्वेविणं नंदणकूडावलकूडवज्जापंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच २ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ५०० ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएराणं छजोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० एव सिहरीकूडस्सवि पासस्सणं अरहउ छसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाईसपया होत्था अभिचंदेण कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस योजन उंचो छे मोटाई टालीने बीजा सातकूट पांच पाचसे योजन उंचा उंच पणे मूलने विषे ५ से योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्या । सौधर्म ईशान पहिले बीजे कल्पे विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उचा उंच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥ हिवे ६ स्से नो लिखेछे । सनत्कुमार माहेन्द्र कल्पे त्रीजा चोथा देवलोकें विमान ६ स्से योजन उंचा उंचपणे कह्या । लघु हिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत

अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्प्पिण्यां सप्तानां कुलकराणा चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःशतानि पंचाशदधिकानि ॥ ६०० ॥ श्रमणस्य भगवतोम हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलिशतानीत्यर्थः तथा श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिमत्साधुशतानीत्यर्थः अरिठेत्यादि देसूणाइति

अरहा बहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥ बंभलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उढ्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं भगवउ महावीरस्स सत्तजिणसया होत्था समणस्स भगवउ महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्था अरिठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आबाधायें विचाले आतरो कह्यो। एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिली ६ स्से योजन थया। वलीएमज छठ्ठा शिखरि पर्वत ने उपरिकूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहथकी पृथ्वीतल ६ स्से योजन थ यो। पार्श्वनाथ अरिहतने ६ स्से वादीथया तेकेहवा। देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो त्रिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनी उत्कृष्टी संपदा हुई। एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चौथो कुलकर अभिचंद्रनामा ६ स्से धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। बारमा वासु पूज्य अरिहत ६ स्से पुरुष साथे मुंडथई गृहाश्रमथकी अनगार पणो पाम्या॥ इति ६ स्से मो समवाय थयो ॥ ६०० ॥ हिवे ७ से नो लिखेछे। ब्रह्मलांतक पांचमे छठ्ठे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या। श्रमण तपस्वी भगवंत महा वीरना सातसे जिन केवली थया। श्रमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया। बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहत ३ से वर्ष कुमारपणे ७ से

चतुःपंचाशतादिनामामूनानि तत्रमायत्वाच्छ्रस्थकालस्येति महाहिमवंतेत्यादौ भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छ्रित स्तत्कूटंच पंचशतोच्छ्रितमिति

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एव रुप्पिकूडस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अट्ठजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्ज

वर्ष देशोन ५४ दिन ऊणा केवली पर्याय चारित्रपालीने संपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धथया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। महाहिमवतवर्षधर २ से योजन ऊंचोछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवत कूटछे सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणी तल भूमिभाग ७ से योजन आवाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊंचो रूपी पर्वत २ से योजन उंचो सर्वमिली ७ से योजन थया॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिवे ८ से नोलिखेछे। महा शुक्र सहस्रार सातमे आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उ च पणे कह्या। एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेहनो पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिंड छे। ते मांहि १ सो योजन हेठे मूंकिए १ सो योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहिं काल पिशाचादिक वान व्यतर कह्या। ते केहवा छे भीम कहतां भूमि संबंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमेयक विहार

सूत्रोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ७०० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्ड खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योजनसहस्रप्रमाणे अधउपरिच योजनशतद्वय स्विमुच्यान्येष्वष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा वाना स्तेच ते व्यन्तराश्च तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्भौमेयका स्तेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरभौमेयकविहारा इति अट्ठसयत्ति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणंदेवाणंति देवे भूत्यस्यमानत्वा देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति राचया कल्याण येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याण येषांते

विहारा प० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

कह्या छे। श्रमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात ऊपजवो छे जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण छे जेहनो स्थिति कल्याण छे जेहनो। आगामिये कालें एक भवने आंतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेहने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी संपदा हुई। एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो बणो समरमणीक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से नेउ योजने तारा मडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिलो ८ सो योजन थया। अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी संपदा हुई ते वादी केहवा छे देवताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहु भुवने वादने विषे अपराजित जीत्यान जाय एहवी

तथा तेषांतथाततश्च्युतामामागमिष्यदागामिभद्र कल्याणं निर्वाणगमनलक्षण येषान्ते आगमिष्यद्भद्राः तेषां किमित्याह उक्कोसिएत्यादि ॥ ८०० ॥

ञ्चरहत्तणं ञ्चरिठनेमिस्स ञ्चठस
बञसमरमणिज्जाउ जूमिजागाउ ञ्चठहिं जोयणसएहिं सूरे चारंचरति
याइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाएञ्चपराजियाणं उक्कोसिया बाईसंपया होत्था ॥ ८०० ॥
ञ्चाणयपाणय ञ्चारणञ्चच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० निसढकूडस्सणं उवरि
ल्लाउ सिहरतलाउ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समेधरणितले एसणं नवजोयणसयाइं ञ्चवाहाए ञ्चंतरे प०
एवं नीलवंतकूडस्सवि विमलवाहणेण नवधणुसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था इमीसेण रयणप्पभाए बञसमरम

हिवे नौ सै नो लिखे छे। आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ एह उत्कृष्टी वादीनी संपदा हुई ॥ इति ८ सौ नो थयो ॥ ८०० ॥ विहु कल्पने विषे विमान नौ सै योजन ऊंचा ऊच पणे कह्या। निषध पर्वत चार सै योजन ऊचो तेह उपरि पाच सै योजन निषध कूट छे सर्वमिली नवसै योजन थया। तो निषध कूटनो उपरिलो शिखरनो तलो तेहथकी निषध पर्वतनो वर्षधर पर्वतनो समोभूमितल नौ सै योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज नीलवत कूटथकी पणि धरणीतल नौसै योजन आंतरो उपरिलो शिखरनोतलो तेहथकी निषध पर्वतनो समो भूमितल नौसै योज न आंतरो कह्यो। एह अवसर्पिणी ये विमल वाहन पहिलो कुलगर ९ सै धनुष ऊचा ऊच पणे हुया। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनो पहिलो घणो समरम णीक भूमिभाग तेह थकी ९ सै योजने सर्व उपरिलो तारा रूप शनैश्वरनो तारो चार चरे छे। समभूतल थकी ७ सै नव्वे योजन उपर तारा मंडल छे तेह

विविचित्तकूडा विति पचसुदेवकुरुषु यमकवत्तत्सज्ञावात्पंचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सव्वेविणमित्यादि सर्वेपिहत्ता वेताढ्या विंशतिः शब्दापात्यादयः
सव्वेविणहरीत्यादि हरिकूट म्विद्युत्प्रभाभिधानेगजदन्ताकारवखारपर्यंते हरिसहकूटन्तुमाल्यवद्वखारे तानिच पंचस्वपि मन्दरेषुभावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

२ ॥

अबाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ ,१०० ॥ सव्वेविण गेवेज्जविमाणे दस दस जोय
णसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउ
यसयाइं उव्वेहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० एवं चित्तविचित्तकूडावि भाणि
यव्वा सव्वेविणं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

योजन उंचा उच पणे कह्या। दश दश से कोस उद्वेध पणे भूमि माहि दश दश से योजन लगे आयाम विष्कंभपणे लांबपणे पिहुलपणे कह्या । एमज ५
देवकुरुने विषे निषध थको उत्तरदिशि शीतोदा महानदीने बिहुपासे सर्वमिली दशचित्र विचित्रकूट यमक पर्वतनी परें जाणिवा । सगलाई वृत्त वैताढ्य
बीस छे तेकिम जम्बूद्वीप माहि हिमवत क्षेत्र माहि रम्यक क्षेत्र ऐरवणत क्षेत्र मिली बीस एवं ४ वृत्त वैताढ्य थया। ८ धातकी खंडमांहि ८ पुष्करार्द्धमा
हि सर्वमिली बीस शब्दापाती प्रमुख दश दश से योजन उंचा उंच पणे कह्या। दश दश से कोस उद्वेधपणे भूमिमाहि उंडपणे मूलने विषे हजार योज
न पिहुलपणे। सगलाई समा गुर्जरदेश माहि धानभरिवानो पालो तेहने संस्थाने संस्थित छे। १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कह्या। मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छ्रितानि वक्खारकूडवज्जत्ति शेषवक्षस्कारकूटेष्वेव मुच्चत्वं नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवंबलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्यां दिशि बलकूटाभिधान कूटमस्ति ततः पंचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नदनकूडवज्जत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिंश

मूले दसेवजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० सव्वत्थसमा पल्लयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूडावक्खार पव्वयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं एवं बलकूडावि नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिट्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धेजावसव्वदुक्खप्पहीणे पा सस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था पासस्सणं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जावस

विदुपासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेमांहि विद्युत्प्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे। माल्यवंत ने उपर हरिसहकूटछे। एहकूट पांचसै योजननांछे मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वक्षस्कार कूट वर्जी नें वक्षस्कार कूट हजार योजन उंचा नथी तेहथी ते वर्जी ने कह्या। एमज ५ मेरुने विषे ५ नंदन वन छे। दिशि विदिशि ने विषे प्रत्येकें बलकूट नामें करी कूट छे। ते ५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नंदन वन कूट वर्जी ने नंदन वनने विषे पूर्वादिक दिशै विदिशें ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथी ए माटे छोडीने कह्या। अरिहंत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनो सगलो आयु पालीने सिद्ध थया तावत जाण थया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। पार्श्वनाथ अरिहंतने १ हजार केवलीनी संपदा थई। पार्श्वनाथ अरिहंतना १ हजार शिष्य कालगत थको सीधा यावत् सर्वदुःखकरी स

त्संख्यानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि सहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुमारत्वे नीगिवर्षशता न्यनगारत्वे समेत्येवं दशशतानि पउमद्दहपुंडरी
शद्दहत्ति पद्मह्रदः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकह्रदो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

वदुक्खप्पहीणाइं पउमद्दहपुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाण विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाण होत्था ॥ ११०० ॥ महापउममहापुंडरीयदहाण दो दो जोयणसह

वदुःख प्रक्षीण थया। लघुहिमवंत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे ए बिहु द्रह श्री अनें लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १ हजार योजन लांबपणे कह्या इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे। अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कह्या। पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥ हिवे २ हजार नो लिखे छे। महाहिमवंत उपर महापद्मद्रह छे रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते ह्री बुद्धि देवीना निवास भूत छे ते बे हजार योजन लांबपणे कह्या। इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे। रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकाण्डना उपरला चरमांत थी लोहिताक्ष काण्डनो हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥

हापद्ममहापुण्डरीकह्रदौ महाहिमवद्रुक्मिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ ह्रीवुद्धिदेव्योर्निवासभूतावितिं ॥ २००० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्र भापृथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्ड नामरत्नकाण्डं द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्ड चतुर्थं तानिच प्रत्येक साहस्रिकाणीति त्रयाणां यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिह्रदौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवीनिवासावितिं ४००० ॥ धरणितलेइत्यादि धरणीतले धरण्यांसमेभूभागइत्यर्थः रुयगनाभीओत्ति अष्टप्रदेशोरुचको तिरियलोगस्समज्झयारम्मि एसपहवोदिसाणं एसे

रसाइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्सउवरि ल्लाउ चरमंताउ लोहियक्खकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिदहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ४००० ॥ धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीउ चउदिसिं पंच २ जोयणसहस्साइं अबाहाए

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे छे। तिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरीद्रह ए बिहुं धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भूत छे ते ४ हजारयोजन लांब पणे कह्या इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ ꣸ × ꣸ × ꣸ + ꣸ × ꣸ × हिवे ५ हजार नो लिखेछे। धरणीनेविषें मेरु पर्वतनो बहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशी रुचक नाभि कह्या नाभिथकी चिहुदिशि विदिशिपाच पांच-सहस्स योजन अवाधाये विचाले आतरो कह्यो। मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग थकी चिंहुदिशि

वभवेभणुदिसार्णति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंबमिवेति रुचकनाभि स्ततस्तस्थ्वपिदिक्षु पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कंभत्वादिति ॥ ५००० ॥ इमीसेयमित्यादि रत्नकाण्डंप्रथम पुलककांडसप्तमभिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथाई हरिवासेइग

मंदरपव्वए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे छविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ पुलगस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन थामीये। इति पाच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे। सहस्रार आठमे देव लोकें ६ हजार वि मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेछे। एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो उपरिलो चरमांत तेहथकी पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति सात हजार नो थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेछे। एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासक्षेत्र ८ सहस्र योजन सातिरेक झाझेरा एतले एकवीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा तुलसीयसयाकलायएक्कायत्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणीभागो भरतस्येति दक्षिणार्द्धभरतं तस्य जीवेवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन मूर्वतः प्रतीचीन म्पश्चिमत आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहओत्ति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्र लवणसमुद्रं स्पृष्टा प्रभवतोनवसहस्राण्यायामत इहोक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽय नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिद्वादशच कला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥

पन्नीणायया दुहउ समुद्दं पुठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥ मंदरेणं पव्वए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्दीवेणं द्दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेण समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं

हिवे नवहजार नो लिखेछे। दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वथकी माडी प्रतीचीन पश्चिमें आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगी स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेछेही इति ९ हजारनोथयो ॥ ८००० ॥ हिवे दश हजार नो लिखेछे। मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणें कह्यो इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिवे लाख नो लिखेछे। असख्यात द्वीप माहि मध्य जंबूद्वीप शतसहस्र एतले लाख योजन लांबपणें पिहुलपणें कह्यो इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे बे लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र पहिलो बे लाख योजन पिहुल पणें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने वीटी रह्यो छे ॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ हिवे त्रिण लाख नो लिखे छे।

लवणेत्यादि तत्र जम्बूद्वीपस्य लक्ष चत्वारिच लवणस्येति पंच ॥ ५००००० ॥

१०००००॥ २०००००॥ ३०००००॥ ४०००००॥

पासस्सणं अरहउ तिन्निसयसाहस्सीउ सत्तावी चक्कवाल विक्खंभेण प० ॥ २००००० ॥ धायइखंडेणं दीवे चत्तारि सचसहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था ॥ ३००००० ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाउ जोयणसयसहस्साइ चक्कवालविक्खंभेणं प० ॥ ४००००० ॥ चरमंताउ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पंचजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ५००००० ॥ भरहेण राया चाउरंतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं रज्जमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं

पार्श्वनाथ अरिहंतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार उत्कृष्टी श्राविकानी सपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनो थयो ॥ ३००००० ॥ हिवे चार लाखनो लिखे छे। बीजो धातकी खड द्वीप चार लाख योजन चक्रवाल विष्कभपणें पिहुलपणें कह्यो ॥ इति चार लाख नो थयो ॥ ४००००० ॥ हिवे पांच लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अवाधाये बिचाले आं तरो कह्यो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बेलाख लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बेलाख बिचे जबूद्वीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच लाखनो थयो ॥ ५००००० ॥ हिवे छ लाखनो लिखेछे। श्री आदीश्वरनो वृद्ध पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कु मारपणें रह्या छ लाख पूर्व महाराज पणे वसीने मुंड थया अगार थकी अनगारी थया। एतले यतीपणो पाम्या। इति छ लाखनो थयो ॥ ६००००० ॥

६००००० ॥ जम्बूद्दीवस्सेत्यादि तत्र लक्षं जम्बूद्वीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारि धातकीखण्डस्येति सप्तलक्षाण्यन्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ७००००० ॥
८००००० ॥ अजितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राणि अतिरेकश्च चत्वारिंशतानि इदं सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधी

पञ्चइए ॥ ६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयंताओ धायइखंडचक्कवा लस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते सत्तजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००००० ॥ मा हिंदेणं कप्पे अट्ठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ८००००० ॥ अजियस्सणं अरहओ साइरेगा इं नवओहिनाणिसहस्साइं होत्था ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेण वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं

हिवे सात लाखनो लिखेछे। जम्बूद्वीपना पूर्वदिशिना वेदिकानां प्रांतथकीमांडी धातकी खंड चक्रवालरूप तेहनो पश्चिम चरमांत सातलाख योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो तेकेम। जम्बूद्वीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखंड ४ लाख सर्वमिली ७ लाख योजन थया। इति ७ लाखनो थयो ॥ ७००००० ॥ हिवे ८ लाखनो लिखेछे। माहेंद्र चौथे कल्पे ८ लाख विमान कह्या ॥ इति ८ लाख नो थयो ॥ ८००००० ॥ हिवे ९ हजार नो लिखेछे। अजितनाथ अरिहंतना सातिरेके ४० अधिक ९ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ। लाख लगी सख्या कहे वली उपराठा ९ सहस्र कह्या ते सूत्रनी गति विचित्र छे एथी अथवा लेखकने प्रमाद थी जाणिवा ॥ इति ९ हजारनो थयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश लाखनो लिखे छे

तत्तत् सहस्रशब्दसाधर्म्याद् विचित्रत्वाद्वा सूत्रगतेर्लेखकदोषाद्वेति ॥ १००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम णेत्यादि किलभगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिम्प्रव्रज्या म्पालितवानित्येकोभव. ततो देवोभूदिति द्वितीय स्ततोनन्दनाभिधानो राज सूनुः छत्राग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव दिति चतुर्थ स्ततो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्षावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्त्र्यशीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्षाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेषि नाम्ना देवेन संहृत स्तीर्थकरतया च जातइति षष्ठः उक्तभव

सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १०००००० ॥ सम णेभगवंमहावीरे तित्थगरभवग्गहणाउ छठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पाच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पाचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणें ऊपनोछे ॥ इतिदश लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे। श्रमण भगवत महावीर तीर्थंकर पणे उपाज्यों ते भवनाग्रणहथको एतले तेभवथकी पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दोचापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणें ऊपना ते छठो भव केम श्रीमहावीर नो जीव पूर्वं भवे पोटिलनाम राजा हुआ ओ एक भव १ तिहां कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ ओ बीजो भव तिहा थी त्रीजे भवे छत्राग्र नगरीये नद राजा हुया तिहा गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या। पछे १ लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

नक्षत्रं हि जिना नान्यजन्मग्रहणं षष्ठं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्ठभवग्रहणतया आख्यातं यस्मान्न भगवग्रहणा दिदं षष्ठं तदन्यतस्यात्मन्नभमेवेति सुष्ठूच्यते तीर्थंक

रभवग्रहणात्षष्ठे पोट्टिलभवग्रहणे इति ॥ १०००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सन्ति ग्रावृतत्वेनश्रीऋषभ इति गाणेअल्पत्वेननिर्देशः मृतः

एकसागरोपमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः त्रिभिश्चाधिकैरूनाप्यल्पत्वा द्विविवक्षा विवक्षितेति ॥ + ॥ इत्यएतेनानंतरं संख्यागमस

स्कन्धमात्रेण सम्बद्धाविविधा वस्तुविशेषाउक्ता इदानीं विशिष्टतरसम्बन्ध संबद्धा द्वादशांगे प्ररूपयन्नाहइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल

संगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसंख्यागमसंबद्धार्थं प्ररूपणमनन्तरमकारि सांप्रतं संख्यागमासंबद्धपदार्थं प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तमप्युत्तमपरमगुरुण

सहस्सारे कप्पे सव्वठ्ठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ १००००००० ॥ उसभस्स णं भगवओ

महावीरस्स य एगासागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिडए

मास क्षमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुआ । तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने कूखेंआप

मा ५ तिहां थकी ८२ मे दिने क्षत्रीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञाये हरिणी गमेषी देवें त्रिशला देवीनी कूखें मेलतस्या एह छठो भव

जाणवो इति एक कोटी नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे सागरोपमनो लिखे छे। श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने बेयालीस

सहस्र ऊणो एक सागरोपम कोडा कोडी आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एकथकी मांडी कोडा कोडीनो संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग

स्यांगानी याङ्गानि द्वादशाङ्गानि आचारादीनि यस्मिस्तद्वादशांग गुणानागणोस्यास्तीतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकमिवपिटक सर्वस्वभाजन गणिपिटक अथ वा गणिशब्द: परिच्छेदवचन स्तथाचोक्तम् आयारमि अहीए जनाप्रोह्मीइसमणधम्मोउ तम्हाआयारधरो भणइपढमगणिठाण परिच्छेदस्थानमित्यर्थ: ततश्च परिच्छेदसमूहो गणिपटकमत्रचैवपदघटना यदेतद्गणिपिटक तत्द्वादशागमङ्गरूपम् तद्यथा आचार: सूत्रकृतइत्यादि सेकितमित्यादि अथ कितदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचार: आचरणमाचार: आचार्यत इति वा आचार. साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थ: एतत्प्रतिपादकोग्रन्थोप्याचारएवोच्यते आयारेणति अनेनाचारेण करणभूतेन श्रमणानामाचारोव्याख्यायत इति योग: अथवा चारेधिकरण भूते णमिति वाक्यालकारे श्रमणाना तप:श्रीसमालि

प० त० आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पराहावागरणाइं विवागसुए दिठिवाए सेकित आयारे आयारेणं समणाणं निग्गं

नो वर्णन करे छे। इग्यारह अग बारमो पूर्व एव श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अगसरीखाअग वली केहवाछे गणीकहीगे आचार्य तेहने पेटी सरीखो दर्शन चारित्र तेहनो स्थान कह्यो। तेकहेछे। आचाराग १ सूयगडाग २ ठाणाग ३ समवाय ४ विवाहपन्नती एतले भगवतीसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपासकदशा ७ अतगडदशाग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अग स्यूते आचार यत्र अथवा कोण ते आचार। आचरवो ते आचार। अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनो प्रतिपादक ग्रथ पणि आचार कहिये ते आचारागने विषे श्रमण तपस्वी तेह निर्ग्रथ बाह्याभ्यतर ग्रथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिक्षा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मक्ष

गितानां निर्ग्रन्थानां सवाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितानां श्रमणा निर्ग्रन्थाएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं सुत्तञ्च निग्गंथसक्कतावस गेरुयआजीवपचहासमणत्ति तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिक्षाग्रहणविधिलक्षणो विनयोज्ञानादिविनयः वैनयिकं तत्फलं कर्म्मक्षयादिस्थान कायोत्सर्गोपवेशनशयनभेदा त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिश्चंक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरण प्रमाणं भक्तपानाभ्यवहारोपध्या देर्मानं नियोजन स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन भाषासयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयईर्यासमित्याद्याःपञ्च गुप्तयोमनोगुप्त्या दयस्तिस्रः तथाच शय्याचवसतिरुपधिश्च वस्त्रादिकोभक्त चाशनादिपानं चोष्णोदकादीतिद्वन्द्व स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानांदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग मोत्पादनैषणाविशुद्धि स्ततः शय्यादीनामुद्गमादि विशुद्धानाशुद्धाना तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचग्रहण शय्यादिग्रहण तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु

थाणं आयारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंकमणपमाणजोगजुंजणभासासमितिगुत्तीसेज्जोवहिभत्तपाणउ

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन विहार भूमिचालवो । चंक्रमण उपाश्रयातरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो । प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मिश्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उष्णादिक पाणी उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेशणा लक्षण दोषनो विशोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि कनो ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्वं सुप्रशस्तभलो जेह आचारांग ने विषे कह्यो जायछे । ते आचार सक्षेपे करी पाच प्रकारे कह्यो । तिकहेछे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामिव सख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संक्खेज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः प्रतिमाद्यभिग्रहविशेषा वा सखेज्जावेढत्ति वेष्टकाश्छन्दोविशेषा एकार्थप्रतिबद्धवचनसकलिकेत्यन्ये संक्खेज्जासिलोगत्ति स्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि सख्यातानिर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थाना युक्ति र्घटनाविशिष्टायोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिन्नवाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्चनिच्चेपनिर्युक्त्याद्याः संख्येयाइति सेणमित्यादि स आचारोणमित्यलङ्कारे अगार्थतया अङ्गलचणवस्तुत्वेन प्रथममगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेचयातुद्वादशमंगं प्रथमपूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वौश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलचणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्थपरिण्णा १ लोग विजओ २ सीओसणिज्ज सम्मत्त ४ आवति ५ धुयविमोहो ७ महापरिण्णो ८ वहाणसुय ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया २ भासेज्जायाय ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ती १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्ध. एवमेतानि निशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देशनकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या ध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवशस्त्रपरिज्ञादिषु पचविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सत १

सुयखंधापणवीसंअज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकालापचासी समुद्देसणकाला अठारसपदसहस्साइं पदग्गे

निर्युक्ति सूत्रने विषे कहिवा पणियाथ्या अर्थनो जोडिवोते युक्ति विशिष्ट घटनाये योजवो तेनिर्युक्ति। ते आचाराग अंगार्थपणे अगलचण वस्तुपणे। पहिले अगे वेश्रुतस्कधछे पंचवीस अध्ययनछे तेकेहा सत्थपरिण्णा १ लोग विजय २ सिओसणिज्ज ३ संमत्त४ आवति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिण्णो ८ वहाणसुयति ९ इति प्रथम स्कध ॥ पिंडेसण १ सिज्जि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४भावण१५ विमुत्ति १६ इति

षट् २ षत् ३ चतुः ४ षट ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतु ९ रेकादश १० नि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ सख्याताउद्देशनकालाः षोडशस्वध्ययनेषु शेषेषुनवसुनवैवेति इह सगृहगाथा सत्तयछचउचउरी छपचअट्ठेवसत्तवउरोय एक्कारातितिदोदो दोदोसत्तेक्कएक्कोयत्ति एवसमुद्देशनकाला अपिभणितव्याः अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रज्ञप्त. इहयत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं ननुयदि द्वौश्रुतस्कन्धौ पचविंशतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो यन्नणितं नवबभचेरगुत्तीओ अट्ठारसपदसहस्सिओवेओत्ति तत्कथ नविरुध्यते उच्यते यत्द्वौश्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणित यत्पुनरष्टादश पदसहस्राणि तत्नवब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाण विशेषार्थवडानिचसूत्राणि गुरूपदेशतस्तेषामर्थोवसेयइति सख्येयानि अक्षराणि वेष्टकादीनां सख्येयत्वात् अनतागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाइत्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तत्तद्धर्मविशिष्टानतधर्मात्मकवस्तुप्रतिपत्ते·

णासरकेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडानिबद्धाणिकाइया

द्वितीयश्रुतस्कध ॥ ८५ शास्त्र परिज्ञादिक २५ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः ३ चतुः ४ षट् ५ पच ६ अष्ट ७ सप्त ८ षतुः ९ एकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमो अध्ययन उद्देशा १६ विच्छेदथया। एव ६० उद्देशा पहिले श्रुतस्कधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया। कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना अवसर कह्या। अठारह सहस्रपद पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनी समाप्ति होय तेपदकहिये ते प्रथम श्रुतस्कधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद। सख्याता अक्षर लिपिन्यास अनन्तागमाअर्थपरिच्छेद। अनन्तापर्यव अक्षर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परित्ता एतले अनन्ता नही एहवात्रसजीववेरिद्रियादिक कहीये। अनतस्थावर

अन्येतुव्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशतोगमाभवन्ति तेचानन्ताः अनन्ताः पर्यायाः स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थः परीतास्त्रसाआख्ययन्त इति योगः त्रसन्तीति त्रसाद्वींद्रियादयस्तेच परीतानानता एव रूपत्वादेव तेषा अनताः स्थावरावनस्पतिकायसहिताः किंभूताएतेसासयाकडानिबद्धा निकाइयन्ति शाश्वताः द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्तेः कृताः पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावाप्ते र्निबद्धाः सूत्रएवग्रथिता निकाचिताः निर्युक्तिसंग्रहणि हेतूदाहर णादिभिः प्रतिष्ठिताजिनैः प्रज्ञप्ता भावाः पदार्थो अन्येप्यजीवादयः आघविज्जतित्ति प्राकृतशैल्याआख्यायते सामान्यविशेषाभ्यां कथतइत्यर्थः प्रज्ञाप्यन्तेना मादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्श्यन्ते उपमामात्रत. यथागौर्गवय स्तथा इत्यादि निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टा न्तोपन्यासेन उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिप्रायतोवेति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सइत्याचारांगग्राहको

जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंतिपरूविज्जंति नंदिस्संति उवदंसिज्जा सेएवंणाए एवंविन्नाए ए

वनस्पति सहित एह भाव। केहवाछे द्रव्यार्थनयें करी अविच्छेदपणें शाश्वताछे वली केहवाछे कडाकहता पर्यायार्थपणे प्रतिसमे अन्यथापणिहोय निबद्धासू त्र थकी गूंथ्या। निर्युक्ति सग्रहणी हेतु उदाहरणे करी निकाचित निविड पणें प्रतिष्ठ्या। जिनवीतरागें प्रज्ञप्ता कह्या। एहवा भाव पदार्थ अनेरा पणि अजीव पदार्थ जिहा सामान्यविशेष पणे कहिये। नामादिक भेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। उपमाने करी देखाडिये। यथा गोस्त थागवय हेतु दृष्टन्तोपन्यासे करी निर्देसियेदेखाडिये। उपनय निगमने करी सकलनयें करी उपदेशिये। ते आचाराग एहवोछे। एम एहभणी ने ज्ञाता

गृह्णत एवंमायन्ति अस्मिन्भावतः सम्यगधीते सत्येवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थः इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंयांतुदृश्यते इतीहव्याख्यातमिति एव क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थंक्रियापरिणाममभिधायाधुनाज्ञानमधिकृत्याह एवनायन्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति यथैवेहोक्तमिति एवविन्नायन्ति विविधोविशिष्टोवा ज्ञाताविज्ञाताएव विज्ञाताभवति तन्नांतरीयज्ञाताभवति।तंत्रांतरीयज्ञाटभ्यः प्रधानतरइत्यर्थः एवमित्यादि निगमनवाक्यंएवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायत इति चरण व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधं करणपिण्ड विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तआयारेत्ति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोयः पूर्वंदृष्टइति

१ ॥ सेकितंसूयगडे सूचार्थांसूचनात् सूत्र सूत्रेणकृत सूत्रकृतमिति सुष्ठूच्यते सूयगडेणति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवास्वसमयाः सूच्यते इत्यादिकंच तथा

वंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंआयारो ॥ १ ॥

सेकिंतंसूयगडे सूयगडेणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जंति ससमयपरसमयासूइज्जंति जीवासूइ

जाण होय। एवविणतेत्ति विज्ञाताहोयअन्यशासन शास्त्रनाजाणतेहथकी पिण घणो जाणहोय। एम एणी प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिंडविशुद्धि तेहनी प्ररूपणाआख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीयेउपदेशिये पूर्ववत्। एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥ प्रश्नसूंतेसूत्रकृतांग। सूत्रसूचवाथकी सूत्रेकीधो तेसूत्रकृत जेणे सुयगडांग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिये परसमयपरमत सूचवीयेकहिये जीवपदार्थ सूचवी ये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये। अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव बिहुपदार्थ जिहांकहिये पंचास्तिकायमयलोकसूचविये

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसाना: पदार्था: सूच्यंते तथा समयाणमित्यादि अत्र श्रमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमय: स्थाप्य तइतिवाक्यार्थ: तत्र श्रमणाना किंभूताना मचिरकालप्रव्रजितानां चिरप्रव्रजिताहि निर्मलमतयोभवत्यहर्निशंशास्त्रपरिचया द्दहुश्रुतसंपर्काच्चेति पुन: किंभूताना कुसमयमोहमइ मोहियाणंति कुत्सित: समय: सिद्धांतोयेषांते कुसमया: कुतीर्थिकास्तेषांमोह: पदार्थेष्वयथाववोध: कुसमयमोहस्तस्माद्योमोह: औट मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतानीता येषांतेकुसमयमोहमतिमोहिता: अथवा कुसमया: कुसिद्धातास्तेषामोघ: सघो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमोहोमूढतातेनमतिर्मोहिता येषांते कुसमयौघमोहमतिमोहिता: अथवा कुसमयाना कुतीर्थिकाना मोघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमतिर्मोहिता येषांते कुसमयमोघमोहमतिमोहिता: कुसमयमोहमतिमोहितावा तेषांतथासंदेहा वस्तुतत्वंप्रतिशंसया: कुसमयमोह २ मतिमोहितानामि

ज्जंति अजीवासूइज्जंति जीवाजीवासूइज्जंति लोगेसूइज्जंति अलोगेसूइज्जंति लोगालोगेसूइज्जंति सूअगडेणं जीवाजीवे पुस्सपावासवरसंवरनिज्जरणबंधमोक्खावसाणापयत्थासूइज्जंति समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

पचास्तिकायरहितअलोक सूचीजिये लोकालोक बोहू सू त्रवोये सूयगडांगसूत्रे चेतनावतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रव ५ कर्मनिरोध तेसंवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवोकर्म उपार्जवो तेबंध ८ सकलकर्मथकी मूंकाविवो ते मोक्ष ९ मोक्षछे अवसानछेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये। श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापिये ते श्रमण केहवाछे। अचिरकाल

तिविशेषणसान्निध्यात् कुसमयेभ्य' सकाशात् येषान्ते सन्देहजाता: तथासहजा स्वभावसम्पन्ना अकुसमयश्रवणसम्पन्ना बुद्धिपरिणामा मतिस्वभावात् संश योजातो येषाते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिता: सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषा श्रमणानामिति प्रक्रम: किमतआह पाप करी विपर्ययसंशयात्मकत्वेन कुत्सितप्रवृत्तिनिबंधनत्वादशुभकर्महेतु रतएव च मलिन: स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्म्मलोयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना यनिर्म्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं अशीयस्सक्रिरियावाइयसयस्सत्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावादिमतस्य व्यूह कृत्वा स्वसमय. स्थाप्यत इतियोग' एव शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्तारंविना क्रियासम्भवतीति ता आत्मसमवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिन: ते पुन रामाद्यस्तिचत्रतिपतिलक्षणा अमुनोपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य सख्याविज्ञेया. जीवाजीवाश्रवबन्धसम्बरनिर्ज्जरापुण्यापुण्यमोक्षाख्यान्नवपदार्थान् विरचय्य परिपाट्या जीवपदार्थस्याध. स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरधो नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यध. कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदा: पञ्च न्यसनीया: पुन रित्थ वि कल्पा: कर्त्तव्या अस्तिजीव: स्वतोनित्य: कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थश्चाय विद्यते खल्वात्मास्वेनरूपेण नित्यश्च कालवादिन: उक्तेनैवाभिलापेन द्विती

असीअस्सकिरिआवाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए अण्णाणियवाईण बत्तीसाए वेणइय

नी थोडाकालनोछे प्रवज्या जेहनी एतले नवदीक्षितछे वली तेश्रमणकेहवाछे कुत्सितछे समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनो मोह सत्य भावना यें जिपे अयथार्थात्र बोध तेहथकी ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित छे जेहनी एहवाछे। कुत्सितशास्त्र श्रवणथकी सदेह ऊपनोछे। तथा सहज स्वभावनी बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथकी संशयऊपनोछे जेहने एहवा नवदीक्षीत श्रमण साधुछे तेहने एहवो कह्वे। पापनो करणहार मइलो जे म

योविकल्प ईश्वरकारणिकस्य तृतीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एव स्वत इत्यपरित्यजता लब्धाः पञ्चविकल्पाः परत इ
त्यनेनापि पञ्च लभ्यन्ते नित्यत्वापरित्यागेन चैते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैवेत्येकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टास्वेवमेव प्रतिप
द विंशतिविकल्पाना मतोविंशति नवगुणा शतमशीत्युत्तरंक्रियावादिनामिति चउरासीए अक्किरियवाईणंति एतेपांच स्वरूप यथा नद्यादिषु तथावाच्यं नवर
मेतद्व्याख्याने पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्था स्थाप्यते तदधः स्वतः परतश्चेत पदद्वय तदधः कालादीनांषष्ठीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्तिजीवः स्वतः कालत
इत्येको विकल्प एवमेते चतुरशीति भवन्ति सत्तट्ठीए अन्नाणियवाईणंति एतेपि तथैव नवर जीवादी नवपदार्था नुत्पत्ति दशमा नुपरि व्यवस्थाप्याधः सत्त्व
दादयः स्थाप्याः तद्यथा सत्व मसत्व सदसत्व मवाच्यत्व सदवाच्यत्व मसदवाच्यत्व सदसदवाच्यत्वमिति तत्र कोजानाति जीवस्य सत्व मित्येकोविकल्पः एवमस
त्वमित्यादि तत एते सप्तनवका स्त्रिषष्टिरुत्पत्ते स्त्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येव सप्तषष्टिरिति तथावत्तीसाएवेणइयवाईणंति एतेचैव सुरनृपतिज्ञातियति
स्थविराधममातृपितृणाम्प्रत्येक कायवाङ्मनोदानैश्चतुर्धा विनयः कार्य इत्यभ्युपगमवन्तो द्वात्रिंशदिति एव चेतेपां चतुर्णां वादिप्रकाराणा मीलने त्रीणि त्रिषष्ट्य
धिकानि अन्यदृष्टिशतानि भवत्यत उच्यते तिषट्ठमित्यादि वूहंकिच्चत्ति प्रतिक्षेप कृत्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएव सूत्रकृतेन विधीयते अत स्त
त्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिःप्रकारै रित्यर्थः दिट्ठतवयणनिस्सारति स्याद्वादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

ति गुण बुद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थे पापकरे मलिन मने विशोधनार्थं अशीअधिक १०० क्रियावादी तेहनो व्यूहकरीने स्वसमय स्थापीये एहक्रिया
पद आगलि सगले लेवो कर्ताविना क्रिया पण्यपापरूप नहोय तथा एहवो जेवदे तेक्रियावादी जीवने क्रिया पुण्यपापरूप नथी लागती ते अक्रियावादी

यानि दृष्टान्तवचना न्युपलक्षणत्वा द्धेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्य परेषां मतमितिगम्यते सुष्ठुपुनरपि प्रतिक्षेपणीयत्वेन दर्शयन्तौ प्रकटयन्तौ तथा त्रिविधश्चासौ सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन त्रिस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वाना विस्तरप्रतिपादन विविधविस्तारानुगमः तथा परमस द्भावो त्यतसत्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थं स्तावेव गुणौ ताभ्यां विशिष्टौ विविधविस्तारानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टौ मोक्खपहोयारगत्ति मोक्षपथावतारकौ सम्यग्दर्शनादिषुप्राणिनाम्प्रवर्त्तकावित्यर्थः उदारत्ति उदारौ सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा ऽज्ञानमेव तमोंधकारमात्यन्ति कांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतम तदेवांधकार अज्ञानतमोंधकारस्त्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्विति गम्यते दीवभूयन्ति प्रकाश

वाईणं तिरहतेसट्ठाणं ऋणदिट्ठियसयाणं बूढकिच्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिट्ठंतवयणणिस्सारंसुट्ठुदरिसय ता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिट्ठा मोक्खपहोयारगाउदारा अण्णाणतमंधकारदुग्गेसुदीवभूआ ॥

एतले नास्तिकमतो ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्मानेअजाणपणो ते श्रेय एहवो जेवदे तेअज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपखी सहुनोविनय करिवोजे वदेतेविनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनो । त्रिणसेनेतसठअधिक अन्यदृष्टि मिथ्यादृष्टिना मत सईकडा तेहनोव्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टातवचन तेणेकरी परमतनेनिःसार असारकरीनेस्थापें । सुष्ठुभलो आदरिवापणे दरिसयति प्रगटता अनेकप्रकारसत्प दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितवनो विस्तार प्रतिपादवो तेविविध विस्तरानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यतवस्तु नोसत्यपणे तेहोजद्विगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यकदर्शननेविषे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

कारित्वा द्दीपोपमौ सोपाणाचेवत्ति सोपानानीव उन्नतारोहणमार्गविशेषाइव सिद्धिसुगतिग्टहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगतौ तल्लक्षण यद्गृहाणामुत्तम ग्टहोत्तम वरप्रासादश्च स्तस्य सिद्धिसुगतिग्टहोत्तमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निप्पकंपत्ति निःक्षोभौ वादिना क्षोभयितुमशक्यत्वात् नि.प्रकंपौ स्वरूपतोपौषदृप्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थौ सूत्रंचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

सोवाणाचेवसिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्तावायणासंखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ सखेज्जावेढा सखेज्जासिलोगा संखेज्जाओनिज्जुत्तीओ सेणंअंगठयाए दोच्चे अंगे दोसुयक्खधा तेवीसअज्झयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला छत्तीसंपदसहस्साइ पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धा णिकाइ

सूत्रार्थदीवरहितपणे उदारप्रधानछे सूत्रार्थजे हनेविषे अज्ञान तेहीज तमअधकार तेणेकरीदुर्ग्रह दुरधिगम दुःखसाध्य जेसत्त्वमार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवाभूत प्रकाशकारी छे अज्ञानाधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान छे। सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मदिर उत्तम प्रधानछे तेहने चाढिवाने अर्थे सोपान पाउडीया रूपसूत्रार्थछे। वादीपुरुषे निक्षोभ चालिवाअशक्य निष्पकप थोडोईकोईएक पाडीसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सूयगडाग सूत्रना परित्ता संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक जाणिवा । संख्याती प्रतिपत्ति वादीद्दय मतांतरते प्रतिपत्ति सख्यातावेढा छदविशेष संख्याता श्लोक अनुष्टुपछद सख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनो योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अगार्थपणे

सग्रहणिप्रत्तिचूर्णिपंजिकादिरूपइति सूत्रार्थौ शेषकण्ठ्य यावत् सेत्तसूयगडेति नवरंत्रयस्त्रिंशदुद्देशनकालाः चउतियचउरोदोदो एक्कारसचेवहुतिएक्कसरा स
त्तेवमहज्झयणा एगसरावीयसुयखधे इत्यतोगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकिंतठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थान तिष्ठत्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया
जीवादय इतिस्थान तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीवाः स्थाप्यन्ते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनायेति हृदय शेष प्रायोनिगदसिद्धमेव नवरं

जिणपसत्ताणावा आघविज्जंति पसविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि
साए एवचरणकरण परूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तसूयगडे ॥ २
सेकिंतठाणे ठाणेणससमयाठाविज्जंति परसमयाठाविज्जंतिससमयपरसमयाठाविज्जंतिजीवाठाविज्जंति अजी

अगलक्षण वस्तुपणे। बीजे अगे बेश्रुतस्कध तेवीसअध्ययन तेत्रीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेत्रीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशतेतला समुद्देश। ३६ सहस्र
पद सूत्रार्थ नो समाप्ति जिहाते पद पद परिमाणे कह्यो। सख्याता अक्षर तिमज पूर्वनी परे परित्ता। अनता नही। त्रस बेइन्द्रियादिक अनता स्थाव
र वनस्पतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शाश्वता छे एह सूयगडागने विषे एहवा भाव कह्या। तेकेहवा पर्यायार्थपणे कृताकीधा निबद्धा सूत्रार्थ परे गूंथ्या। नि
काचिता तेहने उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या। भाव पदार्थ आख्यायते कहियेछे। तेमज पूर्वनी परेजाणीवा। निर्दशिये उपदेशि
ये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवो छे। एव एम एहभणीने ज्ञाता जाणहोय एम विज्ञाता घणोजाण होय। एम चरण ते श्रमणव्रत करण ते पिंडविशुद्धा
दिक तेहनी प्ररूपणा जिहां आख्यायते कहिये निर्दशिये उपदेशिये ते सूयगडाग बीजोअंग ॥ २ ॥ अथ स्यूं ते ठाणांग। जीवादिकपदार्थ

ठाणेण इत्यस्य पुनरुच्चारण सामान्येनैव पूर्वोक्तस्यम स्थापनाय विशेषप्रतिपादनायच वाक्यांतरमितिज्ञापनार्थं तत्र दव्वगुणखेत्तकालपज्जवत्ति प्रथमाबहुवच नलोपा द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवा. पदार्थाना जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते इति क्रम: तत्र द्रव्य द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुण: स्वभा वो यथोपयोगस्वभावोजीव. क्षेत्रयथा असंख्येयप्रदेशावगाहनो ऽसौ कालोयथा अनाद्यपर्यवसित: पर्यवा. कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वेति सेलाइत्यादि गाथाविशेष स्तत्र शैलाहिमवदादिपर्वता स्थाप्यन्ते स्थानेनेतियोग: सर्वत्र सलिलाय गङ्गाद्यामहानद्य. समुद्रालवणादय सूरा: आदित्या भवनान्यसुरादीना विमानानि चन्द्रादीनां आकारा: सुवर्णाद्युत्पत्तिभूमयो नद्य सामान्यामहीकोसीप्रभृतयो निधय चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नैसर्पादयो नव पुरिसजायत्ति पुरुषप्रकाराउन्नतप्रणतादिभेदा. पाठांतरेण पुरसजोयत्ति उपलक्षणत्वा त्पुष्यादिनक्षत्राणा चन्द्रेणसह पश्चिमाग्रिमोभयप्रमर्द्दकादियोगा: स्व

वाठाविज्जंति जीवाजीवा लोगा अलोगा लोगालोगावा ठाविज्जंति ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपयत्थाणं

सेलसलिलायसमुद्दसूरभवणविमाणआगरणदीउणिहीउपुरिसजायसरायगोत्तायजोइसंचाले एक्कविहवत्तव्व

जिहातिष्ठे रहे तेठाणाग। स्वसमय जिनमत थापिये परसमय अन्यमत उथापीये स्वसमय थापीये परसमय उथापिये । जीवपदार्थ थापिये अजीवनो अजीवपणो स्थापिये। जीहा जीवाजीव विहूं स्थापिये लोक थापिये अलोक थापिये लोकालोक विहस्थापिये। ठाणांगे द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्यवा जीवा दिक पदार्थना ठाणागे स्थापिया द्रव्य ते द्रव्यादिकार्थ पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्य छे गुण तेस्वभाव यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्र असंख्य प्रदेशाव गाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक। तथा नारकपणादिक पदार्थ ने ठाणांगे स्थापिये। शैलहिमवतादिक

लात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ २ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ कोसौ समवायः सूत्रेतु प्राकृतत्वेन दकारलोपात् समाये इत्युक्त समवायन समवायः सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थः तद्धेतुश्च ग्रन्थोपि समवाय स्तथाचाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूच्यन्ते इत्यादिकं तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यन्तानां वाएगत्थाणंति एकोचतेअर्थाश्चेत्येकार्थाः स्तेषां अयमर्थः एकेषां केषाञ्चि न्न सर्वेषां

एकराअणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडा णिवद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ताभा वाआघविज्जति पन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंविन्नाए एवंचरणकरणपरू वणयाआघविज्जति सेत्तठाणे ॥ ३ ॥ सेकितसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जति परसमयासूइज्जं

वादोइयमतांतरप्रतिपत्ति। सख्याता वेढा छंदविशेष। संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद। सख्यातो सग्रहणी। ते अगार्थपणे त्रीजोअंग एक श्रुतस्कधना दस अध्ययन एकवीस उद्देशन काल उद्देशना अवसर। बहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणें कह्या संख्याता अचर तिमज पूर्वनीपरें परित्ता अनतानही त्रस वेइन्द्रियादिक अनतास्थावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी शास्वताछे। पर्यायार्थपणे कीधा सूत्रार्थपणें गूंथ्या। उदाहरणें करी प्रतिष्ठ्या। वीतरागे कह्या भाव पदार्थ कहिये छे। नामादिकभेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये। तेठाणाग एहवोछे। एहभणीने जाण एम घणोजाण होय। एम चरण साधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनो प्ररूपणा कहीजाय तेठाणाग ॥ ३ ॥ अथ स्यूं तेसमवाय। सम्यक्प्रकारे जाणिवो तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे। एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी। एकछे प्रथम जेहने एहवावे

सेन संक्षेपेण समाचारः प्रतिस्थान प्रत्यङ्गश्च विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइत्ति आख्यायते अथसमाचाराभिधानान्तर तत्र यदुक्तं त दभिधातुमाह तत्थयेत्यादि तत्थयत्ति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकेन्द्रियादिभेदेन पचप्रकारा जीवाः पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायत्ति जीवाश्रजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा विशेषा जीवाजीवधर्म्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेशतश्राह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनामभेदोपचारा न्नारका स्ततश्च नारकतिर्य्यग्मनुजसुरगणानां स त्कश्चिन आहारादय स्तत्र आहारश्रोज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपोनेकधा उत्स्वासोऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेश्याकृष्णादिकाषोढा श्रा वाससख्या यथा नारकावासानां चतुरशीतिर्लक्षाणीत्यादिका आयतप्रमाणमावासानामेवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विष्कम्भबाहल्य परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

णं समायारे आहिज्जातितत्थयणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवणियाविस्थरेण अवरेविअ बहुविहाविसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाणउववायचवणउग्गहणोवहिवेय

पदार्थ वर्णव्या विस्तारेकरी। अनेरापणि घणेप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थ वर्णव्या। नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवता गण सबधीना आहार आभोगिक अनाभोगिक ओजलोमादिक भेदें करी अनेक प्रकार। तथा उच्छासोच्छास लेश्या कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम बिष्कंभ परिधि प्रमाण। उपपात एकेसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे। एके केतला मरे। चवे अवगाहणा शरीरनोप्रमाण अवधि अंगुलने अ

यते ऋर्थो यस्यां सा व्याख्या वियाहेइतिच पुल्लिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वात् वियाहेणतिव्याख्यायाव्याख्यायां वा ससमयाइत्यादीनि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकव्या
ख्यातत्वा दिहकण्व्यानि वियाहेणति व्याख्यामित्यादि नानाविधै. सुरैः नरेन्द्रैः राजऋषिभिश्च विविहससइयत्ति विविधसंशयवद्भिः पृष्टानि यानितानि तथा
तेषां नानाविधसुरेन्द्रराज ऋषिविविधसंशयितपृष्टानां व्याकरणानां षट्त्रिंशत्सहस्राणां दर्शनात् श्रुतार्थो व्याख्यायन्तइति पूर्वापरेणवाक्यसम्बन्धः पुनः कि

से किं तं वियाहे वियाहेणं ससमयावि ऋाहिज्जति परसमयावि ऋाहिज्जति ससमय परसमयावि ऋा
हिज्जति जीवाविऋाहिज्जति ऋजीवाविऋाहिज्जति जीवाजीवाविऋाहिज्जति लोगेविऋाहिज्जई ऋलो
गेविऋाहिज्जई लोगालोगेविऋाहिज्जई वियाहेण नाणाविहसुरनरिंदरायरिसिविविहसंसइऋपुच्छियाणं
जिणाणं वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जव पदेसपरिणाम जहत्थिऋभावऋणुगमनिक्खेवणयप्प

स्वमत परमत विहूं कहियेछे। जीव कहियेछे ऋजीव कहिये छे जीवा जीव विहु कहियेछे। लोक कहियेछे ऋलोक कहियेछे लोकालोक विहूं कहियेछे ए
णी व्याख्याये भगवती ऋनेक प्रकारे सुर देवता नरेंद्र राजऋषि तेणे विविध प्रकारे संशय पूछ्याछे। ३६ सहस्र प्रश्न पूछ्याछे। तेहने विषे जिनवीतरागी म
हावीर स्वामीये विस्तरे करी भाखितछे। जेह प्रश्न वली केहवा तेप्रश्न द्रव्य धर्मास्तिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि क्षेत्रआकाशादिक काल समयादिक पर्यव
स्वर भेद भिन्न धर्म ऋथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते ऋवस्थाये जाणिवा जेणें प्रकारे ऋस्तिभाव छताभा
व ऋनुगम सहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निक्षेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवो नयते नैगमादिक प्रमाण प्रत्यक्षादिक मुनिगुण ऋति सूक्ष्म उपक्र

भूतानां जिनेनेति भगवता महावीरेण वित्थरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थः पुनःकिंभूतानां दव्वेत्यादि द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवप्रदेशपरिणामानां यथास्तिभावोनुगमनिक्षेपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमै र्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितोयै र्व्याकरणै स्तानितथा तेषा तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि गुणा ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमाकाश कालः समयादिः पर्यवाः स्वपरभेदभिन्नाधर्म्माः अथवा कालकृता अवस्था नवपुराणादयः पर्यवाः प्रदेशा निरम्नावयवाः परिणा मा अवस्थातोवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तित्व सत्ता यथास्तिभाव. अनुगमः संहितादिव्याख्यानप्रकाररूप उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वा रकलापात्मको वा निक्षेपो नामस्थापनाद्रव्यभावै र्वस्तुनोन्यासः नयप्रमाण नया नैगमादय' सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ तेएव तावेव वा प्रमाण वस्तुतत्वपरिच्छेदन नयप्रमाण तथासुनिपुण' सुसूक्ष्मः सुनिपुणोवा सुष्टुनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादि र्विविधप्रकारता चैषा भेद भणनत एवोपदर्शितेति पुनःकिंभूताना व्याकरणाना लोकालोकौ प्रकाशितौ येषुतानि तथा ससारसमुद्दरुंदउत्तरणसमत्थाणंति ससारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थ. अतएव सुरपतिसम्पूजिताना प्रच्छकनिर्णायकपूजनात् सूक्तत्वेन श्लाघितत्वाद्वा तथा भवियजणपयहिययाभिणंदियाणंति

माण सुनिउणोवक्कम बिबिहप्पकारगगडपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरण सम त्थाण सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिठदीवभूय ईहामति

म आनु पूर्व्यादि अनेकप्रकारे प्रगट पणें प्रकाश्याछे। वली प्रश्न केहवा छे लोकालोकनो छे प्रकाश जेहने विषे। वली केहवा ससार चतुर्गतिकतल्लक्षण समुद्र रुद अतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थछे। वली केहवा सुरपति इन्द्र तेणे संपूजितछे । भविकजनपदलोक तेहनो हृदय चित्त तेणेकरी अभि

भव्यजनाना भव्यप्राणिना प्रजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदयै श्चित्तैरभिनन्दितानामनुमोदितानामितिविग्रहः तथा तमोरज सो अज्ञानपातकं विध्वंसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वंस तच्च तद्ज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञान तेन सुष्टुदृष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव तानिच तानि दोपभूतानिचेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्द्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वंसज्ञानसुदृष्टदीपभूते हामतिबुद्धिवर्द्धनाना मत्र ईहा वितर्को मतिरवायो निश्चयइत्यर्थं बुद्धिरौत्पत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वसनानामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सुदृष्टदोपभूतानामितिच तथा छत्तीस सहस्समणूणयाणंति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकारोऽन्यथापादनिपातश्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्ना नन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्नायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषादर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थ. अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थं कइत्याह सुयत्थवहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्था श्रुतार्था अभिलाप्यार्थविशेषाइत्यर्थं श्रुतावा कर्षिता जिनसकाशिगरधरेण ये अर्था स्ते श्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति सूत्र अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रह श्रुतार्थाना वा बहुविधा. प्रकारा इतिविग्रहः किमर्थं तेव्याख्यायत इत्याह शिष्या

बुद्धिवद्धमाणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाउ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था गुण

नदित अनुमोद्याछे। वली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वंसक नायक छे रूडीपरे निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे ईहा वितर्क मतिते अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिक्यादि चिहु प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्रीस हजार ऊणानही सपूर्ण प्रश्न ने देखाडता थ का सूत्रार्थपणे शिष्यने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्राप्त्यादिक लक्षण हाथ मरीखो प्रधानहाथ। भगवती सूत्रना गणित वाचना। सख्याता अनुयोग

यां हितमनर्थप्रतिघातार्थप्राभिरूप मादेशार्थः प्रार्थ्यमानत्वा त्तस्य तम्मे इति निभृतान्मे पतचा॰ गतरत्ता गुणणार्थे गात्यादिनचनो शब्दाद्यरुपा॰ प्रधा
नावयवो येषाते तथा वियाहरसेत्यादितु निगमनाग्सूत्रसिन्न नवरं गतमिशाश्रयगम्य नया चतुरशीतिः पदसहस्त्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया द्विगु

हत्या वियाहस्सणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जा
सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सेणं अंगठ्ठयाएपंचमे अंगे एगेसुयक्खंधे एगेसाइरेगे अज्झयणसते दसउ
द्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं छत्तीसंवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता
संखेज्जाइं अक्खराइ अणंतागमा अणंतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइ
या जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जातिपण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जाति उवदंसिज्जाति सेणंणाए एवंवि

धार उपक्रमादिक । सख्यातो प्रतिपत्तो । सख्यातानेढाशब्दविशेष । सख्यातास्रोक अनुष्टुभादिक । सख्यातो निर्युक्ति । तेह अगार्थपचे पांचमेअगे १
सुतस्कध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायागनो अपेक्षायें वेगुणाकीजे तो दोला
ख ८८ हजार पदयाय । ते इहा नलीवा । सख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । अस्तीइन्द्रियादिक । अनन्तास्थावर वनस्पती द्रव्यार्थ करी
शाश्वताछे । पर्यायार्थ पणे कीधाछे । सूत्रार्थपणें गुंथ्या निगाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठा । जिन वीतरागे कह्या जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादि
क भेदें करीप्ररूपियेछे । सदभावे उपदेश करियेछे । ते भगवती सूत्रने विषे शाश्वता कीधा गागतादिक पदनोव्यापया आचारागाधिकारे कीधोछे जिहां

वयवो यथा नायाधम्मेत्यादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्व विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्म्मविनयकरजिननाथमत्रधिनि शेषप्रव
चनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणाणंविणयकरणजिणसासणमि पवरे किंभूताना संयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सेव दुरधिगम्यत्वात् कात
रनरक्षोभकत्वा द्गंभीरत्वाच्च पातालमिवपातालं तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषाते तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु
र्बलाये ते तथा तेषां तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिव्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साहइति तथा तपसि नियमोऽवश्यकरण न्तपोनियमितं तप' सच तपउपधानचाऽ

हाणाइं परियागा सलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहि
लाभो अंतकिरियाउय आघविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे
संजमपइन्नापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयणिस्सहयणिसिठाणं घो

ग। प्रव्रज्यादीक्षा। सूत्रनो भेलवो। तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो। पर्याय दीक्षानो काल। सलेखणानो करिवो। भात पाणीनो पचखवो।
पादपोपगमन छेदीयकोवृक्षशाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संथारो कस्यापछे हलेचाले नही। देवलोकनो जाइवो। उत्तम कुलें अवतार।
वली बोधिलाभ धर्मनो प्राप्ति। अंतक्रिया ससारना अतनो करिवो। एह सर्व वस्तु ज्ञाताजिपे कहियेछे। जिहा लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषे प्रव्रजित यती
नो विनयनो करिवो तिहांलगे। जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषें संयमपालवाभणी कीधी प्रतिज्ञानो पालवो। धृति चित्तनो स्वस्थपणो
मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषें उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर हुयाछे तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

दुर्धरभरस्य दुर्वहलोहादि
संग्रामो दुद्धरभरत्ति श्रमकारणत्वा
तेएव रणस्य कातरजनक्षोभकत्वात्
तपोनियमतपउपधाने
निर्यन्त्रितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा
निःसहका निसट्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ
निःसहा नितरामशक्तास्तएव
निसहायन्ति
भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नकाःपराङ्मुखीभूता स्तथा
प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेय
पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तेषां मिहच
मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अतएव
पधानरणदुर्द्धरभरभग्नकनिः सहकनिसृष्टाः
परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च
मारब्धाश्च
सन्तः
तथा घोरपरीषहैः पराजिता असमर्थाः
घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी
निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां
सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे
निर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धालय मा
यहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहैः विशिष्टगुणश्रेणिमारोहतः प्ररुद्धरुद्धाः अतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां विषयसुखतुच्छाशावशदोषमू
र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतन्त्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपगता ये ते तथा तेषांविषय
र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखे या महेच्छाःकस्यांचिदवस्थायां या चावस्थातरे तुच्छाशा तयो र्वशः पारतंन्य तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्ताछे सयम मार्गें थाकाछे वली घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम
थई मारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो
षे करी वसथई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य

सुखमहेच्छातुच्छांगावग्रदोषमूर्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रलजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदत्रयस्यचकर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह ससारे संसृती अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्र हणानि तेषां ये विविधाः परपराः पारंपर्याणि तासांयेप्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरपरप्रपचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीरा णांच महासत्वानां किंभूताना जितंपरीषहकषायसैन्य यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिका स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽव श्यभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य क र्मधारयो ऽत स्तेषा जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकासंयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धश्चातीचारविमुक्तो यः सिद्धालयस्य सिद्धिमार्गः स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पगारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं
धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नाधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

छे । एहवा भाव ज्ञातानें विषे कह्याछे । ससारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनी जे अनेक प्रकारनी परपरा सतति तेहना विस्तारने वि षे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे । तेहना प्रबन्ध ज्ञातानें विषे कहियेछे । वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी । तथा सयमनेविषे उत्सा ह वीर्य निश्चित छे जेहना । जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे । जे निःशल्य मिथ्यात्व

नुशासनानि बोधनानि मार्गभ्रष्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दुःस्थस्य सुस्थतासम्पादनानि अथवा बोधनमामन्त्रण तत्पूर्वकान्यनुशासनानि बोधना नुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि संयमाराधनाया गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येव न्दर्शनानि वाक्यान्याख्यायन्त इतियोगः तथा दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्य यांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनयः शुकपरिव्राजकादयो यथा येनप्रकारेण स्थिताः शासने जरामरणनाशनकरे जिनानासम्बन्धिनीति भावः तथाख्यायन्तइतियोगः तथा आराहितसंजमत्ति एतएव लौकिकमुनयः संयमम्पालिताश्च जिनप्रवचनम्प्रपन्नाः पुनः परिपालितसंयमाश्च सुरलोक गत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वत सदाभाविन शिवमबाधकं सर्वदुःखमोक्ष निर्वाणमित्यर्थं' एतेचोक्तलक्षणा अन्येच एवमादय आदि

णुसधीरकरणकारणाणि बोधणअ्णुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि दिठ्ठते पच्चयसोऊणलोगमुणिणो जह ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसंजमाय सुरलोगपडिनियत्ता उवेंति जहसासयं सिवं सव्वदु

करिवाने अर्थे जेकारण उदाहरण ज्ञातानेविषे कह्याछे। जिम मेघकुमारने हाथीना उदाहरणथी थिरकीधो तथा बोधन जे मार्गथकी भ्रष्ट तेहने मार्गं थापिवो तथा शिक्षा देवो। गुणवली दोषनो देखाडवो। तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टांत सुणीने लोकमुनी शुकपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा मरणनो नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रह्या। तेज्ञातने विषे कह्याछे। आराध्योछे संयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाम्या वली देवलोक थी उपराठा आवे वली धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि बाधारहित सर्वदुःखमोक्ष एतले निर्वाण। इत्यादिक पूर्वे कह्याते अथवा

भव: शेषाणि नवशतानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चचत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता नि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकायां पचपचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि सपिण्डितानि किसङ्घात इगवीसकोडिसय लक्खापणासमेववोधव्वा २१५००००००० एवठिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दशधम्मकहाणवग्गा तत्थणएगमेगाएधम्मकहाए पचपचअक्खाइदासयाइ एगमेगाए अक्खाइयाएपचपंचउवक्खाइयासयाइ एगमेगाएउवक्खाइयाएपचपंचअक्खाइउवक्खाइसयाइति एवमेतानि सम्पिण्डितानि किसङ्घात पणवीसकोडिसय २५०० ००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नवनयसवहा अक्खाइयमाइयातेण ॥ १ ॥ तेसाहिज्जतिपुड इमाउरासीउवेगलाणतु पुणरुत्तवज्जियाण पमाणमेण

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थण एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ

का इवा । तिहा एकेक आख्यायिकनेविषें पाच पांच सो उपाख्यायिक छे । तिहा वली एकेक उपाख्यायिकनेविषे पांचपाच आख्यायिक उपाख्यायिकना सैकडाछे । तिहा आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां । इगवीसंकोडिसय लक्खापन्नासमेववोधव्वा । २१५०००००० एव ठिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा । दश धम्मकहाणवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ एगमेगाएअक्खाइया ए पच पंच उवक्खाइयासयाइ एगमेगाए उवक्खाइआए पच पच अक्खाइउवक्खाइयासयाइंति । एसर्वं एकठाकीधा तिवारे २५००००००० पचवीस कोटि थई ते मांहिथी पाछलो आंक एकवीस किरोड पचास लाख पुनरुक्तपणामाटे बाहिर काढिये तो साढे ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेछे । एव मेव सपूर्वा

विविधिहिइ ॥ २ ॥ सोधितेचैतस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थाएव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुव्वावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधनेकृते सतीत्युक्तं भवति अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओभवतीति मक्खाओत्ति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेतत्सख्याभवतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावीरेणेति तथा सख्यातानि पदसयसहस्साणीति किल पञ्चलचाणि षट्सप्ततिश्चसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रालापकपदाग्रेण सख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्तो त्येव सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्ता उपासकदशा उपासकाः श्रावका स्तद्गतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

आसयाइं एवामेवसपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाउ अक्खाइयकोडीउ भवंतीति मक्खायाउ एगूणतीस उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेण पन्नत्ता तंजहा संखेज्जाअक्खरा जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जति सेत्त णायाधम्मकहाउ ॥ ६ ॥ सेकितंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

पर तेणें प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये। पछे पाछला आंके आगलोआंक सोधिये तिवारे साढे ३ कोटिकथानी थाय। तेभगवान महावीर स्वामीये कही। ज्ञाताने विषे उगुणत्रीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या। उगुणत्रीस समुद्देशनकाल। सख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणे कह्या। ते कहेछे। वली सख्याता अक्षर यावत् शब्दजाती सख्याता वेढा सख्याता श्लोका ज्ञाताने विषे चरण श्रमणधर्म करण पिंडविशुद्धयादिकनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छट्ठो अग ॥ ६ ॥ स्यूंतेउपासक दशांग। उपासक श्रावकानी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

ध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदसासुण उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्म्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनता स्तत्र शीलव्रतान्यणुव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादित्यागः पौषधोपवासःततोद्वन्द्वेसत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्सर्गाद्वा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः सलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभोऽन्तक्रिया

उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइयपरलोइयइढ्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जियाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोग

ते उपासक दशा कहिये। तेहने विषे श्रावकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम बनखडनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक सवधी ऋद्धि विशेष। श्रावकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनी विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवकारसी प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिबो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहिवो। श्रुतनो सांभलिवो। तथा बारे भेदे तपनो करिवो। प्रतिमा ११ श्रावकनी उपसर्ग देवताना कीधा। सलेखणा तपें करी आत्माने कषाय दुर्बल करिवो। भातपाणीनो पचखवो। संथारो। देवलोके जाइवो

श्राख्यायन्ते पूर्वोक्तमेव अतोविशेषत् श्राह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्धिविशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पद्विशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता पितृपुत्रादिका ऽभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्मश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्त्वस्य विशुद्धता स्थिरत्व सम्यक्त्वशुद्धिरेव मूलगूणोत्तरगुणा अणुव्रतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादित. खण्डनानि स्थितिविशेषा श्चोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिगृहगृहणानि तेषामेवच पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गश्चोपसर्गाभावस्त्यर्थः तपा

गमणाइं सुकुलपच्चाया पुणोबोहिलाभो अंतकिरियाओ आघविज्जति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसावित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभ अभिगमणे सम्मत्तविसुद्धया थिरत्त मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा बहुविसेसा पडिमाअभिग्गहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलव्वयगुणवेर

अने बलीसुकुले उपजवो। बली बोधनी प्राप्ति। अंतक्रिया करिवो। एहसर्व उपासक दशामाहि कहियेछे। उपाशक दशाने विषे श्रावकनी ऋद्धिविशेष अनेक धन कोटि सख्या विशेष। परिषदा परिवारनो विस्तार। भगवत महावीरने पासे धर्मनो साभलिवो। धर्मनो प्राप्ति। धर्मनो श्रादरिवो। सम्यक्तनी विशुद्धता निर्मलता। धर्मने विषे स्थिरपणो। मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार बध बंधादिक। स्थिति विशेष। श्रावकपणांना कालनी मर्यादा। सम्यग्दर्शन प्रतिमा अभिग्रहनो बहु विशेष कहिये बहुत भेदनो ग्रहिवो पालवो उपसर्गनो सहिवो। तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विना पणि चित्र विचित्र अने

सिच चित्राणि शीलव्रतादयो ऽनन्तरोक्तरूपा अपश्चिमाः पश्चात्कालभाविन्यः अकारस्त्वमङ्गलपरिहारार्थः मरणरूपे अन्ते भवा मारणान्तिक्यः आत्मशरीरस्य जीवस्यच सलेखनाः तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मन. सलेखनाः ततः पदत्रयस्य कर्मधारय स्तासां जोसणति जोषणाः सेवनाः करणानीत्यर्थः ताभिरपश्चिममारणान्तिकात्मसंलेखनाजोषणाभि रात्मान यथाच भावयित्वाबहूनिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उपपन्ना मत्वेतिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुंडरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्यान्यनुपमानि क्रमेण भुक्तोत्तमानि ततः आयुष्कक्षयेण च्युताः सन्तो यथा जिनमते बोधि लब्धा इतिविशेषः यथाच संयमोत्तम प्रधान संयमं तमोरजओघ

भण पच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममारणंतियाय संलेहणा झोसणाहिं अप्पाणं जहय भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए च्छेअइत्ता उववन्ना कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइ तउ आउक्खएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलद्धूणय सं

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषधोपवास छेहले काले मरणांतिक सलेखना मरणरूप अंतकाले होय एहवी सलेखना आत्माने कर्मथी हलुओ करिवो। तेहनो जोषणो तेहनो सेविवो तेणे आपणा आत्माने भाविये जिमघणे प्रकारे अनसने करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे। देवता सबंधी प्रधान विमान प्रधान पुंडरीक कमलनीपरें उत्तम तेहने विषे कल्याण जाय एहवा अनुपम सुखप्रतें क्रमें अनुक्रमें भोगवीने देवलोक थकी आयुक्षयथी चव्याथका जिम जिम मतने विषे बोधि श्रीजिनधर्मनो प्राप्ति

विप्रमुक्ता अज्ञानकर्म्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अचय अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोचं कर्म्मचयमित्यर्थः तथोपासकदशाख्यायन्त इतिप्रक्रमः एतेचान्ये चेत्यादि प्राग्व न्नवर सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणति किलैकादशलचाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकितमित्यादि अथ

जमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का वेंति जहऋक्खयसब्बदुक्खमोक्खं एते ऋन्नेय एवमाइ उवासयदसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जाऋणुत्तगदारा जाव सखेज्जाउ सगहणीउ सेणं ऋंगठयाए सत्तमे ऋगे एगेसुयक्खंधे दसऋज्झयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइ पयग्गेणं प० सखेज्जाइं ऋक्खराइं जाव एव चरण करणपरूवणा ऋाघविज्जंति सेत्त उवारागदसाउ ॥ ७ ॥ सेकिंतं ऋंतग

होय बली उत्तम सयम आराधीने अज्ञानरूप अधकार तल्लचण राजा तेहथी मूंकाणा जिम सचय अपुनरावृत्तिक सर्वदुः खचय लचण मोचपावे। इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनेरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषें कहियेछे। परित्ता सख्याती वाचना। बली सख्याता अनुयोगद्वार। यावत् सख्याती सग्रहणी लगे जाणिवो। तेह अगार्थपणे सातमो अंग तेहने विषें १ श्रुतस्कध आनन्दादिक १० श्रावकना १० अध्ययन। दश उद्देशनकाल बली १० समुद्देशन काल। सख्याता पदना सहस्र पदाग्रे पद परिमाणें कह्या। सख्याता अचर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिंड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वोक्त पाठ कहिवो। ते उपासक दशा माहि कहिये ते उपासकदशा सातमो अग ॥ ७ ॥ सूते अतगडदशा ससारनो अत कहिये नाश की

का स्ता अन्तकृद्दशाः तत्रान्तोविनाशः सच कर्म्मण स्तत्फलस्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्थकरादय स्तेषां दशाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्संख्यया अन्तकृतदशा स्तथाचाह अंतगडदसासुणमित्यादि कण्ठ्या नवरं नगरादीनि चतुर्दशपदानिषष्ठाङ्गवर्णकाभिहितान्येव तथा पडिमाओत्ति द्वाद श भिक्षुप्रतिमा मासिक्यादयो बहुविधाः तथा क्षमा मार्दवं आर्जवच शौचञ्च सत्यसहित तत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिन्याभावलक्षण सप्तदशविधश्च संयम उत्तमञ्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूप आकिंचणियत्ति आकिंचन्य तप स्त्यागइति आगमोक्त दान समितयो गुप्तयश्चैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उत्त

अंतगडदसाउ अंतगडदसासुणं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणचेइयवणरायाअम्मापियसमोसरणधम्मायरियधम्मकहा इह लोइअपरलोइअ इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ वहुविहाउ खमाअज्जवं मद्दवंचसोअंच सच्चसहियं सत्तरसविहोयसंजमो उत्तमंचबंभ आकिंचिणया तवो किरियाउ समि

थी जेणे ते अंतकृत् तेहनो दशा जे संख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अंतकृद्दशा अंतकृद्दशाने विषे संसार अंतकारी जीवना नगर उ द्यान चैत्य वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेछे। इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पछे प्रव्रज्यादी क्षा लीधी। श्रुतनो भणिवो तपनो करिवो १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे। क्षमा क्रोधनोजीतवो। आर्जव मायानो छांडिवो। मार्दव माननो त्याग। शौच कर्ममलनोछांडिवो। सत्यकरी सहित। सतरह भेदे संजम जाणिवो। उत्तम ब्रह्मचर्यनो पालवो मैथुननो अभाव। आकिंचनता निद्रव्यपणो। तप

मयो द्वयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्झाएणपसत्थज्झाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणमेगवत्थुमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाञ्च सयमोत्तम सर्वविरति जितपरीषहाणा चतुर्विधकर्मक्षये घातिक्षयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे र्लाभः पर्याय: प्रव्रज्यायाः लक्षणो यावाश्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषाश्रयणादिना प्रकारेण पालितो मुनिभिः पादपोपगमनञ्च पादपोपगमाभिधानमनशन प्रतिपन्नो योमुनि यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनिनाहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातइतिशेषः तमोरजओघविप्रमुक्तएवच सर्वेपि चेत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि

इगुत्ताउ चेव तहअप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेणयउत्तमाण दोग्हपि लक्खणाइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाउ जत्तिउयजहपालिउ मुणीहिपावोवगउय जहि जत्तियाणिभत्ताणि छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरो तमरयोघविमुक्को मोक्खसुहमणतरचपत्ता एए अन्नेय एव

१२ भेदे। क्रिया अनुष्ठान। समितिगुप्ति। तिमज अप्रमादना योग। स्वाध्याय सिद्धातनू भणवो। ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्त्त लगे चित्तनूं एगाग्रपणोते स्वाध्यायध्यान। उत्तम एह बिहुंनालक्षण अतगडदशा माहि कहिये छे। सयमप्रते जेह पाम्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अतराय ४ एहनोनाशकरे जिम केवल ज्ञाननो लाभहोय प्राप्तिहोय। पर्याय ते दीक्षानोकाल जेणे मुनीश्वरे जेतला जेतला वर्ष प्रमाणे सयम पाल्यो होय। पादपोप गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अतकृत् ससारना अंतकारक मुनिवर तम

प्रागवत् नवरं दश प्रज्ञायनानि प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चेह पठ्यते सप्तवर्गात्ति तत्प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया यतोऽत्र सर्वाण्यष्ट्व र्गानन्यामपि तथापठितत्वा त्तद्वृत्तिश्चेय अष्टवर्गात्ति अत्रवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययनानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभणित अट्ठ उद्देसणकालाइत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा सङ्ख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो विंशति र्लक्षाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपतनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

माइत्यविस्थरेणं परूवेइ अंतगडदसाणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाओसंगहणीओ सेणंअंगठयाएअट्ठमेअंगेएगेसुयक्खंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे ज्जाइ पयसहस्साइपयग्गेण पन्नत्ते संखेज्जाअक्खरा जावएवचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतग

अधकार अज्ञानरूप रजथी मूंकाणो अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पाम्यो। एह पूर्वं कह्याते तथा अनेरापणि पदार्थ इहा अंतगडदशा मांहि कहियेछे। प्ररूपियेछे। सख्याता वाचना। संख्याता अनुयोगद्वार। जिहालगी सख्याती संग्रहणी होय तिहालगी जाणिवो। अगार्थपणे आठमें अंग एक श्रुतस्कंध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह। दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल। सख्याता पदना सत सहस्र एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कह्या। सख्याता अक्षर इहां थीमांडी चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक लगें पूर्वनी परें पाठ कहिवो। इत्यादिक पदार्थ जिहां कहियें ते अंतगडदशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ हवें अणुत्तरोववाई नथी उत्तर कहिये आगलि जेहने तेहना

संसारे अन्यस्य तथाविधस्य भावादुपपातो येषांते तथा तएवानुत्तरोपपातिका: तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशाध्ययनोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा स्तथा
चाह अणुत्तरोववाइयदसासुणमित्यादि तत्रानुत्तरोपपातिकानामिति साधूना नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथावर्णकोक्तानि यथातथा एतेषा
मेवच प्रपञ्च रचयन्नाह अणुत्तरोपपातिकदशास तीर्थंकरसमवसरणानि विभूतानि परममङ्गल्यजगद्धितानि जिनातिशेषाश्च बहुविशेषाश्च देहविमलसुयधमि

॥ सेकिंतं अणुत्तरोववाइयदसाउ अणुत्तरोववाइयदसासुणं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोग परलोअइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पडिमाउ संलेहणाउ भत्तपाणपच्चक्खाणाइं पाउवगमणाइं अणुत्तरोववाउ सुकुलपच्चायापुणोबोहिलाहोअंतकिरियाउ आघविज्जंति अणुत्तरोववाइयदसासुणं तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसायबहुविसेसा जिण

दश अध्ययन प्रतिबद्ध दशाते अनुत्तरोपपातिक दशा । तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहना नगर उद्यान चैत्य यक्षायतन बनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भणिवो । तप १२ भेद उपधान वली भिक्षुप्रतिमा संलेखना तेकिसी भातपाणीना पच्चक्खाण पादपोप गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो वली सुकुल ने विषे अवतरिवो । वली बोधिलाभ जिन धर्मनी प्राप्ति । अंतक्रिया एतली वस्तु एहनें विषें कहिये छे । वली तीर्थंकरना समोसरण ते समोसरण केहवो छे । परम मंगलीकपणें जगतने हित

त्यादय श्चतुस्त्रिंशदधिकतरावा तथा जिनशिष्याणांचैव गणधरादीनां किम्भूताना मतश्राह श्रमणगणप्रवरगन्धहस्तिनां श्रमणोत्तमानामित्यर्थः तथास्थिर यशसां तथा परीषहसैन्यमिवपरीषहवृन्दमेव रिपुबल म्परचक्र तत्प्रमर्दनाना तथा दववद्दावाग्निरिव दीप्तान्युज्वलानि पाठान्तरेण तपोदीप्तानि यानि चा रित्रज्ञानसम्यक्तानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा श्रनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये चमादयोगुणा स्तैः सयुतानां क्वचिद्गुणध्वजाना मितिपाठः तथा श्रनगाराश्च ते महर्षयश्चेत्यनगारमहर्षय स्तेषा मनगारगुणानां वर्णकः श्लाघा श्राख्यायत इतियोगः पुनः किम्भूताना जिनशिष्याणा मुत्तमाश्च ते ज्या त्यादिभि र्वरतपसश्च तेचते विशिष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चे त्यत स्तेषा मुत्तमवरतपोविशिष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचापरे यथा च जगद्धित भगवत इत्यत्र जिनस्यशा सनमितिगम्यते यादृशाश्च ऋद्धिविशेषा देवासुरमानुषाणां रत्नोज्वलचयोजनमानविमानरचन सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायन मणिखण्डमण्डि

सीसाणंचेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेन्नरिउबलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म त्तसारविविहप्पगारपसत्थगुणसंजुयाणं ऋणगारमहरिसीणं ऋणगारगुणाणवन्नउ उत्तमवरतवविसिठणा.

कारी छे। जिनना अतिशय देहंविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्रीस छे जिनेंद्र ना शिष्य गणधरादिक ते केहवा छे श्रमण समूह मांहि प्रधान वर गन्ध हाथी ने समानछे। ते थिर जस निश्चलयशछे। परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्दकछे। तपें करीदीप्त तेजवंत जे चारित्र ज्ञान सम्यक्त तेणे करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भलाजे गुणवंत लचण छे ध्वजा जेहने तेहनो । अनगार एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे अनगार तेहना गुण तेहनो वर्णक श्लाघा नीमे अंगे कहिये। वली केहवाछे। जात्यादिके करी उत्तम प्रधान तपनाधणी विशिष्ट ज्ञान योगे करी यु

न्ति धर्म्ममुदारं किंस्वरूप मतआह संयम न्तपश्चापि किंभूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि वर्षाणि अणुचरियत्ति अनुचर्य्यआसेव्य संयम न्तपश्चे तिवर्त्तते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगा स्तथा जिणवयणमणुगयमहिय भासियत्ति जिनवचन माचारादिअनुगतं सम्बद्ध नाईवितर्दमित्यर्थः महित म्पूजितमधिक म्वा भाषित यै रध्यापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुगत्यानुकूल्येन सुष्टुभाषित यै स्ते जिनवचनानुगतिसुभाषिताः तथा जिणवरा णहियएणमणुणेतत्ति इतिषष्ठीद्वितीयार्थे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्तिच भक्तानि च्छेदयित्वा लब्धाच स माधि मुत्तम ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तर तत्थत्ति अनुत्तरविमानेषु विषय सुख तथाख्यायन्ते तत्तोयत्ति अनुत्तरविमानेभ्यश्च्युताः क्रमेण करिष्यन्ति सयता यथाचान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशास्विति प्रकृतमे

णि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिय भासित्ता जिणवराण हिययेण मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्त मा जहअणुत्तरेसुपावंति जह अणुत्तरं तत्थविसयसोक्ख तत्तोयचुआकमेण काहितिसजया जहायअंतकिरियं

प्रधान संयम तप घणे प्रकारे सर्व विरति रूप। जिम घणा वर्ष लगे अणुचरी सेवीने आराध्याछे ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणे जिनबचन आचा रागादिने अनुगतसमिलित महित पूजित भाषित जेणे। जिन वरनें हृदयें करी मनेकरी अनुनीयध्याईने। जेह जिहां जेतला भात छेदीने समा धि पामीने उत्तम ध्यानयुक्त थको ऊपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम प्रधान विषय सुखभोगीने चव्या अनुत्तर विमानथी अनुक्रमे कारि

तथाङ्गुष्ठबाहुप्रश्नादिका मन्त्रविद्याः प्रश्ना याः पुनर्विधिनाजप्यमाना अपृष्टाएव शुभाशुभ कथयन्ति एताः अप्रश्नाः तथाङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तदभाव च प्रतीत्य या विद्याः शुभाशुभं कथयन्ति ताःप्रश्नाप्रश्ना विज्जाइसयत्ति तथा अन्ये विद्यातिशयाः स्तम्भस्तोभवशीकरणविद्वेषीकरणोच्चाटनादयः नागसुपर्णैश्च सह भवन पतिविशेषै रुपलक्षणत्वा द्यक्षादिभिश्च सह साधकस्ये तिगम्यते दिव्यास्तात्विकाः सम्वादा' शुभाशुभगता' सलापाः आख्यायन्ते एतदेव प्रायः प्रपञ्चयन्नाह पण्हावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धा स्तैः करकण्ड्वादिसदृशै र्विविधार्थायकाभाषा गम्भीरेत्यर्थ स्तया भाषिता गदिताः स्वसमयप रसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्तासा किमादर्शाङ्गुष्ठादीनां सम्बन्धिनीना मप्रश्नानाम्विविधगुणमहार्थाः प्रश्नव्याकरणदशास्वाख्यायन्त

पसिणसयं अठुत्तरं अपसिणसयं अठुत्तरंपसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिंदिव्वासवाया आघविज्जति पराहावागरणदसासुणं ससमय परसमय पन्नवय पत्तेअबुद्ध विविहत्यन्नासान्नासियाणं अइस यगुण उवसमणाणप्पगार आयरियन्नासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहि त्रिविह वित्थार न्नासियाणंच जगहि

आदिक मन्त्र विद्यानां पाठातरें अगुष्ठादिक प्रश्न अठोतरसो तथा विधिपूर्वक जे विद्या जपीयकी अदृष्ट यईं शुभाशुभ प्रश्न कहेते अप्रश्नविद्या तेह ना सेंकडा तथा अनेरापणि विद्यानां अतिशय थभनो वशीकरणी उच्चाटनी इत्यादिक। नाग सुपर्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक सवाद शुभाशुभ सलापक प्रश्न व्याकरण दशाने विषे कहियेछे। प्रश्न व्याकरण दशाने विषे स्वसमय जिनमत परसमय परमतना प्रज्ञापक कथक जे प्र त्येक बुद्ध करकडुआदिक विविधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ छे जेहना एहवी भाषायें कह्या। अदृष्ट अगुष्ठादिक सबधी भाषाना विविध गुण कहिये। ते

पारप्रधानतया गुण म्विविधार्थं सम्वादलचण म्रकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रश्नविद्यामन' प्रश्नविद्यादैवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका स्तासां, पुन:किम्भूतानां प्रश्नाना समुद्भूतेन तात्विकेन द्विगुणेन उपलचणत्वा ल्लौकिकप्रश्नविद्याप्रभावापेचया बहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन माहात्म्येग नरगणमतीमनुजसमुदयबुद्धीविस्मयकार्यश्चमत्कारहेतवो या: प्रश्ना स्ता: सद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्यं स्तासां पुन: किम्भूतानां तासा मतिसयमतीतकालसमयेति अतिशयेन योतीत: काल: समय: स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थ: दम: शम स्तत्प्रधान तीर्थंकराणा दर्शनान्तरथा स्तृणा मुत्तमो य: स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थंकरोत्तमस्य स्थितिकारण स्थापन आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानादिगुणयुक्त: सकलप्रणायकशिर: शेखर कल्प: पुरुषविशेष: एवविधप्रश्नाना मन्यथानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तथा तासां पुनस्ताएव विशिनष्टि दुरभिगम दुरवबोध गम्भी र सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाह च दु:खाध्येय सूनम्रत्वाद्यत्तस्य सर्वेषां सर्वज्ञाना सम्मतमिष्टं सर्वसर्वज्ञसम्मत अथवा सर्वंच तत्सर्वज्ञसम्मतञ्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मत म्रव ॥

पाहाणगुणप्पगासियाण सब्भूयदुगुणप्पभावनरगणमइविम्हयकराणं अइसयमईयकालदमसमातित्थकरुत्तम स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अबुहजणबोहकरस्स पच्चक्खयपच्चयकरा ॥

सद्भुण तात्विकपणें द्विगुण लौकिक प्रश्न विद्यानी अपेचायें घणोजे प्रभाव माहात्म्य तेणे करी मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे चमत्कार उपजा वेछे। अतिशये करी अतीतकाल समय अत्यंत व्यवहित काले दम शम तेणे करी सहित तीर्थं करोत्तमनी स्थितिनो करण स्थापिवो तेहना कारणछे। दुरभिगम दु:खे जाणिये। गभीर सूक्ष्मार्थ पणें दुरवगाह दु:खे ग्रहीसके। सर्व सर्वज्ञने मान्य। तथा अबुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण। प्रत्यच प

पनतत्वमित्यर्थः तस्य अबुधजनविबोधनकरस्य एकांतहितस्येतिभावः पञ्चक्षयपञ्चयकराणीति प्रत्यक्षकेन ज्ञानेन सातादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वातिशयनिधा नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेद जिनप्रवचन मित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यक्षेणेवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यक्षमिवेद मित्येव प्रतीतिः प्रत्यक्ष नागत्यय स्तत् कारणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्यः प्रत्यनताप्रत्ययकारीवा तासा प्रत्यक्षकप्रत्ययकारीणां प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न विद्यानां सुपलक्षणत्वा दन्यासाश्च यासा मष्टोत्तरशताभ्यादोप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किंभूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जतित्ति आख्यायन्तेशेषमपूर्ववत् नवरं यद्यपीहाध्ययनानां दशत्वाद्दशैवो देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्धमिति संखेज्जाणिपयसयसहस्साणि पयग्गेणंति

परहावागरणेसुणं परित्तावायणा सखेज्जाअणु णं परहाणबिविहगुणमहत्थाजिणवरप्पणीया आघविज्जति परहावागरणेसुणं परित्तावायणा ... एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० राखेज्जाअक्खरा अणंतागमा जावचरणकरण

अणुगदारा जावसखेज्जाउ सगहणीउ सेणंअंगठयाएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयालीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० राखेज्जाअक्खरा अणंतागमा जावचरणकरण

णीं प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यक्षपणें मानिवा योग्य छे। एहवा प्रश्नना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरेंप्रणी त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणनें विषें कहियेछे। प्रश्न व्याकरणने विषें संख्याती वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती संग्रह णी लगे पाठ कहिवो। तेणें अंगार्थपणें दशमे अंगे एक श्रुतस्कंध तेने विषें ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ८२

तानि च किल द्विनवति लक्षाणि षोडशच सहस्राणीति ॥ १० ॥ सेकितमित्यादि विपचनं विपाकः शुभाशुभकर्म्मपरिणाम स्तत्प्रतिपादकं श्रुत ग्विपाकश्रुत ग्विवागसुएणमित्यादि काव्य नवर फलविवागेत्ति फलरूपोविपाकः फलविपाकः तथानगरगमणाइति भगवतो गौतमस्य भिक्षाद्यर्थं नगरप्रवेश

परूवणया आघविज्जंति सेत्तंपराहावागरणाइं ॥ १० ॥ सेकिंतं विवागसुए विवागसुएणं सुक्क दुक्काणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति सेसमासओ दुविहे पन्नत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकिंतं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइ चेइयाइ वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणें कह्या । संख्याता अक्षर । अनंता गमा । अनंता पर्याय यावत् चरण करण श्रमणव्रत पिंडविशुद्ध्यादिक लगी जाणिवो । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्नव्याकरण दशमोअंग ॥ १० ॥ अथस्यूंतेविपाक श्रुत । विपाकजे शुभाशुभ कर्मना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत । विपाक श्रुतने विषें शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहियेछे । ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो । तेकहेछे । दुख विपाक अने सुख विपाक । ते बिहुमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबाहु कुमारादिकना दश सुख विपाक । अथ किस्यांते दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर । उद्यान । चैत्य । बनखंड । राजा माता । पिता । समोसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गौतम भिक्षार्थें नगरमांहि प्रवेश करे । ससारनो प्रबंध बिस्तार । दुः

मानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेसुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमैथुनैः सह ससंगयाएत्ति यो ससङ्गता सपरिग्रह
ता तया सचितानां कर्म्मणामितियोगः महातीव्रकषायेंद्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायाना सचितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये
फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनौच ये बहुविधव्यसनशतपरम्पराभि प्रबद्धाः ते तथा तेषा जी

संसारपबंधे दुहपरंपराउय आघविज्जति सेत्तंदुहविवागाणि सेकिंतसुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवा
गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इह
लोय परलोय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाउ सले
हणाउ भत्तपच्चक्खाणाइ पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइ सुकुलपच्चाया पुणवोहिलाहो अंतकिरियाउ आ
घविज्जति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्कीकरणपरदारमेहुणससगयाए महतिव्वकसायइं

खनी श्रेणी कहिये छे ते दुःख विपाक। अथ स्यू ते सुखविपाक। मुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकना। नगर। उद्यान। चैत्य।
वनखंड। राजा। माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष। भोगनो परित्याग। दीक्षा। श्रुतनो भ
णवो। तपोपधान करिवो। पर्याय। प्रतिमा। सलेखना। भात पाणीनो पच्चखाण। पादपोपगमन। देवलोके उपजिवो। तिहां थकी चवी
ने सुकुलेउपजिवो। वली जिन धर्मनो प्राप्ति। अतःक्रिया। एह जिहां कहिये ते सुख विपाक। दुःख विपाकने विषे। हिंसानो करिवो। अलीक बच

॥

बाना मितिगम्यते तथा मणुयत्तेत्ति मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्म्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते इतिप्रक्रत तथाहि वधो यष्ट्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्द्धितककरण तथा नासयोश्च कर्णयोश्च ओष्टस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्टानांच करयोश्च चरणयोश्च नखा नांच यच्छेदन तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अञ्जन तप्ताय: शलाकया नेत्रयो: स्नपण वा देहस्य चारतैलादिना कडग्गिदाहणंति कडानां विदलवंशादि मयाना मग्नि: कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहन कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थ: तथा गजचलनमलनम्फालन म्विदारणं उल्लम्बनं वृचशाखादावुद्बध

दियप्पमायपावप्पउय असुहज्भवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागाणि णरगति रिक्खजोणियबिविहविसणपरपरावद्धाणं मणुयत्तेवि आगयाणंजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवा गाणरगतिरिक्खजोणियबिविहवसणविणासकन्नुठगुठ करचरणनहछेयण जिब्भछेअण अंजणकडग्गिदाह

न सुखथी कूडो बोलवो। चोरीनो करिवो। परस्त्री मैथुन सगमनो करिवो। परिग्रहनो धारण करिवो। महातीव्रकषाय। इन्द्रिय प्रमाद। तथा। पाप प्रयोग। पापव्यापार। एह थकी जपनो अशुभ अध्यवसाय तेणि करी मेल्या पापरूप कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय। दु:ख विपाक ने विषे कहिये। नरक तीर्यंच योनिने विषें अनेक प्रकार कष्टनो श्रेणी तेणि करी बधाणा जेजीव तेहनो। तथा मनुष्यपणे पणि आव्या थका जिम पापकर्म शेषेंकरी पापीहोय। फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय। तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषें अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान ओठ अंगूठा हात पग नख एहना छेदन। तथा जिह्वा जीभ छेदन। तथा अंजन लोहनी शलाका नेत्रने विषें घालवी। तथा कट वांसनी बेफाड तेह

म तथा मूलेन लतया लकुटेन यष्ट्याच भञ्जन गात्राणां तथा त्रपुणा धातुविशेषेण सीसकेणच तेनेव तप्तेन तैलेनच कलकलत्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुम्भ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पन शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोत्कम्पजनन तथा स्थिरबन्धन निविडनियन्त्रण वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदन वर्द्धवर्त्तन लगुत्तोटनं प्रतिभयकर भयजनन तत्करप्रदीपनञ्च वसनावेष्ठितस्य तैलाभिषिक्तस्य करयो रग्निप्रबोधनमिति कर्म्मधारयः ततश्च बधयष्टपणविना शयेत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदीपन चेति द्वन्द्वः ततस्तानि आदि येषां दु:खाना तानिच तानि दारुणानि चेति कर्म्मधारयः कानीमानीत्याह दु खानि किंभूता न्यनुपमानि दु:खविपाकेष्वाख्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेद माख्यायते बहुविविधपरम्पराभि. दु:खानामितिगम्यते अनुबद्धाः सन्ततमाश्लिष्टा बहुविधपरम्परानुबद्धा जीवाइतिगम्यते नमुच्यन्ते तत्याज्यन्ते कयापापकर्मवल्ल्या दुःखफलसम्पादिकया किमित्याह यतो ऽवेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

गयचलणमलणफालणउल्लंबणसूललयालउडलट्ठिभंजण तउसीसगतत्ततेल्लकलकलअहिसिंचण कुंभिपागकंपण थिरबंधणवेहवज्झकत्तण पतिभयकरपलीवणाइं दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुब

नी अग्नीयें करी बालिवो। तथा हाथीना पगने हेठें मर्दिवो। कोहाडें करी बेफाड करिवो। वृक्षशाखाने विषें जंचो बाधिवो। मूलें करी लतायें करी लाकडी लठी लाठीयें करी गात्रनो भाजिवो। तथा तातो सीसो कडकडायमान तेल तेणे करी स्नान करिवो। कुंभी भाजनमांहि पचाविवो। शीतल जलें करी शरीर छांटे तेहथकी जपनो कप। निगड बधन। भालादिकें करी वींधवो। चामडानो त्रोडिवो। भयोत्पादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां लपेटी ने अग्निनो लगाडिवो। इत्यादिक दारुण अनोपम एहवा दुःख विपाकने विषें कहिये। अनेक प्रकार दुःखनी श्रेणीयें करी निरंतर आलिंग्या

इर्यस्मादर्थं नास्ति भवति मोचो वियोगः कर्म्मणः सकाशात् जीवाना मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किंभूतेन धृतिश्चित्तसमाधानं तद्रूपा धणियत्ति अत्यर्थं वद्धा निःपीडिता काच्छाबन्धविशेषो यत्र तत्तथा तेन धृतिबलयुक्तेनेत्यर्थः शोधनमुपनयन तस्य कर्म्मविशेषस्य वाविति सम्भावना या होज्जा सम्पद्येत नान्यो मोचोपायो स्तीति भावः एत्तोयेत्यादि इत श्चानन्तरं सुखविपाकेषु द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनेष्वित्यर्थः यदाख्यायते तदभिधीयत इतिशेष. शील ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा सयमः प्राणातिपातविरति र्नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो ऽनशनादि एतेषा मुपधानं विधानं येषान्ते तथा अत स्तेषु शीलसयमनियमगुणतपउपधानेषु केष्वित्याह साधुषु यतिषु किंभूतेषु सुष्टुविहित मनुष्ठित येषाते सुविहिता स्तेषु भक्तादि दत्वा यथा बोधिलाभादि निवर्त्तयति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवचणात् अनुकम्पा अनुक्रोश स्तत्प्रधान आश य चित्त तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकपाशयाप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतित्ति त्रिषु कालेषु या मति र्बुद्धि र्यदुत दास्यामीति परितोषोदीयमानेपरितोषो

झाणमुंचंति पावकम्मवलीयवेयइत्ता ङणात्थिमोक्खो तवेणधिइधणियवद्धकच्छेण सोहणंतस्सवाविज्जा एत्तोयसुहविवागेसुणं सीलसंजमणियमसुयतवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओग तिकालमइ

यका नमूकाये न छूट्या । पापकर्म बांधी दुख फलदायक वेलडीथी तेपापी जीवनछूटे । बिना भोगे निश्चयथी मोच नहीय । सर्वथापि छूटिवो नथी । एम नही तो केम । तपेंकरी तथा धृति चित्तनो समाधान तेणे करी अत्यत बद्धकाच्छ थईने शोधवो वेगलो थाईवो ते कर्मनो होय । इहा थकी बीजाश्रुत स्कंध सुखविपाक ने विषे जे कहिये तेलिखेछे । शील संयम नियम श्रुत तपोपधान छे जेहने । एहवा सुविहित साधूने विषे दयाभावे करी सहित जे चित्त

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्याच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिचतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाश्रयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा
नानि प्रदाये तियोग' केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूरचेतसा हितो ऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुख: शुभोवा नीसेसत्ति नि.श्रेयस: कल्याण
करत्वात् तीव्र: प्रकृष्ट: परिणामी ऽध्यवसान यस्या सा तथा सा निश्चिता असंशया मति बुंद्धि यंपाते हतसुखनि.श्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतय: कि पय
च्छिऊणति प्रदाय किभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारापेक्षया चोद्गमा
दिदोपवर्जितानि तत: कि यथाच येनच प्रकारेण पारपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्त्तयन्ति भव्या जीवा इति गम्यते तुशब्दो भाषामात्रार्थं वोधिलाभं

विसुद्धभत्तपाणाइं पययमणसाहियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमइपयत्थिऊणं पयोगसुद्धाइं जहनिव्वत्ते
तिव्वो वोहिलाभंजहयपरित्तीकरेति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियट्ट अरतिभयविसायसोगमिच्छत्त

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहुकालने विषें विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे। देईने आदर पूरितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे। तथा सु
खनो हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवो तीव्र प्रकृष्ट परिणाम अध्यवसाय छे जेहनो एहवा निश्चय मति संशय रहित बुद्धि छे जेहनी तेह देईने तेह
भातपाणी केहवा छे प्रयोग शुद्ध छे प्रयोगने विषें दायक दान व्यापारनो अपेक्षाये शुद्ध छे सशयादिक दूषण रहितछे। जिम जेणें प्रकारे परंपरा ये
मोक्ष साधक लक्षणे निवर्तावे निपजावे वोधिलाभ भव्यजीव जिम परितकरे ससार सागर थोडोकरे। तेसंसार सागर केहवोछे। मनुष्य नरकतिर्यंच
देवता एह चिहुंनो गतिने विषे जीवनो एहवो नजाइवो भमिवो विपुल विस्तीर्ण परियर्तमत्स्यादिकनो अनेक प्रकारे सचरण जिहां। अरति भय वि

यथाच परित्तीकुर्वंति अल्पतानयन्ति संसारसागर मितियोगः किंभूत नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमन मपरिभ्रमण मएव विपुला विस्तीर्णः प रिवर्त्तो मत्स्यादीनां परिवर्त्तन मनेकधा सचरण यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्येव शैला पर्वताः तैः सकटः सकीर्णो यः स तथा ततः कर्मधारयो ऽत स्त इहच विषादो दैन्यमात्र शोक स्त्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोधकार महान्धकार यत्र स तथा अत स्त चिक्खिल्ल सुदुत्तारति चिक्खिल्ल कर्दम. ससारपक्षेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरो दुःखोत्तार्योयः स तथात तथा जरामरणयोनय एव संक्षुभित महा मत्स्यमकराद्यनेकजलजतुजातिसमर्दन प्रविलोडित चक्रवालं जलपारिमाडिल्य यत्र स तथा तं तथा षोडशकषाया एवस्वापदानि मकरग्राहादीनि प्रका ण्ड चण्डानि अत्यर्थरौद्राणि यत्र स तथा त अनादिक मनवदग्र मनन्त संसारसागरमिम मलघमित्यर्थ. तथा यथाच सागरोपमादिना प्रकारेण निब

सेलसंकडं अन्नाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तार जरमरणजोणिसंखुभियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिणं जहयणिबंधंति आउगसुरगणेसु जहयअणुभवंति सुरगणविमाण

पाद शोक मिथ्यात्वतमचण शैलपर्वतें करी सकीर्ण साकडोछे। वली केहवोछे। अज्ञान तेहीज तम अंधकार छे जिहां। विषय धन स्वजनादिक प्रति बध लक्षण चिक्खिल्लकर्दमतेणेंकरी सुदुत्तार अत्यर्थ उत्तारछे दोहिलोजेहनो । जरामरण योनि तेहिज संक्षुभित महामत्स्य ने जाइवें आइवें करी क्षि लोभ्यो चक्रवाल जालनो मांडलो जिहां। तथा सोले कषाय अनतानुबध्यादिक भेदे क्रोध मान माया लोभ तलक्षण स्वापद मकरादिक प्रकाड अत्यर्थ रौद्रछे जिहां। वली केहवो छे। अनादि छे । तथा अनत छे। अतनथी एहवो ससार सागर इण करता एहवो संसार समुद्र तरे जेह जिम मागरो

य: समुदय: समूह: स तथा इत्येतेषा इह स्तत: एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी य शुभविपाक उत्तमो येषा न्ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्विति गम्य इहचेय षष्ठ्यर्थे सप्तमी तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषा: शुभविपाकाध्ययनेष्वाख्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येक श्रुतस्कन्धयो रभिधेये पुण्यपापविपाकरूपे प्रतिपाद्यतयोरेव योगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर ता अविच्छिन्ना ये परम्परानुबद्धा के विपाका इतियोग: केषा मशुभानांशुभानाचैव कर्मणा म्प्रथमद्वितीयश्रुतस्कन्धयो: क्रमेणैवच भाषिता: उक्ता बहुविधा विपाका: विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण सम्वेगकारणार्था: सम्वेगहेतवो भावा: अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा दोत्तरक्रियया योग: एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थ प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्य नवरं सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तत्र किल ए

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुवद्धा असुभाणचेवकम्माणभासिआवहुविवागा विवागसुयम्मि भगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेवियएवमाइयावहुविहाविस्थरेणं अस्थपरूवणया आघविज्जंति

ना विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषें कहिये। निरतर परंपराये घणाभवलगे बांध्या। अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्कंधे क्रमे कह्या घणे प्रकारे विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे सवेगकारणनाअर्थ सवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवमा दिक एणें अगे घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये। विपाक श्रुतना परित्ता गणतीयें वाचना सूत्रार्थनो देवो संख्याता अनुयोग

कापदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वात्रिंशच्च सहस्राणीति ॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीना म्वादोदृष्टिवा
दः दृष्टीना वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथाचाह दिट्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा
ख्यायते सेसमासओपचविहेत्यादि सर्वमिद प्रायो व्यवच्छिन्न तथापि यथादृष्ट किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिग्रहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्म्माणि

विवागसुअस्सणं परित्तावायणा सखेज्जाअणुत्तगदारा जावसखेज्जाउ सगहणीउ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे अंगे वीसंअज्झयणा बीसउद्देसणकाला वीससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखेज्जाणिअक्खराणि अणतागमा अणतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जांति. सेत्तविवागसुए ॥ ११ ॥ सेकितंदिठिवाए दिठिवाएण सव्वभावपरूवणया आघविज्जतिसेसमासउ पंचविहे प० तं०

द्वार जाव सख्यात सग्रहणी तेह अगार्थपणे इग्यारमे अगे वीस अध्ययन वली २० उद्देशनकाला २० समुद्देसनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि ८४ लाख ३२ हजार पदने परिमाणें कह्या। सख्याता अक्षर। अनन्तागमा। अनन्तापर्याय। जाव चरण ते साधुना महाव्रत करण ते पिंड विशुद्ध्या दिकनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये। तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अग ॥ ११ ॥ अथ सूते दृष्टिवाद दृष्टिते दर्शन तेहनो वदवो कहिवोछे जि हा ते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषे कहिये तेह पूर्व समेप थकी पाच प्रकारे कह्या ते कहे छे। परिकर्म १ सूत्र २

गणितपरिकर्मवत् तच्च परिकर्मश्रुत सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्ममूलभेदत: सप्तविधं उत्तरभेदत स्तु त्र्यशीतिविध मातृकापदादि एतच्च सर्वं समूलोत्तरभेद सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्न एतेषाञ्च परिकर्मणा षट् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुन:

परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया सेकिंतंपरिकम्मे परिकम्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजहसेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे सेकिंतंसिद्धसेणियापरिकम्मे सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउयापयाणि एगठियपयाणि पादोठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूए पडिग्गहे संसारपडिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावद्धसेत्तंसिद्धसेणिआपरिकम्मे सेकिंतंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ सूंते परिकर्म। परिकर्म पूर्व साते भेदें कह्यो। तेकहेछे। परिकर्म शब्दे गणती गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परिकर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनी गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ चुता चुत श्रेणी गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग थकी जाणिवा। सिद्ध श्रेणी परि कर्मना वली १४ भेद कह्या। ते कहेछे। त्र्यासी भेदे मातृका पद १ एक स्थितिपद २ पाद अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ ससार प्रतिग्रह १२ नदावर्त्त १३ सिद्धावद्ध १४ एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म। अथ सूंते मनुष्य श्रेणी परिकर्म। मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्यो। ते कहेछे। मातृकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्म्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्म्मसु नयचिन्ता तत्र नैगमोद्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च तत्र सांग्राहिकः संगृहंप्र
विष्टो ऽसांग्राहिकश्च व्यवहार तस्मात् संग्रहो व्यवहार ऋजुसूत्रशब्दादय एकाएवेत्येवं चत्वारो नया एते चतुर्भिर्नयैः षट्स्वसामयिकानि परिकर्म्माणि
चिन्त्यन्ते अतो भणित छचउक्कनयाइति भवन्ति तएवचाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मका इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी
वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः
उभयार्थिकः अतोभणित सत्ततेरासियत्ति सप्तपरिकर्म्माणि त्रैराशिकपाखण्डिका स्त्रिविधया नयचिन्तया नयाश्चिन्तयन्तीत्यर्थं सेतपरिकम्मत्ति निगमनं

परिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते तंजहा ताइंचेव माउआपयाणि जावनंदावत्त मणु
स्सबद्धं सेत्तंमणुस्ससेणियापरिकम्मे अवसेसपरिकम्माइं पुठाइयाइ एक्कारसविहाइ पन्नता इच्चेयाइ सत्त
परिकम्माइं ससमइयाइं सत्तआजीवियाइ छवउक्कणइयाइ सत्ततेरासियाइं एवामेव सपुव्वावरेणं सत्तप

थे पद २ आगासपद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ मणुस्सबद्ध १
तेह मनुष्यश्रेणी परिकर्म। शेषयाजता परिकर्म पाच पुष्टादिक इग्यारह भेदें कह्या। इत्यादिक सात परिकर्म मांहि पहिला छ परिकर्म स्वसमयप्रतिबद्ध
जिनमतानुयायो सात परिकर्म च्युताच्युतश्रेणी परिकर्म लगे आजीविका गोशालमतानुयायी जाणिवा। धुरना छ परिकर्म चारनयें करी सहितछे संग्रह १
व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबद्धछे सात परिकर्म त्रिराशिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रिराशिकना मतने विषे

सेकितसुत्ताइमित्यादि तत्र सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचनात्सूत्राणि अष्टाशीत्यपिच सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नानि तथापि दृष्टानुसारतः किंचिल्लिख्यते एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि तान्येव विभागतो ऽष्टाशीति र्भवन्ति कथ मुच्यते इच्चेइयाइ बावीसमुत्ताइं छिन्नछेयनईयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए त्ति इह योनयः सूत्र च्छिन्न छेदेनेच्छति सच्छिन्न च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकः सूत्रार्थतः प्रत्येकछेदनस्थितो न द्वितीयादिश्लोक मपेक्षते प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं भवतीतिमक्खायाइं। सेत्तंपरिकम्माइं। सेकिंतं सुत्ताइं सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीति मक्खायाइं तंजहा। उज्जुगं परिणयापरिणय बहुभंगियं विप्पच्चइयं अणंतरं परपरसमाणं संजूहं भिन्नं अहच्चायं सोवत्थियं घंटं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवभूय दुआवत्तं वत्तमाणुप्पयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पणुमं दुपडिग्गहं इच्चेयाइं बावीससुत्ताइं छिन्नछेअणइआइं ससमयसुत्त परिवाडीए इच्चेआइं बावीससुत्ताइं

सात परिकर्म एणीपरे आगली पाछली मिली सात परिकर्म होय भगवते कह्या। ते पहिलो भेद पूर्वनो परिकर्म नाम कह्यो अथस्यूंते सूत्र। पूर्वनो बोजोभेद सूत्र तेहना ८८ भेद होय। भगवंते कह्या तेकहेछे। ऋजुअग १ परिणता परिणत २ बहुभंगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परपरसमान ६ सयूथ ७ भिन्न ८ यथात्याग ९ सौवस्तिक १० घट ११ नंदावर्त्त १२ बहुल १३ पृष्टापृष्ट १४ वियावर्त्त १५ एवंभूत १६ द्विकावर्त्त १७ वर्त्तमानोत्पतक १८ समभिरूढ १९ सर्वतोभद्र २० प्रणामत २१ द्विप्रतिग्रह २२ इत्यादिक बावीससूत्र छेद्या छेद्ये करी नय जिहा तेछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल इत्यादिक श्लोक

जीविकसूत्रपरिपाट्येति अयमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोक म पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थ' एतानि द्वाविंशति राजोविकगोशालकप्रवर्त्तितपाखण्डसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थिता न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्र तत्र तिकनइयाइ ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिन्त्यन्तइत्यर्थं त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति यथा इच्चेइयाइ इत्यादि सूत्रं तत. चउक्कनइयाइ ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्त्यन्त इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्र एवञ्चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइ बावीससुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेवसपुव्वावरेण अट्ठासीयं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइ ।

सूत्रार्थ थकी प्रत्येक छेदथकी छेद्यो बीजा श्लोकनो अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनो परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु आदिक २२ सूत्र नयी छेद्या छेदेकरी नय जिहा ते अछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमगल मुक्किट्ठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस सूत्र आजीविक गोशालमतनी परिपाटीयेंपामीये । इच्चेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक त्रिराशिक पाखडोना सूत्रनी परिपाटीये पामीये । ऋजुअग प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय समेत तेह ससमय जिनमतनी सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगलो पाछलो मिलो २२ चौका अठ्यासी सूत्र होय ते भगवते कह्या । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कह्यो

णि भवन्ति सेतंसुत्ताइंति निगमनवाक्यं सेकिंतंपुव्वगएइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते यस्मा तीर्थकार: तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधरा: पुन:श्रुतरचना विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मतान्तरेणतु पूर्वगतसूत्रार्थं पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वरचित पश्चादाचारादि नत्वेव यदाचारनिर्युक्त्या मभिहितं सव्वेसिंआयारोपढमो इत्यादि तत्कथमुच्यते तत्स्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहत्वक्षररचना प्रतीत्य भणित पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वगतं चतुर्दशविध प्रज्ञप्तं तद्यथा उप्पायेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं प्रथमं तत्रच सर्वद्रव्याणा म्पर्यवाणा चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण मेकाकोटी आग्रणीयं द्वितीय तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणा पर्यवाणा जीवविशेषाणां चाग्र परिमाण वर्ण्यंत इत्यग्रणीय तस्य पदपरिमाण षणवतिपदशतसहस्राणि वीरियति वीर्यप्रवाद तृतीय तत्राप्यजीवानांजीवानाच सकर्मेतराणा वीर्य प्रोच्यत इति वीर्यप्रवाद तस्यापि सप्तति: पदशतसहस्राणि परिमाण अस्तिनास्तिप्रवाद चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

सेत्तंसुत्ताइं । सेकिंतं पुव्वगयं । पुव्वगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते । तंजहा उप्पाय पुव्वं अग्गणीयं वीरियं अ

कह्यो । अथ स्यूते पूर्वनो त्रीजो भेद पूर्वगत। ते चौदह भेदें कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्व १ तीर्थ कर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिलो सूत्रार्थ भाष्यो तेमाटे पूर्व कह्यो । सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादना भाव अंगीकार करीने जेकह्यो तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाण १ बीजो अग्रणीय तेमाहि सर्वद्रव्य पर्याय जीवनो अग्र परिमाण पामिये तेहनो पद परिमाण ९६ लाख पद २ । त्रीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्य कह्या । पदसंख्या ७० लाख पद ३। चौथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां स्याद्वादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । पांचमो ज्ञानप्रवाद

स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेवनास्तीत्येवं प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद भणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद

म्पञ्चम तन्मतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्ररूपणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवाद तस्मिन्पदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवाद षष्ठं सत्यसंयमः सत्यवचनम्वा

तद्यत्र सभेद सप्रतिपक्षश्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवाद तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीषट्चपदानीति आत्मप्रवाद सप्तम आयत्ति आत्मा सोनेकधा यत्र

नयदर्शनै वर्ण्यते तदात्मप्रवाद तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्यः कर्मप्रवादमष्टम ज्ञानावरणादिक मष्टविध कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि

भेदै रन्यैश्चोत्तरोत्तरभेदै र्यत्रवर्ण्यते तत्कर्मप्रवाद तत्परिमाण मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवम तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्ण्यत

इति प्रत्याख्यानप्रवाद तत्परिमाण चतुरशीति. पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवाद दशम तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको

टी दशचपदशतसहस्राणीति अवध्य मेकादश वध्यनाम निष्फल नवध्य मवध्य सफलमित्यर्थः तत्रहि सर्वज्ञानतपः संयमयोगा शुभफलेन सफला व

त्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अवंझं

तिहामत्यादि ५। ज्ञान सविस्तर पणे कह्या पद सख्या एकूण एक कोडीपद ५। छठो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसयम तथा सत्य बचन सभेदें कह्यो ते सत्य प्रवाद पद सख्या एककोडी छ पद ६। इति षट् पूर्व। सातमो आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदें आत्मा वर्णव्यो ते आत्मप्रवाद पदसख्या २६ कोडी पद ७ आठमो कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनीप्ररूपणाकरी पद सख्या १ कोडी ८० हजार पद ८। नौमो प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो पदसख्या ८४ लाखपद ९। दशमो विद्यानुप्रवाद तिहा अनेक प्रकारनी अतिशायिनी विद्या वर्णवीछे पद सख्या १ कोडी १५ हजार पद १०। इग्यारह

पर्यन्ते अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते अतोऽवन्ध्य तस्यच परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायु र्द्वादश न्तत्राप्यायुः प्राणविधान सर्वं स भेद मन्येच प्राणावर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशालं त्रयोदश तत्र कायिक्यादय क्रिया विशालत्ति सभेदाः सयमक्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्त इति क्रियाविशालं तत्पदपरिमाणं नवपदकोट्यः लोकविन्दुसार चतुर्दशम तत्रास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा विन्दुरि वाचरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाचरसन्निपातप्रतिष्टितत्वेनच लोकविन्दुसार भणितं तत्प्रमाण मर्द्धत्रयोदशपदकोट्यइति उप्पायपुव्वस्सेत्यादिकाव्य नवरं वसुनिय तार्थाधिकारप्रतिवद्धो ग्रन्थविशेषो ध्ययनवदिति तथा चूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्म्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थ सग्रहपरा ग्रथपद्धतय श्चूडाइति सेत्त

पाणाउ किरियाविसालं लोगविंदुसारं १४ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० अग्गेणिय स्सणंपुव्वस्स चोद्दसवत्थू वारसचूलियावत्थू प०। वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अठवत्थू अठचूलियावत्थू प०।

मो अवंध्य तिहां तप सयमना फल वध्यनथी अफलनथी एहवो वर्णव्यो पद सख्या २६ कोडी पद ११। वारमो प्राणायु तिहा आउखानो भेद सर्व जीवनो कह्यो पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२। तेरमो क्रियाविशाल तिहा कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदें वर्णवी पद संख्या ८ कोडी पद १३। चौदमो लोक विंदुसार लोकने विषे विंदुसरीखो विंदु सघलामाही उत्तम तेहनी पद सख्या साढी वारह कोडीपद १४। एतले पूर्वनो त्रीजो भेद वर्ण्यो कह्यो। प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कह्या। अग्रणी वीजा पूर्वना चौदे वस्तु वारे चूलिका वस्तु कह्या। वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कह्या। अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कह्या ४। ग्यान प्रवाद

पुव्वगतेत्ति निगमनं सेकिंतमित्यादि अनुरूपोनुकूलोवायोगी नुयोगः सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्धमनुरूपः सम्बन्धइत्यर्थः सच द्विविधः प्रथमः तद्यथा मूल

अत्थिणत्थिप्पवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० । आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्वस्स तीसंवत्थू प० । पच्चक्खाणस्सणं पुव्वस्स वीसवत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० । अवंझस्सण पुव्वस्स वारसवत्थू प० पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्सती सवत्थू प० । लोगविंदुसारस्सण पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० । सेत्तपुव्वगयं । सेकितंअणुओगे । अणुओगे दु

पाचमा पूर्वनां बारह वस्तु कह्या । ५ । सत्य प्रवाद छठा पूर्वना २ वस्तु कह्या ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कह्या ७ । कर्म प्रवाद आठमा पूर्वना ३० वस्तु कह्या ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कह्या ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अवन्ध्य इग्यारहमा पूर्वना १२ वस्तु कह्या ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १३ वस्तु कह्या १२ । क्रियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकह्या १३ । लोक विंदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकह्या १४ । दसचउद्दस अठ्ठा रसेववारसदुवेयवत्थूणि सोलसतीसावीसा पणरसअणुप्पवायंमि ॥ १ ॥ बारसएक्कारसमे बारसमेतेरसेववत्थूणि तीसापुणतेरसमे चउद्दसमे पणवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारिदुवालस अठ्ठचेवदसचेवचूलवत्थूणि आइल्लाणचउण्ह सेसाणंचूलिआनत्थि ॥ ३ ॥ धुरना चिहूं पूर्वनी चूलिका कही जाणिवी । शेष थाकता दश पूर्वनी चूलिका नथी एह पूर्वगत चौजो भेद पूर्वनो कह्यो ॥ अथ स्यूं ते अनुयोग चौथोभेद पूर्वनो । अनुरूप अनुकूल योग ते अनुयोग सूत्र

प्रथमानुयोग स्च गण्डिकानुयोगश्च सेकिंतमित्यादि इह धर्मप्रणयनात् मूलं तावत्तीर्थंकरा स्तेषां प्रथमसम्यक्त्वावाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरो नुयोगो मूलप्रथमानुयोग स्तथाह सेकिंत मूलपढमाणुओगे इत्यादि सूत्रसिद्ध यावत् सेत्तमूलपढमाणुओगे सेकिंतमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो ग

विहे पन्नत्ते । तंजहा । मूलपढमाणुओगे गण्डियाणुओगे सेकिंतंमूलपढमाणुओगे एत्थणं अरहंताणंभगवंताणं पुव्वभवदेवलोगगमणाणि आउवयणाणि जम्मणाणिअभिसेयरायवरसिरीओ सीआओ पव्वज्जाओ तवोयभत्ताकेवलणाणुप्पयाओ तित्थपवत्ताणाणिअ संघयणसंठाणउच्चत्तआउवन्नविभागो सीसागणागणहराय अज्जापवत्तणीओ सघस्सचउव्विहस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जवओहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईअणुत्त

नेविषे अर्थने विषे सरीखो सबध तेकहेछे । मूल प्रथमानुयोग १ गडिकानुयोग । अथ सूते मूल प्रथमानुयोग । मूल प्रथमानुयोगने विषे इहा धर्मनाप्ररूपवापणा थकी मूल ते तीर्थंकर देव ते अरिहत भगवतनो प्रथम पहिलो पूर्वभव तप सयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहिये ते अनुयोग बहु प्रकारे कह्यो अरिहतना पूर्व भव देवलोक गमन जाइवो । आउखो च्यवन जन्म राज्याभिषिक राज्यवर श्री जिमभोगवे शिविका दीचा दीचानीपालवो तपना भक्त चोथभक्त छट्ठभक्त इत्यादि । केवल नाणनो उपजवो । तीर्थ चतुर्विध सघ तेहनो प्रवर्तावणो । सघयण वज्रऋषभादिक । संस्थान समचतुरस्र । शरीरनो ऊचपणो । आउखो । वर्ण गौरादिक । तेहनी विभा काति । शिष्य गण गछ । गणधर ते प्रथम शिष्य । आर्या साधवी प्रवर्तिनी वडी साध्वी तेहना नाम । सघ चतुर्विध साधु साध्वी श्रावक श्राविका तेहनो जेहवो परिणाम आचार विचार । जिन केवलीनो सख्या । मनपर्यवज्ञानो अवधि

अनेकार्था अन्तरे ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे गण्डिका एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता स्तत्र चित्राय ता अन्तरगण्डिका न चित्रान्तरगण्डिका: एतदुक्तम्भ वति ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे तद्वंशजभूपतीनां शेषगतिगमनव्युदासेन शिवगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका चित्रान्तरगण्डिका इति ताश्च चोद्दशलक्खासिद्धा निवईपोक्कोयहोइसव्वठ्ठे एवेकेक्कठाणे पुरिसजुगाइ तिसंखेज्जेत्यादिना ग्रंथेन नन्दिटीकाया मभिहिता स्तत एवा रभ्याशां इह सूत्रगमनिका

गद्दवङ्गगंडियाउ तवोकम्मगंडियाउ चित्तंतरगंडियाउ उस्सप्पिणीगंडियाउ ओसप्पिणीगंडियाउ अमरनर तिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणाणुजोगे एवमाइयाउगंडियाउ आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति सेत्तगंडियाणुजोगे सेकिंतंचूलियाउ जंणंआइल्लाण चउण्हंपुव्वाणचूलियाउ सेसाइंपुव्वाइं अचूलियाइं दिठिवा

का पूर्वजन्मादि संबंधी जिहां कही ते कुलकरगंडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चित्रांतरगंडिकाआवे । तीर्थंकरना संबंध गणधर संबंध चक्रव र्त्तिसंबंध । दस समुद्रविजयादिक दशदशार तेहना प्रबंध । बलदेव बलभद्रादिकनासंबंध । हरिवंश यदुवंशनी उत्पत्ति । भद्रबाहुआदि घणाजिम एह पाम्या । छेहडे जेहवा तपकर्मकीधा । तेचित्रांतरगंडिका चित्रअनेकार्थ अंतरते आदिनाथ अने अजितनाथने आंतरे विचाले जिम आदीत्ययशना पाट असंख्याता मो क्षपहुता । तथा । सर्वार्थसिद्ध पहुता । तेसर्व भावना कहणहार तेचित्रांतरगंडिका । उत्सर्पिणी ते चढतोसमय तेहनाभाव । अवसर्पिणी तेघटतोकाल तेह नाभाव । देवतानागणसमूह । तथा नरमनुष्यतिर्यंच नारकी एचिहूंनीगति जिहां विविध प्रकारे परिवर्तन संसारमाहि फिरवो तेहनो अनुयोग व्याख्यान एवमादिक गंडिका अर्थाधिकार । तिहां चौथा पूर्वना भेदने विषे कहिये गंडिका चोथो भेद पूर्वनो ॥ अथ ते स्युं चूलिकानुयोग । जे आदिना चुरना चार

साम्प्रतं द्वादशाङ्गविराधनानिष्पन्नं त्रैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इच्चेयमित्यादि इत्येत द्वादशाङ्गं गणिपिटक मतीतकाले अनन्ताजीवा आज्ञया विराध्य चतुरन्तं ससारकान्तारं अणुपरियट्टिसुत्ति अनुपरिवृत्तवन्तः इदंहि द्वादशाङ्गं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं ततश्च आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्तं ससारकान्तारं नारकतिर्यङ्नरामरविविधवृत्तजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवतो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्टामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी कइव द्रव्यलिङ्ग धार्यनेक श्रमणवत् सूत्रार्थोभये विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठान मेवाज्ञाततया तदकरणेनेत्यर्थः इच्चेयमित्यादि गता

निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंणाए एवं विण्णाए एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंदिठिवाए॥ सेत्तदुवालसंगेगणिपिडगे ॥ १२ ॥ इच्चेइय दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतकाले अणंताजीवाआणाए विरा

अन्यथा पणे कडा कीधा छे निबद्धा सूत्र थकी गूंथ्या छे। हेतूदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाप्या जणाव्या भाव पदार्थ कहीजे। नाम भेद जणावे करी। निदर्शीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाणवा। एम विशेष पणे जाणवा। चरण ते पांच महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा। जिहां कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह बारे अग कहवाछे। गणी कह तां आचार्य तेहने पेटी रत्नकरंड समानछे। इत्यादि द्वादशाग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आज्ञाने विराधी खडी ने चार अंत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो संसार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृत्तवत भ्रमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिडगप्रते व

र्थमेव नवरं परित्ताजीवाइति,सख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां सख्येयत्वात् अणुपरियट्टंतित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चेयमित्या दि इदमपिभावितार्थ मेव नवरं मणुपरियट्टिस्संतित्ति अनुपरावर्त्तिष्यन्ते पर्यटिष्यतीत्यर्थः इच्चेयमित्यादि वाक्यं नवरं विइवयसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्गतिकससारोल्लङ्घनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एव प्रत्युत्पन्नेपि नवरं मय म्विशेषः वीइवयतित्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येवं नवरं वीवइस्संति त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यंतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्न फल मातिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसंगे इ

हित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंग गणिपिडगं पडुप्पन्नेकाले परित्ताजीवा आणाए विराहित्ता चाउरतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति इच्चेइय दुवालसंगगणिपिडगं अणागएकाले अणंताजीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतससारकतारं अणुपरियट्टिस्संति इच्चेइयं दुवालसगगणिपिडगं अतीतेकाले अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतार विइवइसु एवंपडुप्पन्नेवि अणागएवि दुवालसगं

र्तमानकाले परित्तासंख्याता जीव मनुष्य आज्ञाने विराधीने चातुरंत ससार कांतार प्रति अनुपरावर्त्तें भमे छे। एह द्वादशांग गणिपिडगने। अनागत भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञानें विराधीने चातुरत संसार कांतारप्रतें भमस्ये। एहवा द्वादशांग गणिपिडगप्रतें अतीतकाले अनताजीव आज्ञाने अराधी ने चातुरत संसार कांतारप्रते पार पामताहुआ। एम वर्तमानकाले पार पामे छे। एम भविष्यकाले पार पामस्ये। एह द्वादशांग गणिपिटक। नही क दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथो एमनही। नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुती एमनही। तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीछेहडो

त्यादि द्वादशाङ्ग एमित्यलङ्कारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदैवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतर्हि भु विचेत्यादि अभूच भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुव मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत मञ्चास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव शाश्वत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शाश्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेप्य चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मह्रदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्बहिः समु द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थित जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रत दृष्टान्त मनार्थे आह सेजहानामए इत्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास न्नित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्धेवेति एत्थणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्गे

गणिपिडगं णकयाइणत्थि णकयाइणासी णकयाइणनविस्सइ नुवंच नवति नविस्सतिय धुवेणितिए सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच अत्थिकाया णकयाइ णआसि णकयाइ णत्थी

नही तेमाटे हुतो तोस्यूं। एह द्वादशांग पूर्वेहुता हिवडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव नियलछे वली नियतछे। सदाभावी पचास्तिकायनीपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शाश्वतछे समयादिकालनीपरे वली अचय पद्मद्रहने विषे गगासिधुना प्रवाहनीपरे पचा स्तिकायनीपरे वली अवस्थित जम्बूद्वीपनीपरें वली नित्य आकाशनीपरे साम्प्रत दृष्टांत देखाडीयेछे। तेयथानाम जिम पचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा रे अतीतकाले नही न हुती एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनही। तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही। एह पचास्तिकाय हुती अतीत काले आगलिकाले होस्ये। वर्तमानकालेछे। ध्रुव नियत शाश्वत नित्य। एह पदार्थ वखाण्याछे। एणे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोगः तत्रभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवानन्ता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्वस्तुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्मापेक्षया अनन्ताभावाः अनन्ताऽभावाः गतिवस्वखिलनाखिलाभ्यां प्रतिबद्धा इति व्याचक्षन्ते तथा ऽनन्ताहेतव' तत्र हि

णकयाइ ण ज्ञविस्संति ज्ञुविं ज्ञवंतिय ज्ञविस्संतिय धुवा णितिया सासया ज्ञक्कया ज्ञव्वया ज्ञवठि या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे णकयाइ ण ज्ञासि णकयाइणत्थी णकयाइणज्ञविस्सइ ज्ञुविं च ज्ञवति ज्ञविस्सइय धुवे जावज्ञवठिए णिच्चे एत्थणं दुवालसगे गणिपिडगे ज्ञणंताज्ञावा ज्ञणंताज्ञज्ञा वा ज्ञणताहेऊ ज्ञणताज्ञहेऊ ज्ञणताकारणा ज्ञणताज्ञकारणा ज्ञणंताजीवा ज्ञणंताज्ञजीवा ज्ञणंताज्ञव

हुतो एम नही। वर्तमानकाले किवारे नथी एमनही। भविष्यकाले किवारे नहोय एमनही। हुतो छे होस्ये एतले त्रिकालभाव। ध्रुवादिक पद सघला क हिया जिहां लगी अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहालगी काहिवो। एणे द्वादशांग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंता छे। अनन्ता अभाव पोतानी अपेक्षाये आपणपो परने विषे नही एह अभाव तेही अनन्ता। हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामे ते हेतु व स्तु पणि अनतछे। तद्विशिष्ट अर्थपणि अनतछे। हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेही अनत छे। मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेही अनत छे। जिम मृत्पिंडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेही अनंतछे। जीव अनंतछे। अजीव स्थाणुकादिक पुद्गल तेही अनतछे। भव्य जीव अनंतछे। अभव्य

नोति गमयति जिज्ञासितधर्म्मविशिष्टानर्थानितिहेतु स्तेचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्म्मात्मकत्वात् तत्प्रतिबद्धधर्म्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्तगमपर्यायात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपत्ततो ऽनन्ता अहेतव स्तथाअनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतंत्वादीनि घटपटादिनिवर्त्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकारणानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न्नहिमृत्पिण्डः पटनिवर्त्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा द्व्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्टितार्था इतरे ससारिण आघविज्जती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरासीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद मप्रज्ञापनाख्य सर्वं न्तदत्तर मध्येतव्य किमवसानमित्याह जावसेकितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चायम्विशेषः इहदुवेरासीपण्णत्ता इत्यभिलाप स्तत्रतु दुविहापण्णवणापण्णत्ता जीवपण्णवणा अजीवपण्णवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया अणंताअभवसिद्धिया अणंतासिद्धा अणंताअसिद्धा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवदुवालसंगंगणिपिडगं इति दुवेरासी पन्नत्ता तंजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकिंतंअरूवी

जीव अनन्त छे। सिद्ध अनतछे। एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये। जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडीये। उपदेश करिये। द्वादशांग स्वरूप कहीने हिवे तेहीजमा वेराशी कहीछे तेकहेछे। जीव राशि अजीवराशि। अजीवराशि वेप्रकारे छे तेकहेछे। रूपी अजीव राशि। अरूपी अजीवराशि। स्यूंते अरूपी अजीवराशि अरूपी अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे। धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ आकाश

खितुमशक्यत्वा द्दर्थतस्तन्निश्र उपदर्श्यते तत्राजीवराशि र्द्दिविधो रूप्यरूपिभेदा त्तत्रारूप्यऽजीवराशि र्दशधा धर्म्मास्तिकाय स्तद्देश स्तत्प्रदेशश्चे त्येवधर्म्मास्तिका याकाशास्तिकायावपि वाच्यावेव मव दशमोऽद्धा समय इति रूप्यजीवराशि श्चतुर्द्धा स्कंधा देशाः प्रदेशाः परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानभेदतः पञ्चविधाः सयोगतो नेकविधा इति जीवराशि र्द्दिविधः ससारसमापन्नो ससारसमापन्नश्च तत्रा ऽसंसारसमापन्ना जीवा द्दिविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदा त् तत्रा नन्तरसिद्धाः पञ्चदशप्रकाराः परम्परसिद्धा स्त्वनंतप्रकाराइति संसारसमापन्नास्तु पञ्चधै केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रियाः पञ्चविधाः पृथिव्यादिभेदेन पुनः प्रत्येक द्विविधः सूक्ष्मबादरभेदेन पुनः पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाअपि पञ्चेन्द्रिया श्चतुर्द्धा नारकादिभेदा त्तत्रनारकाः सप्तवि धाः रत्नप्रभादिपृथ्वीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलखचरभेदात् तत्र जलचराः पञ्चविधा मत्स्यकच्छपग्राहमकरसुसुमारभेदात् पुन र्मत्स्या अनेक धा श्लक्ष्णमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकच्छपमांसकच्छपभेदात् ग्राहाः पञ्चधा दिलिवेष्टकमद्गुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्यविशेषा द्विधा श्र ण्डामकरा करिमकराश्च संसुमारास्त्वेकविधा स्थलचराद्विधा चतुष्पदपरिसर्प्पभेदात् चतुष्पदाश्चतुर्द्धा एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्व गोहस्तिसिंहादयः परिसर्प्पाद्विधा उरःपरिसर्प्पभुजपरिसर्प्पभेदात् उरःपरिसर्प्पाश्चतुर्द्धा अह्यऽजगरा शालिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वीकरामुकुलि

अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसविहा पन्नत्ता धम्मत्थिकाए जावअद्धासमए रूवीअजीवरासीअणे

स्तिकायस्कध ३ देश २ प्रदेश ३ एव९ दशमो अद्दा समय काल एवं १०। एमजीवराशि २ प्रकार त्रस १ थावर २। तेहो पणि सूक्ष्म बादर एम पर्याप्ता अपर्याप्ता एणी विधियें बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रय। पर्याप्ता अपर्याप्ता पंचेंद्रिय नरकातिर्यंच मनुष्य देवता भवनपति व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ता एम ति

नश्वेति खचराश्चतुर्द्धा चर्म्मपचिणो लोमपचिण: समुद्गपचिणो विततपचिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वीपान्तरेष्वेव स्त: सर्वेच पञ्चेन्द्रियति यञ्चो मनुष्याश्च द्विधा सम्मूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र समूर्च्छिमा: नपुंसकाएव इतरेतु त्रिलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिधा कर्म्मभूमिजा अकर्म्म भूमिजा अन्तरद्वीपजाश्चेति कर्म्मभूमिजा द्विविधा आर्या म्लेच्छाश्च आर्याद्वेधा ऋद्धिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादय: द्वितीया नवविधा चेत्रजातिकुलक र्म्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्रभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्यादिभेदा ञ्चनपतयोदशधा असुरनागादय: व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादय: ज्योतिष्का: प ञ्चधा चन्द्रादय: वैमानिका द्विधा कल्पोपगा: कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्म्मादिभेदात् कल्पातीता द्वेधा ग्रैवेयकाअनुत्तरोपपातिकाश्च ग्रैवेयका नवधा अनुत्तरोपपातिका: पचधेति एतत्समस्त सूत्रकृतो त्ता जावसेकित अणुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेवजीवराशि दण्डकक्रमेण द्विधादर्शयन्नाह दुविहेत्यादि सु

गविहा ॥ जावसेकिंतंअणुत्तरोववाइआ अणुत्तरोववाइआ पचविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज यंत अपराजित सव्वठसिद्धिआ सेत्तंअणुत्तरोववाइआ सेत्तंपचेंदियसंसारसमावन्नजीवरासी ॥ दुविहाणेर इया पन्नत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय एवंदंडअ्ताणियव्वो जाववेमाणियत्ति इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढ

हां लगी अनुत्तर विमानआवे । स्यूंते अनुत्तरोपपातिका । तेपांच प्रकारे कह्या तेकहेछे । पूर्व दिशि विजय विमान । दचिणे वैजयंत । पश्चिमे जयंत । उ त्तरे अपराजित । चिहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध । एह पांच विमानना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ता । तेह अनुत्तरोपपातिक देवता । ते पंचेंद्रिय ससार प्राप्त जीव राशि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव । बे प्रकारे नारकी कह्यो ते कहे छे । पर्याप्ता नारकीमांहि आहार १ शरीर २ इंद्रिय ३

मचूर्ण्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति तेच वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषाच मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकावाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्विदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासस्थानसस्थितादृति निरयसस्थानव्यवस्था तत्रच बाहुल्यमङ्गीकृत्येद मभिधीयते अतोवट्टेत्यादि उक्तंच सूत्रकृद्वृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये वृत्ता बहिरपि चतुरस्रा अधश्च क्षुरप्रसस्थानसंस्थिता एतच्च सस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्तं तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टा स्तु वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसस्थानाभवन्तीति तत्रांतर्वृत्ता मध्ये शुषिरमाश्रित्य वहिश्चचतुरस्राः कुड्यपरिधिमाश्रित्य यावत्करणादिद दृश्य यदुत अधः क्षुरप्रसस्थानसस्थिता भूतलमाश्रित्य क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य सचारिसत्वपादच्छेदकत्वात् अन्येत्वाहु स्तेषामधस्तनांशः क्षुरप्रद्वयाग्रेऽग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसस्थानता तथा निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनक्खताजोइसप्पहामेयवसापूयरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुब्भिगंधाकाऊअगणिवण्णाभाकक्खडफासादुरभियास इत्ति तत्र नित्य सर्वदा अन्धकारं अन्धताकारक स्वहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव त्तमस्तमिस्र येषु ते नित्यान्धकारतमसः

तेणणिरयावासा अंतोवट्टा वाहिंचउरंसा जावअसुभाणिरया असुभाउणिरएसुवेयणाउ एवंसत्तविभाणिय

चउखूणा नरकावासा वेप्रकारना छे। एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकावाह्य तेमांहि आवलिका प्रविष्ट तेआठ दिशिने विषेछे ते वृत्त त्र्यस्र चतुरस्र क्रमे जाणिवा। एहमाहि इन्द्रक ते वाटला सीमतादिक अने आवलिकावाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अतराले नाना संस्थान संस्थित छे। जिहांलगी महा अशुभछे नारकी वेदना भोगवेछे। एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहिवी जे वाहुल्य पणू नरकावासा परिमाण पृथिवीयें जोइये तेगाथा

भायाम्वाहल्यमेवं शेषासुभावनीयं तथा त्रिंशल्लचाणिप्रथमायां नरकावासाना मित्येवं शेषास्वपिनेयमिति आवासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्म्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रे वंच्यतीति तन्निवासपरिमाणसंग्रहः चउसट्ठीइत्यादि गाथाः पच एवचेहसूत्राभिलापोदृश्यः सक्करप्पभाएणपुढवीएकेवइयत्र्योगा

यपणवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिन्नेगंपंचूणं पंचेवत्र्प्रणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीत्र्प्रसुराणं चउ रासीइंचहोइनागाणं बावत्तरिसुवन्नाणं बाउकुमाराणछन्नउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद थणियमग्गीणं छण्हंपिजुवलयाणं बावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ बत्तीसाठावीसा वारसत्र्प्रचउरोसयसं

लाख। पांचमीये ३ लाख। छठीयें ५ जणाएक लाख। सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेंद्रना भवन ३४ लाख बलींद्रना ३० लाख बिहुंमि ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन। तथा धरणेंद्रना ४४ लाख भूतानेंद्रना ४० लाख बिहुमिली ८४ लाख भवन नागकुमारनां। तथा वेणुदेवना ३८ लाख वेणुदालीनां ३४ लाख बिहुंमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारनां। तथा वेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुमिली ९६ लाख वायुकुमार ना भवन। तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख बिहुमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख। एक युगल। अमितगति नां ४० लाख अमित वाहनना ३६ बिहुमिली ७६ लाख। दिसाकुमारना। बीजोयुगल। तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना। त्रीजु युगल। हरि कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना। चौथो युगल। घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख विहुना मिली स्तनितकुमारना ७६ लाख। पांचमो युगल। अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन। एह छठो युग

क्रम स्तथा वट्टयतंसायत्ति मध्यमोवृत्त: शेषाल्यस्त्रा इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादि सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि वृत्तानि

वीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिंन्नाणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए ऋठुत्तरजोयणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवरिं ऋद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविऋद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचऋणुत्तरा महइमहालया महानिरया पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए ऋप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्टाय तंसा

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी सख्या पिछाडी गाथामांहि कहीछे तिम कहिवी। सातमी नरकपृथिवीनो स्वरूप पूछेछे भगवंतआगलि। भगवत कहेछे। हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमाहि उपरि अर्द्धत्रेपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र योजन अवगाहीने ऊपर मूकीने वली हेठे पणि साढात्रेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पाथडो इहां सातमी तमतमा पृथिवीये नारकीना पाच अनुत्तर कहता ते उत्तरे आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणाज घणा मोटा महा नरकावासा कह्या तेकहे छे। पूर्वदिशि काल १ दक्षिणि महाकाल २ पश्चिमि रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमो विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला त्र्यंस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांही अपइठाण ते वाटलो अने चिहुंदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाछे अहेत्ति हेठे खुरप्र एतले छरपलाने सस्थाने सस्थितछे। यावत् ग्रहे चन्द्र सूर्य रहित कर्दमभूत अशुभ घणो भूंडो नरक छे । तथा अशुभ घणी भूंडी छे नरकनें विषें वेदना। वली

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशादेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत समचित्रबिन्दुकिनीभवतीति तथा उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीर खातपरिखानि उत्कीर्णं भुवनमुत्कीर्यं पालीरूप कृतमन्तरमंतराल ययोस्ते उत्कीर्णान्तरे ते वि

य अहेखुरुप्पसंठाणसंठिया जावअसुन्नानरगा । असुन्नाउ वेयणाउ केवइयाणंभंते असुरकुमारावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता अठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए चउसठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा प० तेणभवणाबाहिवट्टा अंतो चउरसा अहो पोक्खरकण्णिआ संठाणसंठिया उक्किण्णंतर विउलगंभीरखाय

गौतम पूछे छे । हेभगवत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कह्या । अनेकिहाछे । भगवत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी यें ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनो छेहडो तेमांहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने वली हेठेंपिण १ हजार योजन लगे वर्जी ने मध्येबिचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्र एतले ६४ लाख भवना वास कह्या । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अंतो घरमाहि चोरस । चोखूणिया हेठें पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने सस्थाने संस्थितछे । उत्कीर्ण पालीरूप कीधो छे अंतराल जेहनो ते उत्कीर्णांतर एहवी विपुल विस्तीर्ण गभीर उंडी खात परिखा खाईछे जेह भवन ने उपरि विशाल हेठें सकुचित ते विहूंने अतलगे बिचे पाछिले एहभाव । अट्टालक गढ उपरि आश्रयविशेष चरिका नगर अने गढने बिचाले ८ ।

पुलगम्भीरे खातपरिखे येषा तानि तत्र खातमधउपरिच सम प्परिखाउपरि विशाला अधः संकुचिता तयोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभावः तथा अट्टालकाः प्राकारस्थो पर्याश्रयविशेषाः चरिकानगरप्राकारयोरतर मष्टहस्तोमार्गः पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरकाः सभाविशेषाः ग्रामप्रसिद्धाः द्वारगोउरत्ति गोपुरद्वाराणि प्रतोल्यो नगरस्येव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेषु भागेषु येषांतानि तथा द्वंद्व देशोभागस्थानेकार्थं स्ततोन्योन्यमनयो र्विशेष्यविशेषणभावो दृश्यतइति तथा यन्त्राणि पाषाणक्षेपणयन्त्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुंडयः प्रहरणविशेषाः शतघ्न्यः शतानामुपघातकारिण्यो महाकायाः काष्टशैलस्तम्भयष्टयः ताभिः परियारियत्ति परिवारितानि परिकरितानीत्यर्थः तथा अयोधानि योधयितुं संग्रामयितुं दुर्गतत्वान्नशक्यंते परबलै र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधाः परबलसुभटानि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयालकोष्ठगरइय

फलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसंढिसयग्घिपरिवारिया अउज्झा अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगु

हाथनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतोली नगरी तेंहना कमाड तेह आगली तोरणछे तिमज प्रसिद्ध द्वार माहिला द्वार एतला देशभागने विषे यथायोग्य स्थान कहेछे जेहने तथा यंत्रतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रसिद्ध भुसडि तेप्रहरणविशेष तथा शतघ्नी ते सोमाणसनेमारे एहवीमोटी काष्टनी तथा पाषाणस्तम्भरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहितछे जेहने एहवा । अयोध्या पर कटके जूझ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचितछे । तथा अडतालीस कीधाछे वनमाल तथा अडयालकहिये शोभायमानछे वनमाला पल्लवनीमाला जेहनेविषे जेहघरनीभूमि छाणेकरी लीपी ऊपरिलो

त्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रछन्दो गोपुररचितानि अन्येभणन्ति अडयालशब्दः किलप्रशंसावाचकः तथा अडयालकयवखमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभि सा: प्रशसार्हा:कृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथालाइयति यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपन उल्लोइयंति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरण ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेत यद्रक्तचन्दनं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना भ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प ञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुःकृष्णागुरु गन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुदुरुक्क चीडा तुरुष्कः सिल्हक गन्धद्रव्यमेव एतानिच तानि डज्झंतित्ति दह्यमानानि चेतिविग्रहः तेषां योधूमो मघमघेंतत्ति अनुकरणशब्दोय मघमघायमानो वहलगधइत्यर्थः तेनोद्धुराणि उत्कटानि तानि तथा तानिच तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषां गन्ध आमोदो येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगधिकानि तथा गधवर्त्ति गंन्धद्रव्याणां गधयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गधवर्त्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवहिभूया

भाग खडोयें करो धोल्यो तेणेकरो महित पूजितछे जेह। गोशीर्षचदनविशेष रक्तचंदन तेणेहु दर्दर निबिडपणे दीधाछे पंचागुलितला हाथा भीतिने विषे हाथा दीधा छे। कृष्णागरु प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिल्हारस एह पूर्वोक्त डज्झत दह्यमान दाझता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गध तेणे करी उत्कृष्ट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा। तथा सुगधत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गध तेणेकरी गंधित छे गंधवत छे तथा गधनी वाती तेह समान

रगंधगुणानीत्यर्थः तथा अच्छानिआकाशस्फटिकावत् सण्हत्ति श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धदलनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् लण्हत्ति मसृणानीत्यर्थः घुटितपटवत् घट्ठत्ति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणयापाषाणप्रतिमावत् मट्ठत्ति मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणयापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकयेव अतएव नीरयत्ति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निम्मलत्ति निर्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विसुद्धत्ति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा च्चन्द्रवत् सकलङ्कानीत्यर्थः तथा सप्पहत्ति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशन्ते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयत्ति समरीचीनि सकिरणानि अतएव सउज्जोयति सहद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्ततइति सोद्योतानि पासाईयत्ति प्रासादीयानि मनःप्रसत्तिकराणि दरिसणिज्जत्ति दर्शनीयानि तानिहि पश्यं श्चक्षुषा नश्रमङ्गच्छतीतिभाव. अभिरूवत्ति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिरूवत्ति प्रतिरूपाणि द्रष्टारम्प्रति रमणीयानि नैकस्य कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायद्भवनादिपरिमाण यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोआ पासा

छे अच्छआकाशनीपरें स्फटिकनीपरे। श्लक्ष्ण सूक्ष्म पुद्गलें करी नीपनो छे। लण्हत्ति सुकुमाल कोमल छे घूंट्या वस्त्रनी परें। घट्ठत्ति खरशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानीपरें घस्याछे। मट्ठत्ति घणीसुकुमालशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानी परें मठाराछे एणे कारणें नीरज रजरहित निर्मल मलरहितछे। वितिमिरा अंधकार रहित छे। निष्कलंकछे। प्रभाकांति तेणे सहितछे। श्रीशोभा तेणेकरी सहितछे। उद्योत प्रकाश सहितछे। मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायोग्यछे। कमनीयछे देखणहारप्रते रमणीकछे। एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणो असुरकुमार सूत्रने विषे कह्योछे। जे जे भाव गाथायें भण्यो ते

घटते तत्तस्य वाच्यमिति भिंविध तत्परिमाणमतआह जंजंगाहाहिं भणियं यथन्नगाथाभिः चउसठ्ठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यंतहेत्याह तहचेववण्णोत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसीवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापन्नत्ता गोय मा इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पिं एगंजोयणसहस्सं ओगाहेत्ताहेठ्ठाचेगजोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झेअठ्ठहत्तरे जोय

ईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं ज गाहाहिं भणियं तहचेववस्सन् केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असंखेज्जा पुढयिकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसयवज्जेत्ता मज्झे अठ्ठसुजोयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो। नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो। वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवत कहेछे हेगौतम। असख्याता पृथिवीकायिकावासा छे। एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असख्याताछे। एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यंचपचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असख्याता कहिया एतले गर्भज मनुष्यसख्याता कहिवा। अने समूर्च्छिम मनुष्य असंख्याता क हिवा। वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमतरावासा व्यंतरनारहिवानाठाम। भगवंत कहेछे। हेगौतम एणीये रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन काड तेमाहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकांडछे तेह रत्न कांडनो योजन सहस्रनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

यसहस्से एत्थणं रयणप्पभाएबुलसीइनागकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता तेणंभवणाइत्यादीनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु
त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासा: संमूर्च्छिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाणं

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा ञोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा प० तेणंञोमेज्जानगरा बाहिंवट्टा
अंतोचउरंसा एवंजहाञवणवासीणं तहेवणेयव्वा णवरं पञागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अञि
रूवा पञिरूवा । केवइयाणंञंते जोइसियाण विमाणावासा प० । गोयमा इमीसेणं रयणप्पञाए पुढवी
ए बहुसमरमणिज्जाउ ञूमिञागाउ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तरजोयणसय वा
हल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेण जोइसियविमाणा

वर्जी ने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगह्या इहां वाणव्यंतर देवना तिरिछा लोक मांहि असंख्यात भूमि
संबंधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भोमेय नगरवासा बाहिर वाटला मांहि चउरंसा चोखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहां
पणि नवरं एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्य रमणीकछे । देखवायोग्यछे । वली
गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी
सातसेनेंउयोजन लगी ऊंचो उत्पतीने अहेंने इहां १० योजनमा बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामांहि जोतिषीनो विषयव्याप्योछे

खर येषान्ते गगनतलाऽनुलिखच्छिखरा: तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्ना: इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य: जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सम्भवन्त्येवेति तथा पञ्जरोन्मीलिताइव पञ्जरवहि:कृताइव यथा किलकिञ्चिद्वस्तुपञ्जरा द्वशा दिमयप्रच्छादनविशेषाद्बहि:कृतमत्यंतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपीतिभाव: तथा मणिकनकाना सम्बन्धिनो स्तूपिकाशिखर येषा तेमणिकनकस्तूपि काका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुन्ड्राणि रत्नमयाश्चये अर्द्धचन्द्राद्वाराग्रादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्दचित्रा स्तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णा मसृणाइत्यर्थ: तथा तपनीय सुवर्णविशेष स्तन्मय्या वालुकाया: शिकताया: प्रस्त ट: प्रतरोयेषु तेतपनीयवालुकाप्रस्तटा: पाठान्तरे तु सण्हशब्दस्य वालुकाविशेषणत्वात् श्लक्ष्णतपनीयवालुकाप्रस्तटा इतिव्याख्येय तथा सुखस्पर्शा: शुभस्पर्शा

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्वमणिकणगत्थूभियागा वियसियसयवत्त पुंडरीयतिलयरयणद्धचदचित्ता अतोवाहिंचसण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

लियां तेहना आंतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्केतनादिक छे। पांजराथकी उन्मीलित वाहिर कीधा जेहवा तेजपुंजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी थूभिका शिखर छे जेहना। वली केहवाछें विकसित जे शतपत्र कमल पुंडरीक छे द्वार देशने विषें। तथा भींतिने विषें तिलक छे। तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारविभागें छे तेणेंकरी चित्रित छे। अतो घरमाहि तथा बाहिर श्लक्ष्ण सुकुमाल छे। तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी वालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे। वली केहवाछे। सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे। शोभायमानछे। रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहा। वली केहवाछे। चित्तने प्रसन्नकरे वली देखिवा योग्यछे।

वा तथा सश्रीक सशोभंरूपमाकारोयेषां अथवा सश्रीकाणि शोभावन्ति रूपाणि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सश्रीकरूपा. प्रासादीया दर्शनीयाः अभि
रूपा' प्रतिरूपाइतिपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाओभूमिभागाओत्तिबहुसमरमणीयस्यभूमिभागस्य ऊर्द्ध उपरि तथा चन्द्रमः
सूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणि णमित्यलकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः तारारूपाणि चेह तारका एवेति तथा बहूनीत्यादि किमित्याह
ऊर्द्ध मुपरि दूरमत्यर्थंव्यतिव्रज्य चतुरशीति विमानलक्षाणि भवतीति मख्यव इति मक्खायत्ति इति एवप्रकारा अथवा यतो भवंति तत आख्याताः

दरिसणिज्जा केवइयाणजंतेवेमाणियावासा प० । गोयमा इमीसेणंरयणप्पन्नाएपुढवीएबहुसमरमणिज्जाउ
नूमिन्नागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनरकत्ततारारूवाण वीइवइत्ता बहूणिजोयणाणि बहूणिजोयणसयाणि
बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोमीउ जोयणकोमाकोमीउ असंखेज्जाउ
जोयणकोमाकोमिउ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थण वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंनलंतग

वली गौतम पूछेछे। केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वेमानिक देवताना बिमल निर्मल बिमानरूप आवासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्न प्रभा पहिली पृ
थिवीनी वली घणीसम रमणीक भूमिभाग थकीऊंचो चद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराऋपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजननासेंकडा घणांयोजन
नाहजार घणांयोजननालाख घणांयोजननीकोडी घणीयोजननीकोडाकोडी असंख्यातायोजननीकोडाकोडीने ऊपरि दूरें उल्लघीने इहां वैमानिकदेवतासो
धर्म ईशान २ लगडाकार बराबरिछे। तेऊपरि सनत्कुमार माहेंद्र बराबरिछे। तेउपरि ब्रह्म देवलोक । ते ऊपरि लांतक । तेऊपर शुक्र । ते ऊपर सह

सर्ववेदिनेति तेर्यंति तानिविमानानि यमिति वाक्यालंकारे अच्चिमालिप्पभत्ति अर्चिमाली आदित्य स्तद्वत्प्रभाति शोभंते यानि तान्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशानां राशि भांसराशि रादित्य स्तस्य वर्णं स्तद्वदाभा छाया वर्णो येषां तानि भासराशिवर्णाभानि तथा अरयत्ति अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नीरयत्ति नीरजांसि आगंतुकरजोविरहात् निम्मलत्ति निर्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरत्ति वितिमिराणि अक्षा र्यांधकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमोविरहा त्सकलदोषविरामाद्वा सर्वरत्नमयानि नदार्वादिदत्तमयानीत्यर्थः अच्छान्याकाशस्फटिकवत् स्वच्छानि

सुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसुय चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताण उइचसहस्सा तेवीसंचविमाणाभवंतीतिमरकाया। तेणविमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवन्नाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घठा मठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छा

स्तार । तेऊपर आनत प्राणत लगडाकारेछे । तेऊपर आरण अच्युत । एवं १२ देवलोक थया । ते ऊपर ९ ग्रैवेयक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान । ए कें प्रतरें चिहुंपासे ४ विजयादिक विमांन विचे सर्वार्थसिद्ध । एवं १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मिलीने सगला ८४ लाख ९७ हजार २३ बिमानछे ते भगवंते काह्याछे । तेविमानकेहवाछे । अर्चिमाली सूर्यनी सरीखी प्रभाछे जेहनी । प्रकाश दीप्तिराशि सरीखो वर्णछे जेहनो । स्वाभाविक र जना अभावथी रज रहितछे । कठिन मलना अभावथी निर्मलछे । अंधकार रहितछे । स्वाभाविक अंधकार रहितपणांथी विशुद्धछे । वली सर्वरत्न मयी छे । आकाशनी परें अच्छछे । स्फटिकरत्ननी परें स्वच्छ पुद्गलथी नीपनांछे । सुकुमाल कीधाछे । खरशाणें करी पाषाण प्रतिमानी परे घठास्याछे । सकु

सूक्ष्मस्कंधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपंकानि कलंकविकलत्वात्
कर्दमविशेषरहितत्वा द्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति र्येषां तानि निष्कंकटछायानि सप्रभाणि प्रभावंति
समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्त्वंतरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः पासादूएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणभंते कप्पेकेवइयाविमाणावासापणत्ता गो
यमा बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पणत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्य एतदेवाह एवईसाणाइसुत्ति एव गाहाहिं भाणियव्वति बत्तीसअठ्ठवीसा इत्यादि
काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारिणीत्यर्थः प्रतिकल्प भिन्नपरिमाणविमानावासा भणितव्या स्तदर्थंकथंवाच्यो जावतेणविमाणेत्यादि यावत्पडिरूवा न

या सप्पभा सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। सोहम्मेणंभंतेकप्पे केवइया विमाणावासा प०। गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा प०। एवईसाणाइसुअठ्ठावीस बारस अठ्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पन्नास चत्तालीसं छसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिन्निसयाइं गाहाहिंभाणि

मार शाणेकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे। कलंक रहित छे। वली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे। प्रभा सहितछे शोभायमानछे। उ
द्योत सहितछे। वली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाछे। वली गौतमपूछेछे। हेभदंत सौधर्म पहिले देवलोके केतला विमानावास
विमानलक्षण घर कह्या। हेगौतम। बत्तीसलाख विमानावासा कह्या। एम ईशाने अठ्ठावीस लाख। सनत्कुमारे १२ लाख माहेंद्रे ८ लाख। ब्रह्मे ४ ला
ख। लांतके ५० हजार। शुक्रे ४० हजार। सहस्रारे ६ हजार। आनत प्रानत मिली ४००। आरण अच्युत मिली ३०० विमान। एह सैकडा जिम प

वर मभिलापभेदोयं यथा ईसाणेणंभते कप्पे केवइयाविमाणावासापणत्ता गोयमा अठावीसं विमाणावास सयसहस्सा पणत्ता तेणविमाणा जावपडिरूवा एव सर्वं पूर्वोक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनतरं नारकादिजीवानां स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति मुपदर्शयितु माह नेरइयाणभतेइत्यादि सुगम नवरं स्थिति र्नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकालः अपज्जत्तयाणति नारका: किल लब्धित: पर्याप्तका एव भवंति करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति ततः पर्याप्तका स्ततएषा मपर्याप्तकालेन स्थिति र्जघन्यतो प्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका ना म्पुनरौघिकेव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहूर्त्तोनाभवतीति अय चेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभागः नारयदेवातिरियमणुय गब्भयाजेअसखेज्जवासाऊ एतेउअपज्ज त्ता उववाए चेवबोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लद्धिंपप्पोववायकालेय। दुहओवियभइयव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति र्विशेष त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वंम्प्रज्ञापनाप्रसिद्ध मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक लचणेन गमत्रयेण नारकाणां नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियद्दूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा मौघिकपर्याप्तापर्याप्तकलचण गमत्रय यावदित्यर्थः इहचैव मतिदिष्टसूत्राण्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा भदन्तकियतीतिस्थिति र्गौतम जघन्येन दश

यव्वं। नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसं

हिले गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिबो। हिवे २४ दडकने विषे जेजीव तेहना आउखानो स्वरूप पूछेछे। हेपूज्य नारकीनो केतला काल लगे स्थिति आउखो कह्यो। हे गौतम सर्वथापि थोडीतो १० हजार वर्षनो स्थिति कहो। पहिली नरकनो अपेचायें उत्कृष्टीस्थिति तेत्रीस सागरोपमलगे क

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणां भदन्त कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतम अन्ययापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव अपर्याप्तका
ना सामान्योक्तस्यैवान्तर्मुहूर्त्तोनावाच्यैवमेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकादशानां असुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चां गर्भजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणां अ
ष्टविधानां ज्योतिष्काणां पञ्चप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकानां च गमत्रय स्वाच्यं इदंच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमाण्युक्तानि गन्धह

॥

सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को
सेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीससागरो
वमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए एवंजावविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं

छी । पणि ३३ सातमीनी अपेक्षाथी । वली पूछेछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थाये केतला काल लगे स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टपणे
पणि अंतर्मुहूर्त्त । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानो जघन्यपणे १० हजार वर्षनो पहिली नर
कनी अपेक्षाये अंतर्मुहूर्त्त ऊंणी । उत्कृष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तऊणी तेत्रीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानी ऊंणी जाणिवी । हे पूज्य एणीयें
रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आउखो केतलो हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवन
पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कृष्टो आउखो ग्रन्थांतरथकी कहिवो । अनुत्तर विमान पूछेछे । हे भगवंत विजय वैजयंत ज
यंत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही । गौतम जघन्यपणें ३२ सागरोपम उत्कृष्टपणें ३३ सागरोपमनी कही । ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

स्यादिष्वपि तथैवहश्यते प्रज्ञापनायांत्वे कत्रिंशदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकागमद्दय मिह सम्मूत्रमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमै वाच्येति अ नन्तर नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानीतच्छरीराणा मवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणभतेइत्यादि कण्ठ नवर मेकें:द्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव त्करणा द्विविचत:पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेंद्रियजलचरादिपञ्चेन्द्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजीवराशिक्रमेण वाच्यानि कियद्दूरमित्यादि गब्भवक्कतिइ

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं सव्वट्ठे अ जहस्समणुक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइ ठिई पन्नत्ता । कतिण भंतेसरीरा प० । गोयमा । पंचसरीरा प० तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेण भंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प० तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं भंते

जघन्य नथी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीरावोनछे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री औदारिक शरीर १ एम बेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चोरिंद्री औदारिक शरीर ४ पचेंद्री सम्मूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रात मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर५ एह सर्वनो औदारिक शरीर जाणिवो । औदारिकशरीरनी केवडी मोटी अवगाहनां कही हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनी अपेचायें । उत्कृष्टसातिरेक आ

पृथक्त्वं भुजपरिसर्प्पाणा गर्भजानां गव्यूतपृथक्त्वम् संमूर्छनजानां धनुः पृथक्त्वं खचराणां गर्भजानां संमूर्छनजानां च धनुःपृथक्त्वमेव तथामनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां गव्यूतत्रयं सम्मूर्छनजाना मङ्गुलासंख्येयभागः एषएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेचेति तथा कइविहेणमित्यादि स्पष्टं नवर विविधा विशिष्टावा क्रियाविक्रियातस्या भव म्वैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वन्ति तदिति वेकुर्विक मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेंद्रियवैक्रियशरीर नारकादीनामेव जावेत्यादेरतिदेशादिद द्रष्टव्यं यदुत जइएगिंदियवेउव्वियसरीरए किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियशरीरए गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरए नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोद्रष्टव्यः यदिवायोः किंसूक्ष्मस्य वादरस्यवा बादरस्यैव यदि वादरस्य किम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पचेंद्रियस्य किंनारकस्य पंचेंद्रियतिरश्चोमनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वेषा तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तकस्ये तरस्यच यदितिरश्चः किं सम्मूर्च्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिंन्निगाउयाइं । कइविहेणं भंते वेउव्वियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पंचिंदियवेउ

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे छे । हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो । हे गौतम बे प्रकारे कह्यो । एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनो अपेक्षाये । बीजो पचेंद्रिय वैक्रिय शरीर तेह पचेंद्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लब्धि विशेषे होय । भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती व्यंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

गर्भजस्योतस्यापि कर्मभूमिजस्योतस्यापि संख्यातवर्षायुषएव पर्याप्तकस्यैवच तथा देवस्य भवनवासादेः तत्रा सरादेर्दशविधस्य पर्याप्तकस्येतरस्यच एव व्यंत रस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्यपञ्चविधस्य तथा यद्दिवैमानिकस्य कल्पोपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्या पर्याप्तस्यचेति तथा वैक्रियमदन्तकिंसंस्थि तं उच्यते नानासंस्थितं तत्र वायोःपताकासंस्थितं नारकाणां भवधारणीय मुत्तरवैक्रियस्य हुंडसंस्थितं पचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणां नानासंस्थित देवानां भवधा रणीयं समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित मुत्तरवैक्रिय नानासंस्थितं केवल कल्पातीताना भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिंमहती गौतम जघ न्यतोंगुलाऽसख्येयभाग मुत्कर्षतः सातिरेक योजनलक्ष वायोरुभयथा ऽप्यङ्गुलासख्येयभाग एव नारकस्यजघन्येनभवधारणीय उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि एषा च सप्तम्यांषष्ठ्यादिषु त्वियमेवा र्द्धार्द्धहीनेति उत्तरवैक्रियातु जघन्यतः सर्वेषा मप्यङ्गुलासंख्येयभाग मुत्कर्षत श नारकस्यभवधारणीयद्विगुणेति पचेंद्रियतिर श्चां योजनशतपृथक्त्व मुत्कर्षतः मनुष्याणां त्वुत्कर्षतः सातिरेकं योजनानां लक्षं देवानातुलक्षमेवोत्तरवैक्रिय भवधारणीयंतु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशा नाना सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेंद्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुक्रसहस्रारयो श्चत्वार आनतादिषुत्रयो ग्रैवेयकेषुद्वा वनुत्तरेष्वेक इति भनन्तरोक्तं।

व्वियसरीरेत्र । एवंजाव सणंकुमारेआढत्तं जावअणुत्तरात्रवधारणिज्जा जावतेसिं रयणीरयणीपरिहायइ ।

न लगे सात हाथनो होय । सनत्कुमार थी मांडी अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर । बे बे देवलोके एकेक हाथ घटाडिये । ते किम सनत्कुमार माहेंद्रे ६ हाथनं। ब्रह्मलांतके ५ हाथनो । शुक्रसहस्रारे ४ हाथनो । आनत प्राणत आरण अच्युते ३ हाथनो । नवग्रैवेयके २ हाथनो । पचानुत्तरे १ हाथ

सूत्रतएवाह एवंजावसणंकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिंदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रज्ञापनोक्ता वैक्रियावगाहनामानसूत्रं वाच्य कियद्दूरमित्या दि यावत्सनत्कुमारेआरब्ध भवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्य ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभ वन्तितेषांरत्नी रत्नि:परिहीयतइति एतदर्थसूत्रभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेलि दम्वाक्य मन्यथापि दृश्यते तत्राप्यचरघटनै तदनुसारेणकार्येति आहारयेत्या दि सगम नवरं एवमिति यथापूर्वं आलापक: परिपूर्णं उच्चारित: एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्तिजइमणुस्साहारगसरीरे किंगब्भवक्कतियमणुस्साहार गसरीरे समुच्छिममणुस्साहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कतियमणुस्साहारगसरीरे नोसमुच्छिममणुस्साहारगसरीरे जइगब्भवक्कतियइत्यादि सर्वंमूह्य जावजइप मत्तसजयअपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तयसखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कतियमणुस्साहारगसरीरे किंइड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयक

आहारयसरीरेणं भंते कइविहे पन्नत्ते । गोयमा एगाकारे प० । जइएगाकारे प० । किंमणुस्सआहारय सरीरे अमणुस्सआहारयसरीरे । गोयमा मणुस्सआहारगसरीरेणोअमणुस्सआहारगसरीरे । एवजइमणु

नी शरीर । बेहु गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कहिवो । नरदेवलक्खमहिय । तिरियाणजोयणाणिनवसयाइ । दुगुणतुनारयाणं उक्कोसविउ व्वियाभणिया ॥ १ ॥ अंतोमुहुत्तनिरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेसु अद्धमासो उक्कोसविउव्वियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते पूर्वधर जिन ऋद्धि जोइवाने अथवा सदेहपूछिवाने तीर्थंकर पासे जाइवाने अर्थे करे १ हाथनो शरीर अंतर्मुहुर्त्त लगे रहे । ते १ प्रकारे छे । वली गौतम पूछे छे । हेपूज्य १ प्रकारे आहारक शरीर कह्यो ते मनुष्य आहारक शरीर होय किंवा अमनुष्य आहारक शरीर होय । हे गौतम मनुष्यने आहारक शरीर होय । परं

गभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा छि

स्सआहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं
तियमणुस्सआहारयसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे। जइगब्भवक्कंतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभू
मिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा। जइकम्मभूमिग किंसंखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय। गो
यमा नोअसंखेज्जवासाउय। जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्त
या। जइपज्जत्तया किंसम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्ममिच्छदिट्ठी। गोयमा सम्मदिट्ठी नोमिच्छदिट्ठी नोस

अमनुष्यने आहारक नहोय। जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युत्क्रांतनेहोय वा समूर्च्छिमने होय। हेगौतम गर्भजने होय समूर्च्छिम ने नहोय। हेपूज्य गर्भजने होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतनें होय। हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय। हे पूज्य क र्मभूमिगत मनुष्यने होय तो सख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असख्यात वर्षायुष्कने होय। हे गौतम सख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असंख्यात वर्षायुष्कने न थी। हे भदंत संख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ता ने होय किंवा अपर्याप्तने होय। हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय। हे भदंत पर्याप्ता ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने। हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही। सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय। हेभदंत स म्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असंयत अविरतीलोक संयतासंयत श्रावकने होय। हेगौतम सयतीने होय। पणि असंयतीने नहोय। संय

तीयस्त्निषेधः प्रथमस्यचा नुज्ञा वाच्या एतदेवाह वयणाविभागियव्वत्ति सूचितवचनान्यपृतन्यायेनसर्वाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णान्युच्चारणीयानीत्यर्थः. आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरोरोगाहणापन्नतागोयमाइत्येतत्सूचितंजहण्णेणदेसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रम्भक द्रव्यविशेषत च प्रारम्भकाले प्युाप्रमाणभावात् नह्यौदारिकादेरिव गुनासङ्गेनभागमाता गारम्भकाने इतिभावः तेयासरीरेणभंतेइत्यादि एत यावत्कार

सम्मिच्छदिठी। जइसम्मदिठी किंसंजया असंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअसंजया नोसंजया संजया। जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया। गोयमा पमत्तसजया नोअपमत्तसंजया। जइपम त्तसंजया किंइड्ढिपत्ता अणिड्ढिपत्ता गोयमा इड्ढिपत्ता नोअणिड्ढिपत्ता। वयणाविन्नाणियव्वा आहारयस रीरे समचउरंससंठाणसठिए। आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेण पडिपुन्नारयणी। तेअ

ता सयतने पणि न होय। हेपूछ्य संयतीनेहोय तो प्रमत्तसयती ६ ठागुणठाणवालाने होय किंवा अप्रमत्त सयतोने होय। हे गोतम ६ ठागुणठाणवालो प्रमत्तसयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय। पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नथी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय। जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिवानने होय किम्वा अनृद्धिप्राप्तने होय। हे गोतम शरीर करवानी लब्धिरूपऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय। अनर्द्धिप्राप्तने न होय। उतान्याबे कह्या वचन सग ला भणिवा। आहारकशरीर समचउरंस सस्थान संस्थित होय। आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा कांईकाजणा हाथ अने सपूर्ण होयतो १ हाथहोय। हिवे चोथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे। तेजस शरीर हे भदत केतले प्रकारे कह्यो॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कह्यो। एकेंद्रियतेज

या प्रज्ञापनासत्कैकविंशतितमपदटीका तैजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेयगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपन्नत्ते तंजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एव जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वट्ठसिद्धगअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवप चेंदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणंभते किसठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसंस्थान तदेव तैजसस्य कार्म्मणस्यच तथा जीवस्य मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या मायामतस्तु जघन्येनाङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्द्ध्वमधस्त

सरीरेणं भंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वितिचउपंचएवंजाव गेवेज्ज

स्सणं भंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिंद्री तेजस ३ चौरिंद्री तेजस ४ पचेंद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनो सठाण अनेक प्रकारनो । गौतम पहिले स्वाध वचने पूछेछे । मरणां तिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनी अवगाहनां केतली । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणें । जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग । उत्कृष्ट ऊंचो नीचो हेठिला लोकांतलगे । कार्मणशरीरनी पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिवी । उत्पत्तिसमये वेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चोरिंद्रियना तेजस शरीरनी अवगाहना उत्कृष्टलांबपणें तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दंडकना तेजसशरीरनी अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते समोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानी केवडीमोटी तेजस शरीरोगा हना कहिवी। हे गौतम शरीरप्रमाणें जाणवी । विष्कंभपणें पिहुलपणें बाहल्यपणें जाडपणें औदारिकशरीर प्रमाणें तेजस शरीरनीं अवगाहना । आयामे

लोकान्ता ल्लोकान्तंयाव देकेन्द्रियस्य तत स्तत्रोत्पत्ति मङ्गीक्रत्येतिभाव: एवं सर्वेषामेवैकेंद्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका ल्लोकांतंयावन्नाय स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरश्चाम्भावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्रं कथं नारका त्पातालकलशस्य सहस्रमानं कुड्यभित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्पद्यमानस्य उत्कर्षेणतु अध: सप्तमींयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्पद्यमान मतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणयावत् ऊर्द्ध्वं म्पण्डकवनपुष्करिणींयावत् यतस्तयो र्नारक उत्पद्यते नपरत: मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवानां जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वींयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्त ऊर्द्धमीषत्प्राग्भारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्पद्यन्ते अतो नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थ मवतारे मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्पद्य मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनीम्वा मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मपरिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव न्महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र हि जलसद्भावान्मत्स्येषूत्पद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रयावत् ऊर्द्धमच्युतयाव त्तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य मृतस्येहोत्पद्यमानत्वादिति आनता दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते र्मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मप्यभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत स्त्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यङ्मनुष्यक्षेत्रे ऊर्द्ध मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिदेवानां जघन्य

सरीरप्पमाणमेत्ती विक्खंभवाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं जावविज्जाहरसेढीउ उक्कोसेणं अहोलोइयग्गामा

लांबपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे।गैवेयक देवताना तैजसनो अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कार्मणशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कष्टो

तो विद्याधरश्रेणींयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलौकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्द्ध तद्विमानान्येवेति एवं कार्म्मणस्या प्यवगाहना दृश्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह । गेवेज्जगस्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्म्मउक्तो ऽधुना त्ववधिधर्म्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि र्भवप्रत्ययः चायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणा चायोपशमिको मनुष्यतिरश्चामिति तथा विषयो गोचरो ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्द्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्वं मेकाणे

ठं उड्ढं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावश्रणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिज्ञा णियव्वं । भेदेविसयसंठाणे श्रब्भिंतरेबाहिरेयदेसोही । श्रोहिस्सबुड्ढिहाणी पडिवाईचेवश्रपडिवाई ॥ १ ॥ कति

हेठें जिहालगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुंविमान । तिरछो मनुष्य क्षेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी अवगाहना । एमजग्रैवेयकनीपरे अनुत्तर विमानवासो देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परें कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी सठाण पणि तिमज जाणिवो । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ वीजो क्षायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीने होय । चायोपसमिक मनुष्य तिर्यंचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ क्षेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्ययकी जघन्यपणें तैजस अनें भाषानें अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणें । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनताणुकात रूपीद्रव्यने जाणे । तथा क्षेत्रथी जघ न्य अगुलनो असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खड जाणें । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

काद्यनंन्ताणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति चेत्रं जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति काल ञ्जघन्यत आवलिकाया असख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः संख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य ञ्चतुरोवर्णादीन् उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसख्येयान् सर्वद्रव्यापेचया त्वनन्तानिति तथा सस्थान मवधेर्वाच्य यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना म्पटहाकारो व्यन्तराणा झल्लर्याकृति र्ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कल्पोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचंगेर्याकारो ग्रैवेयकाना कन्याचोलकसस्थानो ऽनुत्तरसुराणां लोकनाल्याकृति रित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासस्थानइति तथा अब्भतरत्ति के अवधिप्रकाशितचेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्थकरा यओहिस्सबाहिराहुतीत्यादि तथा बाहिरियत्ति के वधिचेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

तजाणें। उत्कृष्ट असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणें। भावथकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति संख्याता सर्वद्रव्यनो अपेचायें अनता वर्णादिकना भेदजाणे। चौजेशोले अवधिनो सठाण कहेछे। नारकीनो अवधि त्रापाने आकारें। एतले नावने आकारे। भवन पतिनो पल्यने आकारें। व्यतरनो पडहाने आकारे। ज्योतिषीनो झालरने आकारें। बारेदेवलोकना देवतानो मादलने आकारें। ग्रैवेयक देवतानो फूलचंगेरीने आकारें। अनुत्तर देवतानो लोकनालीने आकारें। एतले कन्यानो चोलीने आकारें। तिर्यंच मनुष्यनो अवधि नाना संस्थान। हिवे कोण अवधि प्रकाशित चेत्रने अभ्यतर वर्तेछे। तिहां नेरइयदेवतित्थं करायओहिस्सबाहिराहुंति। इत्यादि। तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रकाशित चेत्रने बाहिर होय। शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यंतरपणि होय। देशोहित्ति अवधि प्रकाशिया योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

तथा देशोहित्ति अवधिः प्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशी अवधि र्देशावधिः स केषा म्भवतीति वाच्यम् तद्विपरीतस्तु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मन्येषा देशावधिरेव यत. सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्तावेवो त्पद्यत इति तथा वर्धे र्वृद्धिर्हानिश्च वाच्या योयेषाम्भवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणा म्वर्द्धमानोहीयमानश्च भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानो गुलासंख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्पश्यति विपरीतस्तु हीयमानइति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षतो लोकमात्र' प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्त भवयाव न्न प्रतिपतति क्षायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कइ विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्त्रयस्त्रिंशत्तम म्पदमन्यूनमध्येय मिति अनन्तर मुपयोगविशेषः क्षायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

विहेणंञ्नंतेउंही पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । ञवपच्चइयखउंवसमिएय । एवं सव्वंउहिपदं ञाणियव्वं ।

ने होय । एहथी विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह बिहुहोय । वीजा सर्वने देशावधि होय । केवलज्ञान ढूंकडोहोय तिवारे सर्वावधि होय । ओहिस्स वुड्ढिहाणित्ति । अवधिनी वृद्धि अने हानि कहिवी । तिर्यंचने मनुष्यने हीयमान होय वर्द्धमान पिण होय । देवता नारकीने अवस्थित होय घटे न वधे । वर्द्धमान ते अंगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणूं घणूं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उत्कृष्टो लोकमात्र देखे । अलोकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूछेछे हेभदंत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कह्यो । गौतम बेप्रकारें कह्यो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नारकीने पोताना भवने विषे उपजे जिहांथीमरखे तिहांलगी रहे । बीजो क्षायोपशमिक ते अनंतानुवंधी कषायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने होय । एम सर्वअवधिनोपद पन्नवणासूत्रथकी कहिवो । हिवे उपयोगविशेषक्षायोपशमिक जीवपर्यायकह्यो । हिवे तेहीजऔदयिकवेदनालक्षणकहेछे । शीता

दनालक्षणोभिधीयते॥ सीयाइत्यादि द्वारगाथा तत्रसीयायत्ति चशब्दोनुक्तसमुच्चये तेन त्रिविधा वेदना शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयंति नारका: शेषास्त्रिविधामपि दव्वत्ति उपलक्षणत्वा चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातक्षेत्रसम्बन्धात् क्षेत्रवेदना नारकाद्यायु: कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनीयकर्म्मोदया द्भाववेदना तत्र नारकादयो वैमानिकान्ता चतुर्विधामपि वेदनां वेदयन्तीति तथा सारीरत्ति त्रिधा वेदना शारीरी मानसी शारीरमानसीच तत्र सन्निपचेंद्रिया: सर्वं त्रिविधामपि इतरेतु शारीरीमेवेति तथा सायत्ति त्रिधावेदना साताअसाता सातासाताचेति तत्र सर्वेजीवा: त्रिविधामपि वेदयन्तीति तहवेयणाभवेदुक्खत्ति त्रिविधावेदना सुखा दु:खा सुखदु:खाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

सीयायदव्वसारीर सायातहवेयणाभवेदुक्खं। अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाएचेवअणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

दिकवेदना तीन प्रकारें शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे। दव्वत्ति द्रव्यादिकभेदें चारप्रकारें। तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंध थकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातक्षेत्र संबंधथकी क्षेत्रवेदना २ नारकादिआयुकाल सबधथकीकालवेदना ३ वेदनीयनामकर्मनाउदयथकी भाववेदना ४ तिहां नारकादि वैमानिकांतलगें चिंहुं प्रकारनी वेदनावेदे। तथासारीरत्ति। तीनप्रकारेंवेदना शारीरी मानसी शारीरमानसी। इहांसंज्ञी पंचेंद्रिय त्रिणवेदनावेदे। बीजासगलाशारीरी वेदनावेदे। तथासायत्ति। तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव त्रीहुं प्रकारे वेदनावेदे। वेयणाभवेदु:खति। त्रिप्रकारनीवेदना। सुखा दु:खा सुखदु:खा। सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे। साता असातामांहि अने सुखदु:खमांहिस्यूंविशेष।

लेश्याप्ररूपणायाह कइणभंते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनाया' सप्तदशं षडुद्देशकं लेश्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिगहुत्वा दर्थतोपि न लिखितमि ति ततएवा वधारणीय मिति अनन्तर लेश्या उक्ताः सालेश्याएवचाहारयती त्याहारप्ररूपणाय अणतरायेत्यादि द्वारश्लोकमाह तत्र अणंतराय आहारे त्ति अनन्तराश्चाव्यवधानाश्चाहारविषये अनतराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थः तथा हारस्याभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच याच्या तथा पुद्गला न जा नत्येव एवकारा न्न पश्यतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्वाश्च वाच्यमिति तनाद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनतराहारएत्ति उपपातक्षेत्रप्रा प्तिसमय एवा हारयतीत्यर्थः ततोनिव्वत्तणयाएइति ततः शरीरनिर्वृत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति ततःपर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समन्ता त्पानमित्यर्थः ततोपरिणा

कतिणंभंतेलेसाउ प० गोयमाछलेसाउ प० त० । किण्हा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदंभा णियव्वं । अणतरायआहारे आहाराभोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अज्झवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ याणं भंते अणंतराहारा तउनिव्वत्तणया तउपरियाइयणया तउपरिणामणया तउपरियारणया तउपच्छा

हेभदंत केतला प्रकारनी लेश्याकही। गौतम ६ प्रकारनी कही। तेकहेछे। कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शु क्ललेश्या ६ एम लेश्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो। हिवे आहारनो अधिकार पूछेछे। जीव आंतरा रहित आहार करेछे। आंतरे आंतरे तथा आहारनो आभोगपणो जाणीने ले तेआभोग। बीजो अनाभोग। आहारना पुद्गलने जाणके नजाणे। अध्यवसाय मनना परिणाम। तथा सम्यक्त्व। ए ह ५ पदकहिवा। नारकी जीव अनतर आहार करेछे। उपजियाने क्षेत्रे जई जपनो तेणे समये करे। तिवारे पछे शरीरनीपजावे। तिवारे पछे आ

मयन्ति तत'शब्दादिविषयोपभोगद्व्यर्थः ततोपश्चाविउव्वणयन्ति ततःपश्चाद्विक्रिया नानारूपाद्व्यर्थः हन्तागोतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषा मप्येन्द्रिया
णां वक्तव्य नवर देवाना पूर्वंम्विकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पश्चाद्विकुर्व्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव मग्रे निर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवो
नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनोयेति एवमाहारपदं भाणियव्वति यथा दाहारस्थप्रश उक्त स्तथा तदुत्तरशेषद्वाराणिच भणद्भिः प्रज्ञापनाया श्चतुस्त्रिंशत्तम
म्परिचारणापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति प्रज्ञापनाहारविचारप्रधानतया आहारपदसुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाद्व्यन्ति एतस्यचि
वरण नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापीति निर्वचन मेव सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिवर्त्तित एवेति
तथापोग्गलानेवजाणतित्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषा नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमा
हारत्वात् तेषा मेव मसुरादय स्त्रीन्द्रियांताः कागमेकेन्द्रिया अनाभोगाहारत्वा द्विचोन्द्रियाश्च मत्यज्ञानित्वा अजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति
चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहार नजानन्ति चक्षुषानुपश्यति तथा तथा लोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यतीति व्यपदिश्यते च
क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च केचिज्जानति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहार प्रक्षेपाहारश्च जानत्यवधिना नपश्यति चक्षुषा तथा
अन्ये न जानति तत्र नजानति प्रक्षेपाहार मत्यज्ञानित्वा त्पश्यति चक्षुषा तथा अन्ये नजानंति नपश्यन्ति लोमाहार निरतिशयत्वादिति व्यंतरज्योति
ष्का नारकवत् वैमानिकास्तु ये सम्यग्दृष्टय स्ते जानति विशिष्टावधित्वात् पश्यतीचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष
ज्ञानयो स्तेषा मस्पष्टत्वादिति तथाअज्झवसाणेयत्ति द्वार नारकादीना मशस्ता प्रशस्ताश्चासंख्येयान्यध्यवसायानीति तथा समत्तेत्ति द्वार तत्र नारका. किं
सम्यक्त्वाभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिन. सम्यग्मिथ्यात्वाभिगमिनयेति त्रिविधा अप्येवं सर्वेपि नवर मेकेन्द्रियाः मिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहारग्रह

पणा कृता ह्यारस्यायुर्बन्धवता मेव भवतीत्यायुर्बन्धप्ररूप णायाह्न कइविहेत्यादि तत्रायुषो बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषेकश्चप्रतिसमय म्बहुहीनहीनतरस्य द लिकस्या नुभवनार्थ रचना निधत्तमपीह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्ता मनुभवनार्थं वह्वल्पाल्पतरक्रमेण व्यवस्थापितमायु र्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थं ज्ञात्यादिनामकर्म्मणायु र्विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या दिनामकर्म्मणा मुदयो भवति नारकादिभवोपग्राहकं चायुरेव यस्मा द्वाख्या प्रज्ञप्त्यामुक्त नेरइएणभंतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तंभवति नारकायुः प्रथमसमयसवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेंद्रिय जात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तल्लक्षण नामकर्म्म तेनसह निषिक्तमायु र्गतिनामनिषिक्तायुः तथा ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्थातव्यं तेन भावेनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्म्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्वणया हंतागोयमाएवञ्चाहारपदंनाणियव्वं । कइविहेणं भंते आउगबंधेपन्नत्ते गोयमाछव्विहे पन्नत्ते

हारलोधोहोय तेशरीरने विषे परिणमावे। तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा। तिवारपछे विकुर्वणा करे। एहवो प्रश्न पूछ्यापछे भगवत कहेछे। एमहीज हेगौतम जिमतूकहेछे तिमजछे। इहां पन्नवणानो चोवीसमो आहार पद भणिवो। केतले प्रकारे हेपूज्य अउखानोबंध कह्यो। हेगौतम ६ प्र कारे। तेकहेछे। जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १। एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे थाप्यो वाध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २। एम आउखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकारी जे स्थि

चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेद स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायु' स्थितिनामनिधत्तायुरिति पएसनामनिधत्तायुएत्ति प्रदेशाना मामितपरिणामाना मायुः कर्म दलिकाना नामः परिणामोदयः तथात्मप्रदेशेषु सम्बन्धन स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्मणा स्वा यत्प्रदेशरूपं नामकर्म तत्प्रदेशनाम तेन सह निधत्तमायु. प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्ताउएत्ति अनुभाग आयुः कर्मद्रव्याणा तीव्रादिभेदोरसः सएव तस्य वा नामः परिणामो नुभागनाम अथवा गत्यादीनानामकर्मणा मनुभागवन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिध त्तायुएत्ति अवगाहते जोवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविध तत्कारण कर्माप्यवगाहना तद्रूपनामकर्मा वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि सष्ट अनन्तरमायुर्बन्धउक्तो ऽधुनावद्धायुषा नारकादिगतिपूपपातो भवतौति तद्विरहकालप्ररूपणायाह

तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आऊखानादलनो परिमाण तेहने साथे बांध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक भेदे जेरस तेअनुभाग तेहने साथे वाध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहा तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य केतले प्रकारे आऊखानो वध कहिवो । हे गोतम ६ प्रकारे नारकीनो आऊखानो बध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना म निहत्तायु ५ । जिहालगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदजीवे ६ । एम २४ दडके ६ भेदे आऊखानो बध कहियो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

निरयगतीणमित्यादि कंठ्यं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा मासोयदोयचउ रो छम्मासाविरहकालो उप्पत्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवकारणा च तिर्यग्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता उक्ता. तन्मध्ये उत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु शमान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वट्टणेत्ति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्तो विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूद

निहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणभंते कइविहे आउगवंधे पन्नत्ते गोयमा छव्विहे पन्नत्ते । तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामओगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगईणं भंते केवइयकाल विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं वारसमुहुत्ते । एवतिरियग इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिज्झयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए

हिवे उपपात विरह च्यवन विरह आश्री प्रश्न करेछे। नरक गतिमांहि हे पूज्य केतलो उपपात विरह। हे गौतम नारकीनो जघन्य उपपात विरह १ समय एक नारकीनें उपनापछी बीजो१ समयने आंतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कह्योछे यदाह। चोवीसायमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा । मासोयदोयचउरो छम्मासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोही पिण सामान्यगति अपेक्षाये १२ मुहूर्त्त कह्या। उत्कृष्टपणे १२ मुहूर्त्त जाणवा। एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो। हिवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सीझवो कह्यो। हेगौतम जघन्य १ समये १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरथी उपजे। उत्कृष्ट ६ मासनो विरह। एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह। एक चव्यां पछे

र्त्तं नैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा त्तेषामिति इमीसेणरयणप्पभाएपुढवीए नेरइयाकेवइयंकालविरहियाउववाएणं पणत्ता एवंउववायदंडओभाणियव्वोत्ति सचा
य गोयमा जहण्णेणएक्कसमय उक्कोसेणचउवीसमुहुत्ताइ अनेनाभिलापेन शेषावाच्याः तथाहि सक्करप्पभाए उक्कोसेणसत्तराइंदियाणि वालुयप्पभाए अद्धमास
पकप्पभाएमास धूमप्पभाए दोमासा तमप्पभाए चउरोमासा अहेसत्तमाएछमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवजावथणियकुमारा पुढविकाइया अवि
रहियाउववाएण एवसेसावि बेइंदिया अंतोमुहुत्त एवतेइंदियचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख जोणियाविगब्भवक्कतियतिरियमणुयाय बारसमुहुत्ता
समुच्छिमणुस्सा चउवीसाइंमुहुत्ताविरहिआ उववाएण वतरजोइसियाचउवीस मुहुत्ताइ एव सोहम्मीसाणेवि सणकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं
देबारसदिवसाइ दसमुहुत्ता बभलोए अद्धतेवीसराइंदियाइ लतएपणयालीस महासुक्केअसीइं सहस्सारेदिणसय आणएसखेज्जामासा एवंपाणएवि आरणे
सखेज्जावासा एवअच्चुएवि गेवेज्जपत्थडेसुतिसुकमेणसखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं वाससयसहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जकाल सव्वट्ठसिद्धे पलिओवम
स्सासखेज्जइभागति एवउव्वट्टणाइ ति उपपातउद्वर्त्तनाचायुर्बंधेएव भवती त्यायुर्बंन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि कण्ठ्य नवरं आकर्षोनाम कर्म्मपुद्गलोपा

क्कं समय उक्कोसेणं छम्मासे एवंसिद्धिवज्जा उवट्टणा । इमीसेणं ञतेरयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं

बीजोचवे । पिण सिद्धने उद्वर्त्तना चवन नथी सिद्धथकी निकलवो नथी । हिवे रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी आश्री पूछेछे । हेपूज्य एणीये रत्नप्रभाने वि
षे केतलो नारकीनो उपपात विरह । जिम ओघवचने पूर्वं कह्यो तिमज कहिवो । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंडकनो टीका तथा अ
र्थातर थकी जाणिवो । रत्नप्रभाने विषे जिम उपपात विरह तिम इहां पणि कहिवो । चवन विरह पिण कहिवो । हेपूज्य नारकी जातिनाम निद्दत्तायु

दानं यथा गौ पानीयम्पिवती भयेन पुनःपुनः आह्वंहति एवज्जीवोपि तीव्रेणायुर्बन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति मन्देनद्वाभ्यामाक र्षाभ्याम्मन्दतरेणत्रिभिर्म्मंदतमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेव शेषाख्यपि आउगणित्ति गतिनामनिधत्तायुरादीनिवाच्यानिया वद्वैमानिकादृति अयच्चैकाद्याकर्ष नियमोजात्यादिना कर्म्मणामायुर्बन्धकालएवबध्यमानाना नशेषकालमायुर्बन्धपरिसमाप्तेरुत्तरकालमपि बन्धोरस्त्येवैषां ध्रुवबन्धिनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतीना प्रतिसमयमेवबन्धनिवृत्तिर्भवत्येतासुपरावृत्त्याबध्यन्तइति अनन्तरज्जीवानामायुर्बन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव सहननसस्थानवेदप्रकारानाह कइविहेणमित्यादि दण्डकत्रय कव्यम् नवरं संहनन मस्थिबन्धविशेषः मर्क्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयो रस्थि नाराच ऋषभस्तु

कालं विरहिया उववाएणं । एवं उववायदण्डगाणियव्वो । उव्वट्टणादंडगय । नेरइयाणं भंते जातिनामनि हत्ताउगं कतिआगरिसेहिं पगरति सिय १ सिय २ ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । सियअट्ठेहिं णोचेवणंनव

करेछे । आकर्षं करी कर्मपुद्गलनो अंगीकार करिवो जिम गाय पाणी पीतीथकी भयेकरी वलीवली हिसारी करी पीवे तिम जीवपणि तीव्र आयुवंधाध्य वसायेंकरी १ वेला जातिनाम निहत्तायु करे । स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसायें जातिनाम निहत्तायु करे तो वेआकर्षेंकरे । मदतरे करेतो त्रिहुयें करे । एम चिहुंये। पांचे । छये । साते । आठें करे । णवत्ति शेष थाकता २३ दण्डकनाजीवना नारकीनी परे आकर्ष कहिवा जिहांलगे वैमानिक देवता आवे । हिवे पूर्वं आयुबध कह्यो तेसंघयणना धणीने होय तेमाटे संघयण कहेछे । केतले प्रकारे हेभदंत संघयण कह्यो । हेगौतम ६ भेदे संघयणअस्थिबंधविशेष कह्यो । तेकहेछे । मर्कटनेठामे बिहुपासे हाडते नाराच कहिये । ऋषभते पाटो वज्रते कीलिका एत्रिणवाना जिहां होय तेवज्र ऋषभनाराचसंघयण कहिये १ ।

पट्ट वज्र कीलिका वज्रञ्च ऋषभश्च नाराचश्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तं प्रथमो स्थिवन्ध: मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्विती
य: मर्कटयुक्तस्तृतीय: मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्ध चतुर्थं अङ्गुलिद्वयसयुक्तस्य मध्य कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासहनन मध्यम यत्रा
स्थीनि चर्म्मणा निकाचितानि केवल न्तत्सेवार्त्त स्नेहपानादीना नित्यपरिशीलनासेवा तया ऋत प्राप्त सेवार्त्तमितिषष्ट छण्हंसंघयणाणअसघयणेत्ति उक्तरू
पाणा मध्या सहननानामन्यतमस्याप्यभावेन सहनिनो ऽस्थिसचयरहिता अतएवाह नेवट्ठी नेवछिरा नेवणहारु ॥

नेवस्नायूनीति कृत्वा सहननाभाव: तत्सहितानाहि प्रचुरमपि दु:खञबाधाविधायिस्यात् नारकास्त्वत्यत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसचया भावे शरीर

हंति एवं सेसाणविछाणेगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं भंते सघयणे पन्नत्ते । गोयमा छ
व्विहे पन्नत्ते । तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे
कीलियासंघयणे छेवठसंघयणे । नेरइयाणं भंते किंसघयणी । गोयमा छण्हंसघयणाणअसघयणी । णेव

वीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २ । त्रीजो नाराच सघयण मर्कट सहित ३ । चउथो अर्द्धनाराच एकपासे मर्कटबध वीजेपासेकीली ४ ।
पाचमो कीलिका अंगुलबेने सयुक्तने माहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कोलिका सघयण ५ । सवर्त्त तेजिहा हाडिकाचर्मवींटी छे घृत तैलना सेचेंकरी
पाम्यो ते सेवार्त्त सघयण ६ । हिवें नारकी आश्री सघयण पूछेछे । हे भगवत नारकीमाहि के सघयण पामिये । हे गौतम पूर्वोक्तछहुमाहि १ रुनपामिये
हाडनही नाडीनही मोटीनशानथी जेनारकीना पुद्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकात अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनादेय अशुभ प्रकृतिथीअसुदर अमनोज्ञ

नोपपद्यते स्तम्भवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपोग्गलेत्यादि येपुद्गला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवैषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अप्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया चिन्तयापि तेएवम्भूताः पुद्गला स्तेषा नारकाणां असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कइविहेसंठाणेत्यादि तत्र मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच यस्मिन् शरीरसस्थाने तत्समचतुरस्र सस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसंवादिनो ऽधस्तु तदनुरूपयत्तद्भवति तन्यग्रोध सस्थानं तथा नाभितोऽधः सर्वावयवा श्चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदनुरूप नभवति तत्सादिसस्थान तथाग्रीवाहस्तपादा श्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता यत्र संचिप्त म्विक्षतश्च मध्ये कोष्ट तत्कुब्जं सस्थान न्तथा यल्लक्षणयुक्तकोष्टं चतुरस्रलक्षणोपेतं ग्रीवाद्यवयवहस्तपादश्च तद्वामन न्तथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा

णेवच्छिरा णेवएहाऊ जेपोग्गलाअणिठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुस्सा अमणामा तेतेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं किंसंघयणा पन्नत्ता । गोयमा छएहंसंघयणाणं असंघयणी णेवठी णेवच्छिरा णेवएहाऊ जेपोग्गला इठा कंता पिया मणुस्सा मणाभिरामा तेतेसिं असंघयण

अमनोरम । तेह नारकीने असघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसचयरहित शरीर परिणामे परिणमे। हेपूज्य असुर कुमार कोण सघयणे कह्या । हे गौतम ६ सवयण मांहि असघयणी हाडनथी शिरानथी छोटीनशनथी वडीनशनथी असुर कुमारना जेह पुद्गल पदार्थ छे तेह इष्ट वल्लभ छे कांतकमनीय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असघयणपणें परिणमे। एम नागकुमार थकी माडी जिहांलगे स्तनितकुमार दशमीनिकाय तिहांलगे असघय

त्ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्नत्ता। गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं छेवठ संघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्साणं छव्विहे संघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणियाय । कइविहेणं भंते संठाणे पन्नत्ते । गोयमा छव्विहे संठाणे प० तं० । समचउरसे १ णिग्गोहे २ साइए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ हुंडे ६ । णेरइयाणं भंते किंसठाणी प० । गोयमा हुंडसंठाणी प० । असुर

णी कहिवा। हिवे पृथिवी आश्रीपूछेछे। हेपूज्य पृथिवीनो कोण सघयण हेगौतम छेवठो सघयण । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्च्छिम पचेंद्रिय तिर्यंच योनिया जीव सर्व छेवठे सघयणे कहिवा। गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यंचना ६ सघयण। समूर्च्छिम मनुष्यनो छेवठो सघयण। गर्भजना छह संघयण जाणिवा जिम असुर कुमार असघयणी कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिवे सस्थान आश्री पूछेछे। हेभदंत सस्थान केतलाछे। हे गौतम सस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो। तेकहेछे। मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानही अगोपाग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १ तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमाठो होय ते न्यग्रोध परिमडल २। तथा नाभिथकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय नाभि ऊपर मांठोहोय ते सादिसस्थान ३। तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्रहोय मध्यकोठो सचिप्त होय नानूंहोय ते कुब्ज सस्थान ४। तथा लक्षणोपेत कोठोहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसस्थान ५। तथा हस्त पादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होय तेहुंडकसस्थान ६। नारकीनो

बहुप्राया प्रमाणविसम्वादिनश्च तद्हुण्डमित्युच्यते कइविहेवेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्कामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेच ।

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूरियसंठाणा प० । आउथिवुयसंठाणा पन्नत्ता। तेउसूइकलावसंठाणा पन्नत्ता । वाऊपडागसंठाणे पन्नत्ते । वणस्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता । बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पंचेंदियतिरिक्खाहुंडसंठाणा प० गब्भवक्कंतियाछव्विहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सहुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता । गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहासंठाणा पन्नत्ता । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । कइविहेणं भंतेवेए प० । गो

हे पूज्य कोण संठाणकह्यो । हेगौतम हुंड संस्थान कह्यो । असुर कुमार देवता समचउरंस संस्थान संस्थित कह्या । जिहां लगे दशमी निकायना स्तनित कुमार आवे । पृथिवी मसूर धान्य ने संस्थाने संस्थित कही । पांणीनो संस्थान पाणीनोपपोटो कह्यो । अग्निनो संस्थान सूचीकलाप- सूईना समूहने संस्थानेकह्यो । वायुनो पताका संस्थान कह्यो । वनस्पती अनेक प्रकारे संस्थितकही । बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पचेंद्री तिर्यंचनो हुंड संस्थान कह्यो । गर्भज तिर्यंच ६ संस्थान संस्थित कह्या । समूर्च्छिम मनुष्यनो हुंड संस्थान । गर्भजमनुष्य ६ संस्थान संस्थित कह्या । जिम असुर कुमार समचउरंस संस्थान संस्थित कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा । हे भदंत वेद कोतले प्रकारे कह्या । गौतम ३ प्रकारे कह्या । ते कहेछे ।

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह। तेणमित्यादि इह णकारौ वाक्यालङ्कारार्थौ वत ख्ले इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कप्पस समोसरण नेयव्वति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेए प० । इत्थीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए । नेरइयाणं भंते किंइत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसग वेया प० । गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प०। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिस न पुंसगवेया । गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया । जावथणियकुमारा । पुढवीआऊतेउवाऊवणस्स ई बितिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा । गब्भवक्कंतियमणुस्सा पचिंदिय तिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । तेण कालेणं तेणं समएण कप्पस्ससमोसर

स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुसकवेद ३ । नारकीनो हे भदंत स्यूं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किवा नपुसकवेद । हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुस कवेदहोय । असुर कुमारने हे पूज्य किस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद होय । गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय । एम जिहां लगे स्तनि तकुमार आवे तिहालगी कहिवो । पृथ्व आऊ तेज वायू वनस्पत वेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पचेंद्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंस कवेद । गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी । जिम असुर कुमारमांहि पुरुषी बेवेद कह्या तिम वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक माहि कहिवा । तेणे का ले चउथे आरे तेणें समयें जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमे अनुयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी । वाचनातरे

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणे त्यभिहितं कियद्दूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधरः प
क्षमः सुधर्म्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थः वोच्छिन्नत्ति सिद्धाइति तथाहि परिनिव्वुयागणहरा जीवन्ते नायएनजणाओ
इ दभूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वएवीरेत्ति अयञ्च समवसरणनायकः कुलकरवंशोत्पन्नो महापुरुषश्चेति कुलकराणा म्वरपुरुषाणाञ्च वक्तव्यतामाह जंबुद्दीवेत्यादि
सुगमं नवरं म्प्रढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमचउत्थमभिचंदे तत्तोयपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चंदजसचंदकन्ता सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय

णं णेयव्वं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी
ए सत्तकुलगराहोत्था तं०। मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयंपभे विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥
जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाए उसप्पिणीए दसकुलगराहोत्था तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत
सेणय कज्जसेणेभीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्पोक्त मे जेकह्योछे स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व कहिवो जिहांलगे पाचमो गणधर सुधर्मास्वामी सतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या
दिके युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपत्ति रहित हुया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्सर्प्पिणीयें सात कुलकर हुया ।
मित्रदाम १ । सुपार्श्व २ । सुदाम ३ । स्वयप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ । सातमो । १ । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई
अवसर्प्पिणीयें १० । कुलकर हुया । स्वयंजल १ । प्रतायु २ । अजितसेन ३ । अनतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दढरथ ८ । दृशर

सिरिकतामरुदेवी कुलगरपत्तीणनामाइंति ॥ २ ॥ तथा नाभीयजियसत्तूय जियारीसंबरेद्दय मेहेधरेपइट्ठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्ह वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणिय ॥ ४ ॥ सूरेसुदसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजयेय रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्तिएत्ति ॥ ५ ॥

से उसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोत्था तंजहा । पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमंचउत्थमभिचंदे । ततोपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीय ॥ ३ ॥ एतेसिणं सत्तण्हंकुलगराणं सत्तभारिआहोत्था तंजहा । चंदजस चंदकता सरूवपडिरूवचक्खुकंताय । सिरिकतामरुदेवी कुलगरपत्तीणणामाइं ॥ ४ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहे वासे इमीसेणं उसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा । णाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरे विय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिये । कयवम्मासीहसेणे

थ ९ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीयें सात कुलकर थया । ते कहेछे । पहिला विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । यशो मान् ३ ।चउथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनो ७ स्त्री थई । तेकहेछे ।चंद्रयसा १ । चद्रकाता २ । सुरूपा प्रतिरूपा ४ । चक्षुष्कांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरानी स्त्रीनानाम जाणिवा ॥ ४ ॥ जबूद्वीप सबधी भरत् क्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवस र्प्पणीयें चौवीस तीर्थंकरांना पिता थया तेकहेछे । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितारि ३ । संवर ४ । मेघ ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन चत्रिय ८ ३ ॥ ५ ॥ सुग्रीव ९ । दृढरथ १० । विष्णु ११ । वसुपूज्य १२ । कृतवर्म्मा १३ । सिंहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सूर १७ सुदर्शन १८ । कुंभ १९ । सु

तथा मरुदेविविजयसेणा सिद्धत्थामंगलासुसीमाय पुहवीलखणारामा नंदाविग्रहजयासाना ॥ ६ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरिआदेवीपभावईपउमा वप्पासिवा

ज्ञाणूयविस्ससेणय ॥ ६ ॥ सूरेसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजएय । रायायअस्ससेणेय सिद्धत्थेखत्तियखत्ति
ए॥ ७॥ उदितोदियकुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । एएपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥
जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए चउवीसंतित्थगराणं मायरोहोत्था तं० । मरुदेवि विजयसेणा
सिद्धत्थामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणारामा नंदाविग्रहूजयासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरियादेवी
पभावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलादेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्दीवेभारहेवासे चउवीसंतित्थग

मित्र २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअश्वसेन २३ । सिद्धार्थ क्षत्रिय २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहवा हुवा उदय प्राप्त घणूं मोटोवंश तेहना विशुद्ध महा निर्दोष वंशछे जेहना । राजानागुणेकरी सहितछे । तीर्थ धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक तीर्थंकर जिनवीतरागना पिता कह्या ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे एणी अवसर्प्पिणी यें २४ तीर्थंकरानी माताथई । तेकहेछे । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्था ४ । सुमगला ५ । सुसीमा ६ । पृथिवी ७ । लक्ष्मणा ८ । रामा ९ । नंदा १० । विष्णु ११ । जया १२ । श्यामा १३ । सुयसा १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । श्री १७ । देवी १८ । प्रभावती १९ । पद्मावती २० । वप्रा २१ । शिवा २२ । वामा २३। त्रिशला । २४ । एह जिनमाता २४ कही ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरतक्षेत्रे एणीये अवसर्प्पिणीये चौबीस तीर्थंकर देवहुया । ते कहेछे । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सु

राहोत्था तंजहा । उसन्नअजियसंभव अभिणंदणसुमइ पउमप्पभसुपास चंदप्पभ सुविहिपुप्फदंतसीयल सिज्जंसवासुपुज्जा विमलअणत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवद्धमाणोय । एएसिंचउवीसाएतित्थगराण चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तजहा । पढमेत्थवइरणाभे विमलेतहविमलवाहणे चेव । तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरबाहूतहदीह । बाहूजुगबाहूलट्ठबाहूय । दिन्नेयइंददत्ते । सुदरमाहिंदरेचेव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे । रुप्पीअसुदसणेयबोधव्वा । तत्तोयनंदणेखलु । सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे । सुदसणेनदणेयबोधव्वे । इमीसेउसप्पिणीए एएतित्थि

विधि वीजोनाम पुष्पदंत ९ । शीतल १० । श्रेयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल । अनत १४ । धर्म १५ । शाति १६ । कुथु १७ । अर १८ । मल्लि १९ मुनि सुव्रत २० । नमि २१ । नेमि २२ । पार्श्व २३ । वर्द्धमान २४ । एह २४ तीर्थंकरना पूर्व भवनानामधेय एतले । जेणे भवें तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्यो । तेह भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयो । तेकहेछे । प्रथम आदिनाथनो जीव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तथयो तिहां २० स्थानक आराधीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथी सर्वार्थ सिद्ध पहुता तिहाथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थंकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४ कहेछे । पहिलो वज्रनाभ १ । विमल २ । तथा विमलवाहन ३ । ततः धर्मसिंह ४ । सुमित्र ५ । धर्ममित्र ६ । सुदरबाहु ७ । तथादीर्घबाहु ८ । युगबाहु ९ लब्धबाहु १० । दिन्न ११ । इन्द्रदत्त १२ । सुदर १३ । माहेंद्र १४ । सिंहरथ १५ मेघरथ १६ । रूपी १७ । सुदसण १८ । ततः नदन १९ । सिंहगिरी २० ।

यवामा तिसलादेवीयजिणमायत्ति सव्वोउगसुभाएछायाएत्ति सर्वर्त्तुकया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदया छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति

कराणंतुपुव्वन्नवा । एएसिंचउव्वीसाएतित्थकराणं चउव्वीससीयाउहोत्था तजहा । सीयायसुदंसणासुप्प भाय सिद्धत्थसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयंती जयतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पभचंदप्पभ। सूरप्पहअग्गि सप्पभाचेव । विमलायपंचवन्ना । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अभयंकरानिव्वुइकरी । मणोरमामणोह राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचंदप्पभातीय ॥ १६ ॥ एआउसीआउ । सव्वेसिचेवजिणवरिंदाणं । सव्व जगवच्छलाणं । सव्वोउयसुखयछायाए । पुव्विउंखित्तामणु । स्सेहिसाहठरोमकूवेहि । पच्छावहंतिसीयं । अ

अदीनशत्रु २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नदन २४ । एह अनुक्रमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एणी अवसर्पिणीये तीर्थंकराना पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थं करानी २४ शिविका दीक्षानो पालखीछे । तेकहेछे। सुदर्शना १। सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ७ । अपराजिता ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयकरा १७ । निवृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिविकामाबेसीने दीक्षा लीधी तेदीक्षा शिविका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी असे जिनेंद्रनी । शिविका केहवीछे । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया युक्त आतापना रहित छे। तेह शिविका पहिले हर्षे करी रोमकूप जेहना खडा थया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिविका प्रते अमरेंद्र चमरा

शेष. तथा साहट्ठरोमकूवेहिंति साशिविका यस्यां जिनोध्यारूढः हृष्टरोमकूपैः रुद्धुषितरोमभि रित्यर्थ' तथा चलचवलकुंडलधरत्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्य तथा स्वच्छन्देन स्वरुचा विकुर्विंतानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरेंद्रादयइतियोगः गरुलत्ति गरुडध्वजाः सुपर्णकुमारा इत्यर्थः तथा सव्वेविएगदूसेण निग्गयाजिणवराचउव्वीस नयणामअन्नलिंगे नयगिहलिंगेकुलिंगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्त्रेणेंद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

सुरिदसुरिदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सच्छविकुव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदआणं । वहंति सीअंजिणंदाणं ॥ १९ ॥ पुरओवहंतिदेवा । नागापुणदाहिणम्मिपासम्मि । पच्छत्थिमेणअसुरा । गरुलापुण उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसभोअविणीयाए । वारवईएअरिट्ठवरणेमी । अवसेसातित्थयरा । निक्खंताजम्मभूमीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविएगदूसे । णणिग्गयाजिणवराचउव्वीस । णयणामअन्नलिंगे । णयगिहिलिंगेकुलिंगे

दिक सुरेंद्र सौधर्मादिक नागेंद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेंद्र केहवा छे चल हालता चपल जे कुंडल तेहना धरणहार छे । स्वच्छन्द आपणी रुचीये करी विकुर्व्या आभरण तेहना धरणहार छे । सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी वींव्या छे । एहवा थईने जिनेंद्रनी शिविकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगळि चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडी असुरेंद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार वली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आदिनाथे विनीता नगरीये दीक्षा लीधी । द्वारिकाये अरिष्टनेमीये दीक्षा लीधी अने जाया सौरीपुरे । शेष २२ तीर्थंकर जन्म भूमिये दीक्षा लीधी ॥ २१ ॥ सवलाई तीर्थंकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधो तेणे सहित नीकळ्या अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिंगे नही केवली तीर्थंकरने लिंगे कुलिंगी शाक्या

ष्क्रान्ता इत्यर्थः नवान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थंकरलिङ्गएवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एक्कोभगववीरो पासोमल्लीयतिहितिहिसएहिं भय वंपिवासुपुज्जो छहिंपुरिससएहिंनिक्खतो ॥ १ ॥ उग्गाणभोगाणं राइन्नाणचखत्तियाणच चउहिसहस्सेहिंउसभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्थनिच्च भत्तेण निग्गओवासुपुज्जजिणो चोत्थेणपुणपासो मल्लीवियअट्ठमेणसेसाओ ॥ ३ ॥ छट्ठेणति सुमति रत्र नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सम्वच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोभगवंवीरो । पासोमल्लीयतिहिँतिहिँसएहि । भगवंपिवासुपुज्जो । छहिँपुरिससएहिँनि क्खतो ॥ २३ ॥ उग्गाणंभोगाणं । राइन्नाणचखत्तियाणंच । चउसहस्सेहिँउसभो । सेसाउसहस्सपरिवारा ॥ १४ ॥ सुमइत्थणिच्चभत्ते । णणिग्गओवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमल्लीयअट्ठ । मेणसेसाउछट्ठेणं ॥ २५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणचउव्वीस पढमभिक्खादायारोहोत्था तंजहा । सिज्जंसबंभदत्ते सुरिंददत्तेयइं

दिक ने लिगे नहो ॥ ५ ॥ भगवत महावीर स्वामी एकला दीचा लोधी । पार्श्वनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीचा लोधी । १२ वासुपूज्य ६ से पुरुष साथे दीचा लोधी ॥ २३ ॥ उग्रवंशना भोगवंशना राजाना तथा मोटा चत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीचा लोधी । शेष १९ । तीर्थ कर १००० पुरुष साथे दीचा लोधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथ नित्यभक्ते दीचा लोधो । वासुपूज्ये चउत्थ भक्त १ उपवासे दीचा लोधी । पार्श्वनाथ मल्लिनाथ त्रि हु उपवासे दीचा लोधी । शेष २० तीर्थंकरे छट्ठ भक्त २ उपवासे दीचा लोधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिचा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयांश १ । आदिनाथने श्रेयांशे पारणूं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्द्रदत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

य भिक्खा लद्धाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंबीयदिवसे लद्धाओपढमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्खा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमन्नं अमिय

ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणव्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेच्च ॥ २७ ॥ अपराजियविस्ससेणे । वीसइमोहोइउसन्नसेणोय । दिन्नेव रदत्तधणे । बहुलोतहआणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एएविसुद्धलेसा । जिणवरभत्तीइपजलिउडाउ । तंकालंतंसमयं पडिलाभेईजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणभिक्खा । लद्धाउसभेणलोयणाहेण । सेसेहिंवीयदिवसे । लद्धाउ पढमभिक्खाउ ॥ ३० ॥ उसभस्सपढमभिक्खा । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमन्नं । अमियरस रसोवमंआसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिंपिजिणाण । जहियलद्धाउपढमभिक्खाउ । वहियवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ

पुष्पदन्त ९ । पुनर्वसु १० । नद ११ । सुनद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित १८ । विश्वसेन १९ । वीसमो ऋषभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेश्याना धणी जिनवरनी भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडी आगलिरह्या छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणीये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ परमेश्वरने १ वरसे भिचालीधी दीक्षानो पहिलो पारणूं थयो । शेषथाकता २३ तीर्थंकरने बीजेदिन पारणूंथयो । आदिनाथनो । इक्षुरसे करी शेष २३ ने खी रथी परमान्नथी पारणूंथयो तेह परमान्न अमृतरसनी उपमानूंछे ॥ ३१ ॥ सघलाई जिनने जिहां प्रथम भिचालीधी तिहां देवता साढे१२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

रसरसोवमआसि ॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुक्खेत्ति वज्रपीठहचा येषा मध' केवलान्युत्पन्नानीति वत्तीसाइ धणुयं गाहा निच्चोउगोत्ति नित्य सर्वदाऋतुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यर्तुकः असोगोत्ति अशोकाभिधानो य समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छन्नोसालरुक्खेणंति अवच्छन्नः शालवृचे

वच्छाउ ॥ ३२ ॥ एएसिंचउव्वीसाएतित्थगराणंचउव्वीसं चेइयरुक्खाहोत्था तजहा । णिग्गोहसत्तिवसेसा लेपियएपियंगुवत्ताए । सरिसेयणागरुक्खे । मालीयपिलुंकरुक्खेय ॥ ३३ ॥ तेदुलपाफलजंवू । आसत्थेखलुतहेवदहिवस्से । णंदीरुक्खेतिलए । अंवगरुक्खेअसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुक्खेयधायईरुक्खे सालेयवद्धमाणे । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइंधणुइं । चेइयरुक्खोयवद्धमाणस्स । णिच्चोउगो असोगो । उच्छन्नोसालरुक्खेणं ॥ ३६ ॥ तिन्नेवगाउआइं । चेइयरुक्खोजिणस्सउसभस्स । सेसाणंपुणरुक्खा

शरीर प्रमाणे उंचीकरी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृच पूज्यवृच जेहेठे केवलज्ञान ऊपनो ते कहेछे। आदिनाथने न्यग्रोध १ । वडना पेडनीचे केवलज्ञान ऊपनो एमअनुक्रमे २४ जगे कहिवो। सप्तपर्ण २। शालवृच ३ । प्रियालु ४ । प्रियगु ५ । छत्रवृच ६ । सरस ७ । नाग ८ । मालवी ९ । पीलुख १० । टीवरू ११ । पाडल १२ । जवू १३ । पीपल १४ । दधिपर्ण १५ । नदीवृच१६ । तिलक १७ । आम्बा १८ । अशोक १९ । चंपा २० । वकुल २१ । वेतस २२ । धातकीआवला २३ । शालिवृच २४ वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृच २४ जिनना कह्या ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाण चैत्यवृच जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांवेसी भगवतवर्द्धमानस्वामी व्याख्यान करे । नित्य वारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृच शालवृचें करी व्याप्त एतले अशोकवृचने ऊपर शालवृचछे । आदिनाथनो चैत्यवृच ३ कोस ऊंचो एतले

श्चैत्यत एववचना दृशोकस्योपरि शालवृचोपि कथ चिद्स्तीत्यवसीयत इति तिखेवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थ. सवेइयत्ति वेदिकायुक्ता एतेचाशोका. समवसरणसम्बन्धिन. सम्भाव्यन्तइति तद्दा भरहोसगरोमघव सणकुमारोयरायसद्दूलो सतोकुथूयअरोह वइसुभूमोयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमोय

सरीरत्त बारसगुणाउ ॥ ३७ ॥ सच्छत्तासपडागा । सवेइयातोरणेहिंउववेया । सुरअसुरगरुलमहिया । चे इयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एएसिचउव्वीसाए तित्थगराण चउव्वीसंपढमसीसाहोत्था तंजहा । पढमेत्थ उसभसेणे बीएपुणहोइसीहसेणेय । चारूयवज्जणाभे । चमरेतहसुव्वएविदब्भेय ॥ ३९ ॥ दिन्नेवाराहेपुणआ णंदेगोथुभेसुहम्मेय । मदरजसेअरिठे । चक्काउहसबकुंभअभिणयेय ॥ ४० ॥ इंदकुंभेयसुभे वरदत्तेदिन्नइं दभूईय ॥ उदितोदितकुलवसा विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाण । पढमासिस्साजिणवराणं ॥

तेह्वच ३ छत्र सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक सुपर्णादिकदेवें करी पूजितछे एहवा जिनेद्रना चैत्यह्वच जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य वडागणधरथया तेकहेछे । आदिनाथनो वडोशिष्य ऋषभसेन १ । सिंहसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । वीजोनाम प्रद्योतन ६ विदर्भ ७ ॥ ३९ ॥ दिन्न ८ । वाराह ९ । आनद वीजोनाम पद्मनदी १० । गोस्तूभ वीजोनाम क्वतार्थ ११ सुधर्मा वीजोनामसुभूम १२ । मदर १३ । यशोधर १४ अरिष्ट १५ चक्रायुध १६ । साम्ब १७ । कुभ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुभ वीजोनाम मल्ली २० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिन्न २३ । इन्द्रभूति २४

भगवतथी १२ गुणो जचोथयो शेष २३ तीर्थ करनाह्वच पोताना शरीरथी १२ गुणा कहिवा ॥ ३७ ॥

४१ ॥ एएसिणंचउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सणीहोत्था तंजहा । बंभीयफग्गुसामा । अजिया कासवीरईसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया भावयप्पायरक्खीय । बंधुमतीपुप्फवती । अज्जाअमिलायआहिया ॥ ४३ ॥ जक्खिणीपुप्फचूलाय चदण ज्जायआहिया ॥ उदितोदियकुलवंसागाहा । जंबूद्दीवेणं भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिपिय रोहोत्था तंजहा । उसभेसुमित्तविजए समुद्दविजएयअससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदसणेकत्तवीरिएचेव ॥ ४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । बंभेबारसमेउत्ते । पिउनामाचक्कवट्टिणं ॥ ४५ ॥ जंबूद्दीवे

एह २४ गणधर उदितोदित कुलवंशछे । इत्यादि पूर्वगाथा कहिवी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी बडी साध्वीथई तेकहेछे । ब्राह्मी १ । फलगुनी १ । श्यामा ३ । अजिता ४ । काश्यपी ५ । रती ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलसा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ । ॥ ४२ ॥ पद्मा १४ । शिवा १५ । श्रुति १६ । अजुका वीजोनाम दामिनी १७ । भाविताब्मा एहवी रचिता १८ । बंधुमती १९ । पुष्पवती २० । अमिला २१ । ४३ ॥ यचिणी २२ । पुष्पचूला २३ । चंदनवाला २४ ॥ एह साध्वी केहवी छे उदयप्राप्तवंशमे उपनी छे । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरत चेत्रे एणी वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्तिना पिताथया । ते कहेछे । भरतनो पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अश्वसेन ४ । विश्वसेन ५ । सूर ६ । सुदर्शन ७ । कार्त्तवीर्य ८ । पद्मोत्तर ९ । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्म १२ एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५

महापउमो हरिसेणोचेवरायसद्दूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय अग्गिसिह्रोयदसरहो न

ञ्जारहेवासे इमीसेन्नसप्पिणीए बारसचक्कवहिमायरोहोत्था तजहा । सुमंगलाजसवती ञ्जद्दासहदेवी ञ्चइरा सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीञ्चपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्दीवे० । बारसचक्कवट्टीहोत्था तंजहा । ञ्जरहे सगरेमघव । सणंकुमारोयरायसद्दूलो । संतीकुंथूयञ्चरो । हवइसुञ्जूमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउमो । हरिसेणोचेवरायसद्दूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंञ्जदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिंवारसरहंचक्कवट्टीणं बारसइत्थिरयणाहोत्था तजहा । पढमाहोइसुञ्जद्दा । ञ्जद्दसुणंदाजयायविजयाय । किएहसिरीसूरसिरी पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लत्थिमईकुरुमई इच्छीरयणाणणामाइं ॥ जंबूद्दीवे० नववलदेवनववासु

जम्बूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति मातायई ते कहेछे । सुमगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६ देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहली चुलणी १२ ॥ जम्बूद्वीप सबधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्त थया ते कहे छे भरत १ सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा माहि सिंह समान शातिनाथ ५ । कुथु ६ । अर ७ । सभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म। हरिषेन १०। जय ११ ब्रह्मदत्त १२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न थया ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुधरा ९ देवी १० ४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जम्बूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता थया

वमोभणिओयवसुदेवोत्ति ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेत्यादि दशाराणां वासुदेवाना मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवाना दशारमण्डलानीति पूर्वमुद्दिश्यापि दशारमण्डलव्यक्तिभूताना तेषा विशेषणार्थमाह त च्चथेत्यादि तद्यथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डणाइति तनदशाराणा वासुदेवकुलीनप्रजाना मंडना शोभाकारिणो दशारमण्ड ना उत्तमपुरुषाइति तोर्थंकरादीना चतु.पचाशत् उत्तमपुरुषाणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तीर्थंकरचक्रिणा प्रतिवासुदेवाना च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

देवापितरोहोत्था तंजहा । पयावईयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहासिरोय । अग्गिसिहोयदसरहो । नवमोभणि ओयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्दीवेणं० । णववासुदेवमायरोहोत्था तजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया यअम्बिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जबूद्दीवेणं ० । णवबलदेवमायरोहोत्था तजहा । भद्दातहसुभद्दाय । सुप्पभायसुदंसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ८ नवमोवसुदेव ९॥ १ ॥ जम्बूद्दीपना भरत ने विषे वर्त्तमान काले९ वासुदेवनी माता थई तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकई वीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे ९ बल देवनी माता कहेछे॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयती ६ जयती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह वलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥ जंबूद्दीपना भरतने विषे एणी अवसर्प्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मडल थया तेकहे छे। उत्तम

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् ओजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शारीरबलोपेतत्वात् यश स्विनः पराक्रम प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायंसित्ति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएव कान्ताः कान्तियोगात् सौम्या मरौद्राकारत्वात् सुभगा जनवल्लभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुष्यरूपत्वात् सुरूपा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभ सुख म्वा सुखकरत्वा च्छील स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्या. सर्वजननयनानाकान्ता अभिलाष्या येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः ओघबलाः प्रवाहबला' अ व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः शेषपुरुषबलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबला अनिहता निरुपक्रमायुष्कत्वा दुरोयुद्धेच भूम्यामपातित्वात् अपराजिता

वलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवदसारमंडलाहोत्था तजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा उयसी तेयसी वच्चसी जससी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगम सव्वजणणयणकंता उहवला अतिवला महावला अनिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते मांहि वर्त्ति ते माटे वली मध्यम पुरुष तीर्थंकर चक्रवर्त्ति तथा प्रतिवासुदेवनी अपेचाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त ओजस्वी मनो बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर थी वर्चस्वी शरीर सम्बधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कातिवान् रुद्रा कार नही सहुने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र सस्थाने सहुने सुखकारी सुखें सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कात देखिवा योग्य बल जेहनो तूटे नही अति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीये पराभव्या न जाय शत्रुनामर्द्दक रिपु सहस्रना माननें मथनहार नम्र

स्तैरेवशत्रूणा मपराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्वांछितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा त् अमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रबलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुलो कोमलप्रलापश्चा लापो हसितञ्च येषान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषशोकादिविकार मेघनादवद्वा मधुरं श्रवणसुखकर मतिपूर्ण मर्थप्रतीतिजनकं सत्य मवितथ म्वचन म्वाक्य येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लक्षणानि मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्क्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यंजनगुणो पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णायां द्रोण्यां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाण स्या त्तदा स पुरुषो मानप्राप्त

णुक्कोसा अमच्छरा अचपला अचंडा मियमंजुलपलावहसियगंभीरमधुरपडिपुस्ससच्चवयणा अब्भुवगय वच्छला सरस्सा । लक्खणवंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुस्ससुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

विषे दयावंत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करी धैर्यवान निष्कारण कोप रहित मित ते थोडी मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बोलवो अने हसिवो छे जेहनो वली गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सुखकारी प्रतिपूर्ण अर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो बिघटे नही एहवो छे वचन जेहनो तथा शरणाग तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेस्वस्तिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक द्रोण परिमाण शरीरनो उंच पणो उन्मान ते अर्द्ध भार परिमाणता प्रमाण ते अठोत्तर सो अंगुलनो ऊञ्च पणो तेणे मान १ उन्मान २ प्रमाणे २

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु च्छ्रय' मानोन्मानप्रमाणै' प्रतिपूर्णमन्यूनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दरं निखिलावयवप्रधानमगशरीर येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका रमरौद्रमवीभत्सम्वा कातदीप्त प्रियजनाना प्रमोदोत्पादक दर्शन रूप येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमस्रणाः प्रयोजनेष्वनलसाश्रमर्षणावा अपराधिष्वपि कृतक्षमाः प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आज्ञाविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोद्'साध्यसाधकत्वा द्दण्डप्रचारः सैन्यविचरण येषान्ते तथा गम्भीराश्चल क्ष्माणांतर्वृत्तित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्तत' पदद्वयस्य कर्म्मधारयः प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोवृत्तविशेषो ध्वजा येषान्ते तालध्वजाः वलदेवा उद्विद्धउच्छ्रितो गरुडलचितः केतु र्ध्वजो येषान्ते उद्विद्धगरुडकेतवो वासुदेवा. तालध्वजाश्च उद्विद्धगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विद्ध गरुडकेतवः महाधनुर्विकर्षकाः महाप्राणत्वात् महासत्वलचणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा न्महासत्वसागरा' दुर्द्धरा रणाङ्गणे तेषा प्रहरतां केना

तपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पयारा गंभीरदरसणिज्जा तालद्धउव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकट्टया

करी प्रतिपूर्ण अन्यून । गर्भाधानथकी रूडोविधिये करी भलो नीपनोछे सर्व शरीरावयवे करी सुंदर शरीर जेहनो । चंद्रमानि समान सौम्य अरुद्रछे तेजा कार कात दीप्तिवंत । प्रिय प्रमोत्पादक दर्शनछे जेहनो । कार्यने विषे आलसो नही अथवा अमर्ष रहित । प्रचंड दुःसाध्यने साधे एहवोछे दंडप्रचार सेनानो विचरवो जेहनो । गंभीरकल्योनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनो । तालवृच ध्वजाछे जेहने तेतालध्वज गरुडनो रूपछे ध्वजाने विषे ध्वजा ऊची करीछे जेणे । वलदेवने आगीतालध्वज होय वासुदेवने आगी गरुडध्वजहोय । तयामहाधनुपना खाचणहार । महासत्व लक्षण जलना

पि धन्विना धारयितु मशक्यत्वात् धनुर्धरा: कोदण्डप्रहरणा धीरेष्वेवैते पुरुषा: पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्ति स्तत्प्रधा ना: पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषा: विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्न वज्रन्तस्य महाप्राणतया विघटका अङ्गुष्ठतर्ज्जनीभ्या चूर्णका महारत्नविघटका वज्रंहि अधिकरण्या धृत्वा अयोघनेना स्फोट्यते नच भिद्यते तावेवभिनत्तीति दुर्भेद तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसङ्ग्राम यिषो र्म्महासैन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयति वियोजयति ये ते महारचनाविघटका: पाठान्तरेण तु महारणविघटका: अर्द्ध भरत स्वामिन: सौम्या नीरुज: राजकुलवंशतिलका: अजिता: अजितरथा: हलमुशलकणकपाणय: तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते बलदेवा येषान्तु कणकावाणा: पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवा: शङ्खश्च पाञ्चजन्याभिधान श्चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी सन्ना लकुटविशेष: श

महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अद्ध भरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाअजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा

समुद्र सरीखा समुद्र । रणागणे दुर्द्धर कोईथी वाखानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्तछे । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्ति तेणे करी प्रधान पुरुषछे वडाकु लना उपना । महारत्न वज्रने अगूठें करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खडना स्वामी । सौम्य अत्यत ठढा । राजकुलने वंशने विषे तिलकसमान अजितकेहथी जीप्या नथी । जेहनारथकेहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते वलदेव । अने कणककहीवाणछे हाथने विषे जेहने ते वासु देव । शख पाचजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल विशेष नदकनामा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजलो सु

क्तिश्च त्रिशूलविशेषो नन्दकश्च नन्दकाभिधानः खड्ग स्तान्धारयन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्ज्वलः शुक्लत्वात् स्व च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठातरे सुकृतसुपरिकर्म्मितत्वात् विमलो मलवर्ज्जितत्वात् गोथुभत्ति कौसुभाभिधानो यो मणिविशेष स्त तिरीडति किरीटच मुकुट धारयति येते तथा कुडलोद्योतिताननाः पुडरीकवन्नयने येषाते तथा एकावलो आभरणविशेषः सा कंठे ग्रीवायां लगिता विलंविता सती वक्षसि उरसिवर्त्तते येषाते एकावलीकंठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधान सुष्टुलाञ्छन महापुरुषत्वसूचक वक्षसि येषाते श्रीवत्सलाञ्छना वरयशस. सर्वत्र विख्यातत्वात् सर्वर्त्तुकानि सर्वर्त्तुसभवानि सुरभीणि सुगधीनि यानि कुसुमानि तै.सुरचिता कृता या प्रलवा आप्रपदीना शोभितत्ति शोभमाना काता कमनीया विकसती फुल्लती चित्रा पचवर्णा वरा प्रधाना माला स्रक् रचिता निहिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषान्ते सर्वर्त्तुकसुरभिकुसुमसुर चितप्रलवशोभमानकातविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तथाअष्टशतसख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चक्रादीनि तै' प्रशस्तानि म

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्थुभतिरीडधारी कुंडलउज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा। एकावलिकंठलइयवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमरचितपलंवसोभंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा। अट्ठ

कात निर्मल कौसुभ मणि विशेष अने मुकुट ने धारण करेछे। कुंडलनी प्रभाये करी उद्योतितछे मुख जेहनो । पुडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकंठे लगाडो विलंबितछे वक्षस्थलने विषे जेहने । श्रीवत्स नामा भलो लक्षणछे जेहने। वर प्रधानछे यश जेहनो। . सघली ऋतुना सुरभि सुगंध फूल तेणेकरी सुरचित कीधीछे प्रलंबायमानछे शोभायमान कात कमनीय विकसती पांचवर्ण नी प्रधान माला तेणेकरी

गल्यानि सुंदराणिचमनोहराणि विरचितानि विहितानि अंगमंगक्ति अंगोपांगानि शिरोंगुल्यादीनि येषान्ते अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुंदरविरचितांगोपां गाः तथा मत्तगजवरेन्द्रस्य योवल्लितोमनोहरो विक्रमः सचरणतद्वद्विलासिताः सजातविलासागतिर्गमन येषान्ते मत्तगजवरेन्द्रललितविक्रमविलासितगत यः तथा शरदिभवः शारदः सचासौ नव स्तनित रसित यस्मि न्निर्घोषे स नवस्तनित. सचेति समास. सचासौ मधुरो गम्भीरश्च यः क्रौंचनिर्घोषः पच्चि विशेषनिनाद स्तद्वदुन्दुभिस्वरवच्च स्वरो नादो येषाते शारदनवस्तनितमधुरगम्भीरक्रौंचनिर्घोषदुन्दुभिस्वराः इहच शरत्कालेहि क्रौंचा माद्यन्ति मधुरध्वन यश्च भवन्तीति शारदग्रहण तथा पोनःपुण्येन शब्दप्रवृत्तौ तद्रागादमनोज्ञता तस्यस्यादिति नवस्तनितग्रहणं स्वरूपोपदर्शनार्थं मधुरगभीरग्रहणमिति तथा कटीसूत्र माभरणविशेष स्तत्प्रधानानि नीलानि बलदेवाना पीतानि वासुदेवानां कौशेयकानि वस्त्रविशेषभूतानि वासांसि वसनानि येषांते कटीसूत्रकनो

सयविभत्तलक्खणपसत्थसुंदरविरइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई सारयनवथणियमहुरगं भीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा न

मंडितछे वक्षस्थल जेहनो। तथा १०८ प्रगटरूप जे लक्षण चक्रादिके करी प्रशस्त मगलकारी मनोहर कीधाछे सर्वे अंगोपांग जेहना । मदोन्मत्त गजेंद्रनो सुललित मनोहर चालनी तेहनो परे विलास सहितछे गती जेहनी। शरत्काल सम्बन्धी नवीन मेघनो जे गभीर शब्द तेहवो गभीरछे काठनो शब्द दुदुभी ना शब्द सरीखो मीठो क्रौंचपची शरत्काले मस्तहोय तेमाटे तेहना शब्द सरीखो गभीर स्वरछे जेहनो। कटिसूत्र कणदोर तेणेकरी सहितछे नीलापीला वस्त्र जेहना बलदेवना नीलावस्त्र वासुदेवना पीलावस्त्र। प्रधान दीप्तिवंत। मनुष्यमाहि विक्रम गुणे करी सिंह समान छे। नरपती छे। नरिन्द छे। नर

लपोतकोशेयवाससः प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरदीप्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा न्नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उ त्क्षिप्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्पा' देवराजोपमा अभ्यधिक शेषराजेभ्यः राजतेजोलक्ष्मा दीप्यमाना. नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणन नि गमनार्थं कथ तेनचेत्याह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासुदेव नववलदेवा इति तिविठ्ठ यावत्करणात् दुविठ्ठ सयभुपुरिसुत्तमेपुरिससीहे। तहपुरिसपुंडरीये दत्तेनारायणेकण्हेत्ति॥ १॥ अयलेविजयेभद्दे सुप्पभेयसुदसणे आनदेणदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेत्ति॥ २॥ कित्तीपुरिसोणति कोर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति मङ्ग रायकणगवत्थू साजयोपोयणवरायगिह कायदोकोसमो मिहिलपुरोहत्थिणपुरच तथा गामिजुएसगामे तहइत्थिपराहओरगे भज्जाणुरागगोट्ठी परइड्ढीमाउ याइयति तथा अप्पगोवेताए मेरएमइकेटभेनिसुभेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासघेत्ति॥ ३॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाण सव्वेवि

रवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाभाय रोहोत्था तजहा। तिविठ्ठय जावकण्हे अयलो जावरामेय अपच्छिमे एएसिणं णवण्हं वलदेववासु

मांहि वृषभ समान छे पाछो भार वाहवा समर्थपणां थो। इन्द्र समान छे। अन्य राजा थकी अधिक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान छे। नीला अने पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दोनु भाइ होय राम तेबलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुभाई होय। एणीचोवीसीये ९ बलदेव ९ वासुदेव थया तेकहे छे। त्रिपृष्ठ १। प्रथमथो यावत् शब्दे द्विपृष्ठ २। स्वयम्भू ३। पुरुषोत्तम ४। पुरुषसिंह ५। पुरुष पुंडरीक ६। दत्त ७। नारायण ८ कृष्ण ९ इहालगे जाणवा॥ अचल १। यावत् शब्दे विजय २। भद्र ३। सुप्रभ ४। सुदर्शन ५। आनद ६। नद ७। पद्म ८। राम ९। एहबलभद्र जाणि

देवाणं पुव्वभविया नवनामधेज्जाहोत्था तंजहा । विसभूईपव्वयए धणदत्तसमुद्ददत्तइसिवाले । पियमित्तललि यमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वभवेआसिवासुदेवाणं । एत्तोबलदेवाणं जहक्कामंकित्तइ स्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥ एएसिनवण्ह बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियानवधम्मायरियाहोत्था तंजहा । संभूएयसुभद्दे सुदंसणेसेयकण्ह गंगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं । पुव्वभवेएआसि जत्थनियाणाइँ कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणंनवण्हं वासुदेवाण पुव्वभवे नवनियाणभूमीहोत्था ॥

वा॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ९ नामधेय कहे छे। विश्वभूति १ प्रव्रतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुनर्वसु ८ गंगदत्त ९ । एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया । हिवे बलदेवना नाम कहे छे । विश्वनन्दी १ । सुबंधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५ वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९ । एह ९ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे छे । संभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेयांस ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ द्रुमसेन ९ धर्माचार्य थया कीर्त्तिपुरुष ९ बलदेववासुदेवना । जिहां नियाणाकीधा तेणे समये ९ पूर्वभवने विषे नियाणा भूमि थई ते कहे छे । मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावत्थी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हथणापुर ९

चक्कजोही सव्वेविहयासचक्केहिंति अणियाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा उड्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामीत्ति आगमिस्सेणंति आगमिष्यता कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिष्यता भविष्यता मध्ये सेत्स्यतीति जंबूद्वीपैरवते अस्या मवसर्प्पिण्या चतुर्विंशति स्तीर्थंकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

त्था तंजहा। मज्झराजावहत्थिणाउरंच एतेसिणंनवण्ह वासुदेवाण नवनियाणकारणाहोत्था तंजहा। गावी जुवे जाव माउआ। एएसिं नवण्हंवासुदेवाणं नवपडिसत्तूहोत्था तंजहा। आसग्गीवेजावजरासंघे। जा वसचक्केहिं। एक्कोयसत्तमीए पंचयछठीए पंचमीएक्को। एक्कोयचउत्थीए कण्होपुणतच्चपुढवीए॥ ५७॥ अणिदाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा। उड्ढगामीरामा केसवसव्वेअहोगामी॥ ५८॥ अठतकडा रामा एगोपुणबंभलोयकप्पम्मि। एक्कोसेगब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं॥ ५९॥ जंबूद्दीवे० एरवए

लगे जाणवो। एह वासुदेवना ९ नियाणाना कारण थया ते कहे छे। गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तंभ २ संग्राम ३ स्त्रीपराभव ४ रंग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७ परऋद्धी ८ मातापराभव ९। एह वासुदेवना ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे। अश्वग्रीव १ यावत् शब्दें तारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बलि ६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा॥ एहप्रतिशत्रु कीर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रेकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे। पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण ३ जीये गयो। बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार छे उंच गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव। आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अंतकृत थया मुक्ति गया। १ बलभद्र ५ मे ब्रह्म देवलोके गयो।

रैणाइ तद्यथा चंद्राणणगाहा चंद्राणणसुचंदं अग्गिसेणंचनंदिषेणच्च क्वचिदात्मसेनोप्यय दृश्यते ऋषिदिन्नं व्रतधारिणञ्च वंदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा वंदेयुक्तिसेनं क्वचिदयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवोच्यते अजितसेन क्वचिदयमशतायु रुच्यते तथैव शिवसेनं क्वचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिश्चेति वुद्धवावगततत्वञ्च देवशर्माण देवसेनापरनामक सततसदावंदे इति प्रक्षत निक्षिप्तशस्त्रच नामांतरतः श्रेयांसं असजलं गाहा असंज्वल जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजल वंदेअनंत जिन ममितज्ञानिन सर्वज्ञमित्यर्थः नामातरेणायं सिंहसेनइति उपशांतच उपशान्तसन्न धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनच अइपासगाहा अतिपार्श्वंच सुपार्श्वं

वासे इमीसेउसप्पिणीए चउव्वीसंतित्थगराहोत्था तंजहा । चंदाणणंसुचंदं अग्गीसेणंचनंदिसेणंच । इसिदि सवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ बंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । वुद्धंचदेवसम्मंसिद्धं निक्खित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ असंजलंजिणवसहं वंदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतचधुवरयं बंदेखलुगुत्तिसे

१भव वासना अतरथी मोक्ष जाय्ये जबूद्वीपने विषे ऐरवते एणी अवसर्प्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चंद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नंदिसेन ४ ऋषिदिन ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुक्षु । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम शतायु । शिवसेन १० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवो निक्षिप्त शस्त्र बीजो नाम श्रेयांश १२ ॥ ६१ ॥ असंज्वल १३ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ वांदो अनतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिंहसेन उपशांत १५ । कर्मरज रहित वांदो गुप्तिसेन १६ ।

देवेश्वरवंदितंच मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं चीणदुःखश्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे चीणरजस मग्निपु त्रंच व्यवकृष्टप्रेमद्वेष च वारिषेणं गत सिद्धमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्यथा प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता चतुर्विंशतिः एवमिदं सर्वं

णच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेसरवंदियंचमरुदेवं । निव्वाणगयंचधरं खीणदुहंसामकोठंच ॥ ६३ ॥ जियरागमग्गिसेणं वंदेखीणरयमग्गिउत्तच वोक्कासियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्धं ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे० आगमिस्साएउस्सप्पिणीए भारहेवासे सत्तकुलगराभविस्सति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पभेयसयंपभे दत्तेसुहुमेसुबंधूय आगमिस्साणहोक्खंति ॥ ६५ ॥ जबूद्दीवेणदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दसकुलगराभविस्संति तंजहा । विमलबाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १७ । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवंदित मरुदेव १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ट २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन चय गईछे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जबूद्वीपना भरतने विषे आगामी उत्सर्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे। मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूक्ष्म ६ । सुबधु ७ । आवती चोवीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमधर ३ ।

पडिसुई सुमुइइंति जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगराभविस्संति तंजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपभे । सव्वाणुभूईअरहा देवस्सुएयहोक्खई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते य पोट्टिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयअरहा सव्वभावविऊजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निप्पुलाएयनिम्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय आगमिस्सेणहोक्खई ॥ ३ ॥ सवरेअणियट्टीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअरहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीस भरहेवासम्मिकेवली आगमिस्सेणहोक्खंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वभवियाचउव्वीसनामधेज्जा भविस्सति तंजहा । सेणियसुपा

क्षेमंकर ४ । क्षेमवर ५ । दृढधनु ६ । दशधनु ७ । शतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमुचि १० । जम्बूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थंकर थासे ते कहेछे । महापद्म १ । सूरदेव २ । सुपार्श्व ३ । स्वयप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोट्टिल ९ । शतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सत्यभावविद् अमम १२ । निष्कसाय १३ । निष्पुलाक १४ । निर्म्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । सवर १८ । यशोधर १९ । अनर्द्धिक २० । विजय २१ । विमलबीजोनाममल्ली २२ । देवोपपात २३ । अनंतविजय २४ बीजोनाम अनतवीर्य ॥ एह कह्या २४ तीर्थंकर भरतक्षेत्रनेविषे आवतीउत्सर्प्पिणीयेहोस्ये धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेछे । श्रेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय । ३ । पो

सउदए पोट्टिलअणगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेयतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत हवासुदेवबलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्वेखलुतहाभयाली य । दीवायणेयकण्हे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ अंबडदारुमडेय साईबुद्धेयहोइबोधव्वे । भावीतित्थगराणं णामाइंपुव्वभवियाइं ॥ ४ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंपियरोमायरोभविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा भविस्सति । चउव्वीसंपढमसिस्सणीउभविस्सति । चउव्वीसपढमभिक्खादायगाभविस्सति । चउव्वीसचे इयरुक्खाभविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए वारसचक्कवट्टिणोभविस्संति

ट्टिल अणगार ४ । हढायु ५ । कार्त्तिकसेठ ६ । शखश्रावक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । बलभद्र १४ । रोहिणी । १५ । सुलसाश्राविका १६ वली रेवतीश्राविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । द्वीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अवड २२ । दारुमृत वीजोनाम अमरजीव २३ स्वातिबुद्ध २४ । एह आगामिउत्सर्प्पिणीयें भावी तीर्थंकरपूर्वभवनाम जाणिवा ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पिता होस्ये । २४ माता होस्ये । २४ प्रथम शिष्य थास्ये । २४ प्रथम साध्वी थास्यें । २४ प्रथम भिक्षादायक थास्यें । २४ चैत्यवृक्षथास्यें । जंबूद्वीपना भरत ने विषे आगामिउत्सर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ती थास्यें तेकहेछे । भरत १ । दीर्घदंत २ । गूढदत ३ । शुद्धदत ४ । श्रीपुत्र ५ । श्रीभूति ६ । श्रीसोम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

तंजहा । ञरहेयदीहदंते गूढदंतेयसुद्धदंतेय । सिरिउत्तेसिरिभूई सिरिसोमेयसत्तमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिठेबारसमेतह ञागामिञरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एएसिणंबारसराहंचक्कव ट्टीणं वारसपियरोञविस्संति वारसमायरोञविस्संति । बारसइत्थीरयणाञविस्संति। जंबूद्दीवेणंदीवे ञारहे वासे ञागमिस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेव बासुदेवपियरो ञविस्सति नवञासुदेवमायरो नवबलदेव मायरो ञविस्सति । नवदसारमंडलाञविस्संति तंजहा। उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी एवंसोचेववखाउ ञाणियव्वो जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाञायरो ञविस्संति तंजहा। नदेय

ल वाहन १० । विपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । ञावती २४ वीसीये भरतक्षेत्रना अधिपति थास्ये । एह १२ चक्रवर्त्तना १२ पिता अने १२ माता थास्ये। १२ स्त्रीरत्न होसे।। ञावती उत्सर्पिणीये जबूद्दीपना भरतनेविषे ९ वलदेव ९ वासुदेवनापिताहोसे। ९ वलदेवनी माता होसे। ९ वासुदेवनी माताहोसे ९। दशारमडल होसे। जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णव्याछे तेहिज भणिवो जिहालगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए ह ञावे। दोदो रामते वलदेव केशवते वासुदेव एविहुं भाईहोवे पिता १ माता जुई जुई होय तेकहेछे। नद १। नदमित्र २। दीर्घबाहु ३। म हाबाहु ४। ञतिवल ५। महाबल ६। बलभद्र ७। द्विपृष्ट ८। त्रिपृष्ट ९। ञावती २४ सीये वासुदेवना नाम जाणिवा हिवे वलदेवनाम कहेछे । ज

सिरिचदेपुप्फकेऊ महाचदेयकेवली । सुयसागरेयऋरहा ऋागमिस्सेणहोस्कई ॥ २ ॥ सिद्धत्थेपुस्सघोसेय महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयऋरहा ऋागमिस्सेणहोस्कई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयऋरहा महासेणेयकेवली । सव्वा णंदेयऋरहा देवउत्तेयहोस्कई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्वएऋरिहा ऋरहेयसुकोसले । ऋरहाऋणंतविजए ऋागमि स्सेणहोस्कइ ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेऋरहा ऋरहायमहाबले । देवाणदेयऋरहा ऋागमिस्सेणहोस्कई ॥ ६ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । ऋागमिस्सेणहोस्कंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्कवट्टिणो ऋविस्संति वारसचक्कवट्टिपियरोऋविस्संति । वारसइत्थीरयणा ऋविस्संति नवबलदेववासुदेवपियरोऋवि स्संति णववासुदेवमायरो णवबलदेवमायरोऋविस्संति । णवदसारमंडलाऋविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

महायश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णघोस ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४ सिद्धसेन बीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानंद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोसल १९ अनतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । महाबल २३ । देवा नंद २४,होस्ये । ऐरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तीना पिताहोस्ये । ९ वासुदेवनी माता ९ बलदेवनीमाता होस्ये । ९ दशारमंडल होस्ये

सुगम ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएस्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे श्च्युतस्य मनुष्येषूत्पादः सिविश्च यथारामस्येति एवं दोसुविन्ति भरतैरावतयो रागमि
थतो वासुदेवादयो भणितव्या. इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिकृतग्रयस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा
ऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इतिच इतिरुपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवंतित्थगरवंसे इयन्ति यथा देशे
न कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तीर्थंकरवंशप्रतिपादकत्वा त्तीर्थंकरवंश इति आख्यायते एतदिति एव चक्रवर्त्तिवंशइति
च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ता. शेषाजिनशिष्या न्टषय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवंशइतिच तत्प्रतिपादनत्वाच्च पर्युषणाकल्पस्य

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा आयरोत्रविस्सति णवपडिसत्तूत्रविस्संति । णवपुव्वभवणा
मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणभूमीओ णवणियाणकारणा आयाएएरवए आगमिस्साए आणियव्वा ।
एवदोसुवि आगमिस्साए आणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवंतित्थगरवंसेइय ।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये। नव प्रतिशत्रुनाम। पूर्वभवनाम। धर्माचार्य। नियाणा भूमि नियाणानो का
रण। बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थकी च्यवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये तिउथासे ऐरवतक्षेत्रे तेसर्वं भणिवो। एम भरत ऐरवत क्षेत्रे आ
गामिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्वं भणिवो । अनेकप्रकारे एम मनोज्ञशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे। कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

समस्तस्य ऋषिविश्रपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा इतएव यतिवंशो मुनिवंश श्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविबोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतागममितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवइतिकृत्वा तथा श्रुतसमासइति समस्तसूत्रार्थाना मिह सङ्क्षेपेणाभिधानात् श्रुतस्कन्धइति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवत्ति समवायइति चासमस्ताना जीवादिपदार्थाना मभिधेय तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थः तथा एकादिसङ्ख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिपादपरत्वादस्य सङ्ख्येति व्याख्यायते तथा समस्त म्परिपूर्ण न्तदेतदङ्ग माख्यात म्भगवता नेह श्रुतस्कन्धद्वयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गतेतिभावः तथा अज्झयणतित्ति समस्त मेतदध्ययन मियाख्यात नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति शस्त्रप

चक्कवट्टिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुअ्रगेइवा

एमदशारवंश तेवासुदेव बलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवश मुनिवश एह सर्वना वश एह समवायांगने विषे कह्याछे तेमाटेएहना नामकहिवा। यद्यपि यतिवशमुनिवंश एह बेहु ऋषिवाचीछे तथापि आचारने बिषे यत्नकरे तेयती अर्थ जाणे तेमुनी तेहना ग्रान एहमांकह्याछे तेमाटे श्रुतकहिये । परोक्षपणे त्रिकालनो अर्थावबोध । श्रुत पुरुष अगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटेश्रुतांग । समस्त सूत्रमांहि सङ्क्षेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये। श्रुतना अग्रनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कन्ध कहिये। समस्त जीवादि पदार्थ एह माहि अवतर्‍या तेथी समवाय कहिये। एकादिक कोटाकोटि लगी

रिशादिष्विवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ ब्रेमिति किलसुधर्म्मस्वामी जंबूस्वामिनंप्रत्याहसब्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समो
पे यदवधारित मित्यनेन गुरुपारम्पर्यं मर्थस्य प्रतिपादित भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रुपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शि त श्चेव
त्यञ्च परिह्वत अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्पादितोभवति मुमुक्षूणा ञ्चाय म्मार्गं इत्यावेदितमिति समवायाख्य ञ्चतुर्थमङ्ग म्वृत्तितः समाप्तम् ॥ * ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा रांखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमक्खायंञ्झयणत्तित्तिबेमि ॥ ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

सख्या एहमा कही तेथी सख्यकथ कहिये। परिपूर्ण एह चौथो अंग भगवते कह्यो । एह अध्ययन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अर्थे
किल सुधर्मास्वामी जवूस्वामीप्रतें कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपा
रपर्यपणो गुरूने विषे बहुमानपणो देखाड्यो ॥ इति समवायांग सूत्रटव्वार्थं सपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥
श्रीपार्श्वचंद्रसूरि सतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोय। टव्वार्थ स्लोक सख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं
यद ज्ञानभावा दशुद्ध लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृत विशोधनीय च धीधनै रिति ॥ सूत्रटव्वार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदजती

